आधुनिक राजस्थानी

का

संरचनात्मक व्याकरण

काली चरण बहल
शिकागो विश्वविद्यालय

भाषा अन्वेषण सहायक
डा. सोहनदान चारण
जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर
श्री नारायणसिंह साधू
राजस्थान संगीत नाटक अकेडेमी, जोधपुर

राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर
(जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त शोध केन्द्र)

प्रकाशक
चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा संस्थापित
राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी
जोधपुर

मूल्य २५ रुपये

सन १९८०

मुद्रक
एम० एल० प्रिन्टर्स
जोधपुर, राजस्थान (भारत)

A STRUCTURAL GRAMMAR OF MODERN RAJASTHANI

KALI CHARAN BAHL
The University of Chicago

Research Assistants

Dr SOHAN DAN CHARAN
Jodhpur University, Jodhpur

Sh NARAYAN SINGH SANDHU
Rajasthan Sangeet Natak Academy, Jodhpur

Rajasthani Shodh Sansthan, Chopasni, Jodhpur
Research Centre Recognised by University of Jodhpur Jodhpur (India)

Publishers
Rajasthani Research Institute
Chopasni Jodhpur
Established by the Chopasni Shiksha Samiti

Price Rupees 25

1980

Printed at
M L. Printers
Jodhpur Rajasthan (India)

निदेशकीय

राजस्थानी भाषा के बृहत् शब्द कोश के प्रकाशन के साथ हमारी यह इच्छा थी कि इस भाषा का सांगोपांग व्याकरण भी प्रकाशित किया जाना चाहिए। संयोग से गत वर्ष ही बृहत् राजस्थानी शब्द कोश का प्रकाशन कार्य सम्पूर्ण हुआ और इसी वर्ष हमने डा कालीचरण बहल द्वारा रचित 'आधुनिक राजस्थानी का सरचनात्मक व्याकरण' प्रकाशित करने का विचार किया। राजस्थानी भाषा के व्याकरण लिखने के प्रयास पहले भी होते रहे हैं और उन सब का अध्ययन कर डा बहल ने एक भाषण सन् १९७२ मे संस्थान म दिया था जिससे उन प्रयासो की विशेषताओ और कमियो की ओर इगित किया गया था।

डा बहल ने राजस्थानी व्याकरण के अध्ययन का कार्य शिकागो विश्वविद्यालय के तत्वावधान म यहा सन् ७० ७१ म प्रारभ किया था, और लगभग एक दशक के परिश्रम के फलस्वरूप यह सरचनात्मक व्याकरण इन्होंने प्रस्तुत किया है। इन्होंने मूल कार्य अंग्रेजी के माध्यम से किया था परन्तु हमारे अनुरोध पर उस सामग्री का प्रयोग करते हुए दुबारा उसे हिन्दी म लिखा है, इससे भाषा विज्ञान के विद्यार्थियो के लिये यह और अधिक उपयोगी बन गया है। वैसे यह राजस्थानी का सरचनात्मक व्याकरण है परन्तु विषय को ऐसे पारम्परिक ढाचे मे प्रस्तुत किया गया है कि उसे समझने मे बडी सहूलियत होती है। इस व्याकरण का अध्ययन करने पर ही इसकी विशेषताओ पर विद्वान विचार कर सकेंगे परन्तु भाषा की अभिमजक सरचना तथा अभिव्यजक सरचना का जो पार्थक्य इसमे दिखलाया गया है वह भारतीय भाषाओ की व्याकरण परम्परा म अपनी किस्म का सर्वप्रथम प्रयास कहा जा सकता है। पूरे व्याकरण के अध्ययन के पश्चात इस सशक्त भाषा की जो अभिव्यक्ति-गत खूबिया है उन पर विचार करने के लिये विद्वान प्रेरित होंगे।

हम आशा करते हैं कि इस भाषा के रूपान्तरो की व्याकरणिक विशेषताओ के विषय म किये गये अपने प्रयास को डा बहल और आगे बढायेंगे।

नारायणसिंह भाटी
निदेशक
राजस्थानी शोध सस्थान
चौपासनी, जोधपुर

भूमिका

आधुनिक राजस्थानी (= आ० राजस्थानी) व्याकरण पर लेखक का कार्य अमरिकन इन्स्टीच्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज द्वारा प्रदत्त शोधवृत्ति से सन् १९७०-७१ में प्रारम्भ हुआ। यह शोधवृत्ति स्मिथसोनियन इन्स्टीच्यूशन, वाशिंगटन डी सी से प्राप्त अनुदान पर आधारित थी। आ० राजस्थानी से लेखक का अभिप्राय भाषा के उस परिनिष्ठित रूप से है जो कि सामान्यत जोधपुर और बीकानेर मे प्रचलित है। इस शोधकार्य के प्रारम्भिक परिणामो का प्रकाशन लेखक के "आधुनिक राजस्थानी व्याकरण की वर्तमान अवस्था" शीर्षक निबन्ध द्वारा हुआ था। यह निबन्ध राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी द्वारा सन् १९७२ म प्रकाशित हुआ था। प्रारम्भ मे लेखक इस उद्देश्य को लेकर चला कि आ० राजस्थानी का व्याकरण अग्रेजी मे ही लिखा जाकर प्रकाशित हो। इस उद्देश्य के आधार पर लेखक ने इस भाषा के व्याकरण की रचना की, किन्तु वह व्याकरण अग्रेजी म लिखा होने और आकार म बडा होने के कारण राजस्थान मे प्रकाशित करना अनुपयुक्त था।

अग्रेजी मे आ० राजस्थानी व्याकरण लेखन के कार्य मे लगा हुआ परिश्रम और समय व्यर्थ नही गया। लेखक ने इस अवसर का उपयोग भाषा की व्याकरणिक अर्थतात्विक संरचना को अधिक गहराई मे समझने के लिए किया। इस प्रयास द्वारा उसे भारतीय आर्य परिवार की अन्य भाषाओ की संरचनात्मक विशेषताओ के विषय मे बहुत कुछ सीखने का सुयोग भी मिला। इसी बीच मे आ० राजस्थानी पर कार्य करने के सुअवसर से प्राप्त अनुभव का प्रयोग लेखक ने आधुनिक हिन्दी भाषा के बृहत् व्याकरण को तैयार करने मे किया, और उस व्याकरण को हिन्दी मे लिखा। इस प्रकार आ० राजस्थानी और आधुनिक हिन्दी व्याकरणो की रचना करने के इस द्विविध संयोग से प्राप्त परिणामो मे प्रेरणा लेकर लेखक आ० राजस्थानी के संरचनात्मक व्याकरण की हिन्दी मे ही सागोपाग रूप से पुनर्रचना के कार्य मे लग गया। व्याकरण के पुनर्लेखन मे इस बात का ध्यान भी रखा गया है कि पुस्तक का आकार और रूप ऐसा हो कि उसे प्रकाशित करने मे किसी प्रकार की असुविधा की संभावना कम-से-कम हो। इस प्रकार आ० राजस्थानी का संरचनात्मक व्याकरण अपने प्रस्तुत रूप मे अपने पूर्व-वर्णित रूप पर आधारित तो है, किन्तु पूर्णतया फिर से लिखा गया है। साथ ही साथ इसमे पूर्ववर्णित द्विविध प्रयास म प्राप्त परिणामो और अनुभवो का भी समावेश है।

प्रस्तुत व्याकरण की मुख्य विशेषता यह है कि इसमे आ० राजस्थानी की व्याकरणिक-अर्थतात्विक संरचना का विवरण इस प्रकार से किया गया है जिसमे भाषा-विज्ञान से सुपरिचित जिज्ञासु का भी परितोष हो और साथ ही साथ सामान्य रूप मे भाषा सीखने के उद्देश्य से इसका प्रयोग करने वाले को आधुनिक भाषा-विज्ञान की विशिष्टीकृत पारिभाषिक शब्दावली तथा इसी प्रकार के अन्य विवरणो का भार वहन न करना पडे। इस प्रकार इस व्याकरण मे संरचनात्मक और "पारम्परिक" व्याकरणो की विवरण विधियो का समुचित संयोग है। इस व्याकरण की अन्य मुख्य देन है इसमे भाषा की अभिमतक और अभिव्यजक

संरचनाओं में पार्थक्य की स्थापना। दक्षिण-एशियाई भाषाओं की व्याकरण परम्परा में किसी भी भाषा के सांगोपांग व्याकरणिक-अर्थतात्त्विक विवरण में उपर्युक्त स्थापना को यथायोग्य स्थान देने का यह सर्वप्रथम प्रयत्न है।

प्रस्तुत व्याकरण के एक पूर्व रूप में आ० राजस्थानी के प्रादेशिक रूपान्तरों (अथवा बोलियों) का विवरण एक अध्याय में किया गया था। बाद में यह निर्णय किया गया कि इस विवरण को व्यवस्थित रूप से कहीं अन्य प्रकाशित किया जाय। किन्तु यहाँ मात्र यह कह देना पर्याप्त होगा कि आ० राजस्थानी के प्रादेशिक रूपान्तरों पर लेखक द्वारा किए कार्य से यह प्रतीत होता है कि भाषा के प्रादेशिक रूपान्तर नागौर जिले की ओर अपने केन्द्रीय अथवा साम्य स्थल के रूप में इंगित कर रहे हैं।

भाषा की स्वनिमिक संरचना का विवरण, यद्यपि मथानिया और बाल्दा की बोलियों पर आधारित है, तो भी यह विवरण जोधपुर और बीकानेर में प्रचलित रूपान्तरों तथा अन्य रूपान्तरों (जिनका अध्ययन लेखक ने किया है) पर भी लागू होता है। व्याकरण के अन्य अध्यायों में आ० राजस्थानी के गद्य-लेखकों के ग्रंथों का उपयोग किया गया है। इन ग्रंथों के उद्धरण जिन्हें उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत किया गया है, भाषा के लिखित रूप पर आधारित है। साथ ही यह भी प्रयत्न किया गया है कि उदाहरणों में कम से कम परिवर्तन करना पड़े। इस पुस्तक में दिये गये उदाहरणों के चयन में लेखक का मात्र उद्देश्य यही रहा है कि वे यथासम्भव सरल हों और स्पष्ट रूप से समझ में आने योग्य।

इस कार्य के लिए लेखक अपने अन्वेषण सहायकों, मित्रों, शुभेच्छुओं तथा आ० राजस्थानी के गद्य-लेखकों का आभारी है।

लेखक डा० नारायणसिंह भाटी, निदेशक, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी के प्रति आभार प्रदर्शन करता है। उन्होंने पुस्तक का हिन्दी में प्रकाशित करने की स्वीकृति देकर, पुस्तक लेखन में यथेष्ट प्रेरणा प्रदान की है। श्री जगदीश ललवानी, एस एल प्रिन्टर्स ने व्याकरण की सुन्दर छपाई आदि के कार्य में विशेष सहयोग दिया है। श्री मुरली मनोहर माथुर ने भी इस कार्य में बहुत सहायता की है।

कालीचरण बहल
शिकागो विश्वविद्यालय

PREFACE

The work for the preparation of a grammar of modern Rajasthani, based on the standard form of the language current in Jodhpur and Bikaner, was begun in the year 1970 71 under a fellowship granted to the author by the American Institute of Indian Studies and funded by the Smithsonian Institution, Washington, D C Preliminary results of this research work were reported in 1972 in a monograph entitled *On the present state of modern Rajasthani grammar* published by the Rajasthani Research Institute Chopasni, district Jodhpur It was the aim of the author to prepare and publish a structural description of the language written in English This endeavor led to the preparation of a pre final draft of the work which, because of its being written in English and its size, was unsuitable for publication in Rajasthan

However, this endeavor was not entirely fruitless It gave the author an opportunity to dig deeper into the grammatico-semantic structure of modern Rajasthani and learn a great deal more about the structural properties of other modern Indo-Aryan languages as well Equipped with the experience gained in working on Rajasthani, the author had an opportunity to prepare an extensive treatment of modern standard Hindi written in Hindi Encouraged by the results achieved thus far prompted the author to re undertake the work on the preparation of Ādhunika Rājasthānī kā samracanātmaka vyākarana *(A structural grammar of modern Rajasthani)* in Hindi and in a size that should not be too difficult to publish The present grammar is thus a completely rewritten version of the earlier work and also incorporates the results and experience gained in the two fold endeavor, i e, writing the English version of a grammar of Rajasthani as well as preparing a grammar of Hindi

The major contribution of the work in its present from lies in its ability to present the facts of the grammatico-semantic structure of modern Rajasthani in a form which is equally accessible to one well versed in modern linguistics as well as to one who is interested in learning the language without being burdened with the highly specialized terminology of modern linguistics and other similar details It is thus a blend of the formats of structural as well as traditional grammars The other contribution of this work involves an explicit recognition of the

distinction between the expressive and cognitive structures of modern Rajasthani a matter which was received the attention it deserves in a full scale study of the grammatico semantic structure of a modern South Asian language for the first time

An earlier Hindi version of the work also included a chapter on pronominal and verbal forms of regional variants (or dialects as the term is used by Sir George Grierson in his *Linguistic Survey of India*) assembled from almost all the districts of Rajasthan Later it was decided to publish that information in a more systematic form elsewhere It is however necessary to make one observation about the work done so far by the author on regional variants of modern Rajasthani and i e the data so far gathered seems to point in the direction of Nagore district as a central or focal area

Phonological description of the language as contained in chapter one though based on the Mathaniya and Borunda dialects applies equally to the forms of the language spoken in other areas of Jodhpur and Bikaner, as well as to other dialects tested by the author The rest of the description utilizes the works of the prose writers of modern Rajasthani and reproduces excerpts from their texts as examples of various phenomena in the written form of the language (as contained in those works) with minimal modification The examples of written Rajasthani, as they appear in the text of this grammar are thus chosen on the basis of their simplicity and clarity of understanding

The author is grateful to his assistants many other friends and well wishers as well as the authors of modern Rajasthani prose

I am also grateful to Dr Narain Singh Bhati Director, Rajasthani Research Institute Chopasni, district Jodhpur who encouraged the writing of this book in Hindi by agreeing to publish it, and to Shri Jagdish Lalwani of M L Printers who took enormous personal care in the printing of the text Shri Murli Manohar Mathur also rendered considerable assistance in this work

Kali Charan Bahl
The University of Chicago

अनुक्रम

पृष्ठ

१. स्वन प्रक्रिया तथा लिपि — १–६

स्वनप्रक्रियात्मक विवरण का वृहत्तम खड, स्वनप्रक्रियात्मकखडो की तालिका, व्यजन स्वनिम, स्वर स्वनिम अधिखण्डात्मक स्वनिम, स्वन प्रक्रियात्मक एककों के पार्थक्य का निदर्शन, आधुनिक राजस्थानी लिपि

२. आधुनिक राजस्थानी की अभिव्यजक सरचना — ८–११

व्याकरण मे अभिव्यजक सरचना का महत्त्व, अभिव्यजक सरचना का अभिसज्ञक सरचना से पार्थक्य, शब्दों की आदरार्थक, अपकर्षात्मक एव सामान्य अवस्थितिया, अभिव्यजक सरचना के अन्य विविध रूप, अभिव्यजक सरचना का विवरण

३. सज्ञा — १२–३४

लिंग के आधार पर संज्ञाओं का वर्गीकरण, प्रत्ययो के सहवर्ती लिंगानुसार सवर्गीकरण की सम्भावनाए, -औ, -इयौ, -ई प्रत्ययो के आधार पर लिंगानुसार सवर्गीकरण, अन्य प्रत्ययो के योग से निर्मित लिंग रूपों की रचना, शब्द भेद पर आधारित लिंगानुसार सज्ञा युग्म, स्त्रीलिंग रूप अनुपलब्ध पुल्लिग सज्ञायें, पुल्लिग रूप अनुपलब्ध स्त्रीलिंग सज्ञायें, उभयलिंगी सज्ञायें, मूल स्त्रीलिंग सज्ञाओ के ई प्रत्यययुक्त अतिरिक्त स्त्रीलिंग रूप, मूल स्त्रीलिंग सज्ञाओं के -ई तथा -औ प्रत्यययुक्त स्त्रीलिंग तथा पुल्लिग रूप, सज्ञाओ का वचन, वचन की दृष्टि से सज्ञाओं का शब्दगत रूप वर्गीकरण, कतिपय सज्ञाओ की शब्दगत रूपावली मे अस्पष्टता, सज्ञाओ के सम्बोधनात्मक रूप और सम्बोधनात्मक अभिव्यजक रूप,

पृष्ठ

सामान्य शब्दगत रूपावली के अपवाद स्वरूप संज्ञायें, यौगिक संज्ञायें, मानववाची यौगिक संज्ञाओं का वर्गीकरण, मानवेतर प्राणीवाचक यौगिक संज्ञाओं का वर्गीकरण, वस्तु इत्यादि वाचक यौगिक संज्ञायें, यौगिक संज्ञाओं का लिंगानुसार वर्गीकरण, यौगिक संज्ञाओं की शब्दगत रूप रचना, संहिति अथवा प्रमाणाधिक्य वाचक बहुवचन, सामान्यतः बहुवचन में अवस्थित होने वाली संज्ञायें, संज्ञाओं की तिर्यक बहुवचन में आदरार्थक एक संज्ञा समुद्देशक अवस्थिति, संज्ञा$_1$ + का + संज्ञा$_2$ रचनाए, गुणबोधक रचनाए, बहुलता बाधक रचनाए, स्वल्पता बोधक रचनाए, सीमा बोधक रचनाए, माप निर्धारक रचनाए, विशिष्टिकृत मूर्तता बोधक रचनाए, आम्रेडित संज्ञा अनुक्रम

४. सर्वनाम ३७–४६

आ० राजस्थानी सर्वनामों का वर्गीकरण, पुरुषवाचक, निजवाचक, अन्योन्याश्रयवाचक, सम्बन्धवाचक, सह-सम्बन्धवाचक, अन्यवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, समूहवाचक, निर्देशितावाचक, व्याप्तिवाचक, परिमाण वाचक, गुणवाचक, प्रकारता बोधक, रीतिवाचक, स्थानवाचक, दिशावाचक, इतर दिशा अथवा स्थान वाचक सर्वनाम, कालवाचक, इतर सर्वनाम

५. विशेषण ४८–७६

विशेषणों की कोटिया, गुणवाचक विशेषण, सामासिक गुणवाचक विशेषण, गुणवाचक विशेषण पदबन्ध, समता वाचक विशेषण पदबन्ध, तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्ध, तुलनावाचक विशेषण पदबन्ध, प्रसृत विशेषण पदबन्ध, सख्यावाचक विशेषणों की विभिन्न कोटिया, गणना मूलक सख्यावाचक विशेषण, प्रभागक सख्यावाचक विशेषण, क्रमसूचक सख्यावाचक विशेषण, आनुपातिक सख्यावाचक विशेषण, समुच्चय बोधक सख्यावाचक विशेषण, वितरक सख्यावाचक विशेषण, समुच्चयात्मक एकल बोधक सख्यावाचक विशेषण, योग बोधक सख्यावाचक

पृष्ठ

विशेषण, समुच्चय बोधक सख्यावाचक विशेषण, सन्निकट सख्यावाचक विशेषण, अनिश्चित सख्यावाचक विशेषण, अनिश्चित सन्निकट सख्यावाचक विशेषण, गुणात्मक सख्या वाचक विशेषण, इतर सख्यावाचक विशेषण, सहितिवाचक सख्यावाचक पदबन्ध, निर्धारक विशेषण, यथावत्ता बोधक निर्धारक विशेषण, आतिशय्य बोधक निर्धारक विशेषण, माप बोधक निर्धारक विशेषण, माप निर्धारकों की अभिव्यजकता, माप बोधक निर्धारक पदबन्ध, विशेषणो की शब्दगत रूप रचना, विशेषणो की विशेष्यो से वैण सगाई, आम्रेडित विशेषण रचनाए, सार्वनामिक विशेषण

६. क्रिया 	८०–१२६

क्रियाप्रकृतियों के वर्गीकरण का आधार, क्रिया प्रकृति रूप निर्माण के आधार पर उनका वर्गीकरण, क्रिया प्रकृति अनुक्रम, सम्बन्धित क्रिया प्रकृति अनुक्रम, पर्यायवाची क्रिया प्रकृति अनुक्रम, विपर्यायवाची क्रिया प्रकृति अनुक्रम, आ- क्रियाप्रकृति अनुक्रम, प्रतिध्वन्यात्मक क्रिया प्रकृति अनुक्रम, इतर क्रिया प्रकृति अनुक्रम, यौगिक क्रियाए, यौगिक क्रियाओ मे परसर्गों के आधार पर अर्थभेद, क्रिया-नामिक पदबन्ध, यौगिक क्रियाओ के एकाधिक रूप, सकर्मक अकर्मक यौगिक क्रिया युग्म, सयुक्त क्रियायें, आ० राजस्थानी पक्ष विचारक क्रियाए, आ० राजस्थानी प्रावस्था विचारक क्रियाए, अभिव्यजक विचारक कियाए, कृदन्तों के साथ विचारक क्रियाओ की अवस्थिति, वाच्य के आधार पर क्रिया प्रकृतियो के शब्द रूपात्मक सवर्ग, -आव अन्त्य क्रिया प्रकृतिया अपने आ-अन्त्य रूपो के वैकल्पिक परिवर्त, समापिका क्रिया रूप, समापिका क्रिया रूपो का रचनात्मक वर्गीकरण, पूर्णतावाचक कृदन्त, अपूर्णतावाचक कृदन्त, कृदन्त विशेषण, समापिका क्रियारूपो की रचना, जावणो क्रिया के समापिका क्रिया रूप, लिखणो क्रिया के अधिमान्य समापिका क्रिया रूप, समापिका क्रिया रूपावली की वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण, योजक

पृष्ठ

क्रिया हुवणो की समापिका क्रिया रूपावली, समापिका-असमापिका क्रिया रूपों के साथ निश्चयात्मक निपात परो की अवस्थिति, प्रेरणार्थक क्रियाए, अकर्मक और सकर्मक क्रियाओ के प्रेरणार्थ रूप, मूल अकर्मक और सकर्मक क्रियाओ के प्रेरणार्थक रूप, भाववाच्य क्रियाए, श्लिष्ट भाववाच्य क्रियाए, जा- भाववाच्य क्रिया रूप, भाववाच्य क्रियारूपों के समापिका क्रिया रूप, श्लिष्ट भाववाच्य रूपों वाले कतिपय वाक्यो में जा- भाववाच्य रूपों वाले प्रतिवाक्यो का अभाव, भाववाच्य वाक्यो मे कर्त्ता स्थानीय सज्ञाओ के साथ कतिपय परसर्गों की अवस्थिति, भाववाच्य प्रतिरूपोवाली कतिपय क्रियाओ के प्रेरणार्थक रूपो का अभाव, क्रिया सयोजन, इच्छार्थक क्रिया सयोजन, स्वदूरभार्थक क्रिया सयोजन, आसन्नबोधार्थक क्रिया सयोजन, आरम्भमाणार्थक क्रिया सयोजन, अनुज्ञार्थक क्रिया सायोजन, बाध्यतार्थक क्रिया सायोजन, आवृत्यार्थक क्रिया सायोजन, असमापिका क्रियारूप, सायोजक कृदन्त, कृदन्त विशेषण, पूर्णतावाचक कृदन्त, अपूर्णतावाचक कृदन्त, भावार्थक सज्ञा, क्रिया$_1$ + क्रिया$_2$ अनुक्रम, सायोजक कृदन्त + समापिका क्रिया के परिवर्त, क्रिया$_1$ + क्रिया$_2$ अनुक्रम, भावार्थक सज्ञा की कर्त्ता अथवा कर्म स्थानीय अवस्थिति वाले क्रिया$_1$ + क्रिया$_2$ अनुक्रम, समापिका क्रिया पदबन्धो का आम्रेडण, आम्रेडित समापिका क्रिया पदबन्धात्मक रचनाए

७. क्रियाविशेषण १३२–१४२

क्रिया विशेषणो का वर्गीकरण, वाक्यात्मक क्रियाविशेषण, सामान्य क्रियाविशेषणो का वर्गीकरण, सार्वनामिक क्रियाविशेषण, स्थान, दिशा, काल तथा रीतिवाचक क्रिया विशेषण, आ० राजस्थानी परसर्ग, अनुकरणात्मक पद-बन्धो की क्रियाविशेषण स्थानीय अवस्थिति, अनुकरणात्मक शब्द तथा देवणो और करणो क्रियाओ से निर्मित क्रियाविशेषण रचनायें, कतिपय सज्ञाओ की परसर्ग रहित तिर्यक रूप म क्रिया विशेषणरूप म अवस्थिति

पृष्ठ

८. विस्मयादि बोधक १४५–१४६

विस्मयादि बोधक, सम्बोधक निपात तथा अन्य तत्त्व, कतिपय सम्बोधक, विस्मयादि बोधक शब्द तथा पदबन्ध, कतिपय सज्ञाओ तथा सज्ञापदबन्धो के सम्बोधनार्थक रूपो का निदर्शन, सम्बोधक तथा वाक्य पूर्वाश्रयी रचनाए, सही, तौ सही तौ सरी, तौ खरी, सूत्रीकृत वाक्य और वाक्यात्मक रूढ रचनाये, मार, इत्याद, बीजौ, मातर, फलौणा, धर आदि शब्द, वालौ प्रत्यय, भळै तथा उससे निर्मित रचनाए, अवधारक निपात एव अवधारक रचनाए

६ सामान्य वाक्य सरचना १५१–१६२

सामान्य वाक्यात्मक रचनाए, अकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्यो का वर्गीकरण, सकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्यो का वर्गीकरण, सयोजक क्रिया से निर्मित वाक्य, त्रिविध वाक्य वर्गीकरण के अपवाद, वाक्यो की आन्तरिक अधि-क्रमिक सरचना, सज्ञा पदबन्धो मे समानाधिकरण सम्बन्ध, कतिपय वाक्यवत् रचनाए, कर्त्ता तथा कर्म स्थानीय सज्ञाओं और क्रियाओ मे लिंग-वचन और पुरुष वचन अन्वय, कर्मस्थानीय सज्ञाओ के साथ नै परसर्ग की अवस्थिति, कर्मस्थानीय आम्रेडित सज्ञा और सकर्मक क्रिया मे एक वचन अन्वय, प्रेरणार्थक वाक्यो का वर्गीकरण, आदरा र्थक प्रेरणार्थक वाक्य, कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्य और कार्यबोधक प्रेरणार्थक वाक्य, कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्यो मे प्रेरणायक कर्त्ता और प्रेरणार्थक समापिक क्रिया मे अन्वय, भाववाच्य–कर्मवाच्य वाक्यो मे समापिका क्रियाओ के प्रकार्य, क्रिया प्रकृतियो का द्विधात्मक अर्थ, कर्मवाच्य भाववाच्य वाक्यो मे समापिका क्रिया रूपो के लिंग, वचन और पुरुष

१०. सयोजित वाक्य १६४–१७३

सो- सयोजित वाक्य, कार्य कारण वाक्य, कै सयोजित वाक्य, कर्त्ता एव कर्म स्थानीय कै- सयोजित वाक्य, व्याख्यक कै- सयोजित वाक्य, क्रिया व्यापार कालावधि

पृष्ठ

बोधक कै- सयोजित वाक्य, निदर्शित प्रश्नोत्तर स्थिति में कैं की अवस्थिति, सयोजक कैं की अनवस्थिति, विभाजक समुच्चय बोधक निपात कैं, विभाजक समुच्चय बोधक सज्ञा पदबन्ध, विभाजक समुच्चय बोधक सयोजित वाक्य, कैं की अव्यक्त अवस्थिति, चाहे विकल्पात्मक सयुक्त वाक्य, सयोजक निपात अर्न~नैं, अर~'र, अ~र की अवस्थिति, अर की विभाजक सयोजकवत् अवस्थिति, निषेध वाचक वाक्य, सामान्य निषेधार्थक निपात, अवधारक निषेधार्थक निपात, आज्ञार्थक तथा उद्बोधक निषेधार्थक निपात, अभिव्यजक निषेधार्थक निपात, तुलनावाचक उभयपक्ष निषेधवाचक वाक्य, विकल्पात्मक निषेधवाचक वाक्य, विकल्पात्मक सकारात्मक-निषेधात्मक वाक्य, नी की आवृत्ति तथा उसके साथ अन्य तत्त्वों की अवस्थिति, जद तद हेतुमद् वाक्य, जद-तौ कालवाचक वाक्य, जद सयोजित कालवाचक वाक्य, तद सयोजित वाक्य, जणैं सयोजित वाक्य, प्रतीतिवाचक वाक्य प्रतीयमान रूप अभिव्यक्ति वाक्य, भासमान रूप अभिव्यक्ति वाक्य, स्वभाव प्रवण रूप अभिव्यक्ति वाक्य, कथन-टिप्पणी जकौ सयोजित वाक्य, विविध सम्बन्ध जकौ सयोजित वाक्य, वैशिष्ट्य लक्षण-परिभाषा जकौ ई सयोजित वाक्य, नामिकीकृत जकौ उपवाक्य की अवस्थिति, इतर ज्कौ सयोजित वाक्य, जिण सयोजित वाक्य, रीति-निर्धारक ज्यू-त्यू वाक्य, ज्यू ज्यूं सयोजित वाक्य, ज्यू-त्यूं सयोजित वाक्य, ज्यूं- उण भांत इत्यादि सयोजित वाक्य, ज्यू ज्यू - त्यू त्यूं सयोजित वाक्य, ज्यू ज्यू सयोजित वाक्य, ज्यू ई सयोजित वाक्य, ज्यू ई- तौ, कै सयोजित वाक्य, समानता निर्देशक ज्यू सयोजित वाक्य, ज्यू की परसर्गवत् अवस्थिति, ज्यू की इतर अवस्थितियां सम्बन्धवाचक परिमाणवाचक सयोजित वाक्य, जित्तौ उपवाक्य व नामिकीकृत रूप की अवस्थिति, जित्तै सयोजित वाक्य, जितरै तौ, जित्तै ई सयोजित वाक्य, इत्तौ उत्तौ सयोजित वाक्य, जैडौ-वैडौ~ऊडौ सयोजित वाक्य, जैडौ उपवाक्य के नामिकीकृत रूप की अवस्थिति, जैडौ-इतर तत्व सयोजित वाक्य, जैडौ उपवाक्यों की अन्य

पृष्ठ

नामिकीकृत अवस्थितिया सर्वाई मयोजित वाक्य जे–तौ हेतुमद् वाक्य स्थान वाचक सयोजित वाक्य स्थान वाचक उपवाक्यो के नामिकीकृत रूप प्रतियौगिक वाक्य विरोधवाचक वाक्य प्रतिषेधात्मक प्रतियौगिक वाक्य अपवादात्मक प्रतियौगिक वाक्य भीतर सयोजित प्रति यौगिक वाक्य व्यवच्छेदक प्रतियौगिक वाक्य

११ आधुनिक राजस्थानी शब्द रचना — २३४–२५१

आ० राजस्थानी शब्द रचना के तीन प्रक्रम प्रतिध्व न्यात्मक शब्द रचना अनुकरणात्मक शब्द रचना आ० राजस्थानी पूर्व और पर प्रत्यय अभिव्यजक प्रत्ययो से सज्ञा आदि शब्द रूप रचना

१. स्वन प्रक्रिया तथा लिपि

११. आ राजस्थानी का स्वनप्रक्रियात्मक विवरण भाषा के शब्दों को तद्विषयक बृहत्तम खंड मानकर प्रस्तुत किया जा रहा है।

१२ भाषा के स्वनप्रक्रियात्मक एककों की तालिका नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

१२१ व्यंजन

व्यंजन कोटि	उभयोष्ठ्य	जिह्वान्त-दन्त्य	जिह्वान्त-मूर्धन्य	जिह्वोपाग्रीय तालव्य	पश्चजिह्वा-कंठ्य
स्पर्श					
अघोष अल्पप्राण	प्	त्	ट्	च्	क्
अघोष महाप्राण	फ्	थ्	ठ्	छ्	ख्
घोष श्वास-द्वारीय रंजित	ब्	द़्	ड्	ज्	ग्
घोष महाप्राण	भ्	ध्	ढ्	झ्	घ्
घोष अल्पप्राण	ब्	द्	ड्		
नासिक्य	म्	न्	ण		ङ्
उत्क्षिप्त		र्	ड़्		
पार्श्विक		ल्	ल		
उत्क्षिप्त					
अघोष		स्			स़
घोष	व्	ज़्		य्	ह़

१२२ स्वर

	अग्र		मध्य		पश्च	
	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व
उच्च	ई	इ			ऊ	उ
मध्य	अॆ			अ	ओ	
निम्न	अॅ		आ		औ	

१२३ ग्रधिखण्डात्मक

नासिक्यता

स्वराघात निरपक्ष-

आरोही- / (इस चिह्न का प्रयोग अक्षर के बाद किया गया है।)

१२४ उपरिलिखित स्वनप्रक्रियात्मक एककों के पारस्परिक पार्थक्य का निदर्शन करने के लिए नीचे आवश्यक शब्दों के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(१) प् फ्

पीडौ "मटकी रखने का स्थान" पालौ "बेर की भाडी का सूखा पत्ता"
फीडौ "बिचकी हुई नाक वाला" फालौ "फोडा"
पुरौ 'पुर, नगर" पाग "पगडी"
फुरौ 'पीछे मुडना" फाग "एक सामूहिक नृत्य'

(२) ब् भ् ब्

बौड 'मुर्गे की बांग' बट्ट "तेजी से"
भौड "तोडना" भट्ट "भट्ट"
बौड "गाडी मे तेल देना" बट्ट "टेढा-मेढा होना"
बारी "खिडकी, छोटा भाडू" बालौ "जलाम्रो"
भारी "भारी, लकडियो का गट्ठर" भालौ "देखो"
बारी "बारी" बालौ "छोटा नाला"

(३) ब् व्

बल "ताकत" बाअेरौ "बिना"
वल "बाकपन" वाअेरौ "हवा"
बाट "अधकचरा गेहू" बाडौ "कसैला"
वाट "इन्तजार" वाड "काटो की बाड"
बौम्मण "ब्राह्मण" बाकल "उबाले हुए चने या मोठ"

बौम्मण "भाभी जाति की स्त्री" बाकल "मुहल्ले के बीच का मैदान"
वैंवणौ "बैठना" बाइ "बहिन"
बैवणौ "चलना" बाई "शरीर का फूलना"

(४) त् थ्

तारौ "तारा" तेल्लौ "तेली"
थारौ "तुम्हारा" थेल्लौ "थैली"
तत्रियौ "सिराहना" ताक्नै "ताक कर"
यत्रियौ "थका हुआ" थाक्नै "थक कर"

(५) द् ध् द्

दडौ "बड़ी गेंद" दौम "मूल्य"
धडौ "तकड़ी का धड़ा" धौम "धाम"
दडौ "रेत का टीबा" दौम "जलकर राख होना"
दाव "दाव, मौका"
दाव "पशु"

(६) ट ठ

टग "पत्थर का सहारा" टमकौ "नखरा"
ठग "ठग" ठमकौ "पायल का शब्द"

(७) ड् ड् ड्

डाडी "दाढ़ी" डैरौ "डेरा"
डाडी "एक जाति" टेरौ "मूर्ख, ऊन काटने का औजार"
डागौ "एक जाति, वृद्ध ऊंट" डावौ "बाया"
डागौ "वृद्ध बैल" डावौ "नदी का कगार"
अण्डौ "अण्ड" डाल "पेड़ की डाल"
अण्डौ "दिन का तीसरा प्रहर" टाल "टलान"
डौंग "लकड़ी"
टौंग "टोंग"

(८) ज् झ्

जक "शान्ति" जारी "जारी"
झक "झक (मारना)" झारी "छोटा लोटा"

(९) ग् . घ्

गुरा "गुण"
घुरा "घुन"

(१०) क् ख् · ग्

कौण्ड "काड"
खौण्ड "शक्कर"
गौण्ड "एक अश्लील शब्द"

(११) म् ण ट

टम्को "नखरा"
टण्को "जबरदस्त"
टण्काई "बल, सामर्थ्य"
टड्काई टाकने की क्रिया"

(१२) न् ण्

कौन "कान" कन "चौपड़ की कौडी को कान से छुआ कर गिराना"
कौण "तराजू की कान" कण "कण"
धन "धन" मन "मन"
धण "पत्नी" मण "एक तौल"

(१३) व् ब व

वारी खिड़की
बारी बारी
वारी न्यौछावर

(१४) ल् ळ्

पालौ "बेर की झाड़ी का सूखा पत्ता" चालक "चलाने वाला"
पाळौ "पीतल का बर्तन" चाळक "आवड देवी का दूसरा नाम"
पाल "मना करना" चालणौ "चलना"
पाळ "पालन करना" चाळणौ "छेड़ना"
झोल "झूलने की क्रिया"
झोळ "सब्जी की झोल"

(१५) ड् ड़्

आडौ "दरवाजा" नाडौ "छोटा तालाब"
आड़ौ "बालहट" नाड़ौ "पायजामे की डोरी"

(१६) स् ह्

स्ल "सलवट"
हल "हल"

(१७) ह्रस्व स्वर दीर्घ स्वर

इ ई

दिन "दिन"

दीन "गरीब"

उ ऊ

घुर "नकारे की आवाज" धुन "धुन"

घूर "सार तत्त्व का बाहर आ जाना" धूण "ध्यान लगाव"

गुण्ती "२९"

गूण्ती "गधे पर का बोरा"

अ आ

च/ऊ "हल की लकडी का नुकीला भाग" थल "स्थल"

चा/ऊ "चाहने वाला" थाल "थाल"

(१८) अे अै

वेद "वेद" छे "अत"

वैद "वैद्य" छै "६"

(१९) ओ औ

ढोलौ "गिरा दो" ओरणौ "ओढनी"

ढौलौ "निर्बल" औरणौ "वर्षा का होना"

कोम "जाति"

कौम "काम"

(२०) ओ ऊ

उपाडो "उठाओ" कर्डौ "कडा"

उपाड़ू "अधिक खर्च करने वाला" कर्ड़ू "अनाज का सस्ता दाना"

(२१) ई . अे

राईकौ "एक जाति" ओंईणी "वह गाय जो दूध न दे"

राअेतौ "रायता" मौंअेनै "अन्दर"

चौंअे "बाल झड़ने का रोग"

(२२) सानुनासिक स्वर निर्गुनासिक स्वर

खाँड "चीनी" ऊव "बरसात का कम जल वाला बादल"

खाड "क्यारी" ऊबं "उबने का भाव"

(२३) स्वराघात — / (नीचे के उदाहरणो मे निरपेक्ष स्वराघात को अचिह्नित रहने दिया गया है)

पीर "पीर"	सोरो "आसान"
पी/र "पीहर"	सो/रो "ससुर"
सारो "अस्तित्व"	कोड "उमग मिश्रित आनन्द"
सा/रो "ससुराल"	को/ड "कुष्ठ रोग"
सई "सही"	छेडै "छेड़ता है"
स/ई "स्याही"	छे/डै "किनारे"
बाटी "घोटना क्रिया का पूर्णता वाचक रूप"	दाई "धाय"
बा/टी "कासे का बर्तन"	दा/ई "समान"
गोरी "गौरवर्ण की स्त्री"	जाजो "जाओ"
गो/री "ग्वाला"	जा/जो "ज्यादा"
ओड "एक जाति विशेष"	देवरो "देवर (बहु वचन)"
ओ/ड "कुए पर बना स्थान"	दे/वरो "देवालय"
मैणी "मैना जाति की स्त्री"	पौर "पिछला वर्ष"
मै/णी "उपालम्भ"	पौ/र "प्रहर"
मौली "छाछ जा खट्टी न हो"	मेलणो "गाय दुहना"
मौ/ली "मौली का धागा"	मे/लणो "भेजना"
थोरी "एक जाति का नाम"	थौणो "थाना"
थो/री "आग्रह"	थौ/णो "मिट्टी सहित अन्य स्थान पर लगाने के लिए उखाड़ा हुआ पौधा"

१ ३ आ राजस्थानी लिपि देवनागरी लिपि का ही तनिक परिवर्तित रूप है। इस अध्याय के खण्ड (१ २ २) तथा (१ २ ३) मे चयन किये गये व्यजन और स्वर चिह्नो स इस तथ्य को लक्षित किया जा सकता है। नीचे आ राजस्थानी वर्णमाला और तत्सम्बन्धी स्वनिमिक एकको की सूची प्रस्तुत की जा रही है। इस सूची मे पहले स्वर तथा व्यजन वर्णों को सूचित करके प्रत्येक वर्ण के साथ उसके स्वनिमिक पर्याय को कोष्ठक मे लिखा गया है।

स्वर अ (अ), आ (आ), इ (इ) ई (ई), उ (उ), ऊ (ऊ), अे~ए (अे), अै~ऐ (अै), ओ (ओ), औ (औ)।

व्यजन क (क्), ख (ख्), ग (ग्), घ (घ्), ङ (ङ्), च (च्), छ (छ्), ज (ज् ज़्), झ (झ्), ञ, ट (ट्), ठ (ठ्), ड (ड्), ढ (ढ्, ढ़्),

ण (ण) त (त) थ (थ) द (द द) ध (ध द) न (न)
प (प) फ (फ) ब (ब ब) भ (भ) म (म्) य (य) र (र)
ड (ड) ल (ल) ल़ (ळ) व (व ब) स (म स) ह् (ह)।

उपरोक्त वर्णमाला म घाष श्वासद्वारीय रजित स्वनिम / ब द ड ज ग / और घाप अल्पप्राण स्वनिम / ब द ड / को चिह्नित करने की प्रणाली उल्लखनीय तथ्य है। इसी प्रकार उत्क्षिप्त घोष स्वनिम / ज / का वर्ण ज द्वारा सकेत भी उल्लखनीय है।

अधिखण्डात्मक स्वनिम नासिक्यता का लिपि मे बिन्दु ( ) द्वारा सकेत किया जाता है। अधिखण्डात्मक स्वनिम निरपेक्ष स्वराघात के लिये लिपि म कोई चिह्न नही है जो कि युक्ति युक्त है। आरोही स्वराघात का सकेत जिस अक्षर पर इस स्वराघात की अवस्थिति हो उसके साथ ( ) चिह्न के द्वारा स केत किया जाता है यथा (/ गा/री / ग्वाला गो री / पौ/र / प्रहर पौ र) इत्यादि अनेकश आरोही स्वराघात को लिखित आ राजस्थानी मे अचिह्नित भी जोड दिया जाता है।

---

२. आधुनिक राजस्थानी की अभिव्यंजक संरचना

२ १ सामान्य रूप से भारतीय आर्य भाषाओं मे अभिव्यंजक सरचना के अभिसंज्ञक सरचना से पार्थक्य के विषय मे वैयाकरणो का ध्यान नाम-मात्र को ही गया है। ऐसा क्यो हुआ है, इसका उत्तर तो भाषा विज्ञान की ऐतिहासिक प्रगति को समझकर किये गये विश्लेषण द्वारा ही दिया जा सकता है। इस अध्याय का उद्देश्य तो अत्यन्त सीमित है, और वह यह कि अभिसंज्ञक सरचना विषयक विवरण के साथ आ राजस्थानी की अभिव्यंजक सरचना सम्बन्धी कतिपय तथ्यों का उल्लेख करना और इस तथ्य की स्थापना करना है कि अभिव्यंजक सरचना किसी भी भाषा का, विशेष रूप से आ राजस्थानी की सर्वांग सरचना का, मूलभूत अग है। भाषा के व्याकरण मे इसे मात्र अपवादात्मक स्थान न देकर, इसका पूर्ण रूप से समुचित विवरण प्रस्तुत करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

२ २ अभिव्यंजक सरचना के अभिसंज्ञक सरचना से पार्थक्य को स्पष्ट करने के लिये निम्नलिखित दो उदाहरणो की पारस्परिक तुलना की जा सकती है।

(१) इण विध साच-विचार करतो हो के उणरै साथ वालो फौज उठै आय पूगी। पण उठै तौ राव अेकलो ई निगै आयो। दुसमी री फौजा रो अेक ई सिपाई उठै कोनी हा। हजारू सस्तर जमी माथै पडियोडा हा, फगत फौजा री उठती खेह सामी दीखती ही।

(२) *राव आपरी फौज रा सिपाइया नै कैयो—थे हकनाक लारै क्यू आया!* खैर थे आय गया हो तौ अबै अ खीला-पाती चुगनै आपा रै अठै ले आवो। याद बणी रैवैला कै कोई जोधा लडण सारू आया तो हा।

प्रथम उदाहरण मे जिन तलवार आदि वस्तुओ को सस्तर की सज्ञा से अभिहित किया गया है, द्वितीय उदाहरण में उन्ही को खीला-पाती अर्थात् "कील-पत्ती" आदि स सम्बोधित किया गया है। युद्ध करने के हेतु सेना द्वारा लाये शस्त्र उनके द्वारा डर कर भाग जाने पर युद्ध-भूमि पर फैंक दिये जाने से कील-पत्ती आदि हो गये। इन दोनो वाक्यो के वक्ता ने अपनी मनो-भावना के अनुकूल एक ही वस्तु का दो भिन्न-भिन्न नामो से उल्लेख करके, दोनो ही स्थितियो म शस्त्र आदि उक्त वस्तुओं के प्रति अपनी भावनाओ की अभिव्यंजना की है। शस्त्रो को खीला-पाती कह कर शत्रु का तिरस्कार, भूमि पर पडे हुए

शस्त्रों की महत्वहीनता और अपने महत्त्व का जो प्रतिपादन किया गया है, ये सारे तत्व अभिव्यजक सरचना का अग हैं।

उपरिलिखित उदाहरणों मे सरतर एव खोला-पाती दो भिन्न सज्ञाओ द्वारा भिन्न तथ्यों का सकेत किया गया है, उन्ही तथ्यों का सकेत निम्न उदाहरण म भी है किन्तु यहाँ भिन्न शब्दो के प्रयोग द्वारा ऐसा नही किया गया।

(३) अणछक डाढाळो ढबियौ। वो तू ड गडाय अठी-उठी हेरण लागौ। बाजरी रै इण खेत आगै कठै ई खोज नी ढुका। निरुवै चारू चौल्हरा इण खेत मे चापळाया दीसै। बाजरी ताळा छेक ऊभी भोला खावती ही। वो तू ड उठाय खेत साम्ही जोयौ। बाजरी री बू टी-बू टी जाणे उणरी रिछ्या हारू उमायौ ऊभौ ही। डाढाळै री जीव ई हरियौ चकन हुयग्यौ।

इस उदाहरण मे बाजरी के हवा में झूमने वाले पौधो का वर्णन करते हुए यह कहा गया है कि मानो वे शिकारियों से सुअर की रक्षा करने के भाव से आविष्ट होकर खडे है, इत्यादि। यहाँ भी वक्ता की मन स्थिति का आरोप किया गया है जो कि अत्यन्त उपयुक्त ही नही, अपनी प्रभविष्णुता से स्रोता अथवा पाठक को प्रभावित किये बिना नही रहता।

ऊपर अभिव्यजक और अभिसजक अर्थों का जो पार्थक्य दिया गया है वह आ राजस्थानी भाषा की व्याकरणिक अर्थ-तात्त्विक सरचना का अविभाज्य अग है। नीचे भाषा की विविध युक्तिया का उल्लेख किया जा रहा है, जिनसे व्याकरणिक अर्थ-तात्त्विक दृष्टि से अभिव्यजक सरचना के महत्त्व का प्रति-पादन होता है।

२ ३ सामान्यतया शाब्दिक दृष्टि से आदरार्थक, अपकर्षार्थक एव सामान्य अवस्थितियो का पारस्परिक पार्थक्य बहुज्ञात तथ्य है। नीचे इस प्रकार के पार्थक्य के भाषा के विविध सवर्गो स उदाहरण एकत्रित किये जा रहे हैं।

(क) सज्ञाओ की अभिव्यजक अवस्थिति

आदरार्थक	अपकर्षार्थक	सामान्य
छाळी (स्त्री०)	टाटो (पु०) भोनी (पु०)	बकरी (स्त्री०)
घोडली (स्त्री०)	टारडी (स्त्री०)	घोडी (स्त्री०)
रावळो (पु०)	खोलडौ (पु०)	घर (पु०)
देवी (पु०)	राड (स्त्री०)	लुगाई (स्त्री०)
बैड (स्त्री०)	खोपी (स्त्री०)	गाय (स्त्री०)

आदरार्थक	अपकर्षार्थक	सामान्य
नारियो (पु०)	{ खोपो (पु०) ढागो (पु०)	बळद (पु०)
वागलो (पु०)	बीचो (पु०)	हाडो (पु०)
बासण (पु०)	तबरो (पु०)	बर्तन (पु०)
—	खादरडो (पु०)	कांम (पु०)
सत (पु०) मातमा (पु०) }	मोडो (पु०) भगडो (पु०) }	साध (पु०)
झोटी (स्त्री०)	{ रोडो (पु०), भाड्यो (पु०), खोरो (पु०)	भैंस (स्त्री०)
गिडक (पु०)	कुतरडो (पु०)	कुत्तो (पु०)
जाखोडो (पु०) पागल (पु०) }	ढागो (पु०)	ऊट (पु०)
—	बुणकेयो (पु०) जिणोतो (पु०) }	वाप (पु०)
—	डोल (पु०)	उणियारो (पु०)
सीस (पु०)	भोडो (पु०) भोडक (पु०) खोपडो (पु०) पुटपडो (पु०) }	माथो (पु०)
बासण (पु०)	ठोकरो (पु०)	ठाम (पु०)

(ख) क्रियाओ की अभिव्यजक अवस्थिति

आदरार्थक	अपकर्षार्थक	सामान्य
(थाल) अरोगणो जीमणो }	गिटणो	खावणो
(रोटी) पोवणो	घडणो	बनावणो
पधारणो	गदणो	{ आवणो, जावणो

२ ४ आदरार्थक अपकर्षार्थक एव सामान्य के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी अभिव्यजना भाषा मे होती है। इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए नाव रौ म्यानौ शीर्षक लोककथा से सुणणौ क्रिया के भाव को कितने प्रकार से अभिव्यजित किया गया है इसके उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(४) अक खाधिया सू हौळै सी क पूछियौ—बीरा कुण चलियौ ! अमरौ

औ नाव उणरै कांनां मे सख ज्यू गु जियौ।

(५) धक जावता उणनै अक मगतौ साम्ही धकियौ। चौधरण उणरौ नाव पूछियौ। अबै नाव सुभट सुणीजियौ—धनियौ।

चौधरण रै काना औ नाम भडिद करतौ रौ टकरायौ।

(६) वे मोटियार कैयौ कै वा भली लुगाई कोनी भगतण है। चौधरण पूछियौ—वाल्हा थारौ नाव काई। भगतण मुळकनै बोली—सीता। चौधरण रै काना औ नाव बिच्छु रा ड क ज्यू लागौ।

(७) मिंदर रा हेटला पगौतिया माथै अेक कोढण बैठी माखिया उडावती ही। चौधरण दो टका झिलाय नाव पूछियौ तौ पतौ लागियौ कै उणरौ नाव है लिछमी। चौधरण रै काना बुग माथै बुग वडता ज्यू लखाया।

उपरिलिखित उदाहरणा मे समस्त रेखाकित वाक्य सुणणौ क्रिया के अभिव्यजक पर्याय हैं।

२ ५ प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य जैसा कि पहले कहा जा चुका है। मात्र आ राजस्थानी की अभिव्यजक सरचना की स्थापना करना है। व्याकरणिक सरचना के विवरण की पूर्णता की दृष्टि से इस पुस्तक के प्रत्यक अध्याय के वण्य विषय के प्रसग मे ही अभिव्यजक सरचना सम्बन्धी समस्त उपलब्ध तथ्यो को सग्रहीत कर दिया गया है। अत यहा उन्ही तथ्यो को अलग से दोबारा सकलित नही किया जा रहा।

३. संज्ञा

३ १ आ राजस्थानी सज्ञाग्रा की उनके लिंग के आधार पर दो कोटियों मे विभाजित किया जा सकता है—(क) ऐसी सज्ञाए जिनका लिंगानुसार सवर्गीकरण कतिपय प्रत्ययो का सहवर्ती होता है, और (ख) ऐसी सज्ञाए जिनका लिंगानुसार सवर्गीकरण प्रत्ययो का सहवर्ती न होकर अन्य तत्वो पर आधारित होता है।

३ २ प्रत्ययो के सहवर्ती लिंगानुसार सवर्गीकृत सज्ञाओ की लिंग व्यवस्था में अन्तर्निहित सभावनाओ को भी दो भागो मे विभाजित किया जा सकता है—(क) वे सज्ञाए *जिनके लिंगानुसार रूप सामान्यतया अभिव्यजक होते हैं, तथा (ख) वे सज्ञाए* जिनके लिंगानुसार रूप अन्य तत्वो पर आधारित होते हैं।

३ २.१ नीचे कोटि (क) की सज्ञाओ के ज्ञात वर्गों को सोदाहरण सूचित किया जा रहा है। इन सज्ञाओ मे –औ, –इयौ तथा –ई प्रत्ययो की अवस्थिति एव अनवस्थिति के आधार पर प्रत्येक सज्ञा के अधिकतम चतुर्विध रूप हो सकते हैं, यद्यपि इस कोटि की समस्त सज्ञाओ के अधिकतम सम्भावित रूप नही मिलते।

(१) प्रदत्त पुरुष नामो के लिंगानुसार रूप :

सामान्य पुंल्लिग	विशिष्ट पुंल्लिग	अल्पार्थक पुंल्लिग	स्त्री लिंग
सौन	सोनौ	सोनियौ	सोनी
आद	आदौ	आधियौ	आदी
ऊद	ऊदौ	ऊदियौ	ऊदो
राम	रामौ	रामियौ	रामी

(२) प्रदत्त स्त्री नामों के लिगानुसार रूप ·

सामान्य पुल्लिग	विशिष्ट पुल्लिग	अल्पार्थक पुल्लिग	स्त्री लिंग
प्यार	प्यारौ	प्यारियौ	प्यारी
विमल	विमलौ	विमलियौ	विमली
जसोद	जसोदौ	जसोदियौ	जसोदो
भीक	भीकौ	भीकियौ	भीकी

(३) मानवेतर एव मानव प्राणीवाचक सज्ञाओ के लिगानुसार रूप

बकर	बकरौ	बकरियौ	बकरी
तोड	तोडौ	तोडियौ	तोडी
ऊदर	ऊदरौ	ऊदरियौ	ऊदरी
बादर	बादरौ	बादरियौ	बादरी
काच	काचौ	काचियौ	कांचो
हिरण	हिरणौ	हिरणियौ	हिरणी
टोगड	टोगडौ	टोगडियौ	टोगडी
कबूड	कबूडौ	कबूडियौ	कबूडी
घट	घेटौ	घटियौ	घेटी
घोड	घोडौ	घोडियौ	घोडी
डोकर	डोकरौ	डोकरियौ	डोकरी

(४) अप्राणीवाचक सज्ञाओ के लिगानुसार रूप

काचर	काचरौ	काचरियौ	काचरी
ढोकळ	ढोकळौ	ढोकळियौ	ढोकळी
तासळ	तासळौ	तासळियौ	तासळी
वाटक	वाटकौ	वाटकियौ	वाटकी
रोट	रोटौ	रोटियौ	रोटी
जूत	जूतौ	जूतियौ	जूती
डोर	डोरौ	डोरियौ	डोरी
मटक	मटकौ	मटकियौ	मटकी
भोड	भोडौ	भोडियौ	भोडी
तू ब	तू बौ	तू बियौ	तू बी
घोर	घोरौ	घोरियौ	घोरी
खाळ	खाळौ	खाळियौ	खाळी

गेड	गेडौ	गेडियौ	गेडी
ढिगल	ढिगलौ	ढिगलियौ	ढिगली
दातळ	दातळौ	दातलियौ	दातळी
खील	खीलौ	खीलियौ	खीलो
ठीकर	ठीकरौ	ठीकरियौ	ठीकरी
ढकण	ढकणौ	ढकणियौ	ढकणी
कुलड	कुलडौ	कुलडियौ	कुलडी
खोप	खोपौ	खोपियौ	खोपी
कोथळ	कोथळौ	कोथळियौ	कोथळी
खेजड	खेजडौ	खेजडियौ	खेजडी
खोपड	खोपडौ	खोपडियौ	खोपडी
डाळ	डाळौ	डाळियौ	डाळी
गोड	गोडौ	गोडियौ	गाडी
सीगड	सीगडौ	सीगडियौ	सीगडी

(५) **विकल रूपावलो वाली सज्ञाए**

(क) प्राणीवाचक सज्ञाए जिनके सामान्य पुल्लिग रूप अनुपलब्ध हैं।

पाडौ	पाडियौ	पाडौ
मिनौ	मिनियौ	मिन्नी
छोरा	छोरियौ	छोरी
कीडौ	कीडियौ	कीडी
पावणौ	पावणियौ	पावणी

(ख) अप्राणीवाचक सज्ञाए जिनके सामान्य पुल्लिग रूप अनुपलब्ध हैं।

कवाडौ	कवाडियौ	कवाडी
डब्बौ	डबियौ	डब्बी
फरौ	फरियौ	फरी
झारौ	झारियौ	झारी
तवौ	तवियौ	तवी
डळौ	डळियौ	डळी
तडौ	तडियौ	तडी
तुरौ	तुरियौ	तुरी
बचकौ	बचकियौ	बचकी
थप्पौ	थपियौ	थप्पी
झडौ	झडियौ	झडी

छुरौ	छुरियौ	छुरी
कडौ	कडियौ	कडी

(ग) त्रिविध रूपीय सज्ञाए जिनके विशिष्ट पुल्लिग रूप अनुपलब्ध हैं।

ताकड	ताकडियौ	तावडी
काकड	काकडियौ	काकडी
टेलड	टेलडियौ	टलडी

(घ) त्रिविध रूपीय सज्ञाए जिनके अल्पार्थक पुल्लिग रूप अनुपलब्ध हैं।

थेपड	थेपडौ	थेपडी
फळ	फळौ	फळी

(ङ) त्रिविध रूपीय सज्ञाए जिनके स्त्री लिग रूप अनुपलब्ध हैं।

आकड	आकडौ	आकडियौ
धैंड	धैडौ	धैंडियौ
खरडक	खरडकौ	खरडकियौ
रौड	रौडौ	रौडियौ
खौर	खौरौ	खौरियौ
धोव	धोवौ	धोवियौ
गार	गारौ	गारियौ

(च) द्विविध रूपीय सज्ञाए जिनके सामान्य पुल्लिग और स्त्री लिग रूप ही उपलब्ध हैं।

सागर	सागरी
ताल	ताली
कुडक	कुडकी
पोपळ	पोपळी

(छ) द्विविध रूपीय सज्ञाए जिनके विशिष्ट पुल्लिग और अल्पार्थक पुल्लिग रूप ही उपलब्ध हैं।

खाजौ	खाजियौ
खवोचौ	खवोचियौ
तूडौ	तूँडियौ
मोलौ	मोलयौ

(ज) द्विविध रूपीय संज्ञाए जिनके विशिष्ट पुल्लिंग और स्त्रीलिंग रूप उपलब्ध हैं।

बिकरौ	बिकरी
खूंटौ	खूंटी
चकारौ	चकारी
अधारौ	अधारी
फूदौ	फूदी
फेरौ	फरी
थुथकौ	थुथकी

(झ) द्विविध रूपीय संज्ञाए जिनके सामान्य पुल्लिंग और अल्पार्थक पुल्लिंग रूप ही उपलब्ध है।

वूक	वूकियौ
तळाव	तळावियौ
राड	राडियौ
मोर	मोरियौ

(ञ) द्विविध रूपीय संज्ञाए जिनके सामान्य और विशिष्ट पुल्लिंग रूप ही उपलब्ध हैं।

बिगाड	बिगाडौ
सुधार	सुधारौ
उधार	उधारौ
आक	आकौ
अफड	अफडौ
अदाज	अदाजौ
आगण	आगणौ
घूंघट	घूंघटौ
फद	फदौ
वाम	वामौ
पाप	पापौ
जाळ	जाळौ
गोट	गोटौ
भपीड	भपीडौ
भचीड	भचीडौ
फटीड	फटीडौ
सटीड	सटीडौ

दटीड	दटीडौ
खळिद	खळिदौ
हबिद	हबिदौ
कचद	कचदौ
तबद	तबदौ
सीघापण	मीघापणौ
गैलापण	गैलापणौ
ग्रोछापण	ग्रोछापणौ
तीखापण	तीखापणौ
बाडापण	बाडापणौ
खरापण	खरापणौ
सुगरापण	सुगरापणौ
नुगरापण	नुगरापणौ
हळकापण	हळकापणौ
बोदापण	बोदापणौ
मिनखापण	मिनखापणौ

(द) द्विविधरूपीय सज्ञाए जिनके अल्पाधक पुल्लिग और स्त्रीलिंग रूप उपलब्ध हैं।

चौपनियौ	चौपनी
कोकडियौ	कोकडी
ताकडियौ	तावडी

३२२ -ग्रौ, -इयौ तथा -ई प्रत्ययो की ग्रवस्थिति ग्रनवस्थिति से निष्पन्न रूपा के ग्रतिरिक्त ग्रन्य प्रत्ययो से भी सज्ञाग्रो के लिग रूपा की रचना होती है। इस प्रकरण म इन इतर प्रत्ययो से निष्पन्न रूपा का उल्लेख किया जाएगा।

(१) पुल्लिग रूप से -ग्राणी प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिग रूप।

बाणियौ	वणियाणी
कवर	कवराणी
नौकर	नौकराणी
सेठ	सेठाणी
पुरोहित	पुरोहिताणी पिरोयताणी
ठाकर	ठकराणी
रजपूत	रजपूताणी
घणी	धणियाणी

भाटी	भटियाणी
तुरक	तुरकाणी
साध	साधाणी

(२) पुल्लिंग रूप से –अण प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप।

पुजारी	पुजारण
दरजी	दरजण
नाई	नायण
भिखारी	भिखारण
साथी	साथण
तली	तेलण
धोबी	धोबण
भगी	भगण
मोची	मोचण
माळी	माळण
भावी	भावण
मामो	मामण
खाती	खातण
पटवारी	पटवारण
गाधी	गाधण
मालक	मालकण
चौधरी	चौधरण

(३) पुल्लिंग रूप के साथ –णी प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप।

जाट	जाटणी
नटियो	नटणी
डाक्टर	डाक्टरणी
मास्टर	मास्टरणी
मुसलमान	मुसलमानणी
हाथी	हथणी
सिंघ	सिंघणी
बींद	बींदणी
भाट	भाटणी
खटीक	खटीकणी
सेर	सेरणी
बडियो	बडणी

(४) पुल्लिग रूप के साथ –ई प्रत्यय के याग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप ।

चारण	चारणी
वामण	वामणी
लवार	लवारी
दास	दासी
कुमार	कुमारी
गोप	गोपी
सुथार	सुथारी
कुम्हार	कुम्हारी
सरगरो	सरगरी

(५) स्त्रीलिग रूपा के साथ –औ प्रत्यय के याग से निष्पन्न पुंलिग रूप ।

स्त्रीलिंग	पुंल्लिग
चाळ	चाळौ
चाट	चाटौ
छाट	छाटौ
झाळ	झाळौ
ताक	ताकौ
गाठ	गाठौ
फाचर	फाचरौ
फु फाड़	फू फाडौ
मरण	सरणौ
सभाळ	सभाळौ
लेण देण	लेणौ देणौ
लार	नारौ
हाक	हाकौ
हु वार	हु कारौ
वचाक	वचाकौ
पचडाक	पचडाकौ
पचराक	पचराकौ
डिचकार	डिचकारौ
वुचकार	वुचकारौ
भणकार	भणकारौ
टणकार	टणकारौ
छणकार	छणकारौ
चिल्लाट	चिलाटौ

छळछळाट	छळछळाटौ
भल्लाट	भल्लाटौ
ठक्ठकाट	ठक्ठकाटौ
सवा	सवौ

(६) संस्कृत तत्सम सज्ञाए जिनके पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग भाषा म यथावत् प्रचलित हैं।

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
भगवान	भगवती
बुद्धिमान	बुद्धिमती
गुणवाण	गुणवती
बळवाण	बळवती
अभिनेता	अभिनेत्री
दाता	दात्री
विधाता	विधात्री
बालक	बालिका
पाठक	पाठिका
नायक	नायिका
अध्यक्ष	अध्यक्षा
कात	काता
प्रिय	प्रिया
स्वामी	स्वामिनी
तपस्वी	तपस्विनी

(७) फारसी-अरबी तत्सम सज्ञाए जिनके पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग रूप प्रचलित है।

सायब	सायबा
मलिक	मलिका
वालिद	वालिदा
सुलतान	सुलताना

३ २ ३ निम्नलिखित सज्ञाओ के लिंगानुसार युग्म शब्द भेद पर आधारित हैं।

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
बाप	मा
पिता	माता
साड	गाय
मोर	ढेल
धणी	लुगाई

३२४ अनेक पुल्लिग सज्ञाए ऐसी है जिनके स्त्रीलिंग प्रतिरूप भाषा मे उपलब्ध नही होते ।

चित्राम	घी	पीजरौ
खज	आटौ	दुसाकौ
मादर	गुळ	वाम
पाणी	कु जौ	होठ
साबू	भाटौ	दात
तेल	गदौ	

३२५ अनेक स्त्रीलिंग सज्ञाए ऐसी है जिनके पुल्लिंग प्रतिरूप भाषा मे अनुपलब्ध है ।

दारू	जट	जाजम	पावर
गाज	मूण	मतरज	काया
मक्कर	गिलास	ईम	आख

३२६ भाषा म अनेक सज्ञाए ऐसी है जो रूप भेद के बिना पुल्लिग अथवा स्त्रीलिंग दोनो मे अवस्थित होती है ।

तेवड	कडमड	निमास
तनपट	कळकळ	सिकार
घात	काळम	पूछ
चैन	थाग	ओखद
आळ-जजाळ	ना	बगत
थावस	काकड	

उक्त सज्ञाओ मे से कतिपय की वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(१) वा घणी वार ई समभावती कै नी नी व्है जैडी तेवड करनै रात-दिन जीमावती रू, जे मिनखा नै खावणा बद करदै तौ पण बात निभावणी तौ दैत रै हाथ ही ।

(१क) आपरै वासै आय कमेडी नेवळै अर कागळै मारू घणा ई तेवड करिया ।

(२) अबै तौ वे बाता सपनै री आळ-जजाळ हुयगी ।

(२क) रात रा सपनै मे ई उणनै धन कमावण रा ई आळ-जजाळ आवता ।

३२७ भाषा मे अनेक स्त्रीलिंग सज्ञाए हैं जिनके साथ –ई प्रत्यय के योग से अतिरिक्त स्त्रीलिंग रूप निर्मित होते हैं ।

मूल स्त्रीलिंग रूप	–ई प्रत्यय युक्त स्त्रीलिंग रूप
अतावळ	अतावळी
खळवळ	खळवळी
गाळ	गाळी
जुगत	जुगती
भड	भडी

आस और आ–अन्य आसा जो कि दोना स्त्रीलिंग हैं इसी कोटि की सज्ञाए हैं।

३ २ ८ कतिपय अन्य सज्ञाए ऐसी है जिनके मूल स्त्रीलिंग रूपो से –ई और –ओ प्रत्ययो के योग स अतिरिक्त स्त्रीलिंग और पुल्लिग रूपो की रचना होती है। यथा आट से आटी आटो ढाण से ढाणी ढाणो इत्यादि।

३ ३ आ राजस्थानी सज्ञाए सामान्यत एक तथा बहु वचन म अवस्थित होती हैं। अनेक सज्ञाए वचन सम्बन्धा इस सामान्य नियम का अपवाद हैं किन्तु उनका विवरण आग किया जायगा।

३ ३ १ वचन की दृष्टि से आ राजस्थानी सज्ञाओ के निम्नलिखित शब्दगत रूप वर्ग है —

(अ) पुल्लिग सज्ञाए

(१) ओ–अन्य सज्ञाए यथा काको छोरो बेटो टोगडियो

(२) ई–अन्य सज्ञाए यथा माळी पापी भगो

(३) ऊ–अन्त्य सज्ञाए यथा भाणू गगू

(४) आ–अन्त्य सज्ञाए यथा राजा मातमा

(५) इतर सज्ञाए यथा जाट ठाकर

(आ) स्त्रीलिंग सज्ञाए

(१) ई–अन्त्य सज्ञाए यथा जाटणी मिठाई घडी नगरी टोगडी भगोली लुगाई लुगावडी पाडी पाडकी नाडी नाडडी वाटकी नगरी मूरली

(२) आ–अन्त्य सज्ञाए यथा आसा चिता मा

(३) अनुचरित अ–अन्त्य सज्ञाए यथा रुत बिगत परात आस लालटेण, मूरत वैर

(४) इतर सज्ञाए यथा पापण माळण तलण खातण गाधण पटवारण धोबण ढोलण भावण सामण दरजण मालकण पुजारण मोचण चौधरण पातर खातर इत्यादि सज्ञाए भी स्त्रीलिंग सज्ञाओ के वग (४) म ही सम्मिलित की जा सकती है।

वाक्य-परिसरा म अवस्थिति के आधार पर उपरिलिखित सज्ञा-शब्दगत रूपवर्गो की रूप रचना की दा परस्पर अपवर्जित पद्धतिया है जिन्हे ऋजु तथा तिर्यक कारक कहा जाता है । इन दोनो परिसरो मे अवस्थिति के आधार पर उपरोक्त वर्गो की सज्ञाओ की शब्दगत वचन रूपावली का निदर्शन प्रत्येक वर्ग की कतिपय मानक सज्ञाओ द्वारा नीचे किया जा रहा है ।

	सज्ञा अग	एक वचन		बहुवचन	
		ऋजु रूप	तिर्यक रूप	ऋजु रूप	तिर्यक रूप
पु० (१)	काको	काको	काका∼काके	काका	काका
पु० (२)	माळी	माळी	माळी	माळी	माळिया
पु० (३)	भाणू	भाणू	भाणू	भाणू	भाणुआ∼भाणवा
पु० (४)	राजा	राजा	राजा	राजा	राजावा
पु० (५)	जाट	जाट	जाट	जाट	जाटा
स्त्री (१)	जाटणी	जाटणी	जाटणी	जाटणिया	जाटणिया
स्त्री (२)	आसा	आसा	आसा	आसावा	आसावा
स्त्री (३)	रुत	रुत	रुत	रुता	रुता
स्त्री (४)	माळण	माळण	माळण	माळणिया	माळणिया
	पातर	पातर	पातर	पातरिया	पातरिया

स्त्रीलिग वर्ग (२) की कतिपय सज्ञाओ के (यथा लुगाई, मिठाई आदि) रूपा मे तनिक भिन्नता है । इसका उल्लेख नीचे किया जा रहा है ।

लुगाई सज्ञा की शब्दगत रूपावली

	एकवचन	बहुवचन
ऋजु	लुगाई	लुगाया
तिर्यक	लुगाई	लुगाया

मिठाई सज्ञा की रूपावली भी लुगाई शब्द के समान है ।

लुगाई शब्द के अभिव्यजक रूप लुगावडकी की रूपावली निम्नलिखित है ।

	एकवचन	बहुवचन
ऋजु	लुगावडकी	लुगावडक्या
तिर्यक	लुगावडकी	लुगावडक्याँ

उच्चारण भेद के कारण कोई लेखक समस्त –ई अन्त्य सज्ञाओ के बहुवचन रूप (स्त्रीलिग सज्ञाओ के ऋजु और तिर्यक तथा पुल्लिग सज्ञाओ के केवल तिर्यक) लुगावडकी

संज्ञा के समान लिखते हैं। यथा माल्यां (माळी तिर्यक बहुवचन) अथवा माड्यां (माडी ऋजु तथा तिर्यक बहुवचन) इत्यादि। इसी प्रकार स्त्रीलिंग वर्ग (४) की संज्ञाओं की भाषा में स्थिति है।

३ ३ २ कतिपय अल्पार्थक पुल्लिंग संज्ञाओं और उनकी प्रतिरूपीय –ई अन्त्य संज्ञाओं की शब्दगत रूपावली में, विशेष रूप से तिर्यक बहुवचन में, रूपगत अस्पष्टता आ जाती है। यथा, कावरियौ (अल्पार्थक पुल्लिंग) तथा कावरी (स्त्रीलिंग) दोनों का तिर्यक बहुवचन रूप कावरियां~कावरयां हो होगा। इस प्रकार की स्थितियों में अवस्थिति-सदर्भ के आधार पर ही अस्पष्टता का निराकरण किया जा सकता है।

३ ३ ३ अनेक संज्ञाओं के सम्बोधनात्मक रूप भी भाषा में प्रचलित हैं। सामान्यतः सम्बोधनात्मक और तिर्यक रूपों में कोई भेद नहीं होता। कतिपय संज्ञाओं के सामान्य सम्बोधनात्मक रूपों के अतिरिक्त अन्य रूप भी भाषा में प्रचलित हैं जो कि अभिव्यंजक होते हैं। यथा माळी संज्ञा के सामान्य सम्बोधनात्मक रूपों अे माळी (एक वचन) और अे माळियां (बहुवचन) के अतिरिक्त अभिव्यंजक सम्बोधनात्मक रूप हैं अे माळा (एक वचन) तथा अे माळां (बहुवचन) इत्यादि।

सामान्य सम्बोधनात्मक बहुवचन का एक व्यक्ति के लिए आदरार्थक प्रयोग भी होता है।

३ ३ ४ अनेक समूहवाची संज्ञाएं अन्तर्निहित बहुवचन में होने के कारण शब्दरूपगत दृष्टि से बहुवचन में अवस्थित नहीं होती। इस कोटि के कतिपय उदाहरण हैं। समस्त सामान्य पुल्लिंग संज्ञाएं, जिनका विवरण प्रकरण संख्या (३ २) में किया जा चुका है, तथा कतिपय अन्य संज्ञाएं यथा मांनखौ, माव, कमठाण, दाव~धाव, पसेव, नदियांण, हमायत, तमामत, जोमलियार इत्यादि।

माईत, टाबर, जनेतर आदि शब्द, यद्यपि स्त्री अथवा पुरुष व्यक्तियों का समुद्देशन करते हैं फिर भी इनकी शब्दगत रूपावली पुल्लिंग वर्ग (५) के समान ही होती है।

अनेक संज्ञाएं, यथा भाइयौ, मलादल, काया, ओल्द एकवचन में ही अवस्थित होती हैं। इस कोटि की संज्ञाओं की सूची काफी विस्तृत है।

इस प्रकरण में वर्णित अपवाद स्वरूप संज्ञाओं के विषय में और अधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

३ ४ आ राजस्थानी में दो संज्ञाओं की परस्पर आसक्ति से यौगिक संज्ञाओं की रचना होती है। इस प्रकार की यौगिक संज्ञाओं के तीन वर्ग हैं—(क) मानववाची यौगिक संज्ञाएं, (ख) मानवेतर प्राणीवाचक यौगिक संज्ञाएं तथा (ग) वस्तु इत्यादि वाचक यौगिक संज्ञाएं।

३.४१ मानववाची यौगिक सज्ञाओं के उनमे अवस्थित अग-स्वरूप सज्ञाओं के लिंग और क्रमानुसार निर्मित चारो कोटियो के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

पुल्लिग-स्त्री लिंग यौगिक सज्ञाएँ

ठाकर—ठकराणी	साध—साधाणी
सेठ—सेठाणी	सामी—सामण
राजा—राणी	भगी—भगण
राजपूत—राजपूताणी	ढोली—ढोलण
चारण—चारणी	भाबी—भावण
बामण—बामणी	दरजी—दरजण
तेली—तेलण	दोहितौ—दोहती
सुथार—सुथारी	लोग—लुगाई
खाती—खातण	धणी—लुगाई
लवार—लवारी	बींद—बींदणी
कुम्हार—कुम्हारी	छोरौ—छोरी
सरगरौ—सरगरी	दादौ—दादी
दास—दासी	भाई—भोजाई
पटवारी—पटवारण	काकौ—काकी
चौधरी—चौधरण	मामौ—मामी
पुजारी—पुजारण	नानौ—नानी
मालक—मालकण	बींद—बहू
डोकरौ—डोकरी	भाई—बैन
बेटौ—बेटी	भाणजौ—भाणजी
मासौ—मासी	जेठ—जेठाणी
देवर—देराणी	साळौ—साळी

स्त्री लिंग-पुल्लिग यौगिक संज्ञाएँ

मा—बाप	बैन—भाई
मामु—सुसरौ	मामी—भाणजौ
देवी—देवता	भुवा—भतीजौ
छोरी—छोरौ	बैन—बहनोई

पुल्लिग-पुल्लिग यौगिक सज्ञाएँ

राजा—रक	गरीब—गुरबौ
चोर—साहूकार	गरीब—ग्रम।र

कुटम–कबीलौ	बूढौ–बडेरौ
नौकर–चाकर	वैरी–दुस्मी
ठाकर–ठेठर	किमाण–मजूर
बाळ–बिचियौ	

स्त्रीलिंग-पुल्लिग यौगिक सज्ञाएँ

भुवा–भतीजो
मा–बेटी
नणद–भौजाई
मासी–भाणजी
बैन–बेटी
मामू–वहू
बाई–माई
देराणी–जेठाणी

लोक म प्रसिद्ध व्यक्तिया के नामो म पुरुष-स्त्री अथवा स्त्री-पुरुष के क्रम से व्यक्तिवाचक यौगिक सज्ञाओ के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

पुरुष स्त्री यौगिक सज्ञाएँ	स्त्री पुरुष यौगिक सज्ञाएँ
ढोला–मरवण	सीता–राम
शिव–पार्वती	राधा–कृष्ण
कृष्ण–रुक्मिणी	सोरठ–बीझौ
जेठवा–ऊजळी	निहालदे–सुल्तान
जलाल–बूबना	सयणी–बीजानद
नल–दमयन्ती	रम्भा–हमीर

३ ४ २ मानवेतर प्राणीवाचक सज्ञाओ से निर्मित यौगिको के भी मानववाची सज्ञाओ के समान ही चार वर्ग होते है।

पुल्लिग-स्त्रीलिंग यौगिक	स्त्रीलिंग-पुल्लिग यौगिक
सेर–सेरणी	गाय–बळद
कबूडो–कबूडी	सर्भ–पाडौ
घोडौ–घाडी	कीडी–मकौडो
हाथी–हथणी	
गधौ–गधी	
बछेरौ–बछेरी	
बिछियौ–बिछकी	

कागलौ–कागली
चिडौ–चिडी

पुल्लिग-पुल्लिग यौगिक	स्त्रीलिंग-स्त्रीलिंग यौगिक
पद्धी–जिनावर	चिडी–कमेडी
	गाय–भैंस

३ ४ ३ वस्तु इत्यादि वाचक यौगिक सज्ञाओ मे उनमें अवस्थित अगो के लिंग का महत्त्व उतना नही जितना कि परस्पर आसन्न अवस्थित सज्ञा युग्मो का। इस प्रक्रम द्वारा ममिश्र कोटि की सकल्पनाओं का भाषा मे प्रजनन होता हैं। यथा—छाण-वीण, जमीं-जायदाद, दान-पुन्न, दवा-दारू, धन-माल इत्यादि। ये समस्त सज्ञा युग्म ऐसे हैं जिनमें प्रत्यक युग्म के दोनो अग सामाजिक प्रथाओं के आधार पर माथ-माथ अवस्थित होते हैं। जैसे जमीं-जायदाद का अर्थ है 'जमीन, जायदाद एव इनकी समिश्र कोटि म सम्मिलित की जा सकने वाली अन्य वस्तुएँ इत्यादि।" इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कोश मे प्रदत्त अर्थों के अनुसार इन यौगिकों का अर्थ उनके अगो के योगफल से अतिरिक्त है।

इस कोटि की यौगिक सज्ञाओं के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे सूचित किय जा रह हैं।

छळ–कपट	हरख–उच्छव	चारौ–पाणी
छळ–छद	हीरा–मोती	चिलम–तबाकू
छळ–प्रपच	हीरा–जवारात	चीज–वुस्त
छळ–बळ	हीडौ–चाकरी	घुगौ–पाणी
छाण–वीण	हाय–तोबा	चौका–परिंडो
छिडका–छाटा	चाल–चलगत	जात–पात
जाच–पडताल	सिरख–पथरणौ	फळ–फूल
पूस–बाईंदो	पत्ता–पानडा	पुन्न–परताप
पुराण–सास्तर	कुरब–कायदौ	फूका–रोळौ
केसर–कस्तूरी	सोनौ–चादी	खरच–खातौ
समद–तळाव	साठ–गाठ	माज–माद
लाड–कोड	साळ–सभाळ	सिनान–सपाडौ
सिनान–पाणी	सीर–मस्कार	सुख–आणद
सँध–पिछाण	सेवा–वदगी	सैर–सपाटौ
सोच–विचार	रगडौ–झगडौ	राव–रत्तो
राळी–गूदडा	रीझ–खीज	रूप–रग
रोटी–गाभा	रोळौ–दगौ	वारौ–न्यारौ
लाग–लपेट	लाज–विपदा	लाज–मरम

लाड–दुलार	लिहाज–लचको	लुका–छिपी
लेणो–देणो	काण–कायदो	माण–ताण
माया–सपत	माल–मलीदा	भाग–मुलका
मोह–परीत	मौज–मजा	पूजा–पाठ
बाटा–चूटा	बात–बिगत	साज–माद
बिणाव–सिणगार	बिस–इमरत	धरम–अधरम
सुख–दुख	दिन–रात	जलम–मरण
बेरो–बावडी	व्रत–उपवास	जप–तप
भाटा–दग्गड	अतर–फुलेल	कागद–पतर
अरजी–पानडो	आगो–लारो	आफत–बिपदा
आळ–जजाळ	आव–आदर	इनाम–इकरार
ओळख–पिछाण	ओखद–उपचार	करम–धरम
काम–धधो	काम–काज	काम–हलीलो
नाव–नामून	धरम–ध्यान	धरम–करम
नावो–लेखो	दया–मया	दाणो–पाणी
दुख–दरद	देण–दाफ	धन–माल
खिखरा–ठट्ठा	गरब–गुमाण	गाजा–बाजा
गाभा–लत्ता	गंणो–गाठो	घडी–पलका

३४४ समस्त मानववाची एव मानवेतर प्राणी-वाचक यौगिक सज्ञाओ की लिगानुसार निम्न कोटिया है —

(क) पुरुष + स्त्री
(ख) पुरुष + पुरुष
(ग) स्त्री + पुरुष
(घ) स्त्री + स्त्री

कोटि (क), (ख), (ग) की यौगिक सज्ञाए पुल्लिग होती हैं, और कोटि (घ) की सज्ञाए स्त्रीलिग ।

समस्त वस्तु इत्यादि वाचक सज्ञाओ की उनम अवस्थित घटको की सख्येयता अथवा असख्येता के आधार पर दो उपकोटिया हो जाती है । इनम सख्येय वस्तु इत्यादि वाचक सज्ञाओ का लिगानुसार वर्गीकरण भी मानववाची एव मानवेतर प्राणीवाचक सज्ञाओ के समान होता है । किन्तु असख्येय वस्तु इत्यादि वाचक यौगिक सज्ञाए सामान्यतया चार उपकोटियो मे विभाजित हो जाती हैं ।

(क) पुल्लिग + स्त्रीलिग
(ख) स्त्रीलिग + स्त्रीलिग

(ग) पुल्लिग + पुल्लिग
(घ) स्त्रीलिंग + पुल्लिग

कोटि (क) (३-५) और (ख) (६) की यौगिक सज्ञाए स्त्रीलिंग होती है, तथा कोटि (ग) (७-९) और (घ) (१०-१२) की सज्ञाए पुल्लिग।

(ख) (३) दूजो जोर ई काई हो। बैन-बहुवा रै साथै हवेली री सगळी सुख-सांयत ई बिलायगी।

(४) पुरखा रै इण गांव री मोह-परीत छोडनै थू दिसावर मे कमाई सारू अवस जाजै।

(५) वा तौ किणी री मान-मनवार नी करी। रूपा रा कठोम्दाण सू आधी लाडू तोडनै झट मू डा म धरियो।

(ख) (६) रतो माया रौ धणी हुवता थका ई उण सेठ रै मोठ-मरजाद नैडी आगी ई नी ही।

(ग) (७) वो आखिया मीचनै इण भात रौ सोच-विचार करतौ ई हौ कै राजाजी रौ असवार जतावळ करतौ बोलियौ—सता अबै काई हुकम फरमावौ।

(८) मिनख जीवन मे ई सगळा धरम-करम, भगती अर ग्यान है। जीवणै-जीवणै म फरक हुय सकै, आ बात म्हैं मानू।

(९) थारौ करम-धरम था रै साथै। म्हैं तौ ठीकरी माथै लिखनै सही कर दू ला।

(घ) (१०) म्हारै पूजा-पाठ मे किणी तरह रौ राफो नी पडणौ चाहीजै। नवलखै हार री बात अबै कालै तडकै ई व्हैला।

(११) सासू गाळी री नाव सुणियौ'र बोली ई—मर बळजाणी! हित्यारी पापण! थारा हाथ री रोटी-पाणी छोडणी पडसी।

(१२) रेसमी पोसाक माथै लागियोडी जरी-गोटो ई अधारै मे पळापळ करतौ हो।

३ ४ ५ शब्दगत रूप रचना की दृष्टि से समस्त यौगिक सज्ञाओ की तीन कोटिया हो सकती है —

(क) ऐसी यौगिक सज्ञाए जिनके द्वितीय घटक के साथ शब्दगत रूप प्रत्ययो का योग होता है।

(ख) ऐसी यौगिक सज्ञाए जिनके दोनो घटको के साथ शब्दगत रूप प्रत्ययो का योग होता है।

(ग) ऐसी यौगिक सज्ञाए जिनके शब्दगत रूप सामान्यत कोटि (क) के समान होते हैं, किन्तु इसके अतिरिक्त तिर्यक बहुवचन मे विकल्प से कोटि (ख) के समान दोनो घटको के साथ शब्दगत रूप प्रत्ययो का योग भी हो सकता है।

इन तीनो कोटियो की यौगिक सज्ञाओ की शब्दगत रूपावली के उदाहरण नीचे दिये जा रहे है।

सज्ञा	एक वचन		बहुवचन	
कोटि	ऋजु रूप	तिर्यक रूप	ऋजु रूप	तिर्यक रूप
(क)	कुटुम-कबीलो	कुटम-कबीला	कुटम-कबीला	कुटुम-कबीला
	टाबर-बूढो	टाबर-बूढा	टाबर-बूढा	टाबर-बूढा
	छळ-कपट	छळ-कपट	छळ-कपट	छळ-कपटा
	घडी-पलक	घडी-पलक	घडी-पलका	घडी-पलका
	जाच-पडताल	जाच-पडताल	जाच-पडताला	जाच-पडताला
	कीडी-मकोडो	कीडी-मकोडा	कीडी-मकोडा	कीडी-मकोडा
	रोटी-गाभो	रोटी-गाभा	रोटी-गाभा	रोटी-गाभा
	मान-मनवार	मान-मनवार	मान-मनवारा	मान-मनवारा
(ख)	गाभो-लत्तो	गाभा-लत्ता	गाभा-लत्ता	गाभा-लत्ता
	खुणो-खोचरो	खुणा-खोचरा	खुणा-खोचरा	खुणा-खोचरा
	पत्तो-पानडो	पत्ता-पानडा	पत्ता-पानडा	पत्ता-पानडा
	चोर-साहूकार	चोर-साहूकार	चोर-साहूकार	चोर-साहूकारा
	छळ-बळ	छळ-बळ	छळ-बळ	छळा-बळा
	गाय-भैंस	गाय-भैंस	गाया-भैंसा	गाया-भैंसा
	बात-बिगत	बात-बिगत	बाता-बिगता	बाता-बिगता
(ग)	बरतन-बासण	बरतन-बासण	बरतन-बासण	{ बरतन-बासणा { बरतना-बासणा
	ठाकर-ठेठर	ठाकर-ठेठर	ठाकर-ठेठर	{ ठाकर-ठेठरा { ठाकरा-ठेठरा
	ठाम-ठीकरो	ठाम-ठीकरा	ठाम-ठीकरा	{ ठाम-ठीकरा { ठामा-ठीकरा
	बेल-पानडो	बेल-पानडा	बेल-पानडा	{ बेल-पानडा { बेला-पानडा

उपरिलिखित ओ-अन्त्य सज्ञाओ के वैकल्पिक तिर्यक रूप (यथा पानडो से पानडँ) का उल्लेख नही किया गया है।

उपरिलिखित रूपावलियो के अतिरिक्त अनेक यौगिक सज्ञाओ के रूप भाषा मे रूढ हैं। इनके नीचे दिये हुए रूपो के अतिरिक्त रूप नही होते।

खोसा-लूटो	राजा-रक	धणी-धोरी
ताळा-कूची	चाल-चलगत	धन-माल
दया-मया	जमी-जायदाद	धन-सपत
दान-पुन्न	छाण-बीण	निसाण-पातो
गरब-गुमान	धरम-करम	नाग-नामून

कई यौगिक सज्ञाए मूल म बहुवचन म ही होती हैं यथा हीरा-जवाहरात हीरा-जवाहराता, खिखरा-ठट्ठा खिखरा-ठट्ठा इत्यादि।

३४६ सहिति अथवा प्रमाणाधिक्य वाचक बहुवचन की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है—(१३-१५)।

(१३) उठै धान री काई तोटो—ढिगला धान पडियो।

(१४) उणरै उठै अनाप मनाप गाया-भैंस्या इण सारू वो मणा दूध सैर बेचण जावै।

(१५) थोडा दिना मे ई पीजारो बरसा बूढो हुयग्यो।

३४७ अनेक सज्ञाए सामान्यतया बहुवचन मे ही अवस्थित होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१६) आ बात सुणनै मगळा जिनावर उण खिरगोस रा भौर थेपडिया।

(१७) मासरै रौ उमायौ धर सू बहीर हुयौ अर मारग मे ईं मौत शू भेटका हुय गया।

(१८) दूजोडौ भाई राजकवरी नैं तलण री वात वताई तौ राजाजी रा होस गुम हुय ग्या।

(१९) म्हारी निजरा औ सगळौ ई नजारौ जोयौ।

(२०) दोनू हाथा म भागा चढी चरी लेय वा बा रै पाखती आई।

(२१) उणरी खीभ तौ जाणै आकासा चढगी। गोफणवाळौ रै साम्ही तौ उणरौ माथौ ई ऊचौ नी हुयौ।

(२२) भूडण लाजा मरती बोली—आ बात सुणनै तौ म्हनै थारी अकल रौ ई पीदौ उघडतौ दीसै।

(२३) माळण नै आदेस फरमाय सेजां फूल मगावण री महर करावौ म्हैं जिण काम मे हाथ घालू वो तौ पार पडै इज।

३.४८ संज्ञाओ की तिर्यक बहुवचन मे आदरार्थक एवं संज्ञा-समुद्देशक अवस्थिति भी होती है। इन अवस्थितियो के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२४) म्हे तौ पछै सगळी लाज-सरम नै आगी न्हाखनै पांवणां रै गाभा माथै हाथ पेरिया।

(२५) पण अणछक उणरै काना अेक कुम्हारी रै मूडै एक अजब ई वात री सुरपुर सुणीजो—देखौ अै मावड़िया आ सेठां री हवेली कॅडी पटकी पडी।

(२६) खतोड म मावै जकी ई पँलपोन आ इज वात पूछै कै कारीगरा काई करो।

३.५ आ राजस्थानी म संज्ञा$_1$ + का + संज्ञा$_2$ (= स$_2$ का स$_2$) रचनाओ की पर्याप्त जटिल और समुन्नत व्यवस्था है जिसका इस भाषा की अभिव्यंजक संरचना से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। इन रचनाओ मे अवस्थित स$_2$–घटक अपने सहवर्ती स$_2$–घटकों की अर्थ-तात्त्विक वृत्तियो का निर्धारण करते हैं। यथा वाक्य संख्या (२७ २८) मे

(२७) दुख अर विखै रौ अधारौ नॅडो ई नी फरुकेला।

(२८) माया रै अधारै म भटकै परमात्मा रै अखड उजास म अलघ उडाणा भर।

अवस्थित रचनाए दुख अर विखै रौ अधारौ तथा माया रौ अधारौ ऐसी रचनाए हैं जिनम स$_1$–घटको दुख अर विखौ तथा माया दोनो म अधारौ नामक तत्त्व अथवा गुण के अन्तर्निहित होने की सकल्पना विद्यमान है। यहाँ दुख अर विखौ तथा माया पर अधारौ का मात्र वक्ता दृष्टिकोण से अध्यारोपण ही न होकर अर्थ-तात्त्विक दृष्टि से इन स$_1$–घटको की अन्धकारमयता (बौद्धिक कुण्ठाजन्य मानसिक स्थिति) का उद्घाटन किया गया है जो कि एक व्यावहारिक एव सामाजिक सत्य है। इन वाक्या म आलकारिकता के साथ-साथ अंधारौ स$_2$–घटक द्वारा दुख अर विखौ तथा माया नामक सकल्पनाओ का जो आविर्भूत मूर्तीकरण किया गया है, वह व्यावहारिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तो है ही, किन्तु इसके अतिरिक्त राजस्थानी भाषा-भाषी समाज की रीति-नीतियो और मान्यताओ का निर्धारक साधन भी।

व्याकरणिक दृष्टि से दोना वाक्यो म फरुकेला (२७) और भटकै (२८) क्रियापदा का चयन भी इनमे अवस्थित स$_2$–घटको मे सम्बन्धित है।

स$_1$ का स$_2$ रचनाओ का, उनम अवस्थित स$_2$–घटका के प्रकार्यों के आधार पर, निम्न प्रकार से कोटि विभाजन किया जा सकता है

(क) गुणबोधक स$_1$ का स$_2$ रचनाए

(ख) बहुलताबोधक स$_1$ का स$_2$ रचनाए

(ग) स्वल्पताबोधक स$_1$ का स$_2$ रचनाए

(घ) सीमाबोधक स$_1$ का स$_2$ रचनाए
(ङ) माप निर्धारक स$_1$ का स$_2$ रचनाए
(च) विशिष्टिकृत स$_1$ का स$_2$ रचनाए

३ ५ १ गुणबोधक रचनाओं की वाक्यो म अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किय जा रह हैं।

(२९) सेवट मूंड री टोकरी ववराणी सा माथै ई आवणी ही।

(३०) बीनणी मुळक री धार रै सागै मोसा री डक मारती बोली—थें को जाणी ई हो ?

(३१) नित हिवडै म बिछोव री लाय लागै अर उणनै आंखियां रै पाणी सू नित बुझाणी पडै।

(३२) ववरा रै अदीठ हुया राजा डग-डग हुमियो। बिसरा करतो कैवण लागो—मोठी बोली री वासणी सू आरा खोटा करम ख।। नी हुय सकै।

(३३) राजकवरी पैला तो थोडी मुळकी, पण तुरत मुळक नै रीस रै ढकणा सू ढाक दी।

(३४) गिरस्ती रो अरटियो गणण-गणण घूमण लागो।

३ ५ २ बहुलताबोधक रचनाओं की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किय जा रह है।

(३५) दटा री उजियाळो देख-दख वा बिलै रै मालरा री ई भार ऊचाय सकै

(३६) ममोवा रा माखर गुडकावता-गुडकावता वे सेवट मामलै घडै माथै धूगा ई।

(३७) असमान जोगी वारै आसुवा री लडिया देख डग-डग हसण ढूकै जकी ढबै ई नी।

(३८) डील सू सौरम री भभरोळा फूटै।

(३९) लोगा कैयो तौ म्हनै भरोसो नी हुयो। निजरा सू पतवाणियां पछै हसी री तू ताड़ियां मतै ई छूटगी।

(४०) तूटियोडी टागा सू लोई रा रेला बहण लागा।

३ ५ ३ स्वप्ना-बोधक रचनाओ की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(४१) दुख अर बिलै री तो पाछी सपनो ई नी आयो।

(४२) उण दिन रै विजोग पछै की खायो-पीयो नी। आखिया मे नींद रो कस ई नी आयो।

(४३) झमझम करता धरती माथै पग दियौ पण कठै ई चानणै री तिरण ई निगै नी आई ।

३ ५ ४ सीमा-बोधक रचनाओ की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

(४४) सो पेट रै प्रयाग खाडा नै भरण सारू वा मौत सू ई बता नळाप करिया जणै बुढ़ापै री माठ लग पूगी ।

(४५) रीस री पौंदी फाटता ई उणरै होठा खिल-खिल हसी नाचण ढूकी ।

(४६) वा री बाता सुणनै बेटी री रीस री तळी आय ग्यो हो ।

३ ५ ५ माप-निर्धारक रचनाओ की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखत हैं ।

(४७) राजकवरी अपूठी ऊभी ही । कडिया रळकता सोना रा केस जाणै सूरज री किरणां री झूमकौ विखरियोडौ ।

(४८) हीरा-मोती, लाला अर गुलाल री ढिग हुय ग्यौ ।

(४९) बेटी रै ब्याह मेर ई उजास री पु ज दमकतौ हो ।

(५०) सुणी कै आपरी हवेली मे तौ माया रा भडार भरिया ।

(५१) बतूळिया रा गोट माथै गोट उठावतौ, माटी रा गिडा ठोकरा सू उछाळतौ देत दो घडी दिन चढिया आपरी हवेली तौ आयौ इज ।

(५२) सोगरा मे उदई रा ढेपा थेपडीज ग्या हा ।

इसी कोटि की कतिपय अन्य रचनाए हैं—चिड़ियां री झूळ, गायां री छाग सिघणियां री भु ड, पिणियारिया री झूलरौ हाडा री जान टाबरां री टोळ लुगायां री मेळौ इत्यादि ।

३ ५ ६ विशिष्टिकृत मूर्त्तता-बोधक रचनाओ के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

पीड री सळावौ	सुख रा दिन	मरदा री जात
हौल री उठाव	ईसका रा झपीड	सिंघा री जात
हरख री फु दिया	पवन रा लहरका	
आणद री ज्वार	मिनख री खोळियौ	
रूप री झाळ	लुगाई री जमारौ	
दरद री चटीडौ	मसाण री ठायौ	

३ ६ आमेडित सज्ञा अनुक्रमो के भाषा मे विविध प्रकार्य हैं । इस प्रकरण मे उनका सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है ।

(क) निम्नलिखित उदाहरणो मे आमेडित संज्ञा अनुक्रमो का अर्थ है 'प्रत्येक अथवा एक-एक करके सब" (५३, ५४)।

(५३) झट अपळ-गपळ हुकम फरमाय दियौ कै बाजरी रौ बूंटौ-बूटौ सूं द न्हाकौ।

(५४) पण आज रै दिन भाग फाटा पैली-पैली जद उणरी सासू घर-घर मे जायनै सोगरा वाळी बात बताई तौ लोग सुणनै वगना हुय ग्या।

(ख) निम्न उदाहरण मे आमेडित संज्ञा अनुक्रम का अर्थ है "बार-बार" (५५)।

(५५) महात्मा घडी-घडी कैंवतौ—भला मिनखा! म्हारै हाथ मे की सिद्धाई कोनी।

(ग) निम्न उदाहरणो मे अवस्थित अनुक्रमो मे प्रत्येकता अथवा समस्तता के साथ-साथ तीव्रता की ध्वनि भी विद्यमान है (५६, ५७)।

(५६) म्हैं अैडौ काई कसूर करियौ। वा! म्हारी बोटी बोटी छून न्हाखौ पण म्हारै गुमान री रिछ्या करौ।

(५७) बादरा री फींदी-फींदी बिखरगी।

(घ) निम्न उदाहरणो मे कथित क्रिया-व्यापार की मात्र आवृत्ति का उल्लेख है (५८, ५९)।

(५८) कबूतरा हरख सूं गुटरगूं-गुटरगूं करण लागा।

(५९) साप सळपट-सळपट करतौ पाछौ पीपळी माथै चढण लागौ कै नोळियौ पेर पूंछ पकड़नै नीचौ ताणियौ।

(ङ) निम्न उदाहरणो मे आमेडित संज्ञा अनुक्रम एक ही संज्ञा की आवृत्ति से उनके वाच्यार्थ मे भेद की ध्वनि वर्तमान है (६०, ६१)।

(६०) राजा-राणी रै हरख रौ पार नी। हिवडै रै हरख-हरख रौ सचौ न्यारौ हुयां करै। कोई हार देय राजी व्है तौ कोई हार घाल राजी व्है। जित्ता हिवडा उत्ता ई हरख।

(६१) हाल तौ घणा बरसा ताई औ ठागौ चलावणो है। हाल अैडौ लाबौ-चोडौ सुख ई काई पायौ। फगत धूणी-धूणी तापी है।

(च) निम्न वाक्यो मे आमेडित संज्ञा अनुक्रमो द्वारा परिमाणाधिक्य अथवा अमूल्य अथवा बाहुल्य ध्वनित हो रहा है (६२, ६३)।

(६२) राजकवर अरडां-अरडा रोया। राजा री आंखिया मे ई आसू आय ग्या।

(६३) इण खाग दीवाण वद रै लारै धोबां-धोबां धूड़ ।

(छ) निम्नलिखित रो-अन्तर्निविष्ट अनुक्रमा मे अप्रत्याशितता के साथ-साथ वाच्य की सम्पूर्णता का उल्लेख है (६४, ६५) ।

(६४) दैत खेजड़ो री खेजड़ो उठाय लायी ।

(६५) तीन दिना म दाणो रो दाणो मिरयू भेळो नी करै तो मायो वाढण रो आदेस ।

(६६) वा बोली-बोली सगळी गैणो-गाठो तौब रो तौब उतार दियो ।

(ज) मार्थ अन्तर्निविष्ट अनुक्रमा मे चरम तीव्रण का अर्थ ध्वनित होता है (६७, ६८) ।

(६७) हाका री घडिग माथै घड़िग उडण लागी ।

(६८) काळ माथै काळ पडण लागा । कुदरत ई मिनखा री सस्तो री वासो छोड उण जगळ म बेगम डेरा जमाय लिया ।

(झ) ई—अन्तर्निविष्ट अनुक्रमा मे सज्ञाओ के वाच्य के परिमाणाविषय चरमावस्था के साथ-साथ इतर किसी वस्तु अविद्यमानता का बोध होना है (६९ ७०) ।

(६९) च्यारू खानी गुळी-मरणो पाणी । पांणी ई पांणी । इण पाणी रो तौ नी कोई थाग अर नी कोई पार ।

(७०) पयाळ लोक री तौ माया ई अनूठी । सोनै-रूपै रा रूख । हीरा-मोतिया रा झूमका । धरती माथै कांकरा री ठौड मिणियां ई मिणियां ।

(ञ) निषेध-निपात के साथ पर्याय-पदो की आवृत्ति के उदाहरण निम्नलिखित हैं (७१, ७२) ।

(७१) नीं कोई मो नी कोई डर । आपरी नीद सूवना और आपरी नीद ऊठता ।

(७२) चिडो अर चिडै रै आणद रो कोई पार 'न कोई छेह ।

(ट) आमेडित सज्ञा अनुक्रमा के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे सूचित किय जा रहे हैं (७३, ७६) ।

(७३) रात-रात म्हारै पेट मे सुणी बात समा रैवै तो दिहुगै नै आफर ढोल हुय जाऊ ।

(७४) सोनन मछी पाणी पाणी सल्हूई नै सेय माय वडगी ।

(७५) स्याळ री जात—छूटा मायलौ छूट ।

(७६) औ वैगा सू वैगा इण राग वारै निकळै जको बात करौ, पछै म्हारै सू मला बिचारण री मन मे लावो, पैला म्हे थेक सबद ई नी सुणणी चावू ।

४. सर्वनाम

४ १ आधुनिक राजस्थानी सर्वनामो को निम्नलिखित वर्गों मे परिगणित किया जा सकता है।

४.१ १. पुरुषवाचक—

			एक वचन			बहु वचन	
उत्तम पुरुष			म्हैं	"मैं"	अभिनिहित	आपाँ	'हम"
					नमर्याद	म्हे	"हम"
मध्यम पुरुष		सामान्य	थू	"तू"		थें	"तुम, आप"
		आदरार्थ	–			आप	
अन्य पुरुष	आसन्न	पुल्लिग	ओ	"यह"		अैं	"ये"
		स्त्रीलिग	आ	"यह"			
	व्यवहित	पुल्लिग	वो	'वह"		वे	"वे"
		स्त्रीलिग	वा	"वह"			

उत्तम पुरुष एक वचन म्हैं का वैकल्पिक रूप हूं भी है।

पुरुष वाचक सर्वनामो के तिर्यक रूप निम्न सारणी मे सूचित किये जा रहे हैं।

पुरुष वाचक सर्वनाम का ऋजु रूप	बद्धतिर्यक रूप — अवस्थिति के परिसर: कर्त्ता स्थानीय	— नै	— रो, — णो	अन्य परसर्ग	स्वतन्त्र तिर्यक रूप
म्हैं	ऋजु रूप के समान		म्हनै म्हारो	—	—
आपै	,,	आपानै	आपारो~ आपाणो	—	आपा
म्हे	,,	म्हानै	म्हारो	—	म्हां
थू	,,	थनै	थारो	—	—
थें	,,	थानै	थारो-थाणो	—	था
आप	,,	आपनै	आपरो	—	आप
औ, आ	इण	इणनै~इन्नै	इणरो	—	इण
अै	इणां	इणानै~इयानै ~आनै	इणारो~इयारो ~आरो	—	इणा~आ
वो, वा	उण	उणनै~उन्नै उवैनै	उणरो	—	उण
वे	उणा	उणानै~उवानै ~वानै	उणारो~उवारो वारो	—	उणा~वा

४ १ २ निजवाचक

आप, आपै, आपोआप, सुतै, मतै, खद, खुदोखुद, सापत, सैंदरूप

उपरिलिखित निजवाचक सर्वनामो के अतिरिक्त विशेषण स्थानीय परिसरो मे समस्त पुरुषवाचक सर्वनामो के निजवाचक रूप उनके सम्बन्धवाचक रूपो के समान ही होते हैं। ये समस्त रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम रूप	उसका सम्बन्ध वाचक अथवा विशेषण स्थानीय निजवाचक रूप
म्हैं	म्हारौ
आपां	आपारौ आपाणौ
म्हे	म्हारौ
थू	थारौ
थें	थारौ
आप	आपरौ
औ / आ	इणरौ
अै	इणारौ
वो / वा	उणरौ
वे	उणारौ

विकल्प से समस्त अन्य पुरुष सर्वनामों का विशेषण स्थानीय निजवाचक रूप आपरौ भी हो सकता।

आदरार्थक विशेषण स्थानीय निजवाचक रावलौ की भी भाषा म अवस्थिति होती है।

साम्रत "व्यक्तिगत रूप से, प्रत्यक्षत, स्वय" को भी अन्य निजवाचक सर्वनामो की कोटि म माना जा सकता है। इनकी वाक्यों मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं (१, २)।

(१) म्हैं साम्रत म्हारी निजरा स्याळिया नै थे म जावता देखियौ।

(२) राणी रै मैल मू साम्रत देखता नवलखौ हार उचकाय लेजै।

सुर्तं "स्वत" तथा मतै "स्वत" की स्वतन्त्र रूप से अवस्थिति के अतिरिक्त विशेषण स्थानीय निजवाचक रूपो के साथ भी आमत्ति होती है। इस प्रकार से निर्मित समस्त रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

म्हैं म्हारै	[सुतै / मतै	ओ / आ]	इणरै / आपरै]	[सुतै / मतै
आपां आपांरै	[सुतै / मतै	अे	[इणांरै / आपरै	[सुतै / मतै
म्हे म्हारै	[सुतै / मतै	वो / बा]	उणरै / आपरै]	[सुतै / मतै
थू थारै	[सुतै / मतै			
थें थारै	[सुतै / मतै	वे	[उणांरै / आपरै	[सुतै / मतै
आप आपरै	[सुतै / मतै			

विनरक निजवाचकों की अवस्थिति विशेषण स्थानीय निजवाचक रूपों की आवृत्ति से होती है, यथा म्हारो म्हारो, थारो-थारो। विकल्प से आप आप अथवा आपोआप की अवस्थिति भी होती है (३, ४)।

(३) अबै थे सगळा आपोआप रै घरै जावो।

(४) गरमी री छुट्टी हुई. अध्यापक आप-आपरै घरै गया।

४ १ ३ अन्योन्याश्रयवाचक

माहोमाह, अेक-दूजो, आपस

इन तीनों सर्वनामों की वाक्यों में अवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(५) एक हुती चिड़ो नै एक हुती उंदरो। वे माहोमाह धरमला करिया।

(६) सगळा अेक दूजै रै सुख मे त्यार अर अेक-दूजै रै दुख मे त्यार। नित रात रा दरबार जुड़तो।

(७) आपां तो आ'र खराब हुया। बालकां रै आपस री बातां चलती आवै है।

४ १ ४ सम्बन्धवाचक

जको, जिण

जको की रूपावली निम्नलिखित है।

		एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	ऋजु	जको	जका
	तिर्यक	जका जकै	जका
स्त्रीलिंग	ऋजु	जकी	–
	तिर्यक	जकी	–

जिरा मूल मे ही तिर्यक एकवचन रूप है। इसका तिर्यक बहुवचन जिरा होता है। जिरा का वैकल्पिक रूप ज्या भी है।

४ १ ५ सहसम्बन्ध वाचक
सो

सो का तिर्यक रूप तिरा है। तिरा का बहुवचन रूप तिरा है। तिरा का वैकल्पिक रूप त्या भी भाषा मे उपलब्ध है।

४ १ ६ अन्यवाचक
दूजौ, बीजौ

दूजौ 'अन्य, कोई और'' की अवस्थिति का उदाहरण निम्नलिखित है।

(८) अेक निजर पतळी तौ दूजी निजर जाडी अेक पलक ऊनी तौ दूजी पलक ठाडी। खुद रै मन री खुद नै ई जाच नी पड़ै तौ दूजां नै पहण रौ तो मारग ई कठै।

४ १ ७ अनिश्चयवाचक
कोई, केई, कीं, निरी, अेक जणौ

कोई एकवचन सर्वनाम है। इसका तिर्यक रूप किणी है।

केई मूल म बहुवचन सर्वनाम है। इसका तिर्यक बहुवचन रूप किणी है। कीं "कुछ" अविकार्य सर्वनाम है।

निरी "अनेक (स्त्रीलिंग)" किन्ही परिसरो म केई के स्थान पर अवस्थित होता है (९)।

(९) राणीजी निरी वार सगळा नै सावळ घर मे समझाया-बुझाया, तौ ई बारौ भूत नी उतरियौ।

अेक जणौ ' कोई व्यक्ति'' की अवस्थिति का उदाहरण निम्नलिखित है (१०)।

(१०) थारौ बड भाग कै थारै दरद ने अेक जणौ तौ समझै है।

अनिश्चय वाचक कोई तथा केई के साथ कौ, सौ तथा का, सा की क्रमश आसति से कोई कौ, कोई सौ, केई का, केई सा रूप निर्मित होते हैं (११, १२)।

(११) म्हनै आज मेळै मे आपा रै गाव रौ कोई कौ आदमी इज निगै आयौ।

(१२) इतरा वाक्य म्हैं देख लीना हू। वा माय सू केई का गळत है अर केई का सही है।

४ १ ८. प्रश्नवाचक

कुण~किण, कैणो, काई

कुण~किण "कौन" की अवस्थिति ऋजु एकवचन, तिर्यक एकवचन तथा ऋजु बहुवचन में होती है। इसका तिर्यक बहुवचन रूप किणां है।

कैणो 'किसका" अनियमित सर्वनाम है। भाषा में इसकी अवस्थिति अधिक नहीं होती (१३)।

(१३) वे अेक लाठी छाव लेयनै हाजरिया नै पूछियो—ओ कैणो हाको है रे ?
परभात री वेळा अे जे जे करता कुण कान खावै ?

काई "क्या" अविकार्य सर्वनाम है। निम्न वाक्य में, जहा सामान्यत कों की अवस्थिति शक्य है काई का प्रयोग हुआ है।

(१४) वो काई ई काड'न देवणवाळो नी।

४ १.९ समूहवाचक

सगळो सैंग, सै, सब, सरब

सगळो "सब, सब कोई" का स्त्रीलिंग रूप सगळी है। इसकी रूपावली निम्न-लिखित है

	एकवचन		बहुवचन	
	ऋजु	तिर्यक	ऋजु	तिर्यक
सगळो	सगळो	सगळै~सगळा	सगळा	सगळा
सगळी	सगळी	सगळी	—	—

सगळो एकवचन मे सहिति वाचक सज्ञाओ का समुद्देशन करता है और बहुवचन मे सख्येय सज्ञाओ का।

सैंग "समस्त, सब" का तिर्यक बहुवचन सैंगां होता है। अन्य रूपो मे कोई विकार नही होता।

सै सैंग का वैकल्पिक रूप है और अविकार्य है। सामान्यत इसकी अवस्थिति अभिव्यजक परिसरो में ही होती है (१५)।

(१५) दुनिया मे फगत दो ई चीजा रूपाळी अेक कुदरत नै दूजी नार। बाकी सै धपाळ।

सब की रूपावली की रचना सैंग के समान ही होती है। इसकी अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं (१६, १७)।

(१६) बेटो बाप रै दाई चतर हो। सब समझग्यो।

(१७) पछै दैत जाणै, मा प्रजा जाणै अर राजा जी जाणै। सबा नै आप-आप रो जीव बालो लागै।

सरव की अवस्थिति केवल सख्येय सज्ञाओ के समुद्देशन मे होती है।

४ १ १० निर्देशितावाचक

सै, सागै

सै "उसी, वही" तथा सागै "वही, (पहले) जैसा" की वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं (१८, १९)।

(१८) चादणी चवदस रै सै दिन उण रो जलम हुयो, पछै बस वयू नी उजागर व्है।

(१९) इत्तो बार भलो करिया ई राजा जी रो तो वो रो वो सागै आदेस। तीन दिन मे कौल पूरो नी हुयो तो घाणी त्यार।

४ १ ११ व्याप्तिवाचक

हर, हरेक, दीठ

हर "प्रत्येक" का अर्थ तो स्पष्ट ही है। किन्तु हरेक के सामान्य अर्थ "प्रत्येक" के अतिरिक्त एक विशिष्ट अर्थ है "कोई भी" (२०)।

(२०) म्हारो नाव लेयनै उणरै घरै हरेक नै कैय दीजै। थारो काम बण जासी।

दीठ का मुख्यार्थ है "दृष्टि।" किन्तु निम्न वाक्य मे इसका अर्थ है 'प्रति, हर" इत्यादि।

(२१) पिणियारो दीठ राज री तरफ सू पीतळ रो अेक-अेक भाडो दिरवाय दियो।

४ १ १२ परिमाणवाचक

इतरो~इत्तो	"इतना"
उतरो~उत्तो	"उतना"
कितरो~कित्तो	"कितना"
जितरो~जित्तो	"जितना'
तितरो~तित्तो	"उतना ही"

इन मूल सर्वनामो के अतिरिक्त इनसे कतिपय सर्वनाम सयोजन भी निर्मित होते हैं। इतरो-उतरो, कितरो-जितरो इत्यादि।

समस्त परिमाण वाचक सर्वनामो की रूपावली की रचना विकार्य विशेषणो के समान होती है।

४ १ १३ गुणवाचक

अैडो 'ऐसा" ऊडो, वैडो ' वैसा"
कैडो "कैसा '
जैडो "जैसा" तैडो "तैसा"

इनके अतिरिक्त किसो~कियो ' कौन सा, कैसा," कियोड़ो (कियो का अभिव्यजक रूप) तथा जिसो~जियो 'जौन सा, जैसा" भी इसी कोटि म परिगणित किये जा सकते हैं।

उपरिलिखित गुणवाचक सर्वनामो के निम्नलिखित सयोजन भी भाषा मे प्रचलित हैं

अैडो—ऊडो
अैडो—वैडो
जैडो—तैडो
जैडो—कैडो

समस्त गुणवाचक सर्वनामो की शब्दगत रूपावली की रचना विकार्य विशेषणो के समान ही होती है।

४ १ १४ प्रकारता बोधक

इतरै~इत्तै
उतरै~उत्तै
कितरै~कित्तै
जितरै~जित्तै
तितरै~तित्तै

समस्त प्रकारता बोधक सर्वनाम वस्तुत प्रमाणवाचक सर्वनामो के एकवचन तिर्यक रूप हैं।

४ १ १५ रीतिवाचक

इउ ~यू, इँ, व्यू, क्यू ज्यू, त्यू

इन सर्वनामो के कतिपय सयोजन नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

ज्यू —ज्यू
त्यू —त्यू
ज्यू —त्यू

कीकर 'कैसे" तथा कींकर "क्योकर" भी इसी कोटि मे परिगणित किये जा सकते हैं।

४ १ १६ स्थानवाचक

(क) अठै "यहाँ इस स्थान पर"
उठै "वहाँ, उस स्थान पर"
जठै "जहाँ, जिस स्थान पर"
तठै "वहां, उस स्थान पर"
कठै "कहाँ, किस स्थान पर"

४ १ १७ दिशावाचक

(ख)- अठी "इधर"
उठी "उधर"
जठी "जिधर"
तठी "तिधर"
कठी 'किधर"

४ १ १८ इतर दिशा अथवा स्थानवाचक सर्वनाम रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(ग) अठीनै
उठीनै
जठीनै
तठीनै
कठीनै

(घ) अठै ई "यहा ही"
उठै ई "वहा ही"
जठै ई "जहा ही"
तठै ई 'तहा ही"
कठै ई "कहा ही"

(ङ) अठा
उठा
उठा~जा
तठा~ता
कठा

(च) अठैकर, उठैकर, जठैकर, तठैकर, कठैकर,
अठीकर, उठीकर, जठीकर, तठीकर, कठीकर,
अठाकर, उठाकर, जठाकर, तठाकर, कठाकर,

उपरिलिखित स्थानवाचक सर्वनामो की परस्पर आसत्ति से निम्नलिखित सयोजनो की रचना होती है।

(छ) अठै–उठै, अठै–जठै, जठै–तठै, जठै–कठै,
अठी–उठी, अठी–जठी, जठी–तठी, जठी–कठी,
अठा–उठा, अठा–जठा, जठा–तठा, जठा–कठा,
अठै ई–उठै ई, अठै ई–जठै ई, जठै ई–तठै ई, जठै ई–कठै ई,
अठैकर–उठैकर, अठैकर–जठैकर, जठैकर–तठैकर, जठैकर–कठैकर,

अठीकर–उठीकर, अठीकर–जठीकर, जठीकर–तठीकर, जठीकर–कठीकर
अठीनै–उठीनै, अठीनै–जठीनै, जठीनै–तठीनै, जठीनै–कठीनै ।

आमेडित स्थान वाचक सर्वनामो की रचना रूप संख्या (क–ड) की आवृत्ति से होती है, तथा अठै–अठै, अठी–अठी, अठीनै–अठीनै, अठै ई–अठै ई, अठा–अठा इत्यादि ।

रो अन्तर्निविष्ट आमेडित सर्वनामो की रचना आमेडित रूपों मे रोके अन्तर्निवेष से होती है, यथा अठै रो अठै, उठै रो उठै इत्यादि । इस प्रकार न अन्तर्निविष्ट स्थान-वाचको की भी रचना होती है, यथा अठै न अठै, उठै न उठै इत्यादि ।

४ १.१९ कालवाचक

(क) हमैं, जद, तद, कद

(ख) अबै, जदै, तदै, कदै

(ग) हमार हमारू, हमकै, हमको, हमकी, हमलकै,
हमकलै, हम कोई

(घ) अबार, अबारू, अबकै, अबको, अबकी, अबलकै,
अबकलै, अब कोई

(ङ) हणं, हणं ई
जणं, जणं ई
कणं, कणं ई

(च) जणंकलो, कणं कनो

(छ) जरा, करा

(ज) अबै ई, जदै ई, तदै ई, कदै ई

(झ) अजै, अजै ई

कालवाचक सर्वनामो के अन्य सयोजन निम्नलिखित हैं ।

कदै ई कदै
जद इज तो
जठै कठै ई
कदै ई न कदै ई
अबारू रो अबारू
कदास कणं ई

४. २ अन्य प्रकार के सार्वनामिक सयोजन नीचे सूचित किये जा रहे हैं ।

कौ–न–काई   कुण–न–कुण
केई–केई   काई–न–काई

जिण–तिण
किणी थेक
जिणँ–जिणँ
कोई–न–कोई
की–न–की

प्रकरण सख्या (४ १) मे उल्लिखित आदरवाचक मध्यम पुरुष सर्वनामो के अतिरिक्त राज तथा हुकम की भी भाषा म अवस्थिति होती है (२२, २३)।

(२२) म्हैं म्हारै हाथ सू बारणौ उघाड़ू, राज वेगा सिधावैं जकी बात करैं।

(२३) आप तो हुकम पौढिया हा पण भखावटै-भखावटै ई लोग तौ दरसणा वास्तै अडवडिया जको मळौ मच ग्यो।

जिण, तिण, किण से जिणौ, तिणौ, किणौ रूप भी निर्मित होते हैं।

५. विशेषण

५ १ आ राजस्थानी मे विशेषण कोई शब्दगत रूप वर्ग न होकर वाक्य विन्यास के आधार पर निर्धारित सवर्ग है। इस सवर्ग की निम्नलिखित मुख्य कोटियां हैं।

(क) गुणवाचक विशेषण
(ख) सख्यावाचक विशेषण
(ग) निर्धारक विशेषण
(घ) सार्वनामिक विशेषण

५ १ १ गुणवाचक विशेषणो के द्वारा अपने विशेष्यो के गुण-धर्मों का ही कथन नही होता क्योकि कोश की दृष्टि से पारिभाषिक आधार पर प्रत्येक सज्ञा आदि विशेष्य शब्द स्वतन्त्र रूप से अपने पारिभाषित गुण-धर्मों का पु ज होता है। यथा कौआ नामक पक्षि को काला कौआ कहा जाय तो काला विशेषण द्वारा समधिक्ता दोष उत्पन्न हो जायगा क्योकि कौआ नामक पक्षि का काला होना एक सर्वविदित तथ्य है, और कौआ सज्ञा की कोश मे दी गई परिभाषा में उसके सामान्य रूप से काला होने का उल्लेख भी रहता है। अत यह कहना अधिक युक्ति सगत है कि गुणवाचक विशेषणो का मुख्य प्रकार्य है स्वयाचित गुण-धर्मों को अपने विशेष्यो पर अध्यारोप तथा तज्जनित वैशिष्ट्य के उल्लेख द्वारा वाक्य मे वाचित विशेष्य व्यक्ति अथवा वस्तु आदि के प्रति वक्ता के दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति। निम्नलिखित उदाहरण से इस तत्त्व को स्पष्ट किया जा सकता है (१)।

(१) हेटै उतर वा खेत मे सूअर अर भाचरिया नै हेरण लागी। इण मोल्या कवर सू आगे बात करण री मन नहीं व्हियो। उणरी आख्यां तो घावा रिसता सूअर मे अटकियोडी ही।

उक्त वाक्य मे वक्ता ने किसी राजकवर को उसके घृणित कर्म के कारण मोल्या 'पुरुषार्थहीन' कहकर उसके वैशिष्ट्य के उद्घाटन के साथ-साथ उसके प्रति अपने दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति भी की है। विशेष्य के गुण-धर्म के कथन के साथ वक्ता के विशेष्य के प्रति दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति भी विशेषणो का महत्त्वपूर्ण अर्थ-तात्त्विक प्रकार्य है।

गुणवाचक विशेषणो का अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकार्य यह भी है कि विरुद्धार्थक गुणवाचक विशेषण युग्मो के वास्तिवाचक घटक अपने अभिहित गुण-धर्मों के अनस्तित्व अथवा अभाव

के सूचक न होकर, नास्तिवाचकता के माध्यम से गुण-धर्मों के अस्तित्व का अभिधान करते हैं। निम्नलिखित वाक्यो मे रेखांकित नास्तिवाचक विशेषणो की अवस्थिति से इस तथ्य को लक्षित किया जा सकता है (२-६)।

(२) उणरै अदीठ हुया खबर रै जीव मे जीव आयौ।

(३) बिणास री आकी आवै जद स वौ बाता ई उघी बण जावै।

(४) इण मगती रो औ बेजोड रूप तौ सगळी गणिया अर सगळी दासिया रै रूप माथै पाणी फर दियौ।

(५) खेत री रखवाळण राणी बणता ई अबळा हुयगी।

(६) सूरज रौ उजास अनाप। चदरमा री चाणनी अनाप। बगत परवाण रितुवौ रा गेडा हुवता।

५ १ २ आ राजस्थानी के सामासिक गुणवाचक विशेषणो को, उनमे अवस्थित अगो के आधार पर तीन वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है —

(क) गुवि$_1$–गुवि$_2$ सामासिक विशेषण जिनके दोनो अगो से सहगामी गुण-धर्मों का बोध होता है, यथा मूखौ-तिरसौ, फोरौ-पतळौ, फूठरौ-फररौ, गैलौ-गूगौ इत्यादि।

(ख) विरुद्धार्थक गुवि$_1$–गुवि$_2$ सामासिक विशेषण, यथा अलगौ-नैडौ, गोरौ-काळौ, खारौ-मीठौ, ढाडौ-उनौ इत्यादि।

(ग) प्रतिध्वन्यात्मक गुवि$_1$-गुवि$_2$ सामासिक विशेषण यथा अनाप-सनाप, गैलौ-गूलौ इत्यादि।

५ १ ३ गुणवाचक विशेषणो से निर्मित पदबन्धो के आ राजस्थानी म निम्नलिखित वर्ग किये जा सकते हैं —

(क) समतावाचक विशेषण पदबन्ध

(ख) तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्ध

(ग) तुलनावाचक विशेषण पदबन्ध

(घ) प्रमृत विशेषण पदबन्ध

५ १ ३ १ समतावाचक विशेषण पदबन्धो मे किसी उपमान को विशेष गुण-धर्म का मानक मानकर किसी उपमेय की उक्त गुण-धर्म के आधार पर उससे (अर्थात् उपमान से) समता की अभिव्यक्ति की जाती है। इन पदबन्धों की आतरिक सरचना उपमान बोधक सज्ञा$_1$ + समतावाचक परसर्ग$_2$ + गुण धर्मवाचक विशेषण$_3$ + उपमेय वाचक सज्ञा$_4$ के आधार पर होती है (७)।

(७) उवा ईडा सू मुखमल$_1$ री जात$_2$ फूटरा-रुपाळा$_3$ निकिया$_4$ निकळिया।

समतावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्धों का उनमें अवस्थित परसर्गों के आधार पर वर्गीकरण किया जा सकता है। आ० राजस्थानी के गुण-धर्म समतावाचक परसर्ग निम्नलिखित हैं —

रै उनमान (८) रै जैडो (१५)
रै उणियार (९) रै जितरो~रै जित्तो (१६)
री कळाई (१०) रै जिमो (१७)
री जात (११) रै ज्यू (१८)
रै दाई (१२)
रै सरीखो~रै सरीसो (१३)
सो (१३)
रै प्रमाण (१४)

इण परसर्गों की वाक्यों मे अवस्थिति के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(८) औ बन तो मा री गोद रै उनमान सुखदाई।

(९) उणनै सातमों महीना हो। दसमै महीनै चाद रै उणियार रूपाळो बेटो जलमियो।

(१०) पण राजकुमारी तो कवर री कळाई साव अबूझ ही।

(११) अबै थोडी-थोडी घाटी हिळण लागी। रूपै री जात धौळा केस।

(१२) बेटो बाप रै दाई चतुर हो, सब समझग्यो।

(१३) कुच जाणै पाकी नारगिया, सोपारी सा कठोर। पान सरीखो पेट। केसर लको।

(१४) अर इण बगत तो सेठाणी दूध रै झागाँ रै प्रमांण उणरो मन हळको अर निरमल हुयग्यो।

(१५) तीजोडी भाई नाडो वाळै दैत री बात बताई। दूध जैडे मीठे पाणी री चार बावडिया री जाणै जित्तो गुण अर औगाण आखो परथै मानियो।

(१६) थारै जितरो मूरख इन धरतो माथै सायद ई व्हैला।

(१७) म्हारा बीरा यू तो म्हारै जितोई निरभागी है।

(१८) इण घर मे थारी देह गगाजळ ज्यूं पवित्र रैवेला।

निम्न उदाहरण मे एक ही वाक्य (१९) म अनेक समतावाचक गुणवाचक विशेषण पदब धो की अवस्थिति हुई है।

(१९) सूअँ री चाच जैडी तीखी नाक कवळ रै उनमान रूपाळी उणियारी कोयल सरीखी मधरी वाणी हिरणी सरीखी चचल आखियां काले नाग रा बिचियाँ जैडा काळा केस हाथी री कळाई मतवाळी चाल सिंध रै उनमान पतळी कमर हस री कळाई लाबी नस—अँ सगळी बाता मतवाळा कवर नै अक ढौड ई निगै आई।

५ १ ३ २ तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदब घो मे उपमेय का उपमान से किसी गुणधम म प्रमाण अथवा मात्रा आधिक्य/अनाधिक्य का उल्लेख रहता है (२०)।

(२०) वारै बिखै अर फोडा री बात सुणनै पछी कैयौ—बड इचरज री बात है कै था मिनखा म साप सू बत्ता हित्यारा व्है।

आतरिक सरचना की दृष्टि से इन पदब धो के विभिन्न अग है उपमान (सज्ञा) + सू + आधिक्यानाधिक्य सूचक विशेषण + उपमेय (सज्ञा) जैसा कि उदाहरण सख्या (२०) से स्पष्ट है। इन पदब धो की विविध सभावनाए सोदाहरण नीचे सूचित की जा रही है।

(क) सू बत्ता (देखिये उदाहरण सख्या २०)

(ख) सू ई वत्ता (२१)

(२१) महागणी उणरै पगा मे मायौ निवाय बोली— मासी थू म्हारै वास्तै जलम देवणवाली मा सू ई बत्ती।

(ग) सू कम/निबळौ इत्यादि (२२)

(२२) इण बळ रै उपरात ई म्हैं आ बात कैवू कै लुगाई सू निबळौ तो कीडी ई नी हुवै।

(घ) सू इदक (२३)

(२३) भू डण धणी री आखिया मे मीट गडाय कैवण लागी—इण दुनिया मे था सू इदक समझवान म्हनै तौ कोई दूजौ निगै नी आयौ।

तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदब धो मे सू के अतिरिक्त कतिपय अन्य परसर्गों की अवस्थिति के उदाहरण भी नीचे सूचित किये जा रहे है।

(ङ) रै टाळ गुणि (२४)

(२४) पछै वाणियै टाळ लाज बचावणियौ कोई दूजौ कोनी।

(च) रै विचै गुवि (२५, २६)

(२५) ग्रर दूजी खास बात ग्रा ही कै छोटी राणी वडी राणी विचै रूपाळी अत इज घणी ही।

(२६) इण विचै तो वेटो नै हाथा मारणी वत्ती है।

(छ) रै सामी गुवि (२७)

(२७) पच्चीस वरसौं रा भर मोटियार तौ ग्रापरै सामी फीका लागै।

तुलनावाचक गुणवाचक विशेषणो के ग्रन्तर्गत् ही ग्रतिशयता बोधक पदबन्धो को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

(२८) दुनिया मे धन कै वित्त ई सवमू सिरै चीज है।

ग्रतिशयता बोधक पदबन्धो म उपमान स्थानीय सज्ञा के बदले मे सब ग्रादि सर्वनामो की ग्रवस्थिति है, जैसाकि उपरिलिखित उदाहरण से स्वत स्पष्ट है। इस कोटि की रचनाग्रो के ग्रन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२९) अैडो खुसी तो ग्राज पैली किणी रूपाळै सू रूपाळै राजकवर नै ई नी हुई व्हैला।

(३०) अेक ग्रळगै राज सू फिरतौ-घिरतौ सासिया रौ डेरौ ग्रायो। सासी एक सू एक डयाळ।

तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्धो के ग्रतिरिक्त भाषा मे कतिपय गुणवाचक विशेषणो तुलनावाचक शब्दगत रूप भी निर्मित होते हैं यथा

मूल गुणवाचक विशेषण रूप	तुलनावाचक रूप
(क) बडो	बडेरौ
मोटो	मोटेरौ
छोटो	छोटेरौ
लाठो	लाठेरौ
बोदो	बोदेरौ
घणो	घणेरौ
(ख) नवो	नवादौ

जैसाकि उपरिलिखित उदाहरणो से स्वत स्पष्ट है उक्त प्रकार की शब्द रूप रचना भाषा मे केवल कुछ गिने-चुने विशेषणो तक ही सीमित है।

गुणवाचक विशेषणो के अभिव्यजक रूप भी निर्मित होते हैं। रूप रचना के आधार पर इनका निम्नलिखित कोटियो मे विभाजन किया जा सकता है।

कोटि	सामान्य रूप	अभिव्यजक रूप		
(क)	मीठौ	मोठोडौ	मीठोडकौ	मीठलौ
(ख)	मोटौ	मोटोडौ	मोटोडकौ	—
(ग)	धीमौ	धीमाडौ	धीमोडकौ	—
	नवौ	नवोडौ	नवोडकौ	—
(घ)	अेकलौ	अेकलोडौ	—	—

काळौ के अभिव्यजक रूप कालोडौ तथा काळोडकौ के अतिरिक्त कालूटौ रूप भी उपलब्ध होता है।

उपरोक्त अभिव्यजक रूपो के अल्पार्थक पुल्लिग (यथा मीठोडियौ इत्यादि) तथा स्त्रीलिंग (मीठोडी इत्यादि) रूप भी निर्मित होते हैं।

सामान्यतया उक्त अभिव्यजक रूपो से तुलनात्मकता की अभिव्यजना भी होती है। यथा लबौ का तुलनात्मक रूप लम्बोडौ तथा तम-भाव रूप लम्बोडकौ आदि।

अनेक अविकार्य गुणवाचक विशेषणो के (जिनका उल्लेख प्रकरण सख्या (५,४) म किया गया है) भी अभिव्यजक रूप निर्मित होते हैं। इनके कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं

अविकार्य गुणवाचक विशेषण	अभिव्यजक रूप
अंदो	अंदोडौ
बाभ	बाभडौ
मोटियार	मोटियारडौ
मूभी	मूभोडौ
असली	असलीडौ
कमसल	कमसलडौ
खामची	खामचीडौ
सफेद	सफेदियौ

समस्त अविकार्य गुणवाचक विशेषणो के अभिव्यजक रूप विकार्य हो जाते है जैसा कि ऊपर के उदाहरणो से स्वत स्पष्ट है।

अनेक अभिव्यजक स्त्रीलिंग रूपो की तम-भाव गुणवाचक विशेषणो के रूप मे भाषा मे अवस्थिति रूढ है। मीठकी, मोटकी, खारकी, काळकी, काणकी इत्यादि विशेषण इस कोटी के तम-भाव रूढ विशेषण हैं।

इस प्रकार –च प्रत्यय निर्मित कतिपय गुणवाचक विशेषणों के अभिव्यंजक स्त्रीलिंग रूप भी तम-भाव का अर्थ ध्वनित करते हैं, यथा काणची, काळची, धौळची, पीळची, कूडची इत्यादि।

५ १ ३ ३ तुलनावाचक विशेषण पदबन्धों मे उपमेय की उपमान से समानता का कथन न करके दोनों की परस्पर तुलना की जाती है (३१)।

(३१) भगवान री मूरत बिचै उण मे जडियोडा हीरा-मोती घणा सुहाणा लागा।

तुलनावाचक पदबन्धो मे रै बिचै, रै आगै, रै सामी इत्यादि परसर्गों की अवस्थिति होती है।

(३२) वा दुखा सामी तो आ साव नाकुछ बात है, हुसै जैडी।

(३३) ऊदरो कँयो—अक्कल रै बळ आगै भाखर नै ई कणूकै बिरोबर हूवणो पडै।

(३४) भगती रै जोर आगै तो औ साव मामूली बाता है।

(३५) अर लुगाया रै अग-सग टाळ दूजौ कोई सुख है ई कठै।

(३६) अर वानै ई म्हारै सुख री टाळ दूजी की लालसा है।

५ १ ३ ४ प्रमृत विशेषण पदबन्धो के अन्तर्गत सज्ञा अथवा तुमर्थ + परसर्ग + गुणवाचक विशेषण की पारस्परिक सगति के आधार पर निर्मित अनेक रचनाए हैं। इनकी मुख्य विशेषता यह है कि सम्पूर्ण प्रमृत विशेषण पदबन्ध का उसमे अवस्थित गुणवाचक विशेषण के स्थान पर आदेश किया जा सकता है, यथा (३७, ३८)।

(३७) एक राजा रै एक परधान हो। वो घणो हुसियार अर परवीण।

(३८) एक राजा रै एक परधान हो। वो घणो हुसियार अर काम-काज मे परवीण।

वाक्य सख्या (३७) मे गुणवाचक विशेषण परवीण के स्थान पर काम-काज मे परवीण (३८) प्रमृत विशेषण पदबन्ध का आदेश हुआ है।

प्रसृत विशेषण पदबन्धो का उनमे अवस्थित परसर्गों के आधार पर वर्गीकरण और विवरण किया जा सकता है। नीचे मे, रै लग, रै लारै, रो, रो खातर, रै मिस रै बिचाळै, रै आपै इत्यादि परसर्गों से निर्मित प्रसृत विशेषण पदबन्धो के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(३९) तीर-कबाण अर सिकार री विद्या मे पारगत हुयग्यो।

(४०) परसेवा मे लथोपथ डावडी सपाडो करनै बिसाई खावणी चावती ही।

(४१) म्हनै इक्कीस आना पतियारो हुयग्यो कै के सगळा म्हनै मारण री जाळ-माळी मे भेळा हा ।

(४२) बापडा गरीब जिनावरा नै फगत पेट रै खातर मारणा वठा लग वाजब है ।

(४३) म्हनै तो इण अखड मून-समाध मे फगत आ अेक बात समझ मे आई कै जप-तप, ध्यान, भगती इत्याद थे सगळी बाता इण दुनिया रै लारै साधी लागै ।

(४४) म्हैं तो आपरो पीडिया रो चाकर हू ।

(४५) जवानी रो भूखो बकरो सेवट आपरो जीव गमाया रै यो ।

(४६) म्हारो काई जितात कै म्हैं आपनै म्हारो खातर दुखी करू ।

(४७) घणकरा पथा रै ओणै जाला मलूभियोडा भेख रै मिस धरम री जूनो झाटो कूटै ।

(४८) दोय पग घकै अर दोय पग लारै करनै बेरा रै बिचाळै उभै तो चूचू ।

(४९) स्याळ आपरै मगज रै आपै निरभै हो ।

५ २ आ० राजस्थानी के सख्यावाचक विशेषणो की विभिन्न कोटिया हैं—(क) गणनामूलक सख्यावाचक, (ख) प्रभागक सख्यावाचक, (ग) क्रमसूचक सख्यावाचक, (घ) आनुपातिक सख्यावाचक, (ङ) समुच्चयबोधक सख्यावाचक, (च) वितरक सख्यावाचक, (छ) समुच्चयात्मक एकलबोधक सख्यावाचक, (ज) योगबोधक सख्यावाचक, (झ) सन्निकट सख्यावाचक, (ञ) अनिश्चित् सख्यावाचक, (ट) अनिश्चित् सन्निकट सख्यावाचक, (ठ) गुणात्मक सख्यावाचक, (ड) इतर सख्यावाचक रचनाए, (ण) सख्यावाचक पदबन्ध तथा (त) सहितिवाचक सख्यावाचक रचनाए। इन समस्त सख्यावाचको का सोदाहरण विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है ।

५ २ १ आ० राजस्थानी के गणनामूलक सख्यावाचक नीचे सूचित किये जा रहे हैं —

१.	एक	६	छ
२	दो~बे	७	सात
३	तीन	८	आठ
४.	च्यार~चार	९	नव
५	पाच	१०	दस

११ इगियारैं~इग्यारैं
१२ बारैं
१३ तेरैं
१४ चऊदे
१५ पन्दरे
१६ सोळ
१७ सतरे
१८ अटठारैं
१९ उगणीस
२० वीस
२१ इक्कीस
२२ बाईस
२३ तईस
२४ चौईस
२५ पच्चीस
२६ छाईस
२७ सताईस
२८ अटठाईस
२९ गुणतीस
३० तीस
३१ इकतीस
३२ बत्तीस
३३ तेतीस
३४ चौतीस
३५ पैंतीस
३६ छत्तीस
३७ सैंतीस
३८ अडतीस
३९ गुणचालीस
४० चालीस
४१ इगतालीस
४२ बयालीस
४३ तयालीस
४४ चम्मालीस
४५ पतालीस
४६ छियालीस
४७ संतालीस
४८ अड़तालीस
४९ गुणपच्चास
५० पच्चास
५१ इक्कावन
५२ बावन
५३ तेपन
५४ चोपन
५५ पचपन
५६ छप्पन
५७ सतावन
५८ अटठावन
५९ गुणसाठ
६० साठ
६१ इकसठ
६२ बासठ
६३ तेसठ
६४ चौसठ
६५ पैंसठ
६६ छासठ
६७ सिडसठ
६८ अडसठ
६९ गुणन्तर~गुणसित्तर
७० सित्तर
७१ इकोतर
७२ बावोतर
७३ तिवोतर
७४ चौवोतर
७५ पिचत्तर
७६ छियतर
७७ सितन्तर
७८ इठंतर
७९ गुणियासी
८० अस्सी
८१ इकियासी
८२ बयासी

८३ तयासी~तियासी	९२ बराणू
८४ चौरासी	९३ तेराणू
८५ पिचियासी	९४ चौराणू
८६ छियासी	९५ पचाणू
८७ सितियासी	९६ छिन्नू
८८ इठियासी	९७ सताणू
८९ गुणनेवे~गुणनेऊ	९८ अठाणू
९० नेवे~नेऊ	९९ निनाणू
९१ इकराणू	१०० सौ

सौ से ऊपर के गणनामूलक सख्यावाचक भारतीय आर्य भाषाओं की तदविषयक रचनाओं के अनुसार निर्मित होते है, अत उनका यहाँ विशेष वर्णन प्रस्तुत करने की आवश्यकता नही है।

शून्य के राजस्थानी का वाचक शब्द है सुन्न।

उपरिलिखित गणनामूलक सख्यावाचको के अतिरिक्त आ० राजस्थानी वर्णों की गणना करने के लिए एक अन्य कुलक का व्यवहार होता है, जिसके ऋजु तथा तिर्यक रूप भाषा मे उपलब्ध हैं। इस कुलक के एक से सौ तक की सख्या के वाचक गणनामूलक नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

ऋजु रूप	तियक रूप
एकौ	एकै
दूऔ~बीऔ	दुए~बीए
तीऔ	तीए
चोकौ	चोकै
पाचौ	पाचै
छक्कौ	छक्कै
सातौ	सातै
आठौ	आठै
नवौ	नवै
दसौ	दसै
इग्यारौ	इग्यारै
बारौ	बारै
तेरौ	तेरै
चऊदौ	चऊदै
पनरौ	पनरै

ऋजु रूप	तिर्यक रूप
सोळौ	सोळैं
सतरौ	सतरैं
अठारौ	अठारैं
उगणीसौ	उगणीसैं
बीसौ	बीसैं
इक्कीसौ	इक्कीसैं
बाईसौ	बाईसैं
तेईसौ	तेईसैं
चौईसौ	चौईसैं
पचीसौ	पचीसैं
छाईसौ	छाईसैं
सताईसौ	सताईसैं
अठाईसौ	अठाईसैं
गुणतीसौ	गुणतीसैं
तीसौ	तीसैं
इकतीसौ	इकतीसैं
बत्तीसौ	बत्तीसैं
तेतीसौ	तेतीसैं
चौतीसौ	चौतीसैं
पैंतीसौ	पैंतीसैं
छतीसौ	छतीसैं
सैंतीसौ	सैंतीसैं
अडतीसौ	अडतीसैं
गुणचाळीसौ	गुणचाळीसैं
चाळीसौ	चाळीसैं
इकताळीसौ	इकताळीसैं
बयाळीसौ	बयाळीसैं
तयाळीसौ	तयाळीसैं
चम्माळीसौ	चम्माळीसैं
पैंताळीसौ	पैंताळीसैं
छीयाळीसौ	छीयाळीसैं
सैंताळीसौ	सैंताळसैं
अडताळीसौ	अडताळीसैं
गुणपचासौ	गुणपचासैं
पचासौ	पचासैं

ऋजु रूप	तिर्यक रूप
इकावनो	इकावनै
बावनो	बावनै
तेवनो	तेवनै
चोपनो	चौवनै
पचपनो	पचपनै
छपनो	छपनै
सतावनो	सतावनै
अठावनो	अठावनै
गुणमाठो	गुणसाठै
साठो	माठै
इकसठो	इकसाठै
बासठो	बासठै
तेसठो	तेसठै
चौसठो	चौसठै
पैंसठो	पैंसठै
छासठो	छासठै
सिडसठो	सिडसठै
अडसठो	अडमठै
गुणसित्तरो	गुणसित्तरै
सित्तरो	सित्तरै
इकोतरो	इकोतरै
बावोतरो	बावोतरै
तेवोतरो	तेवोतरै
चोवोतरो	चोवोतरै
पिचतरो	पिचतरै
छियतरो	छियतरै
सितन्तरो	सितन्तरै
इठन्तरो	इठन्तरै
गुणियासियो	गुणियासियै
असियो	असियै
इकियामियो	इकियासियै
बयासियो	बयामियै
तयामियो	तयासियै
चौरासियो	चौरामियै
पिचियासियो	पिचियानियै

ऋजु रूप	तिर्यक रूप
छियासियौ	छियासियँ
सितियासियौ	सितियासियँ
इठियासियौ	इठियासियँ
गुणनेवौ	गुणतेवँ
नेवौ	नेवँ
इकराणवौ	इकराणवँ
बराणवौ	बराणवँ
तराणवौ	तराणवँ
चौराणवौ	चौराणवँ
पच्चाणवौ	पच्चाणवँ
छिनवौ	छिनवँ
सताणवौ	सताणवँ
अठाणवौ	अठाणवँ
निन्नाणवौ	निन्नाणवँ
सईकौ	सईकँ

५ २ २ प्रभागक सख्यावाचको के लिए भाषा मे निम्नलिखित शब्द प्रचलित हैं ।

$\frac{1}{4}$	पाव	$1\frac{1}{2}$	डौड, डौडौ, देढ
$\frac{1}{2}$	आधौ, साढौ~साढा	$2\frac{1}{2}$	ढाई~अढाई
$\frac{3}{4}$	पूण~पूणौ, पूणौ	$3\frac{1}{2}$	सूटौ
$1\frac{1}{4}$	सवा	$4\frac{1}{2}$	ढचौ

पूणौ, सवा तथा साढौ के योग से अन्य प्रभागक सख्यावाचक भी निर्मित होते हैं, यथा

पूणौ दो	$1\frac{3}{4}$	साढौ तीन~साढा तीन	$3\frac{1}{2}$
पूणौ तीन	$2\frac{3}{4}$	साढौ च्यार~साढा च्यार	$4\frac{1}{2}$
सवा दो	$2\frac{1}{4}$	पूण सौ	७५
सवा तीन	$3\frac{1}{4}$	सवा सौ	१२५
		डोढ सौ	१५०
		पूणौ दो सौ	१७५
		साढौ तीन सौ	३५०

इत्यादि ।

५ २ ३ क्रमसूचक सख्यावाचको मे एक से लेकर दस तक वाचक शब्द निम्नलिखित हैं —

पैलो
दूजो~बीजो
तीजो
चौथो
पाचर्मो
छठो

छ से ऊपर के क्रमसूचको की रचना गणनामूलको के साथ -मो प्रत्यय के योग से होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं —

गणनामूलक सख्यावाचक	क्रमसूचक सख्यावाचक
सात	सातमो
आठ	आठमो
नव	नमो
दस	दसमो
इगियारै	इगियारमो
बारै	बारमो
तेरै	तेरमो

५ २ ४ आनुपातिक सख्यावाचको की रचना गणनामूलक सख्यावाचक के साथ —गुणो प्रत्यय के योग से होती है।

दोगुणो	सातगुणो
तीनगुणो	आठगुणो
चौगुणो	नवगुणो
पाचगुणो	दसगुणो
छगुणो	

इन आनुपातिक सख्यावाचको के उपरिलिखित एकवचन रूपो के अतिरिक्त बहुवचन रूप भी भाषा मे निर्मित होते हैं, यथा दसगुणो बत्तो घन (एकवचन), तथा दसगुणा बत्ता रिपिया (बहुवचन)। एक वचन मे अवस्थिति मे इनसे सहिति का बोध होता है और बहुवचन मे सख्येयता का।

आनुपातिक सख्यावाचको के एक अन्य कुलक की रचना गणनामूलको के साथ —लडो प्रत्यय के योग से होती है :

इकेवडो	छलडो
दोलडो~बेलडो	सातलडो
तेलडो	आठलडो
चौलडो	नवलडो
पाचलडो	दसलडो

प्रातिपदिक संख्यावाचकों का एक अन्य वर्ग –वड़ो प्रत्यय के योग से भी निर्मित होता है। इस वर्ग में एक से लेकर चार तक के गणनामूलकों के रूप ही निर्मित होते हैं, यथा इकेवड़ो, दोवड़ो~बेवड़ो, तेवड़ो तथा चोवड़ो।

५.२.५ समुच्चयबोधक संख्यावाचकों की रचना गणनामूलक संख्यावाचकों के साथ –आं अथवा –ऊ प्रत्ययों के योग से होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

दूना~दूनू~दानू
तीना~तीनू
चारा~च्यारा~चारू~च्यारू
पाचा~पाचू
छवा~छवू
साता~सातू
आठा~आठू
नवा~नवू
दसा~दसू

दस से ऊपर समुच्चयबोधक संख्यावाचकों की रचना उतने नियमित रूप से नहीं होती। फिर भी कतिपय उपलब्ध रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

बीसा~बीसू	हजारा~हजारू
चालीसा~चालीसू	लाखा~लाखू
पचासा~पचासू	किरोड़ा~किरोड़ू
सैकड़ा~सैकड़ू	

५.२.६ वितरक संख्यावाचकों की रचना गणनामूलकों की मात्र एकवार आवृत्ति से होती है, यथा अेक-अेक, दो दो, च्यार-च्यार, छ-छ, दस-दस इत्यादि। उच्चारण सौकर्य अथवा प्रयोजनीयता के कारण अनेक संभावित वितरक संख्यावाचकों के रूप भाषा में उपलब्ध नहीं होते, यद्यपि उनकी रचना पर कोई व्याकरणिक प्रतिबन्ध नहीं है।

५.२.७ समुच्चयात्मक एकल बोधक संख्यावाचकों की रचना गणनामूलक संख्यावाचक के रौ/रा/री परसर्ग की आसक्ति एवं तत्पश्चात् उक्त गणनामूलक की आवृत्ति द्वारा होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

अेक रौ/री अेक
दोई रौ/री दोई

परसर्ग रौ/रा/री के स्थान पर इनके ह्रस्वीकृत का भी आदेश ऐसी रचनाओं में होता है, यथा अेक'र अेक, दोय'र दोय इत्यादि।

समुच्चयात्मक एकल बोधक संख्यावाचकों के एक अन्य कुलक की रचना समुच्चय-बोधक संख्यावाचक के पश्चात् र की आसक्ति, एवं तत्पश्चात् उक्त समुच्चयबोधक संख्यावाचक की आवृत्ति से होती है। इस कुलक के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

अेक'र अेक	तीनूं 'र तीनूं	पाचूं 'र पाचूं
दोनूं 'र दोनूं	च्यारूं'र च्यारूं	छवूं र छवूं

समुच्चयात्मक एकल बोधक संख्यावाचकों की रचना एक से लेकर दस तक गणनामूलकों की आवृत्ति तथा उनके साथ मध्यप्रत्यय -आ- की अवस्थिति से भी होती है।

अेकाअेक	छवाछव
दोयादोय	सातासात
तीनातीन	आठाआठ
च्याराच्यार	नवानव
पाचापाच	दसादस

५.२.८ योगबोधक संख्यावाचकों के एक कुलक की रचना गणनामूलक संख्यावाचकों की आवृत्ति एवं उनके साथ मध्यप्रत्यय -न- की अवस्थिति से होती है। इन रचनाओं के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(५०) मिणधारी साप बारै'न बारै चौईस कोस री भांय में किणी जीव नै नी छोडतो।

(५१) वर्ण कन्नै ई बीस'न बीस काई करै। पूरा पैंतीस रिपिया लेय वळद म्हारै हवाले करै जकी बात करै कनी।

५.२.९ समुच्चयबोधक संख्यावाचकों की आवृत्ति के साथ मध्यप्रत्यय -न- की अवस्थिति से भी योगबोधक संख्यावाचकों की रचना होती है। यथा,

(५२) किसनजी लाखूं 'न लाखूं रिपिया लगायनै मिंदर चुणायो।

(५३) रामूडै नै सैंकडूं'न सैंकडूं बार समझाय दियौ पण वो तो अेडी नकटाई धारली कै म्हनै सबूरी झेलणी पडी।

५.२.१०. संनिकट संख्यावाचकों की रचना गणनामूलकों के साथ 'क के योग से होती है। एक को छोड़कर अन्य गणनामूलकों से संनिकट संख्यावाचक निर्मित हो सकते है। गणनामूलक संनिकट संख्यावाचकों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

दोये'क
तीने'क
च्यारे'क
सौळै'क
उगणीसे'क

उपरोक्त नियमानुसार प्रभागक संन्निकट सख्यावाचको की भी रचना होती है। इनके उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

पावे'क	डोडे'क
आधो'क, आघो'क, आधे'क	पूणोदोय'क
पूणे'क	सवादोय'क
सवा'क	अढाई'क

पूणोदोय'क तथा सवादोय'क आदि विकल्प रूप पूणो'क दोय तथा सवा'क दोय भी भाषा मे उपलब्ध हैं।

५ २ ११ अनिश्चित् सख्यावाचको की रचना किन्ही दो सगत गणनामूलको की परस्पर आसत्ति से होती है। ऐसे सयुक्त शब्द भाषा में सामान्यरूप से सिद्धप्रयोग ही होते हैं। इनक कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

तीन—चार
दोय—चार
पाच-सात
सितर—अस्सी
दोय-च्यार हजार

५ २ १२ —क प्रत्यय की अवस्थिति अनिश्चित सख्यावाचको के साथ भी होती है। इस प्रकार से निर्मित कतिपय अनिश्चित् सन्निकट सख्यावाचको के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(५४) पाच-सातेक दिन काम री तोजी नो बैठो तो घर्कं री सोय करैला।

५ २ १३ आ० राजस्थानी गुणात्मक सख्यावाचक कई दृष्टियो से महत्वपूर्ण है। एक तो इसमे प्रयुक्त गणनामूलक सख्यावाचको के स्वनप्रक्रियात्मक रूप कई स्थितियो मे भिन्न है और दूसरे कई शब्दो के सिद्धप्रयुक्त रूप भी भिन्न हैं। इन तथ्यो का स्पष्टीकरण के हेतु नीचे दो से चालीस तक गुणात्मक रचनाओ को उद्धृत किया जा रहा है।

एक दू दू	एक तिरी तिगी	~	एक तियो तियो
दो दू च्यार	दो तिरी छ		दो तिया छ
तीन दू छ	तीन तिरी नव		तीन तिया नऊ
च्यार दू आठ	च्यार तिरी बारै		च्यार तिया बारै
पाच दू दस	पाच तिरी पनरै		पाच तिया पन्दरै
छ दू बारै	छ तिरी अट्ठारै		छ तिया अट्ठारै
सात दू चउदै	सात तिरी इक्की(स)		सात तिया इक्की(स)
आठ दू सोळै	आठ तिरी चोई(स)		आठ तिया चोइ(स)
नऊ दू अट्ठारै	नव तिरी सताई(स)		नव तिया सताई(स)
दायै दूवा बीस	दायै तिरी तो(स)		दायै तिया तो(स)

एक चौक चौक	एक पजो पजो	एक छग छग
दो चौक आठ	दो पजा दस	दो छग बारै
तीन चौक बारै	तीनो पजा पन्दरै	तीन छग अट्ठारै
च्यार चौक सोळै	च्यारो पजा वी(स)	च्यार छग चौई(स)
पाच चौक बीस	पजो क पच्ची	पाच छग ती(स)
छ चौक चोई(स)	छ पजा ती(स)	छ छग छत्ती(स)
सात चौक अट्ठाई(स)	सातो पजा पैंती(स)	सात छग बयाळी(स)
आठ चौक बत्ती(स)	आठो पजा चाळी(स)	आठ छग अडताळी(स)
नऊ चौक छत्ती(स)	नऊ पजा पैंताळी(स)	नव छगा रो चौपनै
दायें चौक चाळी(स)	दायँ पजा (पूरी) पचा(स)	दायँ छग साठ

एक सातो सातो	एक आठो आठो	एक नम्मो नम्मो
दो साता चऊदै	दो आठा सोळै	दो नम्मा अट्ठारै
तीनो साता इक्की(स)	तीनो आठ चौई(स)	तीन नम्मा सत्ताई(स)
च्यारो साता अट्ठाई(स)	च्यारो आठा बत्ती(स)	च्यार नमा री छत्ती(स)
पाचो साता पैंती(स)	पाचो आठा चाळी(स)	पाच नम पैंताळी (स)
छ सातू बयाली(स)	छ आठू अडताळी(स)	छ नमां री चौपनै
सातो साती गुणपचा(स)	सातो आठू छप्पन	सात नमा री तेरेसठ
आठ सातै री छप्पन	आठो आठी चौसठ	आठ नमा री बोयतर
नऊ साता री तेरीसठ	नऊ आठा री बोयतर	नम्मै नम्मै इकियासी
दायँ साता सित्तर	दायँ आठा अस्सी	दायँ नम्मा नेऊ

एक दा दा	इगियारै एका इगियारै
दो दा बी(स)	इगियार दुआ बाई(स)
तीन दा ती(स)	इगियार तिया तैंती(स)
च्यार दा चाळी(स)	इगियार चौक चमाळी(स) (इगियारै चौका चमाळी(स))
पाच दा पच्चा(स)	इगियार पाण पचपन
छ दा साठ	इगियार छक छासठ
सात दा सित्तर	इगियार सात सितंतर (इगियारो साता सितंत्तर)
आठ दा अस्सी	इगियारो आठा इठियासी
नऊ दा नेवें	इगियार नम निनागू
दायँ दाई सौ	इगियारो दावा एक सौ ने दस

बारे एका बारे	तरे एका तेरे
बार दुश्रा चौईं(म)	तेर दुश्रा छाई(म)
बार तिया छत्ती(म)	तेर ती गुणचाळी(म)
बारे चौकु अड़ताळी(म)	तेर चौका बावन
बार पाणिया साठ के	तेर पाण पैंसठ
बार छकै नै बोयत्तर	तेर छक इठन्तर
बारौ साता चौरासी	तरौ साता इक्राणू
बारौ आठा छिन्नू	तेरौ आठ चिडोतरिया
बार नम इठडोतरियौ	तेर नम सतरावा हो
बारौ दाया एक सौ नै वीस	तेरौ दाया तीसा हो (तेर दावा एक सौ नै तीस)

चऊदे एका चऊदे	पनरे एका पनरे
चवद दू अट्ठाई	पनर दुआ तीं(स)
चवद ती बयाळी(म)	ती पैंताळी(म)
चउद चौक छप्पन	चौका साठ
चऊद पाण सित्तर	पाण पिचन्तर
चऊद छकै नै चौरासी	छकड़ी नेऊ
चऊदौ साता अठाणू	सात पिचहोतर
चऊद आठ बाड़ेतरियौ (चऊद आठ बारोतरियौ)	आठू वीया
चऊद नम छाईया हो (चऊद नम छाईसा हो)	नऊ पैंतीया
चऊदा दा चाळिया हो	इक्ली में डोढ सौ
~(चऊदा दावा एक सौ नै चाळी(म))	

सोळे एका सोळे	सतरे एक सतरे
सोळ दुश्रा बत्ती(म)	सतर दुश्रा चौती(म)
सोळ ती अड़ताळी(म)	सतर ती इक्कावन
सोळ चौका चौसठ	सतर चौका अड़सठ
सोळ पाण अस्सी	सतर पाण पिचियासी
सोळ छक्का छिन्नू	सतर छक बिलगरियौ
सोळ सात बाहोतरियौ	सतरौ सात उगणिया हो
सोळां आठ अट्ठाइया हो	सतरौ आठ छत्तिया हो
सोळ नम चम्माळो	सतर नमा रौ तेपन
सोळौ दाया साठा हो	सतर दावा एक सौ नै सित्तर
~(सोळौ दावा एक सौ नै साठ)	

अट्ठारे एका अट्ठारे	उगणी एका उगणी
अट्ठार दुआ छत्ती(स)	उगणी दुआ अडती(स)
अट्ठार तिरी चौपने	उगणी ती सत्तावने
अट्ठार चौका बोयतर	उगणी चौका छियन्तर
अट्ठार पाण नेऊ	उगणी पांण पचाणू
अट्ठार छक इठडोतरियौ	उगणी छक चऊदा हौ
अट्ठारी सात छाईया हौ	उगणी सात तेतोया हौ
अट्ठारी आठ चम्माळी	उगणी आठ बावनौ
अटठार नमौरी बासठियौ	उगणी नम इकोतरियौ
अट्ठारा दावा एक सौ ने अस्सी	उगणी दाया एक सौ नै नेवै

बी एका बी	इक्की एका इक्की
बी दुआ चाळी(स)	इक्की दुआ बेयाळी
बी तिया साठ	इक्की तिया तेरीसठ
बी चौका अस्सी	इक्की चौका चौरासी
बी पाणिया सौ	इक्की पाण पिचड़ोतरियौ
बी छकै नै बीया हौ	इक्की छक छाईया हौ
बी सातू चाळी	इक्की सात सं ताळी
बीयो आठो साठा हो	इक्की आठा अडसठिया हो
बी नमा असियौ	इक्की नम गुणनेऊ हौ
बीयो दावा एक सौ नैं बीस	इक्की दाया दो सौ नै दस

बाई एका बाई	तेई एका तेई
बाई दुआ चम्माळी	तेई दुआ छियाळी
बाई तिया छामठ	तेई ती गुणन्तर
बाई चौका इठियासी	तेई चोका बराणू (तेई चौका बाणू)
बाई पाण दाडोतरियो	तेई पाण पनरावा हो
बाई छक बतीया हौ	तेई छक अडतिया हो
बाई साता चौपनियौ	तेई गाता इकसठियौ
बाई आठा छियतरियौ	तेयौ आठा चौरासी
बाई नम अठाणू हौ	तेई नमा दो सो नै सात
बाई दावा दो सौ नैं बीस	तेयौ दावा दो सो नै तीस

चौई एका चौई	पच्ची एका पच्ची
चौई दुग्रा ग्रडताळो (चौई दुग्रा ग्रडताळा)	पच्ची दुग्रा पच्चा
चौई ती बोयतर	पच्ची ती पिचन्तर
चौई चौका छिन्नू	पच्चो चौका सौ
चौई पाण बीया हौ	पच्ची पाण पच्चिया हौ
चौई छक चम्माळौ	पच्चो छकडो डाड मौ
चौई साता ग्रडमठियौ	पच्ची सात पिचतरियौ
चौई ग्राठा बरागू	पचियौ ग्राठा दोय मौ
चौई नमा दो सौ नैं सोळं	पच्चो नम दा पच्चियौ
चौई दावा दो मो नैं चाळी(स)	पच्ची) दावा दो सौ नैं पच्चा पचियौ)

छाई एका छाई	सत्ताई एका सत्ताई
छाई दुग्रा बावन	सत्ताई दुग्रा चौपन
छाई ति इठन्तर	सत्ताई तिया इकियामी
छाई चौक चिडोतरियौ	सत्ताई चौक इठडोतरियौ
छाई पाण तिया हौ	सत्ताई पाण पैंतीया हौ
छाई छका छप्पन हौ	सत्ताई छक बासटियौ
छाई सात बयासियौ	सत्ताई सात गुणनेवा हौ
छाई ग्राठा दो मौ नैं ग्राठ	सत्ताई ग्राठा दो सौ नैं सोळं
छाई नमा दो चौतीयौ	सत्ताई नम दो तयाळौ
छाई दावा दो सौ नैं साठ	सत्ताई दावा दो सौ नैं सित्तर

ग्रट्ठाई एकन ग्रट्ठाई	गुणती एका गुणती
ग्रट्ठाई दुग्रा छपन	गुणती दुग्रा ग्रट्ठावन
ग्रटठाई तिया चौरासी	गुणती तिया मितियासी
ग्रट्ठाई चौक बायोतरियौ	गुणतो चौक सोलावौ
ग्रट्ठाई पाण चाळिया हौ	गुणती पाण पैंताळौ
ग्रट्ठाई छका ग्रडमटियौ	गुणती छक चौवोतरियौ
ग्रट्ठाई साता छिन्नू हौ	गुणती माता दो सौ नैं तीन
ग्रट्ठाई ग्राठ दो चौइयौ	गुणती ग्राठा दो बतीयौ
ग्रट्ठाई नम दो बावनियौ	गुणती नमा दो इकमठियौ
ग्रट्ठाई दाधा दो सौ नैं ग्रस्सी	गुणती दावा दो सौ नैं नेवं

ती एका ती
ती दुग्रा साठ
ती तिया नेवैं
ता चौका बीया ही
ती पाण डौड सौ
ती छका अस्सियौ
ती साता दो सौ ने दस
ती ग्राठा दो सौ नैं चाळी
ती नमा दो नैं सित्तर
ती दावा तीन सौ

इकती एका इकती
इकती दुग्रा बासठ
इकती तिया तेराणू
इकती चौक चौदया हौ
इकती पाण पचपनियौ
इकती छक छियासियौ
इकती साता दो सत्ताई
इकती ग्राठा दो अडताळौ
इकती नम दो गुणियासी
इकती दावा तीन सौ नैं दस

बत्ती एका बत्ती
बत्ती दुग्रा चौसठ
बत्ती तिया छिन्नू
बत्ती चौक अठाइया ही
बत्ती पाण साठा ही
बत्ती छका बाणू (बराणू)
बत्ती सात दो चौइयौ
बत्ती ग्राठा दो छप्पनियौ
बत्ती नम दो इठियासी
बत्ती दावा तीन सौ नैं बीस

तेती एका तेती
तेती दुग्रा छासठ
तेती ती निनाग
तती चौक बत्तियौ
तेती पाण पैंसठियौ
तेती छक अठाणुग्रो
तती सात दो इकतिया
तेती ग्राठ दो चौसठौ
तेती नम दो सताणू
तेती दाया तीन सौ नैं तीस

चौती एका चौती
चौती दुग्रा ग्रडसठ
चौती ती बिलगरियौ
चौती चौक छतीया हौ
चौती पाण सितरियौ
चौती छका दो सौ ने च्यार
चौती साता दो ग्रडतियौ
चौती ग्राठ बुवोतरियौ
चौती नमा तीन सौ नै छ
चौती दावा तीन चाळियौ

पैंती एका पैंती
पैंती दुग्रा सित्तर
पैंती ती पिचडोतर
पैंती चौक चाळिया हौ
पैंती पाण एक पिचडोतर
पैंती छका दो सौ नैं दस
पैंती सात दो पैंताळौ
पैंतो ग्राठा दो ग्रास्सयौ
पैंती नम तीन पनरावौ
पैंती दावा तीन सौ नैं पच्चा

छत्ती एका छत्ती
छत्ती दुवा बोयतर
छत्ती ती इठ्ठोतर
छत्ती चौक चम्माळी
छत्ती पाण एक असियो
छत्ती छका दो सोळावो
छत्ती सात दो बावनियो
छत्ती आठ दो इठियाळो
छत्ती नम तीन चौईयो
छत्ती दावा तीन सौ नै साठ

सैंती एका सैंती
सैंती दुवा चौबोतर
सैंती तो इगियारा हो
सैंती चौका एक अडताळा
सैंती पाण एक पिचियाई हो
सैंती छका दो बाइयौ
सैंती सात दो गुणामठो
सैंती आठ दो छिन्नुओ
सैंती नम तीन तैतिया
सैंती दावा तीन सित्तरओ

अडती एका अडती
अडती दुआ छियतर
अडती तिया एक चऊदै हो
अडती चौक बावनियो
अडती पाण एक नेऊ हो
अडती छक दो अट्ठाईयो
अडती सात दो छासाठियो~छासठियो
अडती आठा तीन सौ नै च्यार
अडती नम तीन बयाळो
अडती दावा तीन सौ नै अस्सो

गुणचाळी एका गुणचाळी
गुणचाळी दुआ इठन्तर
गुणचाळी तिया एक सतरावो
गुणचाळी चौका छप्पनियो
गुणचाळी पाण पचाणुओ
गुणचाळी छक दो चौतीसो
गुणचाळी साता दो तेवोतरियो
गुणचाळी आठा तीन सौ नै बारै
गुणचाळी नम तीन सौ इकावनियो
गुणचाळा दावा तीन सौ नै नेवै

चाळी एका चाळी
चाळी दुआ असमी
चाळी तिया बिया हो
चाळम चौकडो साठा हो
चाळी पाण दाय सौ
चाळी छक दो चाळियो
चाळम साता दो अस्सियो
चाळम आठा तीन सौ नै बास
चाळी नम तीन सौ नै साठ
चाळी दावा च्यार सौ

५ २ १४ इतर सख्यावाचक रचनाओ के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न क्षेत्रो म व्यवहृत गणनामूलको के नामो को सूचित किया जा रहा है।

(क) गणनामूलक शब्दों के नाम

अेको	सातौ
दुग्रौ	ग्राठौ
तीग्रौ	नव्वौ
चौकौ	दस्सौ
पाचौ	मीडौ~सुम
छक्कौ	अेकी
	बेकी

(ख) ताश के खेल म व्यवहृत गणनामूलक नाम

इक्कौ
दुग्गी~दुर्री
तिग्गी~तिर्री
चौगो
पाचो
छग्गो
सातो
ग्राठो
नवो~नवलो~नवलो
दसो~दसलो~दसलो

(ग) तिथियो के लिए व्यवहृत गणनामूलक नाम

अेकम
दूज~बीज
तीज
चौथ
पाचम
छठ
सातम
ग्राठम
नम
दसम
इग्यारम
बारस

तेरस
चऊदस

इसी कोटि के अन्य शब्द पूनम, सुद~सुदी, बद~बदी, अधारपख, ऊजळपख~चादणोपख इत्यादि हैं।

(घ) सन्तान के लिए परिवार मे व्यवहृत गणनामूलक शब्द

मोभरो	"प्रथम पुत्र"	पूठलो	"अन्तिम पुत्र"
मोभरी	"प्रथम पुत्री"	पूठली	"अन्तिम पुत्री"
बिचेटियो	"बीचवाला पुत्र"		
बिचेटकी	"बीचवाली पुत्री"		

(ङ) गाय-भैसो के ब्याने के क्रमसूचक शब्द

पैलीयाण
दूजीयाण
तीजीयाण
चौथीयाण
पाचीयाण, इत्यादि

(च) गिप के खेल मे एक से दस तक की सख्या के गणनासूचक शब्द

मोर	"प्रथम"
दुल	' द्वितीय"
तिल	"तृतीय"
चौल	"चतुर्थ"
पाचल	"पचम"
छल	"षष्ठ"
सातल	"सप्तम"
आठल	' अष्टम"
नवल	"नवम"
दसल	' दशम"

५ २ १५ गुणित एकको अथवा भागकों द्वारा योग-सख्या सूचित करने की भी भाषा मे पद्धति है। एतद्विषयक सहितिवाचक सख्या पदबन्धो का निदर्शन करने वाले कतिपय वाक्य नीचे उदाहृत किये जा रहे हैं।

(५४) बारै नै बारै चौईस कोस ताईं जीव नाव बाकी नी छोडियो।

(५५) तीस घाट सो बरसा रै लगैटगै पुगो हू, म्हनै तो सुख नाव इण अमूमणो रो ई आयो।

(५६) आप तो अेक री बात करो, म्हूँ अैडी अठारा बीसां अणद्रावां आपरै पगां लाधनै पटक दूं ।

अा राजस्थानी की कतिपय संहितिवाचक संख्यावाचक रचनाएं सोदाहरण नीचे सूचित की जा रही है ।

आसटो "आधी दूरी"

(५७) आसटै आय कान्हूडो च्यारू खानी आल ऊचौ आभै साम्हीं जोयो । इण समन्दर री तौ लीला ई न्यारी ।

आधोआध "आधा-आधा"

(५८) सेठ अर बिणजारै रै आधोआध । दोना नै अेक दूजै माथै पूरो भरोसो ।

आधोऊधो "कुछ कुछ"

(५९) आधोऊधो चेतौ हुवो जरै च्यारू हथमार जिल्दरनै बैठा हुआ ।

पाच-पच्चीस "एक अनिश्चित संख्या"

(६०) जगळ में पाच-पच्चीस भेळा होय टणकाई करता तौ जिनावर वांनै मतै ई सतट लेता, इण वास्तै रात रा घरै सूता सापै वात करो ।

इक्की-दुक्की "कोई-कोई कोई हो"

(६१) बरसा म कै जुगा मे ऊडै मायै रा इक्का-दुक्का जलमै ।

अलेखू "अगणित"

(६२) काल री की भरोसो कोनीं तौई हरखित अलेखू जीव जतनैला ।

अणगिण "अगणित"

(६३) सुगत हुवोडो अणगिण सुगाया घूमर घाल-घाल ई नाची । घणा ई गीत गाया ।

अेकोअेक "प्रत्येक, हर एक, समस्त"

(६४) करता-करता मोटियार री पगथलिया सूं लेय मथै ताईं री अेकोअेक सूला निकळगी"

अेकाअेक "केवल एक"

(६५) सारू माई परणिया-पाळिया, बोरणिया रूपाळी । अेकाअेक नणद गो अगुठी नाह राखै ।

अेकाणाई "एक साथ"

(६६) अेकाणाई माळू-री माळू बिलावगी ।

दो-एक "दो एक एक-दो"

(६७) थोडा हेटै उतर धोबा दो-एक ढालू तो लाय दौ।

एक सू दूजौ "एक से अधिक"

(६८) घणकरा लोग तो अेक सू दूजी बातई नी छोडी।

सईकौ "सौ, सैकडा"

(६९) छती भरी-तरी गवाडी। म्हैं आज त्यारी सोधी कर। सईकै रै लगै-टगै पूगी हूं।

सहितिवाचक प्रत्यय की अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(७०) सैकड़ू न रिपिया भेळा करिया पछै मिंदर बिणाणौ सरू करियौ।

(७१) सेठ दिसावर जायनै करोडान रिपिया भेळा करिया।

५ ३. निर्धारक विशेषण अन्य विशेषणो, सज्ञाओ तथा क्रियाओ के पूर्व अवस्थित होकर, अपने इन विशेष्यो के गुण-धर्मों आदि के प्रमाण अथवा मात्रा का निर्धार करते हैं। यथा निम्नलिखित वाक्यो मे (७२, ७३)

(७२) राजा लोभी अतइज घणौ हो।

(७३) डाकण रो बेटी रा दात पीळा पट्ट हा।

राजा को बहुत लोभी मात्र न कहकर (७२) "अतइज घणौ लोभी" कहा है। उसी प्रकार वाक्य सख्या (७३) मे दातो को मात्र पीला न कहकर ' पीळा-पट्ट" कहा है। इन दोनो वाक्यो मे अतइज एव पट्ट शब्द क्रमश लोभी स्वभाव और दातों के पीलेपण के प्रमाणाधिक्य अथवा आत्यान्तिकता का बोध कराते हैं। साथ-ही-साथ ये दोनो शब्द श्रोता के सम्मुख एक ऐसी स्थिति उपस्थित करते हैं जिससे उसके हृदय मे वर्णित व्यक्ति, वस्तु इत्यादि के प्रति विविध भावो का उद्‌वेलन हो उठता है और श्रोता वर्ण्य विषय के प्रति उन्मुक्त भाव से निर्द्वन्द्व होकर तत्त्व ग्रहण मे समर्थ हो जाता है।

वर्ण्य विषय की दृष्टि से इन निर्धारको की विभिन्न कोटिया हैं—(क) यथावत्‌ता बोधक, (ख) आतिशय्य बोधक, (ग) मापबोधक।

५ ३ १ यथावत्‌ता बोधक निर्धारक विशेपणो का प्रकार्य है किसी गुण अथवा स्थिति की मात्रा अथवा परिमाण का प्रबल रूप से इस प्रकार समर्थन करना कि वक्ता ने उसके विषय मे जैसा कहा है श्रोता को उसके वैसा होने मे सशय न रहे। इस कोटि के अंतर्गत निर्धारक-विशेषणो की सूची नीचे प्रस्तुत की जा रही है और यथासम्भव उदाहरण भी।

अगं (७४)
अतइज (७५)
अकछ (७६)
अक्न (७७)
अगू तौ (७८)
अडीजत (७९)
अलल (८०)
इदक
अैन
'क
काठौ (८१)
खासौ
खासौ भलौ
घणौ
जबर
टेट
थोडौ-घणौ
दरजै (८२)
छकै-पजै (८३)
नक्की
नामो
धापनै
निपट
निरध
नेगम
पूरौ
बडौ
फगत
बिलकुल
बोळी
भर
मुळगो (८४)
सफा
साव (८५)
हदभात (८६)

(७४) पण इत्तरज री बात कै देस निकाळै री बात सुणिया ई राजक्वर अगं ई दुमना नी हुया।

(७५) राजा लोभी अतइज घणौ हो।

(७६) घणकरा अकछ हथियार मेल रै ओलै इछा परवाण मौजा माणै।

(७७) छोटोडो राजकवरी बोली—परणीजू ला तौ इण केम वाळा मोटियार नै ई, नीतर अक्न कवारी रैवू ला।

(७८) अेक धोबी री गधौ अगूतौ इज माठौ अर जिद्दी हौ।

(७९) *ऊकर अर ठिकाणै री परघै अेक पग रै पाण हाथ जोडिया हाजरी म* अडीजत त्यार।

(८०) हजार मिनखा जित्तौ अेकलौ ई अलल-हिसाब झूठ बोलियौ तौ ई की सुख पायौ नीं।

(८१) ऊदरौ तौ काठौ आतौ आयोडो हौ इज।

(८२) दरजै लाचार होय राजाराणी नै राजकवरी री बात मानणी पड़ी।

(८३) स्याळ तौ छकै पजे सावचेत हौ। वो तौ हुक्को करतौ उठै सू सौकड मनाई।

(८४) थारै मन मू ओ उर मुळगो ई काढ दै ।

(८५) सगळी दरीखानो चुप हुय ग्यो । साव नवो सवाल हो । सगळा सोचन लागा ।

(८६) नोबडो हृदभात धेर-घुमेर हो । सूरज री किरणा ई काई हुय जावै ।

५ ३ २ आतिशय्य बोधक निर्धारक विशेषणो की आतरिक सरचना के आधार पर पाच वर्ग किये जा सकते हैं । इस कोटि के समस्त निर्धारक वस्तुत अभिव्यजक हैं ।

इन पाचो वर्गो के निर्धारको के उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं ।

गु वा विशेपण	निर्धारक विशेपण सहित अभिव्यजक रूप
(क) खारो	खारो खट्ट, खारो खिट्ट, खारो घुट्ट
गोळ	गोळ गट्ट, गोळ गिट्ट, गोळ गिट्ट
गीलो	गीलो गच्च, गीलो गिच्च, गीलो गुच्च
ढीलो	ढीलो ढच्च
तीखो	तीखो तच्च
(ख) खाली	खाली खणक, खाली खणच
तीखो	तीखो तणच
फूटरो	फूटरो फणक
फीरो	फीरो फणक

(ग) इस कोटि के निर्धारक सामान्यत गुणवाचक विशेषणो सहित ही अवस्थित होते हैं ।

टिप्पाटोळ	धोळो फक्क	कालो कुराड
हुब्बा होळ	काळो मिट्ट	ठालो ठलाक
ऊजलो फट	काळो धाक	मोटियार काटो
चानणो धट्ट	त्यार टच्च	बूडो खखर
नागो तडग	मीठो गुटक	सूखो खणक
पाधरो सणक	धाबू धप्प	

(घ) इस कोटि के निर्धारक भी सामान्यत गुणवाचक विशेषणो सहित ही अवस्थित होते हैं ।

ठाडो हेम	खारो श्राक	खारो जैर
लाल ममोलिया	लाबो लक्कड	बूडो ढैण

काचौ झिग	फीकौ थूक	रातौ लाल
ऊडौ धेड	चौडौ चौगान	फाटौ पूर
सफेद झिग	पाधरौ धूम	धोलौ चन्दन
मोठौ मिसरी		

(ड) अन्य कोटि के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

रातौ चोळ	लीलौ चम	गोरौ निछोर
हरियौ चकन	लीलौ भोर	मणा वद

५ ३ ३ माप बोधक निर्धारक विशेषण ऐसे पारम्परिक मापक हैं जिनके द्वारा प्रसगानुसार वर्णित विषय, वस्तु इत्यादि के गुण धर्म की मात्रा अथवा परिमाण-निर्धारण की अभिव्यक्ति होती है । यथा—

मात्रा निर्धारक

सोलै आना परबस
इक्कीस आना पतियारौ
दो बास ऊडौ
पाच मण गुळ
धोबौ-धोबौ धूड
घडा रै मूडै दारू
दरदर रौ मगतौ
भुजभुज रा लाख

परिमाणाधिक्य वाचक निर्धारक

इन निर्धारको की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(८७) छोरौ भळै खुणचिया-खुणचिया पाणी पायौ ।

(८८) इण भात मार्थ मे धोबा-धोबा धूळ उछाळतौ हाथ पग हिलायण रै सुख नै बिडदावतौ वो अतलोक मे नाचतौ-कूदतौ रमग्यौ ।

(८९) मोठा री पोट खोल अणुतै कोड सू वानै चराया । तिगरा-तिगरा लाय पाणी पायौ ।

५ ३ ४ कतिपय माप निर्धारको को अभिव्यजकता उनके अभिधयार्थ पर निर्भर न होकर, सन्दर्भ की लाक्षणिकता के माध्यम से व्यक्त होती है, यथा वाक्य सख्या (९०) मे "एक गगाल भरनै साढिया रौ दूध" देखने म सामान्य कथन है किन्तु इतनी मात्रा मे दूध की प्राप्ति असाध्य कार्य है । यहा लक्ष्यार्थ द्वारा असाध्य साधन का सकेत है । इसी प्रकार के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(९०) बावडी रै माय पफावती राणी काळै दिन ऊगता पाण मूवैला। च्यारू पागै चार सिंघ ऊभा। पेफावती रै मायँ कमूवल साल ओदियोडी। पगातियँ हळदी री रूख। सिरातियँ मेहदी री रूख। सिंघा नै अेक गगाल भरनै साडिया री दूध पाया वै चुस्कारो ई नी करै। नीतर च्यारू अेकण सागै भपटै नै रू-रू फाड न्हाकै।

(९१) तद राजा जी री सानी मिलिया दीवाण जी पैली सरत बताई। नदी रै माय सात खारी चिरमिया अेक ठौड राळैला। सगळी चिरमिया तीन दिन मे पाछी भेळी नी करै तो थाणी मे पीलीजैला।

५ ३ ५ नीचे कतिपय माप बोधक निर्धारक पदबन्धो की अवस्थिति के उदाहरण निर्दशित किये जा रहे हैं।

(९२) माखण री भोग्म अर मिसरी रै मिठास सू वो मन मे जाणैं जित्तो राजी हुयो।

(९३) राजा हुरतड घडै ज्यू मचियोडो हो।

(९४) म्हैं गलती माव मा इज करू कै इण कमसल जात नै जीवती छोडू।

५ ४ शब्दगत रचना के आधार पर समस्त विशेषणो को दो कोटियो मे परिगणित किया जा सकता है (क) विकाय अर्थात जिनके साथ अपने विशेष्यो के अनुसार लिंग तथा वचन के वाचक प्रत्ययो का योग होता है (यथा भलो छोरो भली छोरी इत्यादि) तथा (ख) अविकार्य अर्थात जिनके साथ अपने विशेष्यों के अनुसार लिंग तथा वचन के वाचक प्रत्ययो का योग नहीं होता (यथा रोगी मिनख अनूट आणद अखूट माया इत्यादि)।

विकाय विशेषणो मे समस्त विकाय गुणवाचक तथा कतिपय निर्धारक विशेषण, विकाय तथा अविकाय विशेषणो के अभिव्यजक रूप गणनामूलक संख्यावाचक कतिपय प्रभागक सख्यावाचक (यथा आधो पूणो डोडो इत्यादि), क्रमसूचक सख्यावाचक आनुपातिक सख्यावाचक अथवा इन सख्यावाचकों के अभिव्यजक रूपो को परिगणित किया जा सकता है। नीचे विकाय विशेषणा की शब्द रूप गत रूपावली और उनके विशेष्यो के साथ लिंग वचनानुसार अन्वय का निदर्शन भलो विशेषण की छोरो और छोरी सज्ञाओ के साथ अवस्थिति के उदाहरणो द्वारा किया जा रहा है।

		एक वचन	बहुवचन
पुल्लिग	ऋजु	भलो छोरो	भला छोरा
	तियक	भला~भलै छोरा-छोरै	भला~भला छोरा
स्त्रीलिंग	ऋजु	भली छोरी	भली छोरिया
	तियक	भली छोरी	भली छोरिया

सख्येय सज्ञाओ से निर्मित यौगिको मे अवस्थित घटको म लिंग भेद होने पर विकार्य विशेषण की अवस्थिति पुल्लिग बहुवचन मे होती है (९५)।

(९५) दोनू भाई-बैन अणूता भला है।

५ ५ अभिव्यजक रूप रचना के अतिरिक्त वाक्यो मे विशेषणो की अवस्थिति "वैण सगाई' (अथवा अनुप्रास) के आधार भी होती है। वैण सगाई का निदर्शन करने वाले कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किय जा रहे हैं।

(९६) हुबाहुब हिबोळा भरतो ढाडो थर निरमल पाणी।

(९७) बानै देखता ई ठळाक ठळाक रोवण लागो, जाणै सावण री काळी कळायण वरसी व्है।

(९८) बनैरी मा किवाड रै ओळै झीणै झोळै सूं मूडो काढनै बोली

(९९) जे गती रोही मे अेकळ मिनख नै मिळ जावै तौ छाती फाट जावै।

५ ६ विशेषणो से निर्मित आमेडित रचनाए (जिनमे से कतिपय का उल्लेख सख्यावाचको की रचना के प्रकरण में किया जा चुका है) भी अभिव्यजक सरचना का अग हैं। इनके कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(१००) भोपणा भवारा कडबटीला। बोखौ मूडो। नीचै लुलियोडो तीखौ नाक। फाटोडी-फाटोडी आखिया।

(१०१) उण कवळै-कवळै उरणिया नै देखता ई उणरै लाळा पडण ढूकी।

(१०२) बनै री मा अर बडी मा चाकी पीसती थारी भू डी-भू डी बाता करती ही।

(१०३) दोना रै न्यारी-न्यारी आखिया है अर न्यारी-न्यारी जेता है।

रौ-अन्तर्निविष्ट आमेडित रचनाओ के भी कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(१०४) पाछौ रौ पाछौ गाव रपटू, म्हनै केई काम सारणा है।

(१०५) अठै औ ठोट रौ ठोट रै जावैला।

५ ७ सार्वनामिक विशेषण कोई भिन्न शब्द रूपात्मक सवर्ग न होकर, सर्वनामो की विशेषण स्थानीय अवस्थिति पर आधृत उनके वाक्यविन्यासात्मक सवर्गीकरण का वाचक शब्द है। भाषा के समस्त सर्वनामो का विवरण प्रकरण सख्या (४) मे किया जा चुका है। इसलिये उनके वाक्य विन्यासात्मक प्रकार्यों की मात्र सूची प्रस्तुत करके आवृत्ति करना न तो व्याकरणिक दृष्टि उपयुक्त है और न ही सरचनात्मक स्पष्टीकरण के लिए उपयोगी। इसलिए इस विषय का विवेचन वाक्यविन्यास विभाग मे किया जायगा।

६. क्रिया

६ १ ग्रा राजस्थानी क्रिया प्रकृतिया अपनी ग्रातरिक सरचना के अनुसार वर्गीकृत होती हैं ग्रौर पक्ष, वृत्ति तथा काल ग्रादि के वाचक प्रत्ययो से युक्त होकर इनके समापिका क्रिया रूपो की रचना होती है। ग्रान्तरिक सरचना के अन्तर्गत इनके प्रकृतिरूप निर्माण तथा वाच्यादि तत्त्वा का विवेचन आवश्यक होता है।

६ २ प्रकृतिरूप निर्माण के ग्राधार पर क्रियाग्रो का निम्न वर्गों मे विभाजन किया जा सकता है

(क) अनुकरणात्मक क्रिया-प्रकृतिया, यथा कचरणौ, घमीडणौ, घरड़णौ, धरहड़णौ, धसमसणौ, पपोळणौ इत्यादि। इनका विशेष विवरण अनुकरणात्मक प्रातिपदको के रूपनिर्माण के अध्याय मे किया जायगा।

(ख) सज्ञा तथा विशेषण जात क्रिया प्रकृतिया, यथा

कोडावणौ	अकुरणौ	मीठावणौ
मोलावणौ	अणमणौ	पूरणौ
उजाडणौ	अवेरणौ	अधियारणौ
उफाणणौ	अफडणौ	
उबाळणौ	सिणगारणौ	
खोतरणौ	ग्रैठणौ	
डामणौ	उथापणौ	
खरचणौ	उथाळणौ	
डरणौ	खीभणौ	
ठगणौ	ग्रादेसणौ	

(ग) क्रियाप्रकृति अनुक्रम, जो कि दो स्वतन्त्र क्रियाप्रकृतियो की पारस्परिक ग्रासत्ति से व्युत्पन्न होते हैं यथा खावणौ-पीवणौ, खावणौ-कमावणौ, कमावणौ-खावणौ, कैवणौ-सुणणौ ग्रादि।

(घ) यौगिक क्रियायें जिनमे सज्ञा ग्रथवा विशेषण के साथ विशिष्ट रचनाग क्रियाग्रो की ग्रासत्ति से क्रियाप्रकृति रूपो की रचना होती है। यथा राजी हूवणौ, ध्यान राखणौ, ध्यान लगावणौ, सोच करणौ, काबू राखणौ इत्यादि।

(ङ) सयुक्त क्रियाए, जिनमे मूल क्रिया प्रकृतियो के साथ (जिनमे उपरोक्त वर्णित सभी वर्गो की क्रियायें तथा वर्ग (च) की क्रियायें भी सम्मिलित हो सकती हैं), कतिपय विवाग्क क्रियाओ की आसक्ति होती है। यथा **कवर जावणो, खा-पी लेवणो, काबू राख सकणो, निकळ जावणो, उमड आवणो, छलक आवणो, सुण चुकणो, ले पधारणो** इत्यादि।

(च) मूल क्रियायें जिनके अन्तर्गत् मात्र क्रियाप्रकृति शब्दा को सम्मिलित किया जाता है। यथा **जावणो, आवणो बैठणो, देखणो, राखणो** इत्यादि।

(छ) $क्रि_1$–$क्रि_2$ क्रियाप्रकृति अनुक्रम जिनमे अन्य विविध अनुक्रमो यथा **छोडणो चावणो, बोलणो आवणो, कूटण समणो, कूटण लागणो, आवणो पडणो** आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। इस कोटि के अन्तगत् अन्य अनेक प्रकार के $क्रि_1$–$क्रि_2$ अनुक्रम भी हैं। इन सबका विवरण प्रकरण सख्या (६ १४) मे किया जायगा।

६ ३ आ राजस्थानी क्रियाप्रकृति अनुक्रमो मे रूप एव अर्थ की दृष्टि से निम्न कोटियो की रचनाओ को सम्मिलित किया जा सकता है।

(क) सम्बन्धित क्रियाप्रकृति अनुक्रम
(ख) पर्यायवाची क्रियाप्रकृति अनुक्रम
(ग) विपर्यायी क्रियाप्रकृति अनुक्रम
(घ) आ- क्रियाप्रकृति अनुक्रम
(ङ) प्रतिध्वन्यात्मक क्रियाप्रकृति अनुक्रम
(च) इतर क्रियाप्रकृति अनुक्रम

६ ३ १ सम्बन्धित क्रियाप्रकृति अनुक्रमो मे पूर्ववर्ती क्रियाप्रकृति द्वारा वाचित क्रिया-व्यापार का उसके अनुवर्ती गौण क्रियाप्रकृति के क्रिया व्यापार से प्रचलित व्यवहार की दृष्टि से सम्बन्ध होता है, और दोनो क्रियाप्रकृतियो का अर्थ, कोश मे प्रदत्त अर्थों के अनुसार होते हुए भी, मात्र उनका योगफल नहीं होता। यथा, **खावणो-पीवणो** अनुक्रम का सामान्य अर्थ है 'खाने तथा पीने के क्रिया-व्यापार मे प्रवृत्त होना।" यह अर्थ कोश मे प्रदत्त इन क्रियाओं के पृथक पृथक अर्थों के योगफल पर आधारित तो है परन्तु सम्पूर्ण अनुक्रम **खावणो पीवणो** का वास्तविक अर्थ नही माना जा सकता (१)।

(१) लुगाई हू, लुगाई रा दुख-दरद नैं जाणू हू। म्हारो घरम बिगडियो, म्हारा बस चका थारो नी बिगडण दू। इण घर मे थारो अजळ है, सीर-सस्कार है, थारी मरजी व्है ज्यू **खा-पी**। थनै कुण ई ओडो देवणियो नो। लक्खो री बाता सुणनैं बामणो रा जीव मे जीव आयो।

उपरोक्त उदाहरण मे टावणो-पीवणो के सामान्य अर्थ के अतिरिक्त यह अर्थ भी है कि "तुम निश्चिन्त होकर मेरे घर मे रहो" इत्यादि ।

एक ही क्रियाप्रकृति अनुक्रम के भाषा मे विविध प्रसगानुसार विविध अर्थ भी हो सकते हैं । खावणो-पीवणो अनुक्रम की निम्न अवस्थितियो मे इसके क्रमश अर्थ हैं 'किसी की खातिरदारी करना (२)" तथा 'किसी के गृह मे अव्यवस्था का होना (३)" इत्यादि ।

(२) खावण पीवण री सगळी माकूल इतजाम पैली सू हुयोड़ो हो ।

(३) म्हारा तो सगळा खाणा-पीणा ई छूटग्या ।

कई सम्बन्धित क्रियाप्रकृति अनुक्रमो के दोनो अगो मे क्रमभेद से अर्थभेद भी होता है (४, ५) ।

(४) जका मैनत कर कमावै-खावै, सभ्यता और मिलणसारी नै समझै । गुणा री कदर करै, मिनखा री अदब करै ।

(५) हाल बिचिया कवळा है । खावण-कमावण जोगा हुया पैली जे थू दुमात लायनै घरै बैठाण दी तो टाबरा री काई गत बिगड़ैला, इणरो थनै की अदाज है ।

उपरिलिखत वाक्यो म कमावणो-खावणो (४) का सामान्य अर्थ है "कुछ वृत्ति, व्यापार आदि करना," और खावणो-कमावणो (५) का सामान्य अर्थ है "स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने के योग्य हो जाना" इत्यादि ।

६ ३ २ पर्यायवाची क्रियाप्रकृति अनुक्रमो के दोनो अग प्राय एक-दूसरे के पर्यायवाची होते हैं । यथा **उछळणो-फादणो, उछलणो कूदणो घूमणो-फिरणो, लडणो-झगडणो, लोवणो पोतणो, जाणणो-बूझणो** इत्यादि । अर्थ की दृष्टि से इन अनुक्रमो को समअर्थकोटि अनुक्रमो की सज्ञा से अभिहित किया जा सकता है (६,७) ।

(६) लोग-बाग काई देख्यो कै सूवटा री तूटोड़ी टाग रै समचै ई राणी री टूटोड़ी टाग तूटनै अळगी जाय पडी । राणी हेटै गुडगी । तूट्योड़ी टाग सू लोई रा रेला बहण लागा । जोम म अठी-उठी उछळती-फादती री ।

(७) जवाई जीमै है, लुगाया गीत गावै है, अर टाबर-टीगर *उछळना-कूदना* किलोळ करै है ।

६ ३ ३ विपर्यायवाची क्रियाप्रकृति अनुक्रमो के दोनो अग प्राय एक-दूसरे के *विपर्याय होते हैं । यथा* **आवणो-जावणो, घटणो बढणो उळझावणो सुलझावणो बणणो-बिगडणो, चढणो-उतरणो** इत्यादि । अर्थ का दृष्टि से इन अनुक्रमो को विपर्याय समिश्रकोटि अनुक्रमो की सज्ञा से अभिहित किया जा सकता है (८) ।

(८) इण भात रै नवा विचारा रा काची सूत उळझावती-सुळझावती वा उठै पूगी तो राजकवरी पूछ्यो— भुवा जी, आज मोडा घणा आया। घूमण नै अळगी भाय गिया काई ?

६ ३ ४ आ-क्रियाप्रकृति अनुक्रमो की रचना मुख्य क्रिया के साथ उसी से निर्मित आ-प्रेरणार्थक रूप की आसत्ति से होती है। यथा, **करणो-करावणो, फुरणो-फुरावणो** इत्यादि। अर्थ की दृष्टि से इस कोटि के अनुक्रम भी समिश्र अर्थवाची रचनाए हैं (९)।

(९) रामा-सामा कर-कराय'र, वामण कैयो इज–स्याळ भाई, आज तो अेक बात माथै म्हारै दूंना रै भौड हुयगी।

६.३ ५ प्रतिध्वन्यात्मक क्रियाप्रकृति अनुक्रमो की रचना मुख्य क्रिया के साथ उसी से निर्मित उसके प्रतिध्वन्यात्मक रूप की आसत्ति से होती है। यथा, **छागणो-छूगणो, घूमणो-घामणो, लिखणो-विखणो,** इत्यादि।

६ ३ ६ इतर क्रियाप्रकृति अनुक्रमो मे सामान्यत ऐसी रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है जिनका द्वितीय अग भाषा मे स्वतन्त्र क्रिया के रूप मे अवस्थित नही होता। यथा, **परणणो पातणो, मागणो-तागणो, मिळणो-जुळणो,** इत्यादि।

६ ४ अन्य भारतीय आर्य भाषाओ के समान आ राजस्थानी मे भी क्रिया-नामिक पदबन्धो (सज्ञा$_2$ + परसर्ग + सज्ञा$_1$ अथवा संज्ञा$_2$ + परसर्ग + गुणवाचक विशेषणो) के साथ रचनाग क्रियाओ की आसत्ति से विविध प्रकार की क्रिया-व्यापार बोधक रचनाए होती हैं, जिन्हे सामान्यत यौगिक क्रियाओ को सज्ञा से अभिहित किया जाता है। जैसा कि उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है, इन यौगिक क्रियाओ के दो मुख्याग होते हैं— (क) क्रियानामिक पदबन्ध तथा (ख) रचनाग क्रिया। यथा, ध्यान सज्ञा को सज्ञा$_1$ (=स$_1$) मानकर, इससे निर्मित यौगिक क्रियायें हैं, **स$_2$ रो ध्यान आवणो, स$_2$ रो ध्यान लगावणो, स$_2$ सारु ध्यान लगावणो, सं$_2$ रो ध्यान करणो, सं$_2$ रो ध्यान देवणो, सं$_2$ माथै ध्यान देवणो, सं$_2$ रो ध्यान राखणो, स$_2$ रो ध्यान रैवणो, सं$_2$ रै वास्तै ध्यान धरणो, सं$_2$ रो ध्यान छोडणो, स$_2$ नै ध्यान बवणो,** इत्यादि। इसी प्रकार सं$_2$ + परसर्ग + राजी क्रियानामिक पदबन्ध को (जिसमे स$_1$ के स्थान पर विशेषण राजी की अवस्थिति हुई है) सातत्य मानकर, इससे निर्मित यौगिक क्रियाओ के उदाहरण हैं **सं$_2$ माथै राजी हुवणो, स$_2$ सू राजी हुवणो, स$_2$ रै सारु राजी हुवणो, स$_2$ नै राजी करणो, सं$_2$ नै राजी राखणो, स$_2$ माथै राजी रैवणो,** इत्यादि।

इन दोनो कोटियो के उदाहरणो मे क्रमश ध्यान सज्ञा और राजी विशेषण का क्रियाकरण हुआ है। इसके साथ-ही-साथ यह तथ्य भी द्रष्टव्य है कि एक ही क्रियानामिक पदबन्ध के साथ विविध रचनाग क्रियाओ की अवस्थिति हो सकती है, और एक ही रचनाग क्रिया के साथ विविध क्रियानामिक पदबन्धो की।

६ ४ १ यौगिक क्रियाओ मे अन्य समस्त अगो का सातत्य होने पर भी परसर्गों की अवस्थिति म विभेद होने पर विविध रूप से सूक्ष्म अर्थ-भेद हा जाता है (१०, ११)।

(१०) कोई अबूझ बाळक सोनै मू लदियोड़ौ अेकलौई घर्कै पड जावै तौ ठग सपना मे ई उण बाळक रै साथै धोखौ नीं करै।

(११) ईया कर कर केई बिळिया बूढा-बडेरा नै धोखौ दीनो, धूवै मू उलटी करी अर होकै री पाणी गिटियौ।

इन वाक्यो मे स$_1$-सज्ञा धोखौ के अर्थ मे परसर्ग रै साथै (१०) और नै (११) के आधार पर जा सूक्ष्म अर्थ-भेद हुआ है वह स्वत स्पष्ट ही है।

६ ४ २ क्रियानामिक पदबन्धो म अवस्थित स$_1$–सज्ञाए सामान्यतया भाववाचक होती हैं जैसा कि उपर के उदाहरणो से स्पष्ट है। किन्तु वस्तुवाचक स$_1$–सज्ञाओ की इन परिसरो मे अवस्थिति पर विशेष प्रतिबन्ध नही है। वस्तुवाचक स$_1$–सज्ञाए दो प्रकार की होती हैं —(क) शारीरिक अग नाम बोधक तथा (ख) आधारवाचक अभिव्यजक सज्ञाए।

शारीरिक अग नाम बोधक सज्ञाओ की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१२) सावळ कान देयनै सिंघ री होकारा सुणी तौ वानै सता रै मुकाम सू ई आवती सुणीजी।

(१३) जद बाप ई आखिया फेर लो तौ पछै दूनक्वर किण आगे मुरझायोड़ै हिवड़ै री सताप परगट करै।

उपरोक्त वाक्यो मे कान देवणौ (१२) तथा आखिया फेर लेवणौ (१३) दोनो यौगिक क्रियाए हैं जिनमे कान सज्ञा श्रवण तथा आखिया दृष्टि की प्रतिस्थानीय है। ये दोनो यौगिक क्रियाए क्रमश ध्यानपूर्वक सुनने तथा किसी के प्रति घृणा आदि भावो की अभिव्यक्ति कर रही हैं।

गुणवाचक अभिव्यजक रचनाओ के अनेक उदाहरण प्रकरण सख्या (३ ५ १) म दिये जा चुके हैं। नीचे एक और उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है (१४)।

(१४) घर री मिनख ई जद लाज री बाढ लाधै तौ पछै कुण उणरी रिछिया कर सकै।

इस वाक्य मे अवस्थित यौगिक क्रिया लाज री बाढ लाधणौ मे स$_2$–सज्ञा बाढ गुणवाचक अभिव्यजक सज्ञा है और समस्त यौगिक क्रिया के अर्थ "किसी से निन्दनीय अथवा शर्मनाक व्यवहार करने" के आधार पर इस वाक्य म बाढ शब्द का प्रयोग सर्वथा सगत है।

यौगिक क्रियाओं में वस्तुवाचक $स_1$–संज्ञाओं की अवस्थिति तत्सम्बन्धी संकल्पनाओं की विविध आविर्भावनाओं से सम्बन्धित होती हैं और उपरोक्त प्रकार के वाक्यों में इनका अर्थ कोश में दिये अर्थ से भिन्न हो जाता है।

६.४.३ कई यौगिक क्रियाओं के संरचना की दृष्टि से एकाधिक रूप भी भाषा में उपलब्ध होते हैं। यथा $स_2$ रै माथै काबू राखणौ (१५) तथा $स_2$ नै काबू में राखणौ (१६)।

(१५) थारै वेवेतै हुता हूँ म्हनै रीस तो अणूती आई पण मन माथै काबू राखियौ।

(१६) आज पोहरै री बात इत्ती खारी लागै तौ पैला मन नै काबू मे राखणौ हौ।

इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(१७ क) $स_2$ रै माथै कब्जौ कर लेवणौ

(१७ ख) $स_2$ नै कब्जै मैं कर लेवणौ

(१८ क) $स_2$ नै इनाम देवणौ

(१८ ख) किणी नै $स_1$ इनाम मे देवणौ

(१९ क) $स_2$ नै रीस आवणौ

(१९ ख) $स_2$ रौ रीस मे आवणौ

अनेक रचनाओं, यथा धोखे मे आवणौ, काम (मे) आवणौ धोखे मे रैवणौ आदि के मूल $स_2$ + परसर्ग + $स_1$ + रचनागत क्रिया रूप भाषा मे उपलब्ध नहीं होते।

अनेक यौगिक क्रियाओं (यथा, किणी रौ आदर करणौ) के प्रतिस्थानीय क्रिया पदबन्ध भी (यथा, किणी नै आदरणौ) आदि भाषा में उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार के अतिरिक्त उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं (२०-२३)।

(२० क) किणी री रुखाळी करणौ

(२० ख) रुखाळणौ

(२१ क) किणी री पिछाण करणौ

(२१ ख) पिछाणणौ

(२२ क) पूरौ करणौ

(२२ ख) पूरणौ

(२३ क) किणी रै माथै रीस आवणौ/करणौ

(२३ ख) रिसावणौ

६ ४ ४ सकर्मक और अकर्मक यौगिक क्रियाओ के कई युग्मो मे रचनाग क्रियायें भिन्न-भिन्न भी होती हैं (२४-२६)।

	सकर्मक यौगिक क्रिया	अकर्मक यौगिक क्रिया
(२४)	$स_2$ नै नसीयत देवणी	$म_2$ नै नसीयत मिलणी
(२५)	$स_2$ मे सळ घालणो	$स_2$ में सळ पडणो
(२६)	$स_2$ रो पिदडको काढणो	$स_2$ रो पिदडको निकळणो

उपरोक्त उदाहरणो मे क्रमश देवणी . मिलणी, घालणो पडणो तथा काढणो निकळणो रचनाग क्रियायें एक-दूसरे की सकर्मक अकर्मक प्रतिस्थानीय हैं। यह प्रवृत्ति भाषा म यौगिक क्रियाओ तक ही सीमित है।

६ ५ सयुक्त क्रियाओ द्वारा किसी भी क्रियाप्रकृति के वाच्य व्यापार की विशिष्ट आविर्भावनाओ का विवरण प्रस्तुत किया जाता है। उक्त आविर्भावनाओ के विविध पक्षो अथवा प्रावस्थाओ की अभिव्यक्ति एव इन दोनो के प्रति वक्ता के दृष्टिकोण की अभिव्यजना, मुख्य क्रिया से आसक्त विवारक क्रियाओ द्वारा होती है।

आ राजस्थानी विवारक क्रियाओ को तीन कोटियो म विभाजित किया जा सकता है—(क) पक्ष विवारक क्रियाए (ख) प्रावस्था विवारक क्रियाए, तथा (ग) अभिव्यजक विवारक क्रियाए। इन तीनो कोटियो की विवारक क्रियाओ का उनके प्रकार्यों एव उदाहरणो सहित विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

विवारक क्रियाओ के साथ अवस्थिति के आधार पर समस्त राजस्थानी क्रियाप्रकृतिया के दो विभाग है—(क) व्यजनात (यथा कर– जाण–, ऊठ– इत्यादि), और (ख) स्वरान्त (यथा आ–, जा– खा– पी–, छू– इत्यादि)। विवारक क्रियाओ के साथ अवस्थिति होने पर समस्त स्वरान्त क्रियाप्रकृतिया के साथ –य का आगम हो जाता है, यथा आय सकणो, जाय चुकणो, खाय लेवणो, पीय जावणो छूय सकणो इत्यादि। कभी-कभी इस नियम के अपवाद भी मिल जाते हैं किन्तु इन अपवादो के होते हुए भी य–आगम को वैकल्पिक नही माना जा सकता।

६ ५ १ आ राजस्थानी की पक्ष विवारक क्रियाए निम्नलिखित हैं।

(१) शक्यताबोधक

सहजता अथवा अध्यवसिति वाचक	सकणो (२७-३१)।

(२) प्रक्रमबोधक

नैरन्तर्यवाचक	रहणो (३२, ३३)।
समापनवाचक	चुकणो (३४)।

(३) सक्रमणबोधक

अवसितिवाचक	आवणौ (३५, ३६)।
पर्यवसितिवाचक	जावणौ (३७ ३८)।

(४) सक्रमणबोधक

स्वनिमित्तवाचक	लेवणौ (३९ ४०)।
परनिमित्तवाचक	देवणौ (४१ ४२)।

इन पक्ष-विवारको की वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे है।

(२७) गोफणवाळी रै डर आगै वा उणरै रूप नै सावळ निरख ई नी मकियौ। उणियारा रै माम्ही जोवण रो होमा नी हुई।

(२८) झूठ नी बोलिया तौ बाणिया बिणज ई नी कर सकै, पछे उणरै ता चोरी रो धधो हौ।

(२९) उण मिंच रै मित्त वा ऐफावती राणी री माया ही। नीतर बापडा सिंघ री काई जिनात के घोडा सू आगै जाय सकै।

(३०) च्यारू रा भाग अेडा माडा नी हुय मकै। राम जाणै काळै रौ सूरज काई बधाई लावै। इण घात री घडी भर पेला किणनै वेरो हौ। अणचीत्यौ दुख प्रगटै तौ अणचीत्यौ मुख ई तुठ मकै।

(३१) अर उठी च्यारू वीदणियां नै औ पक्को विस्वास हो कै जको मोटियार पैंफ रा फूल लाय सकै वो यू सोरै सास मरणियौ कोनी।

(३२) आयनै राणी नै कैयौ–राजा तौ आज दूजौ ब्याव कर रिया है, जको औ पहलै रौ सैमान लेयनै जाय रियौ हू।

(३३) पण आपरो ब्याव म्हानै कबूल है। म्हे दूना ई राजो कुसो आपनै पच थाप रिया हा।

(३४) की तौ गाववाळा पैंळी सू ई उण रै बारै मे केई बाता सुण चुका हा।

(३५) मा-बेटी नै रोवता देख उणरी आखिया मे आसू छळक आया।

(३६) आप जैडै तपसो री सेवा रौ मौको म्हानै फेर कद बण आवैला।

(३७) अबै किणी भात रो चढावौ कै भेंट आवती तौ आधी उण रा सासरिया लेय जावता, अर आधी ठिकाणै तालकै हुय जाती।

(३८) पण थारै बिना म्हारौ जीव फडका चढ जावै।

(३९) वो सगळी वस्ती नै हाथ जोडतो बोलियौ– थे तौ सगळा म्हनै उठता ई रोड लियौ।

(४०) अर ठाकर सा जे श्रो सोच लियो कै म्हैं हवा मे अधर उडतो जाय सकूं तो वे घोडो देवैला ई कोनी ।

(४१) साथणिया वीदणी नै धक्को देय मेडी माय रोड दी ।

(४२) चिडी तो आपगी चाव मे ऊदरी री पूंछ पकडनै भट करती रा बारै काढ दी ।

६.५.२ श्रा राजस्थानी की प्रावस्था विवारक क्रियाए निम्नलिखित हैं ।

(५) उत्क्रमण बोधक

अवेगात्मक	ऊठणो (४३) ।
सवेगात्मक	वैठणो (४४,४५) ।

(६) अवक्रमण बोधक

आकस्मिक	पडणो (४६,४७) ।
अनाकस्मिक	न्हाखणो (४८) ।

(७) सीमाक्रमण बोधक

आरम्भ माणोत्तर	चालणो (४९,५०) । हालणो
समापणपूर्व	छूटणो (५१) ।

(८) उपक्रमण बोधक

प्रत्यक्ष	रखणो (५२,५३) ।
परोक्ष	छोडणो (५४) ।

उपरोक्त विवारक क्रियाओ की वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

(४३) जै जै कारा सू कोट गूज ऊठियो । झिरोखै मे वैठी लुगाया ई सता री जै वोली ।

(४४) · वानै कैयो कै आपारा भूवाजी कठै ई आपा रै साथै घात नी कर वैठै ।

(४५) अै लुगाया तो सगळी दुनिया नै ई ले वैठेला ।

(४६) उणरी आखिया मे आसू उमड पडिया ।

(४७) इण भात वदळीजियोडै दिन-राता री गेडी अकय आणद रै साथै घूमती ही कै अणचुक अेक भज आय पडियो ।

(४८) वो तो पछै भली सोची नीं कोई सू डो, वेद व्यास नै आपरै दोनू हाथां भाल उणरी घाटी मरोड न्हाखी ।

(४९) म्हनै राज-दरबार मे ले चालो म्हैं इणरी म्यानौ बताबू ला ।

(५०) पैली सटके देणी रा थे म्हनै थारी घुरकाळ खनै ले हालौ ।

(५१) तद वो नागी तरवार लेय कायर री बळाई भाग छूटौ ।

(५२) पगरखिया कादै मे धसण कारण डावै हाथ मे झेल राखी ही ।

(५३) थे म्हानै काई समझ राखिया हौ ।

(५४) सत राव चोरियोडा खजाना री पाई री पाई चोरा खनै सू खोसनै आपरै मुकाम मे जावतै सू राख छोडी ही ।

६ ५ ३ आ राजस्थानी की अभिव्यजक विवारक क्रियाए निम्नलिखित हैं ।

(९) सक्रमण बोधक
अवसिति अथवा
पर्यवसिति वाचक पधारणौ (५५) ।

(१०) सक्रमण बोधक
स्वनिमित्तवाचक लिरावणौ (५६) ।
परनिमित्तवाचक दिरावणौ (५७,५८) ।

(५५) आपरी दाय पडै जित्ता नगीना ले पधारौ ।

(५६) चेलौ तुरत जवाब दियौ– बाप जो, आखिया मीच लिरावौ, आपै ई अधारो हुय जावैला ।

(५७) आप पोडा नी खावणो चावौ तौ म्हनै मया बगसाय दिरावौ, म्हैं तोड लावू ।

(५८) तद राजकवर कैयौ– अबारू तौ म्हारै की नी चाहीजे । फगत दूध री मया कर दिरावौ तौ जाणै आखी दुनिया रौ राज भरपायौ ।

६ ६ मूल क्रियाप्रकृतियो के अतिरिक्त कतिपय विवारक क्रियाओ की अवस्थिति पूर्णतावाचक तथा अपूर्णतावाचक कृदन्तो के साथ भी होती है ।

पूर्णतावाचक कृदन्त परक रूपो के साथ अवस्थित होने वाली विवारक क्रियाए हैं **आवणौ** (५९,६०) तथा **रैवणौ** (६१,६२) ।

(५९) चितारण रै समचै ई दौडिया आवाला । हाथिया रो सिरदार इण नैनै सै'क ऊदरियै रो बात सुणनै डगडग हसियो ।

(६०) इण अबखी बेळा मे हाथी उणनै याद करियो । याद करता ई ऊदरा रो सिरदार तौ न्हाटो आयौ ।

(६१) अेक वार लोग उखड़ गया तौ पछै बस मे करणा दोरा है। राज-काज सभाळण मे हरदम खुड़को बणियौ रैवैला।

(६२) गवाळियौ अेक लाठी डाग लेयनै लुकियोड़ो बैठो रियौ।

अपूर्णतावाचक कृदन्त परक रूपों के साथ प्रयुक्त होने वाली विवारक क्रियाएं हैं आवणौ (६३), जावणौ (६४) तथा रैवणौ (६५)।

(६३) छान रै माय ऊभा रा गाभा भाला व्है जको थे तो मारग चालता आया।

(६४) हाथिया रो सिरदार आपरै पगा सू धूड नै खूंदतो गयो।

(६५) वो भगती भाव सू झूमतो रियो अर वस्ती रा सगळा लोग ई घाटिया हिलावता रिया।

६.७ वाच्य के आधार पर आ राजस्थानी क्रियाप्रकृतियों के निम्नलिखित शब्द-रूपात्मक सवर्ग स्थापित किये जा सकते हैं।

(क) –ईज प्रत्यय युक्त मूल भाववाच्य क्रियाए, यथा **उपरीजणौ, कदीजणौ, घैळीजणौ, चूंघीजणौ, गोटीजणौ, कजळालइजणौ, गैळीजणौ, कांबीजणौ, गदीजणौ, गरमीजणौ, तुईजणौ, याबीजणौ, नजरीजणौ, पसीजणौ** इत्यादि।

(ख) मूल अकर्मक क्रियाए जिनके सकर्मक प्रतिरूप भाषा मे उपलब्ध नही होते, *यथा आवणौ, जावणौ, सूवणौ, जागणौ, डूबणौ इत्यादि।*

(ग) अकर्मक वाच्य क्रियाए जिनके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप विविध प्रक्रमो द्वारा व्युत्पन्न होते है। क्रियाओ के निम्न वर्ग हैं।

(१) व्यजनात अकर्मक क्रियाप्रकृतिया जिनके मध्यवर्ती –अ– के स्थान पर –आ– का आदेश करके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	**सकर्मक वाच्य प्रतिरूप**
अकणौ	आकणौ
अजणौ	आजणौ
कटणौ	काटणौ
कतणौ	कातणौ
खचणौ	खाचणौ
गळणौ	गाळणौ
गठणौ	गाठणौ

(२) व्यजनात अकर्मक क्रियाप्रकृतिया जिनके मध्यवर्ती –इ– के स्थान पर –ए– का आदेश करके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
खिरणौ	खेरणौ
घिरणौ	घेरणौ
टिकणौ	टेकणौ

(३) व्यंजनांत अकर्मक क्रियाप्रकृतियां जिनके मध्यवर्ती –उ– के स्थान पर –ओ– का आदेश करके सकर्मक वाच्य रूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
कुरणौ	कोरणौ
घुटणौ	घोटणौ
घुळणौ	घोळणौ
चुभणौ	चोभणौ
चुळणौ	चोळणौ
जुडणौ	जोडणौ
टुळणौ	टोळणौ
खुबणौ	खोबणौ

(४) व्यंजनांत अकर्मक वाच्य क्रियाएं जिनके मध्यवर्ती –इ– के स्थान पर –ई– अथवा –उ– के स्थान –ऊ– का आदेश करके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
चिरणौ	चीरणौ
पिसणौ	पीसणौ
पिटणौ	पीटणौ
हुनणौ	हूनणौ
पुछणौ	पूछणौ
लुटणौ	लूटणौ

(५) व्यंजनांत अकर्मक वाच्य क्रियाओं के उपान्त्य –अ– के स्थान पर दीर्घ –आ– का आदेश करने से उनके सकर्मक वाच्य रूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य रूप
अवतरणौ	अवतारणौ
उखड़णौ	उखाडणौ
उद्धरणौ	उद्धारणौ

(६) कई –अ– स्वरान्त अकर्मक वाच्य क्रियाओं में –अ के स्थान पर –आव का आदेश करने से उनके सकर्मक वाक्य रूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य रूप
उगणौ	उगाणौ~उगावणौ
उचकणौ	उचकाणौ~उचकावणौ
खमकणौ	खमकाणौ~खमकावणौ
गिरणौ	गिराणौ~गिरावणौ

(घ) अनेक सकर्मक वाच्य क्रियाएं ऐसी हैं जिसके अकर्मक वाच्य रूप भाषा में उपलब्ध नहीं है। यथा करणौ, लिखणौ, देवणौ, लेवणौ, न्हाखणौ इत्यादि।

(ङ) अनेक अकर्मक वाच्य क्रियाओं के सकर्मक वाच्य प्रतिरूप उपरिलिखित नियमानुसार निर्मित नहीं होते।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
बिकणौ	वेचणौ
टूटणौ	तोडणौ
फूटणौ	फोडणौ
छूटणौ	छोडणौ
दुडणौ	दोडणौ
धुपणौ	धोवणौ
बिसरणौ	बिसेरणौ
निमणौ	नामणौ
निवडणौ	निवेडणौ

(च) अनेक क्रियाप्रकृतियां ऐसी हैं जिनकी अकर्मक एवं सकर्मक दोनों वाच्यों में, बिना किसी व्याकरणिक प्रतिबन्ध के, अवस्थिति होती हैं। ऐसी क्रियाओं के अन्तर्गत अनुकरणात्मक (विशेष रूप से –आ प्रत्यय) संज्ञा तथा विशेषण-जात क्रियाओं को भी सम्मिलित किया जा सकता है। इस कोटि की क्रिया-प्रकृतियों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

खटखटावणौ	आदरणौ
फडफडावणौ	भूलणौ
खडखडावणौ	मलापणौ
तगतगावणौ	माचणौ
भणभणावणौ	भरणौ
झपझपावणौ	पलटणौ
टमटमावणौ	बदलणौ
मुळमुळावणौ	उलटणौ
छटपटावणौ	
जगमगावणौ	

(छ) अनेक क्रियाप्रकृतियो के एकाधिक रूप भाषा म प्रचलित है।

दीसणौ~दीखणौ~दीठणौ
बैसणौ~बैठणौ
डरणौ~डरपणौ
खदबदणौ~खदबदावणौ
जगमगणौ~जगमगावणौ
डगमगणौ~डगमगावणौ
हडबडणौ~हडबडावणौ

६ ७ १ प्रकरण सख्या (६ ७) म (ग ६) कोटि की सकर्मक क्रियाप्रकृतिया के –आ और –आव अन्त्य वैकल्पिक परिवर्तों का उल्लेख किया गया है। वस्तुत भाषा का सामान्य नियम है कि प्रत्येक –आ अन्त्य मूल अथवा व्युत्पन्न क्रियाप्रकृति का एक अन्य –आव अन्त्य वैकल्पिक परिवर्त होता है। इस प्रकार की क्रियाप्रकृतियो के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

आणौ~आवणौ
जाणौ~जावणौ
लगाणौ~लगावणौ
उठाणौ~उठावणौ
अटकाणौ~अटकावणौ
रमाणौ~रमावणौ
रखाणौ~रखवाणौ
गवाणौ~गवावणौ

६ ८ आ राजस्थानी क्रियाप्रकृतियो के साथ पक्ष, वृत्ति, तथा काल आदि तत्त्वो के बोधक प्रत्ययो के योग से इनके समापिका क्रियारूप निर्मित होते हैं।

पक्ष, वृत्ति, काल आदि तत्त्वा के अतिरिक्त क्रियारूपो के साथ कर्त्ता अथवा कर्म के बोधक तत्त्व पुरुष, लिंग आदि भी अन्वय द्वारा सन्निहित रहते हैं।

६ ८ १ समापिका क्रियारूपो मे विन्यस्त समस्त तत्त्वो की व्यवस्था को समझने के लिए यह आवश्यक है कि आ राजस्थानी क्रिया रूपावली का रचनात्मक वर्गीकरण करके, उसमे अन्तर्निहित परिच्छेदक अभिलक्षणो का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाए। रचनात्मक वर्गीकरण की दृष्टि से समस्त आ राजस्थानी समापिका क्रियारूपो को चार कोटियो मे विभक्त किया जा सकता है।

(क) पूर्णतावाचक कृदन्त से निर्मित क्रियारूप
(ख) अपूर्णतावाचक कृदन्त से निर्मित क्रियारूप

(ग) कृदन्त विशेषण से निर्मित क्रियारूप
(घ) क्रियाप्रकृति से निर्मित क्रियारूप

६ ८ १ १ पूर्णतावाचक कृदन्त की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –यौ अथवा –इयौ प्रत्यय के योग से होती है। समस्त –आ प्रत्यय क्रियाप्रकृतियों के साथ –यौ का योग होता है और समस्त व्यजनान्त क्रियाप्रकृतियों के साथ –इयौ का। इस प्रकार निर्मित पूर्णतावाचक कृदन्तों के लिंगवचनानुसार रूप नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इन रूपों में उगाणौ क्रिया को –आ प्रत्यय क्रियाप्रकृतियों का और उतरणौ क्रिया को व्यजनान्त क्रियाप्रकृतियों का प्रतिनिधि मानकर रूप प्रस्तुत किये जा रहे है।

इस विषय में कतिपय अपवाद भी हैं। उनका उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

क्रियाप्रकृति रूप	एकवचन पुंल्लिग	एकवचन स्त्रीलिंग	बहुवचन पुंल्लिग	बहुवचन स्त्रीलिंग
उगा–	उगायौ	उगाई	उगाया	उगाई
उतर–	उतरियौ	उतरी	उतरिया	उतरी

कई क्रियाप्रकृतियों के पूर्णतावाचक कृदन्त रूप अनियमित होते हैं। यथा

जा–	ग्यौ	गी	ग्या	गी
दे–	दीनौ	दीना	दीना	दीनी
ले–	लीनौ	लीनी	लीना	लीनी
कर–	कीनौ	कीनी	कीना	कीनी

६ ८ १ २ अपूर्णतावाचक कृदन्त की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –तौ प्रत्यय के योग से होता है। स्वरान्त क्रियाप्रकृतियों में –तौ के योग से पूर्व –वा– का आगम हो जाता है।

अपूर्णतावाचक कृदन्त के लिंगवचनानुसार रूप नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं।

क्रियाप्रकृति रूप	एकवचन पुंल्लिग	एकवचन स्त्रीलिंग	बहुवचन पुंल्लिग	बहुवचन स्त्रीलिंग
उगा–	उगावतौ	उगावती	उगावता	उगावती
उतर–	उतरतौ	उतरती	उतरता	उतरती
जा–	जावतौ	जावती	जावता	जावती
दे–	देवतौ	देवती	देवता	देवती
ले–	लेवतौ	लेवती	लेवता	लेवती
कर–	करतौ	करती	करता	करती

६ ८ १ ३ कृदन्तविशेषण की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –णौ प्रत्यय के योग से होती है। स्वरान्त क्रियाप्रकृतियो मे –णौ के योग से पूर्व –वा– का आगम हो जाता है।

कृदन्तविशेषण के लिंगवचनानुसार रूप नीचे उदधृत किये जा रहे हैं।

क्रियाप्रकृति	एकवचन		बहुवचन	
रूप	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
उगा–	उगावणौ	उगावणी	उगावणा	उगावणी
उतर–	उतरणौ	उतरणी	उतरणा	उतरणी
जा–	जावणौ	जावणी	जावणा	जावणी
दे–	देवणौ	देवणी	देवणा	देवणी
ले–	लेवणौ	लेवणी	लेवणा	लेवणी
कर–	करणौ	करणी	करणा	करणी

६ ८ १ ४ पूर्णतावाचक कृदन्त, अपूर्णतावाचक कृदन्त तथा कृदन्त विशेषण के साथ हूवणौ सहायक क्रिया के वृत्ति और काल बोधक रूपो की आसत्ति से उक्त तीनो कोटियो के आ राजस्थानी समापिका क्रियारूप निर्मित होते हैं। इन वृत्ति तथा काल बोधक रूपो के उनमे अन्तर्निहित तत्त्वो के अभिलक्षणो के अनुसार नाम नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

इन तीनो कोटियो की समापिका क्रिया रूपावली मे वृत्ति तथा काल आदि की अवस्थिति में भेद होने के कारण निम्न तीनो स्तम्भो म + चिह्न से अभिप्राय है कि उक्त तत्त्व समिश्र की अवस्थिति होती है और – चिह्न से उक्त तत्त्व-समिश्र की अनवस्थिति अभिप्रेत है।

वृत्ति आदि तत्त्व समिश्र नाम	समापिका क्रिया रूपावली		
	पूर्णतावाचक कृदन्त	अपूर्णतावाचक कृदन्त	कृदन्त विशेषण
१ असिद्धि	+	+	+
२ अनुमित प्रतिज्ञप्ति	+	+	+
३ असदिग्ध सभावना	+	+	+
४ सदिग्ध सभावना	+	+	+
५ भूत	+	+	+
६ वर्तमान्	+	–	+
७ वृत्ति-काल विरहित रूप अवस्थिति	+	+	+

इन तीनो कोटियो के समापिका क्रियारूपो की सख्या २० है।

मात्र क्रियाप्रकृति के साथ प्रत्ययो के योग से निर्मित रूपावली के उसमे अन्तर्निहित तत्वो के अभिलक्षणानुसार नाम नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

प्रत्ययपुक्त क्रियाप्रकृति समापिका क्रिया रूप नाम

(२१) उद्बोधन
(२२) आज्ञा
(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति
(२४) असदिग्ध सभावना
(२५) वर्तमान् सभावना
(२६) सम्भावना

६ ८ १ ५ आ राजस्थानी की समापिका क्रिया रूपावली के समस्त २६ रूपो के अनेक वैकल्पिक परिवर्त भाषा मे उपलब्ध हैं। इन वैकल्पिक परिवर्तों के समस्त ज्ञात रूपो को, उनके पुरुष, लिंग, वचन सहित, **आवणी** क्रियाप्रकृति को आधार मानकर नीचे सूचित किया जा रहा है।

आवणी के समापिक क्रिया रूप

समापिका क्रिया रूप नाम	समापिका क्रिया रूप					
	पुरुष	लिंग		एकवचन		बहुवचन
(१) पूर्णअभिद्धि वाचक	अन्य	पुल्लिग	यो	हूतो~व्हैतो~ व्हैवतो~हूवतो	या	हूता~व्हैता~ व्हैवता~हुवता
		स्त्रीलिग	गी	हूती~व्हैती~ व्हैवती~हुवती	गी	हूती~व्हैती~ व्हैवती~हुवती
(२) पूर्णअनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक	उत्तम	पुल्लिग	यो	हू'ऊ~हू'वू~ व्है'ऊ~व्है'वू	या	हू'आं~हू'वा व्है'आ~व्है'वा
		स्त्रीलिग	गी	हू'ऊ~हू'वू~ व्है'ऊ~व्है'वू	गी	हू'आ~हू'वा व्है'आ~व्है'वा
	मध्यम	पुल्लिग	यो	हू'ई~व्है'ई~ व्हू'ई	या	हू'ओ~हू'वो~ व्है'ओ~व्है'वो
		स्त्रीलिग	गी	हू'ई~व्है'ई~ व्हू'ई	गी	हू'ओ~हू'वो~ व्है'ओ~व्है'वो

समापिका क्रिया रूप नाम	समापिका क्रिया रूप					
	पुरुष	लिंग		एकवचन		बहुवचन
	अन्य	पुल्लिग	ग्यौ	ह्'ई~व्है'ई~ व्हू'ई	ग्यो	हू'ई~व्है'ई व्हू'ई
		स्त्रीलिग	गी	ह्'ई~व्हू'ई~ व्हू'ई	गी	ह्'ई~व्है'ई व्हू'ई
(३) पूर्ण असंदिग्ध सभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिग	ग्यौ	व्हूला~ व्हूलो	ग्या	व्हाला
		स्त्रीलिग	गी	व्हूला व्हूली	गी	व्हाला व्हाली
	मध्यम	पुल्लिग	ग्यौ	व्हैला व्हैलो	ग्या	व्होला
		स्त्रीलिग	गी	व्हैला व्हैली	गी	व्होला व्होली
	अन्य	पुल्लिग	ग्यौ	व्हैला व्हैलो	ग्या	व्हैला
		स्त्रीलिग	गी	व्हैला व्हैली	ग्या	व्हैला व्हैली
(४) पूर्ण सदिग्ध सभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिग	ग्यो	व्हूं	ग्या	व्हा
		स्त्रीलिग	गी	व्हूं	गी	व्हो
	मध्यम	पुल्लिग	ग्यो	व्है	ग्या	व्हो
		स्त्रीलिग	गी	व्है	गी	व्हो
	अन्य	पुल्लिग	ग्यौ	व्है	ग्या	व्है
		स्त्रीलिग	गी	व्है	गी	व्है
(५) पूर्ण भूत	अन्य	पुल्लिग	ग्यौ	हो	ग्या	हा
		स्त्रीलिग	गी	ही	गी	ही

समापिका क्रिया रूप नाम	समापिका क्रिया रूप: पुरुष	लिंग		एकवचन		बहुवचन
(६) पूर्ण वर्तमान्	उत्तम	पुल्लिग	ग्यो	हू	ग्या	हा
		स्त्रीलिंग	गी	हू	गी	हा
	मध्यम	पुल्लिग	ग्यो	है	ग्या	हो
		स्त्रीलिंग	गी	है	गी	है
	ग्रन्य	पुल्लिग	ग्यो	है	ग्या	है
		स्त्रीलिंग	गी	है	गी	है
(७) पूर्णता वाचक	ग्रन्य	पुल्लिग	ग्यो		ग्या	
		स्त्रीलिंग	गी		गी	
(८) ग्रपूर्ण ग्रसिद्धि वाचक	ग्रन्य	पुल्लिग	जावतो	हुतो~व्हैतो~ व्हैवतो~हूवतो	जावता	हुता~व्हैता ~व्हैवता~हूवता
		स्त्रीलिंग	जावती	हुती~व्हैती~ व्हैवती~हूवती	जावती	हुती~व्हैती~ व्हैवती~हूवती
(९) ग्रपूर्ण ग्रनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक	उत्तम	पुल्लिग	जावतो	हू'ऊ~हू'वू ~ व्है'ऊ~व्है'वू ~व्हू'वू	जावता	हू'ग्रा~हू'वा~ व्है'ग्रा~व्है'वा ~व्हूवा
		स्त्रीलिंग	जावती	हू'ऊ~हू'वू ~ व्है'ऊ~व्है'वू ~व्हू'वू	जावती	हू'ग्रा~हू'वा~ व्है'ग्रा~व्है'वा ~व्हूवा
	मध्यम	पुल्लिग	जावतो	हू'ई~व्है'ई ~व्हू'ई	जावता	हू'ग्रो~हू'वो~ व्है'ग्रो~व्है'वो ~व्हू'वो
		स्त्रीलिंग	जावती	हू'ई~व्है'ई ~व्हू'ई	जावती	हू'ग्रो~हू'वो~ व्है'वो~व्है'ग्रो ~व्हू'वो

समापिका क्रिया रूप नाम	समापिका क्रिया रूप					
	पुरुष	लिंग	एकवचन		बहुवचन	
	अन्य	पुल्लिग	जावतो	हू'ई~व्है'ई ~व्हू'ई	जावता	हू'ई~व्है'ई ~व्हू'ई
		स्त्रीलिंग	जावती	हू'ई~व्है'ई ~व्हू'ई	जावता	हू'ई~व्है'ई ~व्हू' ई
(१०) अपूर्ण असंदिग्ध संभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिग	जावतो	व्हूला	जावता	व्हाला
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हूला व्हूली	जावती	व्हाला व्हाली
	मध्यम	पुल्लिग	जावतो	व्हैला	जावता	व्हैला
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हैला व्हैली	जावती	व्हैला व्हैली
	अन्य	पुल्लिग	जावतो	व्हैला	जावता	व्हैला
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हैला व्हैली	जावता	व्हैला व्हैली
(११) अपूर्ण संदिग्ध संभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिग	जावतो	व्हू	जावता	व्हा
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हू	जावती	व्हा
	मध्यम	पुल्लिग	जावतो	व्है	जावता	व्हो
		स्त्रीलिंग	जावती	व्है	जावती	व्हो
	अन्य	पुल्लिग	जावतो	व्है	जावता	व्है
		स्त्रीलिंग	जावती	व्है	जावती	व्है
(१२) अपूर्ण भूत	अन्य	पुल्लिग	जावतो	हो	जावता	हा
		स्त्रीलिंग	जावतो	हो	जावती	ही

	समापिका क्रिया रूप नाम	पुरुष	लिंग	एकवचन		बहुवचन
(१३)	अपूर्णता वाचक	अन्य	पुल्लिग	जावतो		जावता
			स्त्रीलिंग	जावती		जावती
(१४)	असिद्ध सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	हुतो~व्होता ~व्हैवतो ~हूवतो	एक वचन के समान
(१५)	अनुमित प्रतिज्ञप्ति सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग	जावणो	हू'ई~व्हू'ई	एक वचन के समान
			स्त्रीलिंग		व्हू'ई	
(१६)	असदिग्ध सभावना सकेतवाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	व्हेलो	एक वचन के समान
(१७)	सदिग्ध सभावना सकेतवाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	व्है	एक वचन के समान
(१८)	भूत सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	हो	एक वचन के समान
(१९)	वर्तमान् सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	है	एक वचन के समान
(२०)	सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो		एक वचन के समान
(२१)	उद्‌बोधन वाचक	मध्यम		जाजे~जाइजे		जाजो~जाइजो
(२२)	आज्ञा वाचक	मध्यम		जा		जावो~जाओ

समापिका क्रिया रूप नाम	समापिका क्रिया रूप			
	पुरुष	लिंग	एक वचन	बहु वचन
(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक	उत्तम		जा'ऊ~जासू~ जास्यू	जा'वा~जा'आ~ जामा~जास्या
	मध्यम		जा'ई~जासी	जा'ओ~जा'वो~जासो
	अन्य		जा'ई~जासी	जा'ई~जासी
(२४) असदिग्ध सभावना वाचक	उत्तम		जाऊला	जावाला~जाआला
	मध्यम		जावैला	जावोला
	अन्य		जावैला	जावैला
(२५) वर्तमान् सभावना वाचक	उत्तम		जाऊ हू~जावू हू	जावा हा~जाआ हा
	मध्यम		जावै है	जावो हो
	अन्य		जावै है	जावै है
(२६) सभावना वाचक	उत्तम		जाऊ~जावू	जावा~जाआ
	मध्यम		जावै	जावो
	अन्य		जावै	जावै

रूप सख्या (१४-२०) के सीमित परिसरो मे स्त्रीलिंग रूप भी उपलब्ध होते हैं। इस स्थिति मे अकर्मक क्रिया के कृदन्त विशेषण के स्त्रीलिंग रूप (यथा, जावणी) के साथ सहायक क्रिया की अवस्थिति होती है।

६८१६. समस्त उपरिलिखित रूप भाषा मे सामान्य रूप से अधिमान्य नही हैं। अत मात्र अधिमान्य रूपो को लेकर नीचे लिखणो क्रिया की समापिका क्रिया रूपावली का निदर्शन किया जा रहा है।

सकर्मक क्रियाओ के पूर्णतावाचक कृदन्त तथा कृदन्त विशेषण से निर्मित समापिका क्रिया रूपो मे कृदन्त और कर्मस्थानीय सज्ञा मे लिंग-वचनानुसार अन्वय होना है और सहायक क्रिया एव कर्त्ता स्थानीय सज्ञा मे (अन्य पुरुष को छोडकर) पुरुष-वचनानुसार अन्वय होता है। इन तथ्यो का निर्देश लिखणो क्रिया की समापिका क्रिया रूपावली मे कर दिया गया है।

लिखणो की समापिका क्रिया रूपावली

(१) पूर्ण असिद्धि वाचक

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	लिखियौ हुतौ	लिखिया हुता
स्त्रीलिंग	लिखी हुती	लिखी हुती

(२) पूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

पुरुष	लिंग	एकवचन		बहुवचन	
उत्तम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	हूं'ऊ	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	हूं'आ
	स्त्रीलिंग	लिखी हूं'ऊ		लिखी हूं'आ	
मध्यम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	हूं'ऊ	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	हू वौ
	स्त्रीलिंग	लिखी हूं'ई		लिखी हूं'वौ	
अन्य पुरुष	पुल्लिंग	लिखियौ (ए व) लिखियौ (ब व)	हूं'ई	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	हूं'ई
	स्त्रीलिंग	लिखी हूं'ई		लिखी हूं'ई	

(३) पूर्ण असदिग्ध सभावना वाचक

पुरुष	लिंग	एकवचन		बहुवचन	
उत्तम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	म्हूला	लिखियौ (ए व) लिखियौ (ब व)	म्हाला
	स्त्रीलिंग	लिखी म्हूला		लिखी म्हाला	
मध्यम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	थ्हैला	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	थ्हौला
	स्त्रीलिंग	लिखी थ्हैला		लिखी थ्हौला	
अन्य पुरुष	पुल्लिंग	लिखियौ (ए व) लिखियौ (ब व)	व्हैला	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	व्हैला
	स्त्रीलिंग	लिखी व्हैला		लिखी व्हैला	

(४) पूर्ण सदिग्ध सभावना वाचक

पुरुष	लिंग	एकवचन		बहुवचन	
उत्तम पुरुष	पुल्लिंग	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	म्हूं	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	म्हां
	स्त्रीलिंग	लिखी म्हूं		लिखी म्हां	

पुरुष	लिंग	एक वचन	बहु वचन
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) ह्वै	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) ह्वौ
	स्त्रीलिंग	लिखी ह्वै	लिखी ह्वौ
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) ह्वै	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) ह्वै
	स्त्रीलिंग	लिखी ह्वै	लिखी ह्वै

(५) पूण भूत

	एक वचन	बहु वचन
पुल्लिग	लिखियौ हो	लिखिया हा
स्त्रीलिंग	लिखी ही	लिखी ही

(६) पूर्ण वर्तमान्

पुरुष	लिंग	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) हूं	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) हा
	स्त्रीलिंग	लिखी हूं	लिखी हा
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) है	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) हौ
	स्त्रीलिंग	लिखी है	लिखी हौ
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) है	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) है
	स्त्रीलिंग	लिखी है	लिखी है

(७) पूर्णता वाचक

पुल्लिग	लिखियौ	लिखिया
स्त्रीलिंग	लिखी	लिखी

(८) अपूर्ण प्रसिद्धि वाचक

पुल्लिग	लिखतौ ह्वैतौ	लिखता ह्वैता
स्त्रीलिंग	लिखती ह्वैती	लिखती ह्वैती

(९) अपूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

पुरुष	लिंग	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ हूं'ऊ	लिखता हूं'आ
	स्त्रीलिंग	लिखती हूं'ऊ	लिखती हूं'आ

		एक वचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ हू ई	लिखता हू ग्रो
	स्त्रीलिंग	लिखती हू ई	लिखती हू ग्रो
ग्रन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ हू ई	लिखता हू ग्रो
	स्त्रीलिग	लिखती हू ई	लिखती हू ई

(१०) अपूर्ण असदिग्ध सभावना वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ व्हूला	लिखता व्हाला
	स्त्रीलिग	लिखती व्हूला	लिखती व्हाला
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ व्हैला	लिखता व्हौला
	स्त्रीलिग	लिखती व्हैला	लिखती व्हौला
ग्रन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ व्हैला	लिखता व्हैला
	स्त्रीलिग	लिखती व्हैली	लिखती व्हैला

(११) अपूर्ण सदिग्ध सभावना वाचक

समस्त रूप जावणौ क्रिया के रूपो के समान है।

(१२) अपूर्ण भूत

समस्त रूप जावणौ क्रिया के रूपों के समान है।

(१३) *अपूर्णता वाचक*

समस्त रूप जावणौ क्रिया के रूपो के समान है।

(१४) असिद्ध सकेत वाचक

	एक वचन	बहु वचन
पुल्लिग	लिखणौ व्हैतौ	लिखणा व्हैता
स्त्रीलिंग	लिखणी व्हैती	लिखणी व्हैतो

(१५) अनुमित प्रतिज्ञप्ति सकेत वाचक

पुल्लिग	लिखणौ व्है ई	लिखणा व्है ई
स्त्रीलिंग	लिखणी व्है ई	लिखणी व्है ई

(१६) असदिग्ध सभावना सकेत वाचक

पुल्लिग	लिखणौ व्हैला	लिखणा व्हैला
स्त्रीलिंग	लिखणी व्हैला	लिखणी व्हैला

		एक वचन	बहुवचन
(१७) संदिग्ध संभावना संकेत वाचक			
	पुल्लिंग	लिखणो व्है	लिखणा व्है
	स्त्रीलिंग	लिखणी व्है	लिखणी व्है
(१८) भूत संकेत वाचक			
	पुल्लिंग	लिखणो हो	लिखणा हा
	स्त्रीलिंग	लिखणी ही	लिखणी ही
(१९) वर्तमान संकेत वाचक			
	पुल्लिंग	लिखणो है	लिखणा है
	स्त्रीलिंग	लिखणी है	लिखणी है
(२०) संकेत वाचक			
	पुल्लिंग	लिखणो	लिखणा
	स्त्रीलिंग	लिखणी	लिखणी
(२१) उद्बोधन वाचक			
	मध्यम पुरुष	लिखजे	लिखजो
(२२) आज्ञा वाचक			
	मध्यम पुरुष	लिख	लिखो
(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखसू ~ लि'खू	लिखसा ~ लि'खा
	मध्यम पुरुष	लिखसी ~ लि'खी	लिखसो ~ लि'खो
	अन्य पुरुष	लिखसी ~ लि'खी	लिखसी ~ लि'खी
(२४) असंदिग्ध संभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखूला	लिखाला
	मध्यम पुरुष	लिखैला	लिखोला
	अन्य पुरुष	लिखैला	लिखैला
(२५) वर्तमान् संभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखू हू	लिखा हा
	मध्यम पुरुष	लिखै है	लिखो हो
	अन्य पुरुष	लिखै है	लिखै है

		एक वचन	बहुवचन
(२६) सभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखू	लिखा
	मध्यम पुरुष	लिखै	लिखौ
	अन्य पुरुष	लिखै	लिखै

६ ८ १ ७ उपरिलिखित समापिका क्रिया रूपावली की वाक्या म अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किय जा रहे हैं।

(१) पूण असिद्धि वाचक

(६६) गुमेज में बोलियौ—बावळौ भाटौ गिटग्यौ हुतौ तौ ई म्हैं उणनैं मू हे बोलाय लेतौ पछै थारी तौ जिनात ई काई है।

इस वाक्य म गिटग्यौ हुतौ पूण असिद्धि वाचक रूप है जबकि निम्न वाक्य म समझायौ हुतौ (६७) रूप का अथ है समझाया था। इस प्रकार की सन्दिग्ध रचनाओं का समाधान वाक्य परिसरों और सहायक क्रिया के रूप हुतौ तथा याजक क्रिया (प्रकरण ६ १०) के रूप हुतौ~हौ के पारस्परिक पार्थक्य के आधार पर किया जा सकता है।

(६७) जद कुत्तौ उणनैं कैयौ—भाई म्हैं थनैं पैला इ समझायौ हुतौ पण थू तौ मानी नी।

(८) अपूण असिद्धि वाचक

(६८) आज बाबौ जीवतौ हुतौ तौ थारा मामा नैं औ फोडा नी पडता।

(१४) असिद्ध सकेत वाचक

(६९) जे थारौ धन वित्त अर जमी जायदाद म्हारै अटावणी हुती तौ म्हैं थनैं इतरौ साठौ वयू हुवण देवतौ। छोटै थकै नैं इज मार र खाडाबूच नीं कर देतौ।

(२) पूण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

(७०) जे पेड रै नीचू लाग्या हू ई तौ म्हैं वेरै सू आवतौ लेतौ आवू ना जीतर व्हा।

(९) अपूण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

(७१) कुण थारै धूप खेवतौ हुसी ? हाथ मा आज थू अनाथ हुयगी म्हारै जीवता जीव कुण जाणै थनैं काई काई दुख भोगणा पडता हुसी।

(१५) अनुमित प्रतिज्ञप्ति सकेत वाचक

(७२) म्हारै सू तौ किणी री गरजा नी करीजैं उणनैं रोटा खावणी हुई तौ खाय लेसी अर नीतर भूखौ इज पड रै ई।

(३) पूर्ण असंदिग्ध सभावना वाचक

(७३) आ दुनिया थपिया पछै ई कोई मिनख आज दिन तक जीवतो मिष नै नी पकड़ियो व्हैला।

(१०) अपूर्ण असंदिग्ध सभावना वाचक

(७४) अग बीस बरसा तक उका री गोद मे म्हैं रमी, इतो लाठो हुई, म्हनै ई वारै बिना कीकर आवडतो व्है ला। आप इणरो नी अदाज लगा सको।

(१६) असंदिग्ध सभावना संकेत वाचक

(७५) मोवण नै कठै जावणो व्हैला।

(४) पूर्ण संदिग्ध सभावना वाचक

(७६) म्हे सपनै मे ई आपरै साथै दगौ करण रो विचार करियो व्हा तो म्हानै नरक मे ई ठौड नी मिळै।

(११) अपूण संदिग्ध सभावना वाचक

(७७) तद धरवाळो कैयौ—यै कमाई करता व्हौ तो वळपू ई किण वास्तै।

(१७) संदिग्ध सभावना संकेत वाचक

(७८) आप लोगा रै भगती भाव सू म्हैं अणू तो राजी हू। पण जको हूवणो व्है वा कीकर टळ सकै ?

(४) पूर्ण भूत

(७८) भावना रै कारण ई तो भगवान राम चदरजी सबरी रै हाथ सू अेंठवाडा बोर खाया हा।

(१२) अपूण भूत

(७९) वो तो आपरी धुन मे निचीतो हुयोडो फदाफद करतो जावतो हो कै अजाणचक उणनै ठा पडी कै लारै सू कोई उणरी टागडी अपडली है।

(१८) भूत सकेत वाचक

(८०) जे इण सरीर नै ई सू पणो हो तो राजकवर री रगमेल किसो भू डो हो।

(८१) केई दिना ताई लिछमा रो भोळू आई, पण छेक्ट भूलणौ ई हो।

(६) पूण वर्तमान्

(८२) ठेट मुकाम पधारण री बयू तकलीफ फरमावौ। म्हैं म्हारै माथै ई आपरो भोजन मगाय लियो हू।

(१९) वर्तमान संकेत वाचक

(८३) आपनै तौ फगत पाणी पीवणौ है, अठीकर नी सई उठीकर सई।

(७) पूर्णता वाचक

(८४) राजा देखै तौ राणी रथ सूं उतर री।

(८५) मै आयौ तौ म्हनै गलिया ई सरमी।

(१३) अपूर्णता वाचक

(८६) रोयनै निबळापणौ बताय दियौ तौ मूळौ काले मिळती दणी सायत मिळ जावेला।

(८७) मा पाछौ पड़ूत्तर दियौ—म्हनै कोई पूछियौ व्है तौ म्हैं ई थनै पूछती वेटी।

(२०) संकेत वाचक

(८८) इणरै बिस नै तौ अक्कल सूं दाटणौ पडसी। डील मे करार नी व्है तौ बगत आया अकल सूं काम सारणौ।

(८९) थानै म्हारै दुख-दरद सूं काई लेणौ-देणौ।

(९०) वौ उभौ-उभौ मन रा लाडू खावण लागौ कै पैला बिचिया नै खावणा कै पैला स्याळ-स्यालणी नै।

(२१) उद्‌बोधन वाचक

(९१) अेकर ढगळी गान नै कंयौ—बेली थू म्हनै अकेलौ छोडनै मत जाजै।

(९२) नवलखो हार गमजौ अर अंडा मता रा अठै आवणा हूजौ। औ नवलखौ हार तौ भलौ ई गमियौ।

(२२) आज्ञा वाचक

(९३) थोडी निरायत कर। ध्यान सूं बात सुण।

(९४) खिरगोसियौ बत्तौ जोस दिरावण सारू सिंग नै कैवण लागौ—अदाता, अेकर निरायत सूं सावळ बिचार कर लिरावौ।

(९५) रोटी बीजी खायनै आवा पछै भलाई कित्ती जेज लागौ।

(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

(९६) म्हारै सरीर रै हाथ मत लगाजौ, बाकी थे कैवौला उठै चालसूं परी, म्हनै नीतर ई कठै ई जावणौ तौ है ई।

(९७) म्हैं म्हारै घरै मोकळा मिनखा नै देखिया तौ मन मे जाणियौ—म्हारौ मीढौ बाधं है। जीवत सिनान करावै है थर अबै म्हनै वरलण नै जासी।

(२४) असंदिग्ध संभावना वाचक

(९८) राजकंवर सोचियो के जिण लुगाई रा केम अंडा है तौ वा खुद कैडी रूपाळी व्हैला।

(२५) वर्तमान् संभावना वाचक

(९९) आप निचीता रौ, म्हैं नगरी रा मगळा ऊंदरा लेयनैं इणी सायत पाछौ आवू हूं।

(१००) हजार बुद्धि बोलियौ—थे साव साची कौ हौ। आ सायद है अर डाली आख सू काणी है।

(१०१) म्हैं नित-नेम सू निव्रत होयनैं अबार दरबार मे हार लेयनैं आऊ हूं।

(१०२) आपरै आसरै लाखू जीव पळै है। इण बाळक मायै थोडी दया विचारो, अबै आपरै सरणै है।

(२६) संभावना वाचक

(१०३) हसती-हसती ई बोलो—राजा, म्हैं तौ जाणतो कै थू इतौ मोटो राज संभाळो जको थारै मे की न की अकल तौ व्हैला इज।

(१०४) सूरज आथूण मे ऊगै तौ म्हैं म्हारै वचन सू टळू।

(१०५) वा अभ्यागत बामणी जिण भांत बिखा रा दिन काढिया, ऊंडा दिन भगवान किणी नै सपनै मे ई नी बतावै।

(१०६) म्हैं थनै सोळै साल री मौलत दू।

६ ८.२. आ राजस्थानी योजक क्रिया हुवणौ की रूपावली के भूत और वर्तमान् कालो के आधार पर दो कुलक हैं, जिनका विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

	एकवचन		बहुवचन	
भूतकालिक रूप	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
	हौ~हुतौ	ही~हुती	हा~हुता	ही~हुती

वर्तमान् कालिक रूप

उत्तम पुरुष	हू	हा
मध्यम पुरुष	है	हौ
अन्य पुरुष	है	हौ

६.९. समापिका अथवा असमापिका क्रिया रूपों के साथ निश्चयार्थक नियात परौ की वैकल्पिक अवस्थिति होती है। परौ के लिंग-वचन वाक्य के कर्ता के अनुरूप ही होते हैं।

नीच परी की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(१०७) आठ दिमाधा मे मत कर उठीनै जावौ परा। अब आप आपरै अ पै जू भो। किणी रै भरोसै पार्थ जीवण बितावणौ निबळापणौ है।

(१०८) दत कह्यौ—थन दुख काई है सौ म्हनै बता। ब्याव करिया तो थू म्हनै छोड जावै परी। म्हैं किणी भाव अेकली नी रैय सकू।

(१०९) बेली मगळा मिल परा नै माय री माय अक दूजो ई जाळ रचियो।

(११०) थू काई धापिया परा। रोटी तो च्यार ई खाई कोयनी अर धापग्या।

(१११) कठै वो उठै तौ नी जावैला परो।

(११२) राम प्यारौ ई भलौ है परौ नी।

६ १० अंतर्निहित भाववाच्य क्रियाओ को छोडकर सामान्यत समस्त अकमक और सकमक क्रियाओ से उनके प्रेरणाथक रूप व्युत्पन्न होते हैं।

प्रेरणाथक रूपो की व्युत्पत्ति आ राजस्थानी व्याकरण म एक अत्यन्त जटिल एव उलभा हुआ विषय है। कोश एव उपलब्ध व्याकरणो मे इस विषय का उचित समाधान नही प्राप्त होता। इसलिए निम्नलिखित विवरण मे परीक्षापेक्ष युक्तियो का सहारा लिया गया है। प्रस्तुत वर्णण प्रकरण सख्या (६ ७) म दिये गये क्रियाप्रकृतियो व अकमक-सकमक वाच्य सवर्गीकरण पर आधृत है।

६ १० १ सामान्य रूप से अकमक और सकमक क्रियाप्रकृतियो के प्ररणाथक वाच्य रूप स्वत त्र रूप से निर्मित होते हैं। यथा अकमक वाच्य क्रिया कटणौ और इसके सकमक वाच्य प्रतिरूप काटणौ दोनो क्रियाप्रकृतियो की प्ररणाथक वाच्य रूपावली स्वतन्त्र रूप से निर्मित होगी।

इन दानो सवर्गो की क्रियाप्रकृतियो क साथ सयुक्त होने वाल प्ररणाथक वाचक प्रत्ययो की सामान्य सूची नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

(क) —आव
(ख) —आण
(ग) —आड

६ १० २ *—ईज प्रत्यय युक्त भाववाच्य क्रियाओ के प्ररणाथक वाच्य रूप निर्मित* नही होत।

मूल अकमक क्रियाए (कोटि ख प्रकरण ६ ७) मे अधिकाश के साथ प्ररणाथक वाच्य क प्रत्ययो का अवस्थिति होती है। इस कोटि की क्रियाओ के प्ररणाथक वाच्य रूपा के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं

मूल अकर्मक वाच्य रूप	व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
	क	ख	ग
आवणो	अवावणो	अवाणणो	अवाडणो
जावणो	जवावणो	जवाणणो	जवाडणो
रोवणो	रोवावणो	रोवाणणो	रोवाडणो
सूवणो	सूवावणो	सूवाणणो	सूवाडणो
जागणो	जगावणो	जगाणणो	जगाडणो
लागणो	लगावणो	लगाणणो	लगाडणो
दूखणो	दूखावणो	दूखाणणो	दूखाडणो
रूसणो	रूसावणो	रूसाणणो	रूसाडणो
अटकणो	अटकावणो	अटकाणणो	अटकाडणो
चूकणो	चूकावणो	चूकाणणो	चूकाडणो
डूबणो	डुबावणो	डूबाणणो	डूबाडणो
गिदणो	गिदावणो	गिदाणणो	गिदाडणो
घूजणो	घुजावणो	घूजाणणो	घूजाडणो
ऐंठणो	ऐंठावणो	ऐंठाणणो	ऐंठाडणो
थाकणो	थकावणो	थकाणणो	थकाडणो

व्यंजनात अकर्मक-सकर्मक क्रिया प्रकृतियो के (कोटि ग (१) प्रकरण ६ ७) प्रेरणार्थक वाच्य रूप निम्न उदाहरणो के अनुसार निर्मित होत हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	अकणो	अकावणो	—	—
सकर्मक	आकणो	अकवावणो	—	—
अकर्मक	कटणो	कटावणो	—	कटाडणो
सकर्मक	काटणो	कटवाव	—	कटवाडणो
अकर्मक	गळणो	गळावणो	—	—
सकर्मक	गाळणो	गळवावणो	—	—
अकर्मक	खचणो	खचावणो	—	—
सकर्मक	खाचणो	खचवावणो	—	—
अकर्मक	गठणो	गठावणो	—	—
सकर्मक	गाठणो	गठवावणो	—	—
अकर्मक	मरणो	मरावणो	—	मराडणो
सकर्मक	मारणो	मरवावणो	—	मरवाडणो
अकर्मक	पळणो	पळावणो	—	—
सकर्मक	पाळणो	पळवावणो	—	पळवाडणो

क्रियाप्रकृति कोटि ग (२) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	खिरणो	खिरावणो	—	—
सकर्मक	खेरणो	खिरवावणो	—	—
अकर्मक	घिरणो	घिरावणो	—	—
सकर्मक	घेरणो	घिरवावणो	—	—
अकर्मक	टिकणो	टिकावणो	—	—
सकर्मक	टेकणो	टिकवावणो	—	—
अकर्मक	फिरणो	फिरावणो	—	—
सकर्मक	फेरणो	फिरवावणो	—	—
अकर्मक	छिदणो	छेदावणो	—	—
सकर्मक	छेदणो	छिदवावणो	—	—
अकर्मक	भिदणो	भेदावणो	—	—
सकर्मक	भेदणो	भेदवावणो	—	—

क्रियाप्रकृति कोटि ग (३) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	घुटणो	घुटाणणो	घुटावणो	घुटाडणो
सकर्मक	घोटणो	घुटवावणो	घुटवाणणो	घुटवाड़णो
अकर्मक	घुळणो	घुळावणो	—	—
सकर्मक	घोळणो	घुळवावणो	—	—
अकर्मक	जुडणो	जुडावणो	—	—
सकर्मक	जोडणो	जुडवावणो	—	—
अकर्मक	खुबणो	खुबावणो	—	—
सकर्मक	खोबणो	खुबवावणो	—	—
अकर्मक	मुडणो	मुडावणो	—	—
सकर्मक	मोडणो	मुडवावणो	—	—
अकर्मक	चुभणो	चुभावणो	—	—
सकर्मक	चोभणो	चुभवावणो	—	—
अकर्मक	खुलणो	खुलावणो	—	—
सकर्मक	खोलणो	खुलवावणो	—	—

क्रियाप्रकृति कोटि ग (४) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	पिसणौ	पिसावणौ	—	पिसाडणौ
सकर्मक	पीसणौ	पिसवावणौ	—	पिसवाड़णौ
अकर्मक	चिरणौ	चिरावणौ	—	—
सकर्मक	चीरणौ	चिरावणौ	—	—
अकर्मक	पिटणौ	पिटावणौ	—	पिटाडणौ
सकर्मक	पीटणौ	पिटवावणौ	—	पिटवाडणौ
अकर्मक	लुटणौ	लुटवावणौ	—	लुटाडणौ
सकर्मक	लूटणौ	लुटवावणौ	—	लुटवाडणौ
अकर्मक	छुनणौ	छुनावणौ	—	—
सकर्मक	छूनणौ	छुनवावणौ	—	—
अकर्मक	पु छणौ	पु छावणौ	—	—
सकर्मक	पोछणौ	पु छवावणौ	—	—

क्रियाप्रकृति कोटि ग (५) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	उखड़णौ	उखडाणौ	—	—
सकर्मक	उखाडणौ	उखडवाणौ	—	—
अकर्मक	उछरणौ	उछराणौ	—	—
सकर्मक	उछारणौ	उछरवाणौ	—	—

व्यजनान्त अकर्मक-सकर्मक क्रियाप्रकृतिया (कोटि ग (६) प्रकरण ६७) के प्रेरणार्थक वाच्य रूप निम्न उदाहरणो के अनुसार निर्मित होते हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	ऊठणौ	उठावणौ	उठावणौ	उठाडणौ
सकर्मक	उठावणौ	उठवावणौ	उठवावणौ	उठवाडणौ
अकर्मक	बैठणौ	बैठावणौ	बैठाणणौ	बैठाडणौ
सकर्मक	बैठावणौ	बैठवणाणौ	बैठवाणणौ	बैठवाडणौ
अकर्मक	दबणौ	दबावणौ	—	दबाडणौ
सकर्मक	दबावणौ	दबवावणौ	—	दबवाडणौ

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप	व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
| अकर्मक ऊभणो	उभावणो	उभाणणो	उभाडणो
| सकर्मक उभावणो	उभवावणो	उभवाणणो	उभवाडणो
| अकर्मक उडणो	उडावणो	उडाणणो	उडाडणो
| सकर्मक उडावणो	उडवावणो	उडवाणणो	उडवाडणो

क्रियाप्रकृति कोटि घ के प्रेरणार्थक प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

सकर्मक वाच्य	व्युत्पन्न प्रेरणार्थक रूप		
रूप	क	ख	ग
गावणो	गवावणो	गवाणणो	गवाडणो
राखणो	रखावणो	रखाणणो	रखाडणो
देखणो	देखावणो	देखाणणो	देखाडणो
जीमणो	जीमावणो	जीमाणणो	जीमाडणो
रमणो	रमावणो	रमाणणो	रणाडणो
चूंघणो	चूंघावणो	चूघाणणो	चूंघाडणो
चाखणो	चखावणो	चखाणणो	चखाडणो
लिखणो	लिखावणो	लिखाणणो	लिखाडणो

६.११. –ईज प्रत्यय सहित अवस्थित होने वाली मूल भाववाच्य क्रियाओं को छोड़कर सामान्यतः आ० राजस्थानी क्रियाओं के भाववाच्य-कर्मवाच्य रूप दो प्रकार से निर्मित होते हैं—(क) क्रियाप्रकृति के साथ –ईज प्रत्यय के योग से, तथा (ख) क्रियाप्रकृति के पूर्णतावाचक कृदन्त रूप के साथ जावणो क्रिया की आसक्ति से। इन दो प्रकार से निर्मित भाववाच्य-कर्मवाच्य रूपों को क्रमशः श्लिष्ट भाववाच्य तथा जा भाववाच्य रूपों की संज्ञाओं से अभिहित किया जा सकता है।

सामान्य रूप से अकर्मक, सकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूपों से भाववाच्य-कर्मवाच्य रूपों की निष्पत्ति पर भाषा में कोई विशेष व्याकरणिक प्रतिबन्ध नहीं है।

६.११.१ श्लिष्ट भाववाच्य रूपों की रचना के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

अकर्मक/सकर्मक वाच्य रूप	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
दौड़णो	दौड़ीजणो
निकळणो	निकळीजणो
टपकणो	टपकीजणो
गिटणो	गिटीजणो
बैठणो	बैठीजणो

सामान्यत व– अन्त्य क्रियाप्रकृतियो के साथ श्लिष्ट भाववाच्य प्रत्यय –ईज के योग से –व का लोप हो जाता है। यथा—

व– अन्त्य क्रियाप्रकृति	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
खावणो	खाईजणो
दरसावणो	दरसाईजणो
रोवणो	रोईजणो
जावणो	जाईजणो
आवणो	आईजणो
हुवणो	हुईजणो

किन्तु पीवणो का भाववाच्य रूप पीवीजणो ही होता है।

अनेक अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतियो के दो-दो रूप भाषा मे प्रचलित हैं। इनके व–अन्त्य रूपो के श्लिष्ट भाववाच्य रूपो की रचना मे –व का लोप हो जाता है।

द्विरूपीय अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतिया	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
खदबदणो	खदबदीजणो
खदबदावणो	खदबदाईजणो
जगमगणो	जगमगीजणो
जगमगावणो	जगमगाईजणो
डगमगणो	डगमगीजणो
डगमगाणो	डगमगाईजणो

कतिपय अन्य अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतियो की स्थिति उपरोक्त प्रकार की द्विरूपीय अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतियो से भिन्न है। इनका मूलरूप तो एक ही होता है किन्तु श्लिष्ट भाववाच्य रूप दो-दो उपलब्ध होते हैं।

अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृति	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
फड़फड़ावणो	फड़फड़ीजणो (१)
	फड़फड़ाईजणो (२)

इस स्थिति में रूप सख्या (१) और (२) मे अर्थ भेद भी हो जाता है (११३, ११४)। रूप सख्या (१) अकर्मक

(११३) आज तो अणूतो तावड है। गरमी सू जीव फड़फड़ीजे।

(११४) इण कबूडे सू पाख ई नी फड़फड़ाईज।

त्रिया का श्लिष्ट भाववाच्य रूप है और रूप सख्या (२) सकर्मक अर्थ प्रयुक्त रूप का श्लिष्ट भाववाच्य (अथवा कर्मवाच्य) रूप।

कुछ क्रियाओं के अकर्मक वाच्य में दो-दो रूप उपलब्ध होते हैं, परन्तु उनका श्लिष्ट भाववाच्य रूप एक ही उपलब्ध होता है।

अकर्मक वाच्य द्विरूपीय	श्लिष्ट भाववाच्य
टकरणो~टकरावणो	टकरीजणो
चकरणो~चकरावणो	चकरीजणो

घबराणो~घबरावणो का श्लिष्ट भाववाच्य रूप **घबरीजणो** होता है। इसी प्रकार **लिवणो, देवणो** आदि का श्लिष्ट भाववाच्य रूप भी क्रमश **लिरीजणो, दिरीजणो** आदि होता है।

६ ११ २ जा— भाववाच्य रूपों में केवल **जावणो** क्रियाप्रकृति के पूर्णतावाचक कृदन्त **जायो** से **जायो जावणो** रूप निर्मित होता है। अन्य क्रियाओं के पूर्णतावाचक कृदन्त रूपों में ऐसा भेद नहीं होता।

जा— भाववाच्य रूपों में सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रियाप्रकृतियों के पूर्णतावाचक कृदन्त रूपों में मूल वाक्यों के कर्मानुसार लिंग-वचन का अन्वय होता है। यथा

देखियो जावणो (पुल्लिग, एक वचन)
देखिया जावणो (पुल्लिग, बहुवचन)
देखी जावणो (स्त्रीलिग, एक/बहुवचन)

कर्मस्थानीय संज्ञा के साथ नैं परसर्ग की अवस्थिति होने पर भी संज्ञा और जा— भाववाच्य क्रियारूप में अन्वय विद्यमान रहता है (११५)।

(११५) इण भगती री ती वो परताप है के भाटै में जीव घालियो जा सकै, भाखरा नैं हवा में उडाया जा सकै अर अथाग समुन्दर नैं पलक में सुखाया जा सकै।

६ ११ ३ श्लिष्ट भाववाच्य और जा— भाववाच्य क्रियाओं के समापिका क्रिया रूप सामान्य क्रियाओं के समान ही निर्मित होते हैं। अकर्मक क्रियाओं से निर्मित भाववाच्य रूपों में अन्वय नहीं होता अर्थात् समस्त रूप पुल्लिग एक वचन में ही अवस्थित होते हैं। जा— भाववाच्य रूपों में समापिका क्रिया **जावणो** क्रिया के साथ सलग्नित होते हैं।

६ ११ ४ कतिपय श्लिष्ट भाववाच्य क्रियाओं वाले वाक्यों के कर्तरि प्रयोग वाले प्रतिस्थानीय नहीं होते। ऐसे वाक्यों के जा— भाववाच्य रूप भाषा में उपलब्ध नहीं हैं। यथा वाक्य संख्या (११६) का कर्तरि प्रयोग प्रतिरूप होता है (११६क)।

(११६) पछै उण सू दौडीजै कोनी।

(११६क) पछै वो दौडै कोनी।

वाक्य सख्या (११६) का जा–भाववाच्य प्रतिरूप भाषा मे सम्भाव्य है (११६ख) किन्तु वाक्य सख्या (११७) का

(११६ख) पछै उण सू दौडियौ कोनी जावै ।

(११७) भळै बरसात हुई तौ हाथी रै उण खोज मे पाणी भरीजग्यौ ।

का जा– भाववाच्य प्रतिस्थानीय अनुपलब्ध है ।

§ ११५ प्रत्येक कर्तरि प्रयोग वाक्य के भाववाच्य प्रतिस्थानीय मे कर्त्ता-स्थानीय सज्ञा के साथ सू परसर्ग की अवस्थिति होती है (११८, ११९) ।

(११८) आज री रात ई ओ काम हूणौ चाहीजै । प्रजा री औ कळपणौ अबै म्हारै सू नी देखीजै ।

(११९) इण टाबूडी री ओ बिखौ म्हारै सू नी देखियौ जावै ।

किन्ही स्थितियो मे सू के स्थान पर रै हाथा (सू) (१२०) अथवा नै (१२१) की अवस्थिति होती है ।

(१२०) बादरौ हाथ जोडतौ थको कैवण लागो–आप धणी रै हाथा (सू) मारियौ जाऊ, इण सू घिन भाग म्हारा भळै की व्है नी ।

(१२१) म्हारै सुख आगै नी तौ म्हनै दूजा रौ दुख दीसै अर नी सुणीजै । म्हैं तौ म्हारै सुख मे डूबोडो ।

किन्ही वाक्यो मे मूल कर्त्ता के स्थान पर साधन वाचक सज्ञा की भी सू परसर्ग के साथ अवस्थिति होती है (१२२-२४) ।

(१२२) काटा अर सूला सू पगथलिया बीधीजगी ।

(१२३) रजी सू टपरी ढकीजगी ।

(१२४) गुळी रै परताप सू उणरी रग तो कदाक बदळीजग्यौ पण उणरी सभाव कीकर बदळै ।

साधनवाचक सज्ञाओ के स्थान पर कभी-कभी सयोजक कृदन्त की भाववाच्य वाक्यो मे अवस्थिति होती है (१२५) ।

(१२५) अेक निजर बाधणियो जोगी कैयो—भगवान रामचदर ई सोना री मिरगली देख छलीजग्या तौ बापडो औ राजकवर तौ काई बडो बात ।

सामान्य कथन सूचक वाक्यो मे कर्त्ता स्थानीय सज्ञाओ का लोप भी हो जाता है (१२६) ।

(१२६) ठकराणी जो कैयो—आप ई वंडी बिलळी बाता करो। सतां री जात-पात थोडी ई देखीजै।

६ ११ ६ भाषा में कतिपय क्रियायें ऐसी हैं जिनके भाववाच्य प्रतिरूप तो उपलब्ध हैं किन्तु उनके प्रेरणार्थक रूपो का अभाव है। इस प्रकार की क्रियायें हैं मडोठणो, मोणणो, मुळमुळावणो रणकारणो जतावणो, चापळणो, बकारणो, भणकारणो, मिणमिणावणो मूंदणो, बागोलणो इत्यादि।

६ १२ सयुक्त क्रियाओ के समान ही भाषा मे कतिपय क्रिया सयोजन ऐसे हैं जिनका अर्थ की दृष्टि से महत्त्व है। ऐसे क्रिया सयोजनो को अर्थ के आधार पर निम्न वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है

(क) इच्छार्थक
(ख) स्ववृत्यार्थक
(ग) आसन्नबोधार्थक
(घ) आरम्भमाणार्थक
(ङ) अनुज्ञार्थक
(च) बाध्यतार्थक
(छ) आवृत्यार्थक

६ १२ १ इच्छार्थक क्रिया सयोजन की रचना भावार्थक सज्ञा के साथ चावणो अथवा चाहीजणो क्रियाओ की आसत्ति से होती है इच्छार्थक क्रिया सयोजन भावार्थक सज्ञा के ओ– प्रत्यय और ई– प्रत्यय रूपो के आधार दो प्रकार के होते हैं। इनकी वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं (१२७-२८)।

(१२७) राणी तो राजा रो मूडो ई नी देखणो चावती। राजा रै पाछती आता ई वा अपूठो मुडनै मूडो फेर लियो।

(१२८) वो तो राणी सू सला-सूत बिचारिया-बिनाई दीवाण नै बुलाय आदेस कर दियो कै अंडा नाजोगा कुमाणसा रो वा मूडो ई नी देखणो चावै।

६ १२ २. स्ववृत्यार्थक सयोजन की रचना –ओ अथवा –ई प्रत्यय भावार्थक सज्ञा के साथ आवणो क्रिया की आसत्ति से होती है (१२९-३०)।

(१२९) इदर भगवान रो भी अणचीत्यो ओळबो सुणनै राजकवर हाको-बाको हुयगो। उणसू पाछो एकाएक जबाब देवणो ई नी आयो।

(१३०) बाई बारणै उभी सगळी बाता सुमट सुणी। उणसू की जवाब देवणी नीं आयो।

६ १२.३ प्रासन्नबोधार्थक सयोजन की रचना प्रत्ययरहित भावार्थक सज्ञा के साथ आवणी क्रिया की आसक्ति से होती है (१३१-३२)।

(१३१) बेटौ ई वीस ई बरसा रो लडदौ हुण आयौ पर हाल ताई कमाई री गैल ई नी ढूकौ।

(१३२) अैस ई भादवौ ढळण आयौ अर हाल लावै पर्न रौ खेंखाड करतो बामरो बाजै।

६ १२४ आरम्भमाणार्थक सयोजन की रचना प्रत्ययरहित भावार्थक सज्ञा के साथ समणी, लागणी, ढूकणी तथा मडणी क्रियाओ मे से किसी एक की आसक्ति से होती है (१३३-३६)।

(१३३) रूठियारणी करला हाथोहाथ अपडीजग्यौ तौ लोग उणनै कूटण समिया।

(१३४) मा री देखादेख बाप नै ई पैलका टाबर अळखावणा लागण लागा।

(१३५) सो आ वात बिचार वे दारू पीवण ढूका जको ढबिया ई नी।

(१३६) इण भात राजकवर रै रगमैल मे दोना री प्रीत रा चाद-सूरज ऊगण मडिया सो बगत परवाण नित ऊगता ई गिया।

६ १२५ अनुज्ञार्थक सयोजन की रचना प्रत्यय रहित भावार्थक सज्ञा के साथ देवणी क्रिया की आसक्ति से होती है (१३७)।

(१३७) सेसनाग रौ बेटौ पुण हिलावतौ बोलियौ बिना वरदान मागिया म्हैं थानै मठै सू चुळण ई नी दू।

६ १२६ बाध्यतार्थक सयोजन की रचना भावार्थक सज्ञा के साथ पडणी क्रिया की आसक्ति होती है। इस रचना मे भावार्थक सज्ञा और कर्त्ता अथवा कर्म मे लिंग-वचनानुसार अन्वय विद्यमान रहता है।

(१३८) फगत गरीबी रै कारण थानै सात पेरा री परणियोडी छोडणी पडती।

(१३९) सेवट कायौ होय म्हनै म्हारो सुभाव बदळणौ पडियौ।

६ १२७ आवृत्यार्थक सयोजन की रचना -इया (१४०) अथवा-बौ (१४१) प्रत्यय सहित क्रिया प्रकृति के साथ करणी क्रिया की आसक्ति से होती है।

(१४०) रजपूता रै केई बळा खांडा सू ई परणीजिया करै।

(१४१) मवारियौ अैदी रो कळाई सैग दिन मिटबौ करै, तौ ई उणरी भूख को मार्ग नी।

६ १३. आ. राजस्थानी असमापिका क्रियारूपो के निम्नलिखित भेद हैं—

(क) संयोजक कृदन्त
(ख) कृदन्त विशेषण
(ग) पूर्णता वाचक कृदन्त
(घ) अपूर्णता वाचक कृदन्त
(ङ) भावार्थक संज्ञा

६ १३ १ संयोजक कृदन्त की रचना क्रियाप्रकृति के साथ अनै अथवा अर चिह्नकों की अवस्थिति अथवा वैकल्पिक रूप से इन दोनों की अनवस्थिति द्वारा होती है। निम्नलिखित वाक्यों में इन तीनों प्रकार की संयोजक कृदन्त परक रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१४२) राणी री बाता सुणनै राजा उणरै गुण अर उणरी समझ माथै घणौ ई राजी हुयौ।

(१४३) अजाणचक री बोली सुण'र राजा जी चमकिया। अठी-उठी जोयौ पण की निगै आयौ नी।

(१४४) सेसनाग रौ बेटौ ई आ साढै री बात सुण अणूतौ राजी हुयौ।

सामान्य रूप से चिह्नक अनै तथा अर दोनों के अ का लोप होकर इनके वैकल्पिक रूप नै तथा 'र ही भाषा में अवस्थित होते हैं।

संयोजक कृदन्त परक पदबन्धों में निपात परौ की अवस्थिति भी होती है। इस प्रकार की रचनाओं के अंगों का क्रम होता है क्रियाप्रकृति + परौ ± अनै अथवा अर।

(१४५) गधौ निजर आया पछै उण रै जेज कठै। वौ तौ होळै होळै ढावा सू उतर परौ नै लप गधेडा रौ कान झाल लियौ।

(१४६) अै इण माल ई एम एड कर परा 'र आया है।

(१४७) डेरा आगै सगळा घरा खडा देखिया तौ आडोसी-पाडोसी ई अचभौ कर परा खनै आया।

समस्त अवस्थितियों में परौ निपात का आधार वाक्य की कर्ता-स्थानीय संज्ञा से लिंग-वचनानुसार अन्वय होता है।

नैरन्तर्यबोधक अर्थ में संयोजक कृदन्तपरक पदबन्ध में क्रियाप्रकृति की आवृत्ति भी होती है।

(१४८) काली मामी ताळिया माथै त ळिया बजावती दोवडी होय-होय नै हसण ढूकी जकी हुसती ढबी ई नी।

संयोजक कृदन्त परक पदबन्धों की कतिपय विशिष्ट अवस्थितियों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

निम्न वाक्यों मे क्रिया से निर्मित संयोजक कृदन्त "अधिक" (१४९) तथा "बड़े से बड़ा" (१५०) के अर्थों मे अवस्थित है।

(१४९) अेक सू अेक अकल मे बदनें।

(१५०) राजा बद-बदनें कौल करियो तद वा रूसणों छोड़ियौ।

निम्न वाक्यो मे करणो से निर्मित यौगिक क्रिया की विविध संयोजक कृदन्तपरक अवस्थितियो के वैशिष्ट्य का निदर्शन किया जा रहा है।

अवस करनें "अवश्य ही, जरूरी ही" (१५१)

(१५१) बीनणी जवाब दियौ—कवर नी होवण रै कारण वो अवस करनें मिनख हुवतो इज। म्हारी निजर मे कवर बिचै मिनख रौ घणौ मान है।

किणी सू इदक करनें मानणौ 'किसी से बढ़कर मानना" (१५२)

(१५२) बाप नें इण विध कळपतो देख तीनू बेटा बद-बदनें कैयौ कै वे छोटकिया भाई नें खुद रै जीव सू ई इदक करनें मानैला।

किणी नें सज्ञा करनें मानणौ "किसी को सज्ञा (के रूप मे) मानना" (१५३)

(१५३) पूतळी घडणवाळो तो बाप री ठौड हुयौ अर आ इणनें धणी करने मानै।

खाणै नें परसाद करनें खावणौ 'भोजन को प्रसाद मानकर खाना" (१५४)

(१५४) पैली धणी नें जीमावती, पछै बचियै-खुचियै खाणें नें परसाद करनें खावती।

नीचे जाण करनें "जान-बूझकर" (१५५) तथा जाणनें 'समझकर" १५६ की अवस्थितियो के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(१५५) फगत वडेरा भाइया नें चिडावण सारू वो जाण करनें लारली बात करी।

(१५६) गाव री आ बात तो साव साची ही कै गधेडो जाणनें जद वो भच देणी रा मिंघ गै कान जोर सू पकडियो तो पछै उणनें नाबडा रै बाधियो जितो चुरकारो ई नी करियो।

निम्न वाक्यो मे चलावनें (१५७-५८) की अवस्थितियो का वैशिष्ट्य स्पष्ट है।

(१५७) अेक सवार उणनें सावळ समझावता कैयो—बावळा, देप रौ धणी थनें चलायनें मारण सारू कैयो, अर थू अदाता रै सामीसाम ई नटै, थारी भाती तो नी आई।

(१५८) चौधरी रै खाता पानडा तो लिखियोडा हा कोनी, तद मरिया उपरात घुण चलायनै हामळ भरै ।

इस प्रकार के कतिपय अन्य प्रयोगो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।
हाथा करनै 'जान बूझ कर"

(१५९) पण अठीनै सत खुद मन-ई मन कळपण लागी कै हाथा करनै मौ डाळो गळा मे लियो ।

पगा हालनै 'अपने पैरो से चलकर, जान बूझकर"

(१६०) पगा हालनै मौत रै मू डै फदियो ।

निम्न वाक्यो मे हूयनै की अवस्थितिया भी महत्वपूर्ण हैं।

(१६१) बोलियो—म्हैं एक छोटो जिनावर हूयनै बूदायो । थारे वास्तै तो आ बात सैल म्हेला ।

(१६२) अेक अेक हाथिया रो टोळो पाणी पीवण नै ऊदरा री उण नगरी मायै-कर हूयनै जावण लागो ।

निम्न वाक्य मे लेयनै की परसर्गवत् अवस्थिति निर्दशित है ।

(१६३) म्हारै खिचिया री पोती री बात लेयनै म्हारै घादो पडग्यो ।

लेयनै की परसर्गवत् अवस्थिति से मिलती-जुलती जायनै की अवस्थिति के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं ।

(१६४) बकरी हमै जायनै बादरै री चलाकी पिछाणी, पण सादो काई लागै ।

६ १३ २ कृदन्त विशेषण की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –ण प्रत्यय के योग से होती है । इस प्रकार निर्मित रचना के साथ वाळो अथवा हार/हारो तत्वो की अवस्थिति हो सकती है, अथवा वैकल्पिक रूप से लिंग वचन प्रत्ययो का योग होता है । यथा जावणो क्रिया से जावणवाळो जावणहार, जावणहारो, जावणो आदि रूप व्युत्पन्न हो सकते है । समस्त कृदन्त विशेषणो की भाषा के वाक्यो मे गुणवाचक विशेषण स्थानीय अवस्थिति होती है ।

कृदन्त विशेषण की, हार –अन्त्य रूप को छोड़कर, विकारी गुणवाचक विशेषणो के समान शब्दरूपतुल्य रचना होती है ।

कृदन्त विशेषण की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है ।

(१६५) ग्यान नै कठां करणियो ग्यानी नीं है, ग्यान रो सिरजन करणवालो अर ग्यान नै आपरा करमा मे बरतणियो ग्यानी है ।

(१६६) थें बतावौ तौ एक पूछू कै दुनिया मे पेट रै जाया चौतहरा सू ग्रर सुहाग नै रासणहारै धणी सू कोई तीजी चीज पेर ई की बत्ती है नाई ?

सामान्य कृदन्त विशेषण (अर्थात –णौ अन्त्य कृदन्त) के अभिव्यजक रूप भी भाषा मे निर्मित होते हैं। समभणौ को आधार मानकर इस रूपावली का निदर्शन करने वाली सभावनाए निम्नलिखित हैं।

लिंग	कृदन्त विशेषण	अभिव्यजक	प्रतिरूप
पुल्लिग	समभणोडौ	समभणोडकौ	समभणोडलौ
अल्पार्थक	समभणाडियौ	—	—
स्त्रीलिंग	समभणोडी	समभणोडकी	समभणोडली

उपरोक्त अभिव्यजक रूपो की भाषा मे अवस्थिति उतनी अधिक नही होती।

६ १३ ३ पूर्णतावाचक कृदन्त की रचना का उल्लेख प्रकरण सख्या (६ ८ १ १) मे किया जा चुका है। अत इसकी अभिव्यजक रूपावली सूचित की जा रही है। उक्त रूपावली को सूचित करने के लिए बैठणौ तथा लिखणौ क्रियाओ को आधार माना गया है।

बैठणौ क्रिया के पूर्णतावाचक
कृदन्त की अभिव्यजक रूपावली

लिंग	पूर्णतावाचक कृदन्त रूप	अभिव्यजक प्रतिरूप			
पुंलिग	बैठौ	बैठोडौ	बैठोकडौ	बैठोडकौ	बैठोडलौ
अल्पार्थक	—	बैठोडियौ	—	—	—
स्त्रीलिग	बैठी	बैठोडी	बैठोकडी	बैठोडकी	बैठोडली

लिखणौ क्रिया के पूर्णतावाचक
कृदन्त की अभिव्यजक रूपावली

लिंग	पूर्णतावाचक कृदन्त रूप	अभिव्यजक प्रतिरूप			
पुंलिग	लिखियौ	लिखियोडौ	लिखियोडकौ		लिखियोडलौ
अल्पार्थक	—	लिखियोडियौ	—		—
स्त्रीलिंग	लिखी	लिखियोडी	लिखियोडकी		लिखियोडली

उपरिलिखित विकार्य रूपो मे, गुणवाचक विशेषणो के समान ही, कर्ता अथवा कर्म के लिंग-वचनानुसार विकार होता।

पूर्णतावाचक कृदन्त के उपरोक्त विकार्य रूपों के अतिरिक्त अविकार्य रूप की भी रचना होती है। इस रूप का निर्माण क्रियाप्रकृति के –या अथवा –इया प्रत्यय के योग से होता है। ई– अन्त्य क्रियाओं के साथ –या प्रत्यय का योग होता है और अन्य क्रियाप्रकृतियों के साथ –इया का। अविकार्य पूर्णतावाचक कृदन्त की अवस्थिति वाक्यों में क्रियाविशेषण स्थानीय ही होती है (१६७-७०)।

(१६७) वामणी काई पढ्तर देवती। नीची घूण करिया बोली बोली ऊभी री।

(१६८) माथै सूखोडी खालडी लिया वौ बडलै रै माथै चढनै बैठग्यो।

(१६९) आपा रै साथै रैया इण बाळक नै भूखो तिरसो मरणो पड्‌ला।

(१७०) धणी रै मरिया अबै आ देह फगत माटी री है, जकौ वगत आया माटी मे ई मिळ जासी।

अविकार्य पूर्णतावाचक कृदन्त के साथ कतिपय परसर्गों की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१७१) पण अबै डरिया सू ई दुस्मी छोडैला नी नी।

(१७२) खासी ताळ ताई वौ राणी सू मीठी मीठी बाता करी। चोगणी पगार रौ लोभ दिया पछै ई राजी नीठ मानियौ।

(१७३) भला म्हारै गाव गायकर पधारौ अनै गोठ गूगरी जीमिया बिगर पधारण दा आपनै। आप तो म्हारै सू गा पामणा हो।

(१७४) पण म्हैं हाल कवारी किन्या हू। फेरा खाया बिना मरू तौ अगत जावू ला।

अविकार्य पूर्णतावाचक कृदन्त के साथ अवधारक निपात ई की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(१७५) पण इचरज री बात कै देस-निकाळा री बात सुणिया ई राजकवर तौ अगै ई दुमनो नी हुया।

(१७६) ग्रैडा पापिया रौ तौ परस करिया ई पाप लागै।

(१७७) सिपाई मरिया ई हाथ सू सस्तर नी छोडै जकौ जीवता ई सस्तर लारै छोडनै गिया परा।

(१७८) ठाकरसा सामी देखनै घोडै री लगाम हाथ मे झेलिया ई कैवण लागौ –म्हैं राजाजी रौ फरमाण लेयनै आयौ हू।

पूर्णतावाचक कृदन्त के विकार्य तथा अविकार्य रूपों की वाक्यों मे आवृत्ति भी होवी है (१७९-८०)।

(१७९) पण सो बुद्धि री आजम रा मल्ला भेळा व्हे उण जगा बेठियो जको बैठो-बैठो ई आपरै नीचे सू पल्ला नै काड आगा फेंक दीना।

(१८०) कवर रा पग झालिया-झालिया ई वावी बेटी माथै चिडतो बोलियो—राजा अर कवर रै हाथा कदेई कसूर नी हुया करै।

६ १३४ अपूर्णतावाचक कृदन्त की रचना का उल्लेख प्रकरण सख्या (६ ८ १ २) मे किया जा चुका है। नीचे जावणो और लिखणो क्रियाओं को आधार मानकर इसके अभिव्यजक रूपो का सूचित किया जा रहा है।

जावणो किया के पूर्णतावाचक
कृदन्त की अभिव्यजक रूपावली

लिंग	अपूर्णतावाचक कृदन्त रूप	अभिव्यजक प्रतिरूप			
सामान्य पु	जावत	—	—	—	—
विशेष पु	जावतो	जावताडो	जावतडो	जावतोडको	जावतोडलो
अल्पार्थक पु	—	जावताडियो	—	—	—
स्त्रीलिंग	जावती	जावतोडी	जावतडी	जावताडकी	जावतोडली

लिखणो किया के पूर्णतावाचक
कृदन्त की अभिव्यजक रूपावली

लिंग	अपूर्णतावाचक कृदन्त रूप	अभिव्यजक प्रतिरूप			
सामान्य पु	लिखत				
विशेष पु	लिखतो	लिखतोडो	—	लिखतोडको	लिखतोडलो
अल्पार्थक पु	—	लिखतोडियो	—	—	—
स्त्रीलिंग	लिखती	लिखतोडी	—	लिखतोडकी	लिखतोडती

सामान्य पुल्लिग रूप को छोडकर अन्य सब रूपो मे विकार्य विशेषणो के समान लिंग वचनानुसार विकार होता है।

अपूर्णतावाचक कृदन्त के उपरोक्त अभिव्यजक रूपों के अतिरिक्त एक अन्य रूप भी भाषा मे उपलब्ध होता है। इस रूप की रचना क्रियाप्रकृति के साथ —न्त् प्रत्यय के योग से होती है। —न्त् अन्त्य रूपो मे भी विकार्य विशेषणो के सामान विकार होता है, यथा जावतो जावतो, लिखतो, लिखतो। न्त्— अन्त्य रूप की वाक्य मे अवस्थिति का उदाहरण निम्नलिखित है।

(१८१) गोडा रळकती काळी भंवर आटी रो फटकारो देय ठकराणी भचकै आडी फिरी ।

उपरोक्त समस्त रूपो के अतिरिक्त अपूर्णतावाचक कृदन्त के निम्न अन्य रूप भी उपलब्ध होते हैं ।

(क) आमेडित रूप, यथा रोवतौ रोवतौ (१८२) ।

(१८२) बत मे रोवती-रोवती कैयौ-म्हारै आगे-लारै कोई कोनीं ।

(ख) थकौ-सलगित रूप, यथा मुळकतौ थकौ (१८३) ।

(१८३) लखी मुळकती थकी जवाब दियौ —आपरो ई दियोडो खावूं हू ।

(ग) —आ अन्त्य रूप, यथा देखता, मळापता (१८४) ।

(१८४) मारग मे मळापता मिंग खिरगोसियै नै भळै पूछियौ—कित्तौक अळगौ है उणरो किलौ ।

(घ) —आ-अन्त्य आमेडित रूप यथा सोचता सोचता (१८५) ।

(१८५) सोचता-सोचता सेवट उणनै अेक अटकळ सूजी ।

(ङ) —आ अन्त्य ई आसन्न रूप, यथा सुणता ई (१८६) ।

(१८६) गीत री भणक सुणता ई हाथी तौ मस्त हुयौ पण हुयौ ।

(च) —आ अन्त्य थकाई सलगित रूप, यथा हूवता थका (१८७) ।

(१८७) खुद रै घर रो ठरकौ निर्सवार हूवता थका ई वौ मळीच हौ ।

(छ) —आ अन्त्य थका सलगित रूप, यथा हूवता थका (१८८) ।

(१८८) वन मे राजा रै हूवता थका किणी रै साथै इन्याव व्हे, इणसूं तो निजोगी वात भळै काई व्हे ।

अवधारक निपात ई के स्थान पर कभी-कभी अपूर्णतावाचक कृदन्त के साथ पाण की भी अवस्थिति होती है (१८९) ।

(१८९) स्याळ री आ वात सुणता पाण सिगा रा धै छिनग्या ।

पाण के पूर्व अपूर्णतावाचक कृदन्त के सामान्य रूप की अवस्थिति भी होती है (१९०) ।

(१९०) राणी तो आवत पाण राजा सू लडण लागी—आछो धोको दीनो म्हनै ।

§ १३५ भावार्थक सज्ञा की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –णौ प्रत्यय के योग से होती है । रूप की दृष्टि से भावार्थक सज्ञा और कृदन्त विशेषण (विशेष रूप से कृदन्त

विशेषण की ओ– अन्त्य अवस्थितियों) मे भेद नहीं होता। किन्तु इन दोनो के पार्थक्य को समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि भावार्थक सज्ञा की अवस्थिति सज्ञा स्थानीय होती है और कृदन्त विशेषण की विशेषण स्थानीय (१९१-९५)।

(१९१) किणी सत नै सतावणो आप नै ई फोडा घालेला। सतो रो तो की नी बिगडैला।

(१९२) उणनै राज करणो ई छाड देवणो चाहीजे।

(१९३) समझावणो म्हारो फरज हो, मानो नी मानो थारी मरजी।

(१९४) अत मे कैयो--मर जावणो कबूल है पण पाछो धोबी री गवाडी सामी तो मूडो ई नी करू।

(१९५) वो लाड़ खावणा तो पालरग्यो। वानै खावण री इकावळी धोखती गियो।

उपरोक्त उदाहरणों म भावार्थक सज्ञा की सज्ञा स्थानीय अवस्थिति ऋजु रूप मे एक तथा बहु दानो वचनो मे है। किन्तु तिर्यक रूप मे अवस्थितियो म भावार्थक सज्ञा के साथ ओ– अन्त्य सज्ञाओ के समान –आ~ऐ (एकवचन मे) और –आ (बहुवचन में) प्रत्ययों का योग नही होता, यथा (१९६-९८)।

(१९६) म्हारै हसण रो फगत ओ इज म्यानो है।

(१९७) दो तीन दिना पछै ठाकरसा भळै उठीकर घूमण पधारिया तो सेठ वानै अणूता राजी निगै आया।

(१९८) जवरै सू ज्वरै नै जोवण छळिया, सो दो तो दिना हेरिया ई मिळग्या।

उपरोक्त उदाहरणो मे हसण (१९६), घूमण (१९७), तथा जोवण (१९८) आदि रूपो को अविकार्य भावार्थक सज्ञा रूप कहना अधिक युक्ति सगत है।

अनिवार्य भावार्थक सज्ञा रूपों से निर्मित क्रिया सयोजको का उल्लेख प्रकरण सख्या (९ १२) मे किया जा चुका है।

किन्तु उपरोक्त सामान्य नियम के अतिरिक्त किन्ही विशेष परिसरो मे –आ~ऐ अन्त्य भावार्थक सज्ञा रूप की अवस्थिति भी हा सकती है।

(१९९) रामूडो कदेई थारै देखणा मे आवै तो फट देतो रा म्हनै समचार कर दीजै।

(२००) ल्हास नै रावळा मे मगवाई। रोवणा धोवणा रै मागै हलावौ-चलावौ ई सरु हुयौ।

अविकार्य भावार्थक सज्ञा के दोनों प्रकार के रूपो म सामान्य तथा विशिष्ट के आधार पर अर्थ भेद होता है।

६ १४ पिछले प्रकरणो मे वर्णित सयुक्त क्रियाओ एव क्रिया सयोजनो के अतिरिक्त भाषा मे अनेक ऐसे क्रिया$_1$ + क्रिया$_2$ (=क्रि$_1$ + क्रि$_2$) अनुक्रम उपलब्ध होते हैं जिन्हें सामान्य रूप से सयुक्त क्रियाओ आदि के साथ परिगणित करने की भ्रांति हो सकती है।

(२०१) सिंघ मलापनैं पाज मायै आय ऊभो।

(१०२) भौजाइया नैं समभावण लागो कै हूणी मो हूय खूटी।

(२०३) ठाकर सा तो कंवर जळमण री बधाई सुणनैं दारू चपणो माडियो जको नव दिना ताई लगोलग पीवता ई गिया।

उपरिलिखित वाक्यो मे आय उभो हुय खूटी तथा चूपणो माडियो वस्तुत अपनी आंतरिक सरचना के आधार पर सयुक्त क्रियाओ एव क्रिया सयोजनो से भिन्न कोटि की रचनाए हैं। इन क्रिया + क्रिया$_2$ अनुक्रमो की रचना इस अध्याय मे वर्णित विविध प्रक्रमो द्वारा होती है। नीचे इन क्रिया अनुक्रमों का उनमे अन्तर्निहित प्रक्रमो सहित सोदाहरण विवरण किया जा रहा है।

६ १४ १ **आय ऊभणो मार गेरणो लाय घालणो मनाय छोडणो ले डूबणो जाय ढबणो ले ढळणो आय ढूकणो हार थाकणो कय दरसावणो आय धमकणो बांध नीरणो जाय पकडणो लाय पटकणो, आय पूगणो जाय पूगणो लेय फिरणो उतार फकणो तोड वगावणो निकळ बहणो आय वाजणो आय विराजणो गड य बूरावणो आय बैठणो जाय बैठणो छान मारणो मार राळणो लेय सिवावणो** आदि रचनाए वस्तुत प्रविसित सय जक कृदत + समापिका क्रिया अनुक्रम हैं जिनमे समापिका क्रिया के मूल सयुक्त क्रिया रूप मे अवस्थित विवारक क्रिया लुप्त है। यथा **आय उभणो** आदि का मूल रूप है आय (नैं) उभग्यो। उपरिलिखित समस्त क्रि$_1$ + क्रि$_2$ अनुक्रमो का निष्पत्ति छाण मारणो इत्यादि कतिपय अनुक्रमो को छोडकर उल्लिखित प्रक्रम द्वारा हुई है। **आय (न) उभग्यो** सामान्य सयोजक + सयुक्त क्रिया के परिवर्तित रूप **आय ऊभो** मे अप्रत्याशित क्रिया व्यापार का होना ध्वनित होता है जबकि उसके मूल रूप मे ऐसा अर्थ ध्वनित नहीं होता।

इन क्रि$_1$ + क्रि$_2$ अनुक्रमो मे **आय पूगणो जाय पूगणो** आदि की व्याख्या अन्य प्रकार से भी की जा सकती है। वह यह है कि इस प्रकार के अनुक्रमो का मूल रूप है **पूग आयो तथा पूग ग्यो ओर आय पूगो जाय पूगो** आदि रूप मूल सयुक्त क्रिया के दोनो अगो (मुख्य क्रिया + विवारक क्रिया) म क्रम परिवतन का परिणाम हैं।

छाण मारणो (२०४) आदि अनुक्रम ऐसी रचनाए है

(२०४) आखो राज छाण मारियो पण कठै ई उजास रो रेसो निजर नीं आयो।

जिनकी व्युत्पत्ति उपरोक्त दोनो प्रक्रमो से पृथक है। **छाण मारणो** वस्तुत एक सयुक्त क्रिया है जिसमे प्रावस्था विवारक न्हाखणो के स्थान पर उसके अभिव्यजक प्रतिस्थानीय **मारणो** की अवस्थिति हुई है।

६ १४ २ इसी प्रकार 'चूपणो माडणो" (६ २२ ८) क्रिया अनुक्रमो मे (जिनमे प्रथम अग असमापिका क्रिया रूप भावार्थक सज्ञा की अवस्थिति होती है) भावार्थक सज्ञा को कर्त्ता अथवा कर्म स्थानीय सज्ञाओ के स्थान पर अवस्थिति हुई है। इस कोटि के अनुक्रमो के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२०५) बोलणो सीखियो तद सू आज दिन ताई घणो ई भूठ बोलियो।

(२०६) सुथार रो बेटो तो फगत माया खरचणी जाणतो सो खुलै खाळ खरचण लागो।

(२०७) मा गे तो रोवणो ढबियो पण म्हारो रोवणो नीं ढबियो।

(२०८) व दोनू तो जाणै बोलणो ई बिसर ग्या व्है।

(२०९) खुद रै फोडै बिचै उणरै होवै टाबरा रो कळपणो घणो घणो साल्हतो।

६ १५ आ राजस्थानी मे वाक्याशो अथवा समापिका क्रियापदबन्धो के आमेडण द्वारा विविध रूप से अभिव्यजक रचनाए निर्मित होती हैं। उदाहरण के लिये निम्नलिखित वाक्य मे वर्णित सूर्यास्त के दृष्य को लिया जा सकता है।

(२१०) अबै गुलाल रो ओ गोळ गट्ट थाळ आधो खाडो हुयग्यो। ओ डूबो ! ओ डूबो !

इस वाक्य मे ओ डूबो ! ओ डूबो ! ऐसी ही आमेडित रचना है। इस रचनाओ का, अभिव्यजक सरचना के अध्याय मे वर्णन करके न अलग से विवरण करना इसलिए आवश्यक है कि उक्त रचनाए अभिव्यजक होते हुए भी कतिपय वाक्यविन्यासात्मक युक्तियो पर आधारित हैं। ये युक्तिया भाषा की वाक्यविन्यासात्मक सरचना का अविभाज्य अग हैं। नीचे इस कोटि की रचनाओ का सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

६ १५ १ इस कोटि की प्रथम अभिरचना है पण द्वारा समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति (२११-१२)।

(२११) उणरी आता डर रे कारण कुळबुळावण लागी। गावड घुमाय च्यारू खांनी भाळियो। सिंघणी रो रूप धार काळ तो आयो पण आयो।

(२१२) नी मानणवाळा अगै ई मत मानो, म्हैं तो थानै हुई जकी बात बताबू कै थोडा दिना पछै ई विना माईना रै उण छोकरा रो डको बाजियो पण बाजियो।

इस कोटि की द्वितीय अभिरचना मे समापिका क्रिया पद की जको ईज के अन्त-निवेश द्वारा आवृत्ति होती है।

(२१३) घरवाळा घणो ई समभाइस करी पण ठाकर तो नीं मानिया जको नी इज मानिया।

(२१४) लोगां घणा ई हाथ जोडिया, पण सेसनाग तो धत पकड ली जकी पकड इज ली ।

तृतीय अभिरचना में समापिका क्रिया पदबन्ध₁ + जको + समापिका क्रिया पदबन्ध₁ + ई की अवस्थिति होती है। इस अभिरचना की अवस्थिति सामान्य रूप से विरोधवाचक प्रतियोगिक वाक्यों के पण-वाक्यांश के पूर्व होती है।

(२१५) धरम रै वास्तै चढायोडो पूजापो कदै ई अकारथ नी जावै। आगलै जलम में तो वो लाधै जको लाधै ई, पन इण जलम में ई वो चौगणो होय पाछो हाथ आवै।

चतुर्थ अभिरचना में समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति के साथ 'क' का अन्तर्निवेश होता है।

(२१६) दैत री बेटी डर सू धूजती बोली कै उणरो बाप आयो 'क आयो।

एक अन्य अभिरचना में समापिका क्रिया पदबन्ध की ई अन्तर्निविष्ट आवृत्ति होती है।

(२१७) राजा री निजर तो घोडा माथै ई चिपगी। अंडै घोडा री कीरत तो कानां सुणी ई सुणी ही। निजरां देखण रो काम तो आज ई पडियो। राजा तो हीस रै समचै ई घोडा री परख कर ली ही।

सयोजक समुच्चय बोधक निपात **अर** के अन्तर्निवेश सहित भी समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति होती है।

(२१८) *माथो निवायनै कैवण लागी—आज तो आपरा दरसण हुया अर हुया।*

अवधारक निपात **तो** के अन्तर्निवेश सहित भी समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति होती है। यह अभिरचना सामान्यतया हेतुमद् रचनाओं तक ही सीमित है, यद्यपि हेतुमद् वाक्य चिह्नक की भी अवस्थिति होना अनिवार्य नहीं है।

(२१९) बात सुणता ई राकस रा तो धै छिलग्या। अबै करै तो काई करै। आज तो औ जम किणी भाव नी छोडै ला।

समापिका क्रिया पदबन्ध₁ + तो + कर्त्ता अथवा कर्म समुद्देशक सर्वनाम + समापिका क्रियापदबन्ध भी एक दूसी कोटि की महत्त्वपूर्ण अभिरचना है।

(२२०) पछै क्यू पूछणो। उण रै पगां री रज माथै रै लगावण सारू लोग अड-वडिया तो वे अडवडिया।

समापिका क्रिया पदबन्ध₁ + तो पछै + कर्त्ता अथवा कर्म समुद्देशक सर्वनाम + इज + समापिका क्रिया पदबन्ध₁ अभिरचना निदर्शन निम्न उदाहरण द्वारा होता है।

(२२१) सगळा जगळ मे हायतोबा मची तौ पछै वा इज मची।

नौं + समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति से निर्मित रचना का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

(२२२) न्याव, मेळप, भाई चारो अर बराबरी रै उपदेसा कुदरत रौ ढारौ नी बदळीजै, नी बदळीजै।

सहसम्बन्ध वाचक सर्वनाम + समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति से निर्मित अभि रचना के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२२३) पण आ अपछरा हाल म्हारी राणी नीं है सो नी है।

(२२४) राजा वाचा देय-देय नै हार थाकियो, पण राणी नै पतियारों नी हुयौ सो नी हुयौ।

(२२५) गाव रै गोखो आवना ईं भाणजा रो पेट दूखण मडियो सो वो मडियो। कवूडो लुटै ज्यू लुटण लागो।

समापिका क्रियापदबन्ध की सामान्य आवृत्ति के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२२६) बोलणो सीखियो तद सू आज दिन ताई घणो ई भूठ बोलियो, घणो ई भूठ बोलियो।

(२२७) अेक पग रै पाण नीचे टिरियोडो वो ऊचौ उडतो ई ग्यो, उडतो ई ग्यो।

नीचे इस कोटि के वाक्यो के कतिपय अन्य उदाहरण दिये जा रहे हैं जिनमे प्रत्येक वाक्य तत्सम्बन्धी अभिरचना का प्रतिनिधित्व करता है।

(२२८) नीद मे सूतोडी नै अैडो सपनो आयो हुवतो तो खुलिया पछै टूट जावतो। पण जागतोडी रो औ सपनो कीकर अर कद टूटेला।

(२२९) कैयो—हा, थारी वात तो माव साची पण भूठ री आधी आगै साच री भुतियो टिकनै कित्तोक टिकै।

(२३०) म्हनै तो फगत इण बात रो इचरज व्है कै आ कुलखणी मा रै पेट मे नौ महीना खटी तो खटी इज कीकर।

(२३१) अमोलक हीरा री बात सुणनै उणरो जीव डिगियो तो अैडो डिगियो कै अजेज उण चिडी नै छोड दीनी।

(२३२) देखियो—अेक कालिदर फुण करिया फूला रै जोड डसण री ताक मे वैठो। आज तो वचिया ज्यू ई वचिया। पाधरो मूठ माथै हाथ ग्यो।

किन्ही स्थितियो मे क्रिया पदबन्धो की तीन बार भी अवस्थिति होती है।

(२३३) पौर मे बरसियो तो बरसियो ई बरसियो—पछै क्यू पूछो वाता।

७. क्रियाविशेषण

७ १ आ राजस्थानी क्रियाविशेषणों को उनके प्रकार्यों के आधार पर दो वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है, (क) वाक्यात्मक क्रियाविशेषण, और (ख) सामान्य क्रियाविशेषण।

७ १ १ वाक्यात्मक क्रियाविशेषण मात्र क्रिया पदबन्धो के आश्रित अग न होकर, सम्पूर्ण वाक्यों के विशेषण होते हैं। निम्न वाक्यो मे नोरेक (१) तथा नीठ (२) की अभिव्यक्तियो से क्रमश वाक्यात्मक एव सामान्य क्रियाविशेषणो के प्रकार्यात्मक पार्थक्य स्पष्ट निदर्शन हो रहा है।

(१) पण ऊदरी तौ किणरी किरियावर मानै, सामी भूडती कैयौ—नीठेक तो घणा दिना सू गुळ रौ भीरौ आखिया देखियौ पण होळी ऊठियै नै औ ई को सवायौ नी।

(२) अर तठा उपरात असमान जोगी सेठा री बेटी नै आपरी मौत रौ भेद बतायौ। अटकतौ अटकतौ नीठ बोलियौ—सात समुदरा पार अेक मिदर है।

इन दोनो उदाहरणो स यह स्पष्ट है कि *वाक्यात्मक और सामान्य क्रियाविशेषणो का* परस्पर पार्थक्य शब्दरूपात्मक अथवा परस्पर व्यावर्तक शब्द-सवर्गों आदि पर आधारित नही है। इस तथ्य को अधिक स्पष्ट करने के लिए वाक्यात्मक क्रियाविशेषणा के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(३) सेवट काई हुयनै वा आपरै मन मे कैवण लागी—इया खाटा बडछ अगूरा सारू साव ई कुण भङ्पा मारै।

(४) पण आइंदा म्हैं न्यारौ ई म्हारा मुकाम मे भोजन करूला।

(५) चिडी छोटी तौ अवस ही पण ही इधक चतर।

(६) समभ फगत बतावण रै आमरै नी हुया करै।

(७) लगोलग बिखा माथै बिखो पडण सू बामणी रो काळजो काठो हुयग्यो।

(८) राजा री कवर नित-हमेस उण मारग ई सैर सपाटा वास्तै घोडा चढियो निकळतो।

(९) स्याळणी तुरताफुरता अेक अटकळ विचार ली।

उपरिलिखित वाक्यों मे सेवट (३), आईंदा (४), अदम (५), फगत (६), लगोलग (७), नितहमेस (८), तथा तुरताफुरता (९) की वाक्यात्मक क्रियाविशेषण रचनाओं के रूप मे अवस्थिति हुई है।

७ १ २ सामान्य क्रियाविशेषणो के मुख्य वर्ग हैं (क) सार्वनामिक क्रिया विशेषण (ख) क्रिया विशेषण के रूप मे अवस्थित होने वाली सज्ञाए तथा विशेषण और (ग) अन्य विविध क्रिया विशेषण पदबन्ध।

७ १ २ १ सार्वनामिक क्रियाविशेषणा के अन्तर्गत सर्वनामो की जिन कोटियो को वर्गीकृत किया जा सकता है वे हैं (क) निजवाचक सर्वनाम (ख) अन्योन्याश्रय वाचक सवनाम, (ग) परिमाणवाचक सर्वनाम (घ) गुणवाचक सर्वनाम, (ङ) प्रकारता बोधक सर्वनाम, (च) रीतिवाचक सर्वनाम (छ) स्थानवाचक सर्वनाम (ज) काल वाचक सर्वनाम तथा प्रकरण सख्या (४ २) मे उल्लिखित कतिपय सर्वनाम (यथा, कीं न कांई, कांई न कांई इत्यादि)। कतिपय अन्य वर्गों के सर्वनामा की भी सीमित रूप स क्रियाविशेषण स्थानीय अवस्थिति होती है।

इन समस्त सर्वनाम वर्गों का उल्लेख पहले किया जा चुका है। इनका विशेष विवरण वाक्यविन्यास के अन्तगत किया जायगा।

७ १ २ २ क्रियाविशेषण के रूप मे अवस्थित होने वाली सज्ञाओं में से कुछ तो ऐसी हैं जिनकी क्रियाविशेषण स्थानीय अवस्थिति भाषा मे रूढ हो चुकी है। इनमे स्थान—दिशावाचक क्रियाविशेषण कालवाचक क्रियाविशेषण और रीतिवाचक क्रियाविशेषणो को सम्मिलित किया जा सकता है। अनेक गुणवाचक तथा निर्धारक विशेषण भी रीतिवाचक क्रियाविशेषणो मे सम्मिलित किये जा सकते हैं। इन तीनो कोटियो के क्रिया विशेषणो के कतिपय उदाहरण नीचे सकलित किये जा रहे हैं।

कतिपय स्थान वाचक क्रियाविशेषण

माय, मायनै, मायकर माय री माय, माठ, तलबै, हेटै, बारै, धकलै वळ, आडैकट, कूट-कूट ठौड ठौट ताडै, दर-दर, अधर ऊपरै, ऊचौ, मथारै, सिध, सारै पाखती, पाडै, आजू-बाजू, नैडो आगौ, खानी चौ तरफ च्यारूमेर, च्यारू दिस, काठै, डावी बाजू, छेडै, सो कोस अळगा, सामी, सौ कोस आतरै, आगै, आगै-पाछै, धकै, बिचाळै, दर-दर इत्यादि।

कतिपय दिशा वाचक क्रियाविशेषण

लाणी कूट, भळ दिसा (उगूग) परियाण कूट, लकावू दिसा, निरात कूट, आथूण दिसा, पचाद कूट, धुरादु दिसा, लाणी कूट इत्यादि।

कतिपय कालवाचक क्रियाविशेषण

बेळा बगत सायत बगत बेवगत टाणै फर फरू अकर सालौसाल ग्रायैबर पौर परार तैपरार ग्रष्ट पौर ग्राठ पौर बत्तीस घडी एक बार सात बळा पैलकै पार अक दिन पिरसू खिणक एक पलक धमेक ग्राज रै दिन भाग फाटौ सदियै सदिय तडकै तडक बिजूई पैली दूज दिन सार सूणती भखावटै भाभरकै दिन रै बधाण मिझ्या ग्राथण सवार आज काल रोज रोज ना बेगो ग्रजेज ग्रणजेज निरो ताळ खासी ताळ घणी ताळ सरूपोत सिरैपोत पैल पोत हाल हाल ई हाल तो हाल ताई हमेसा।

राजस्थानी महीनो के नाम भी इसी कोटि मे आते हैं—यथा चैत बैसाख जेठ ग्रासाढ सावण भ दवा ग्रासोज काती मिगसर पोह माह फागुन।

कतिपय रीतिवाचक क्रियाविशेषण

धीमैं होळै ध रै पैन्ल साको वेगो जल्दी धणकरा छानै ग्रोलै उदास ग्रचाणचक सटकै इत्यादि।

उपरोक्त वर्गों के ग्रतिरिक्त सज्ञाग्रो की परसर्गों सहित (तथा कुछ परिसरो मे तियक रूप मे किन्तु परसग रहित) ग्रवस्थिति क्रियाविशेषण संवग की मुख्य विशेषता है (१० ११)।

(१०) हाथी तो उणरी बोलीरी मोय मे मळै उठै स दोडियो चौगणै बेग सू दोडियो।

(११) थे बोला बोला पवन रै बेग जैनाणै री मीव मे बड जावो। भाटिया र सरणै पूगिया पछ जीव न जोखो नी।

इन उद हरणो मे (चौगणै वेग सू (१०) तथा पवन रै वेग (११)) वेग सज्ञा की क्रमश परसग महित तथा परसग रहित अवस्थितियो के उदाहरण है।

सज्ञाग्रो की परसग महित ग्रथवा परसग रहित क्रियाविशेषण स्थानीय ग्रवस्थितियो की कतिपय व्याकरणिक विशेषताग्रो का उल्लेख करने से पूर्व ग्राधुनिक राजस्थानी परसर्गों का विवरण प्रस्तुत करना ग्रावश्यक है।

७ १ २ ३ ग्रा राजस्थानी परसर्गों को दो कोटियों मे विभाजित किया जा सकता है न सू तक रो मे भर इत्यादि परसर्गों को छोडकर शेष समस्त परसग रो के तियक रूप र/री के साथ कतिपय सज्ञ ग्रो ग्रथवा विशेषणो की आसत्ति से निर्मित होते हैं। कुछ परसर्गों की रचना र/री के स्थान पर सू की अवस्थिति से भी होती है।

नीचे ग्रा राजस्थानी के समस्त ज्ञात परसर्गों की सूची प्रस्तुत की जा रही है।

रै अडौअड के समीप'
रै अठै के यहा
रै अलावा के अलावा, के अतिरिक्त
रै असवाडै पसवाडै के आस पास'
र आगै के सहारे
रै आगै के आगे
सू आगै से आगे'
रै आगै लारै क आगे पीछे
रै आडो के आगे पर
रै आडै पाडै के आस पास'
रै आपै के सहारे'
रै आरपार के आरपार
रै आसरै के आसरे'
रै उठै के वहा'
रै उनमान के समान'
रै उणियार के जैसा'
रै उणियारै के जैसा के समान'
रै उपरात के बाद, के पश्चात्'
रै ऊपर के ऊपर पर'
रै ओळै दोळै | के इधर उधर के
रै ओळा दोळा | चारो ओर'
रै ओलै के बहाने के पास'
रै ओळावै के बहाने'
रै खनै के पास'
री कळाई 'की तरह'
रै कारण के कारण
रै नू तै
केरा का'
रै खनाकर के पास से
रै खनै सू से के द्वारा'
री खातर 'के लिए
रै खातर के लिए के कारण'
रै खानी की ओर'
रै खानी खानी से इधर उधर'
रै खानी खानी सू के चारों तरफ से'
रै खिलाफ के खिलाफ'

रै गळोकर | 'के पास से के नजदीक
रै गळाकर | (से)'
रै गोडै के पास'
री जात (के) जैसा'
रै जितो (के) जितना
रै जैडो (के) जैसा'
रै जोग के लिए के उपयुक्त'
रै जोगो के योग्य के उपयुक्त'
रै जोडै के बराबर के साथ, के सामने, के समान के पास'
रै ज्यू के समान क जैसा की तरह
रै टाळ | के सिवाय के अलावा के
री टाळ | अतिरिक्त के बिना'
रै टिप्पै के आधार पर'
रै ठौड | 'की जगह के स्थान पर'
री ठौड |
तक तक'
रै तणो के समीप के निकट तक, के सहारे के आधार पर का
री तरै 'की तरह'
रै तळाकर | के नीचे से के नीचे के
रै तळैकर | तरफ से'
रै तळै के नीचे के तल पर'
रै ताई तक के लिए'
रै ताळकै के हवाले के अधिकार म, के लिए'
रै तौर माथै के तौर पर'
रै थाळै के धरातल पर पर'
रै दाई के समान के तुल्य के बराबर
दीठ प्रति प्रति एक हर एक को
रै धकै के आगे के सामने के सम्मुख के मुकाबले मे'
रै धकै धकै के आगे आगे
रै धको की ओर'
रै धयोपै के सहारे
रै नाव माथे के नाम पर'
रै नाव सू के नाम पर'

रै नीचै 'के नीचे'
सू नीचै 'से नीचे से नीचे की ओर'
नै 'को की तरफ के लिए'
रै नैडा कर 'के नजदीक से'
रै नैडो 'के निकट'
रै पछै 'के बाद के पश्चात् के पीछे के उपरान्त से लेकर के बाद से'
सू पछै 'से बाद मे'
रै पछै पछै 'के पीछे पीछे के बाद ही बाद मे'
रै परवान 'के अनुरूप के समान, के तुल्य, के बराबर, के सदृश की भाति के मुताबिक'
रै परवानै 'के मुताबिक के अनुसार के अनुरूप'
रै पसवाड 'के पास मे के निकट के एक ओर'
रै पाण 'के सहारे के बल के कारण, के हेतु के आधार पर, द्वारा'
रै पाखती | 'के पास के निकट,
रै पागती | के समीप'
रै पाडै 'के पास के निकट'
रै पायँ 'के पास'
रै पार 'के पार'
रै पुराण 'के अनुसार'
रै पेटै 'के निमित्त के बदले मे के एवज मे के लिए के नाम पर'
रै पैला 'के पहले के पूर्व'
सू पैला 'से पहले, से पूर्व'
रै पैली 'के पूर्व से पूर्व के पहले'
सू पैली 'से पहले'
रै पैली पैली 'के पहले ही से पहले ही'
सू पैली पैली 'से पहले ही'
रै प्रमाण 'के जैसा के समान'
रै बदळै 'के बदले के समान के एवज मे के वास्ते कृते'
रै बदळै मे 'के बदले मे'
रै बळ सू 'के बल पर'
रै बस 'के वशीभूत होकर, के कारण'
रै बाबत 'के बाबत के सम्बन्ध मे, के निमित्त, के लिए के वास्ते'
रै बारै 'के बाहर'
सू बारै 'से बाहर'
रै बारै मे 'के बारे मे'
रै बिगर 'के बगैर बे-, के अलावा के अतिरिक्त'
रै बिचाळै 'के बीच अपना मध्य मे'
रै बिचै 'के बीच, आपस मे'
रै बिचै 'की अपेक्षा की तुलना मे, की बनिस्बत'
रै बिना 'के बिना'
रै बिरोबर | 'के बराबर'
रै बराबर |
रै बिलू 'के पक्ष मे'
रै बीच मे 'के बीच मे'
रै बेगी 'के लिए'
भर 'भर'
रै भरोसै 'के भरोसे'
री भात 'की भाति'
रै भेळा 'के संग के साथ'
रै मजफ 'के मध्य म'
रै मतै 'की मति के अनुसार अपने आप'
रै मान 'के बराबर के प्रमाण मे के समान'
रै माय 'के भीतर के अन्दर'
रै माय माय 'के भीतर भीतर'
रै माय कर 'मे से (होकर)'
रै माय बारै 'के अन्दर बाहर'
रै मायनै 'म'
रै मायनै सू 'मे से'
रै माफ़ूक 'के अनुरूप'

रै माडै के बिना'
रै माथे 'पर, बाद के लिए'
रै माथावर | के ऊपर से,
रै माथैकर | के ऊपर की तरफ से'
रै माथै सू के ऊपर से'
रै मारग के रास्ते'
रै मारफत के द्वारा, के माध्यम से
के मारफत'
रै मिस के बहाने के रूप म'
रै मुजब के अनुसार के मुताबिक
के माफिक'
रै मूडै मूड के रूबरू के सामने'
रै मूडागै के सामने'
रै मुताबक के मुताबिक'
म मे'
रै मोके के मोके पर'
री 'का के लिए'
रूप सू रूप स'
रै रूप मे के रूप मे'
रूपी 'रूपी'
लग तक, पर्यन्त'
रै लगती लगातार'
रै लगै टगै के करीब के लगभग,
के निकट
रै लायक के समान के जैसा'
रै लारै 'के पीछे के साथ
के कारण से'
रै लारै-लारै के पीछे पीछे
के साथ साथ'
मू लेय तक 'से लेकर तक'
मू लेय ताई से लेकर तक'
रै वास्ते के वास्ते के लिए'
रै सधी कै के सधिस्थल पर'
रै समचै 'ही के समान, के अनुसार,
के आधार पर'

रै समान 'के समान'
रै समेत 'के समेत के सहित'
सर 'के अनुसार'
रै सरीखो | के सरीखा के बराबर'
रै सरीसो |
सरूप स्वरूप'
रै सलबै 'के नजदीक, के निकट,
के समीप, के पास'
रै सस्तै के समान'
रै सामी के सामने की ओर'
रै सामोसाम के प्रत्यक्ष'
रै सैंडै क पास की तरफ'
री सो का सा'
रै सागै के साथ से'
रै साटै के बदले'
रै साथै के साथ पूर्वक, से'
रै साथै साथै के साथ साथ'
रै सारै के बारे मे'
रै सारू के लिए'
रै सारै के सहारे'
रै सिवाय 'के सिवाय'
सू से, के द्वारा'
रै सूणो 'के बराबर, तक, के समान'
रै सूरो 'के समेत'
हदी तक, को, पर'
रै हरले मे'
रै हवालै के हवाले'
रै हा नै के वश मे, सामने'
रै हाथ के हाथ'
रै हाथा 'के हाथो'
रै हेटै के नीचे'
सू हेटै 'से नीचे'
रै हेटाकर | के नीचे की ओर से'
रै हेटैकर |

सामान्य रूप से रौ, री में निमित परसर्गों के रौ, री अंगो का लोप हो जाता है, यथा (१२ १६)

(१२) म्हारै जचमी जकौ लोह री लीक। साची बात रै आगै म्हैं बदनामी री परवा नी करू।

(१३) ऊदरौ कैयौ—अकल रै बळ आगे भावर नै ई कगूकै बिरोबर हूवणौ पड़ै।

(१४) दीखता आराम आगै अदीठ दुख रा कळाप क्यू करू।

(१५) सुगनचिड़ी रै माडा सुगना रै उपरांत ई सगळा इण राज री सींव नै लाघनै परलै राज री सीव मे बड़ग्या।

(१६) बरस उपरात पाछा इणी दिन उठै आवण रौ कौल कर ग्या।

अनेक परसर्गों के पूर्व सज्ञाओ की अवस्थिति के आधार पर विशिष्ट प्रयोग उपलब्ध होते हैं। यथा,

(१७) मेवट मन उपरात लापरवाई सू कँवल रौ दिखावौ करियौ।

इस वाक्य (१७) मे मन उपरांत का अर्थ है मन न होने पर भी।'

(१८) इत्तै वेग रै उपरात ई चीरहरा रा खोज उणरी निजर सू रमिया कोनी हा। वारै खोजा मे ई उणरो जीव अटकियोड़ो हो।

उपरिलिखित वाक्य मे वेग रै उपरांत का अर्थ है वेग के बावजूद भी'।

अनेक सज्ञा + परसर्ग अनुक्रमो क क्रम-परिवर्तित रूप परसर्ग + सज्ञा भी भाषा मे उपलब्ध होते हैं। यथा, गाव सामी (१९) निजरां सामी (२०) बावडी सामी (२१), तथा सामी छाती (२२), सामी चडात (२३), तथा समदर रै मझ (२४) एव मझ बेपारा (२५) इत्यादि।

(१९) स्यालिया री मौत आवै जद गाव सामी जाया करै।

(२०) बागली तौ सगळा री निजरा सामी गोरावै री खोगाळ मे हार पटक दोनी।

(२१) माथै सूखो खालडौ ओढनै वो उण बावडी सामी बहीर हुयौ।

(२२) सामी छाती झैलियोड़ो लाठो घाव देखनै राजाजी कैयौ—आप पगत पूजियोडा सत ई नी हो पण इणरै सागै आप सूरवीर ई किणी सू कम नी।

(२३) नाडी मे सामी चडात पाणी कीकर गिडल ग्यो, म्हारै तौ मगज मे ई आ बात बैठै जैडी को दीसै नी।

(२४) अर उठी समदर रै मझ टापू मे कवराणी री विपदा रौ काई लेखो हो।

(२५) मझ बेपारा आखिर मसळनो बैठो हुयौ अर पाधरौ महातमा रै आसण आयौ।

सू परसर्ग की अवस्थिति पुरुषवाचक सर्वनामों के सम्बन्ध वाचक रूप (यथा म्हूँ से म्हारो) के तिर्यक एक वचन रूप के साथ होती है। विकल्प से सम्बन्धवाचक सर्वनाम के –रै का लोप भी हो जाता है। इस प्रकार निर्मित समस्त रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

म्हूँ	म्हारै सूं ~म्हासूं
आपं	आपणैसू ~आपासू
म्हे	म्हारैसू ~म्हासू
थूं	थारै सू ~था सू
थे	थारै सू ~थां सू
आप	आपरै सूं ~आप सू
औ, आ	इणरै सू~इण सू
अै	इणारै सूं ~इणां सू
वो, वा	उणरै सू ~उण सू
वे	उणारै सू ~उणा सू

७१२४ अन्य विविध क्रियाविशेषण पदबन्धों के अन्तर्गत सर्वप्रथम उल्लेखनीय है अनुकरणात्मक पदबन्धों की अपनी संगत क्रियाओं के साथ अवस्थिति। नीचे इस प्रकार के कतिपय क्रियाविशेषण + क्रिया संयोजनों की सूची प्रस्तुत की जा रही है।

फडाफडा फौफणो
हडा हडो हालणो
बडा-बडा बोलणो
टचा टचा टाचणो
भडा भडा भचीडणो
भटा भटा जावणो
झबाझब झबूकणो
टरा-टरां टरकणो
बराबटा बोलणो
फटाफटा फैंकणो
फणण-फणण फैंकणो
बणण-बणण फैंकणो
गटा-गटा गिटणो
गटागट गिटणो
गळाक गळाक गिटणो
गटळ-गटळ गिटणो
खपा खपा खावणो
सपाखपा खाणवो

डचाडच खावणो
डचा डचां खावणो
भू भू रोवणो
ढळाक ढळाक रोवणो
छबरा छबरा रोवणो
तचातच ताचकणो
सपासप सबोडणो
सटासट समेटणो
सबड सबड सबोडणो
सगग-सगग बैवणो
सगग-सगग सूंतणो
सगग-सगग सिळगणो
सणक सणक सिणकणो
सुरड सुरड सिसकणो
सडिन्द-मडिन्द सुरडणो
चटाचट चाटणो
लपर-लपर चाटणो
लपौलप लेवणो

झकळ झकळ झिकोळणौ	गडागड गुडणौ
पदड पदड कूदणौ	तडातड ताडणौ
पडापड पडणौ	भडाभड बोलणौ
गबा गबा जावणौ	बडाबड बावणौ
टपाटप टपकणौ	थरथर धूजणौ
धबाधब कूदणौ	नच नच नाचणौ
फदाफ्द कूदणौ	यडयड येयडणौ
फडाफड फाडणौ	धमधम उतरणौ
फरड फरड फाडणौ	खटखट खटखटावणौ
गबागब लुकावणौ	ढमाढम बजावणौ
झटाभटा भापणौ	बडिंद बडिन्द बजावणौ
ठमाठम ठमकणौ	घंडिंग घंडिंग बजावणौ
टपाटप टोकणौ	कचर कचर किचरणौ
झडाझड झाडणौ	खें खें बाजणौ
धमाधम धमकणौ	फें फें फैंकणौ

नीचे उपरोक्त प्रकार की रचनाओं के वाक्यों म उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(२६) सेवट टर्वलिया साथ ढचू ढचू पजा रैं आर्पं दौडण लागौ।

(२७) असमान जोगी गे आरत अर तिमणा रौ चरखौ इणी भात वगण-वगण चालतौ रियौ।

(२८) फूल जैडौ कवळौ रूपाळौ टावर तौ ठिरडक नीठ चालै अर आप घोडैं मार्थैं ईलोजी रौ कळाई जमियौ है।

(२९) गुडाळिया पछैं थडी अर थडी पछैं ठम्मक ठम्मक हालणौ सीखियौ।

(३०) कसूबल मुखमल रा सिरख पथरणा अर ओसीसौ पळापळ चिमकण लागौ।

(३१) ऊपर आभा मे अणगिण तारा पळापळ खिवै।

(३२) चढतै उतरतै हीडैं रैं सागै उणरौ रूप भवभव खिवतौ हो।

(३३) सापडियाडी चादणी छोळा रैं पालणै भूलण लागी। उणरैं परस सूं मावळौ पाणी जगामग जगामग पळकण लागौ।

(३४) नवी राणी भवाभव बणाव करनै मैला चढती ही के वा इज मूडै लागी डावडी भळै सामी थकी।

(३५) बात सुणता ई म्हारी आंखियां सामी भपाभप बीजलिया मळावा मारण लागी।

(३६) गरणे सात मीठी पुडियां बाधी ही। सोनळ मछळी पाणी मे पळापळ नाचती नाचती अेक-अेक टुकडो निगळती गी।

(३७) वो तो गपाक-गपाक विना दांत लगाया ई गिटण लागो।

(३८) सेस नाग मन करतो जकै जिनावर नै दटाक दटाक गिट जातो।

(३९) सायड तो भरड भरड पाका आबा बिगळती ही।

(४०) राजा डकळ-डकळ पीवण सारू घणो ई खपियो, पण पावण वाळा राजी नी हुयो।

(४१) मनवार करता ई असमान जोगी तो दो कचोळा भरनै गटागट पीगो।

(४२) अेक ई सास म डग-डग सगळो पाणी गरलै खळकाय जोर सू डकार खाई।

अनेक अनुकरणात्मक शब्दो की तिर्यक एक वचन मे अनेक क्रियाओं से सगति का निदर्शन करने के लिये कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(४३) टाकर रो घोडो मारग-मारग भरणाटै दौडतो रियो।

(४४) मोतिया रै खोजा खोजा राजकवर भरणाटै उडियो।

(४५) वो घोडं माथै भरणाटै जाय पाछो आवै।

(४६) सुगन मिळता ई वो तो पछै भरणाटै हालियो।

(४७) वो आवाज खानो बहीर हुयो। तरतर बाळक री रोवणो सुभट हुवतो गियो।

(४८) जीभ तरतर बत्ती पळोटा खावण लागगी ही।

(४९) लोगा री निवलाई सू कवर री खीझ रो तरतर आघण उकळतो ई गियो।

(५०) सता री तरतर कळेस बधण लागो।

(५१) चाद तरतर ऊचो चढण लागो।

(५२) . के राणी री सरीर तो तरतर छीजतो ई गियो।

(५३) अेकर तो मरिया पछै ई जची, पण धकळ धकळ लोई री तु ताडिया छूटती देख म्हैं मन माथै नीठ काबू राखियो।

(५४) मागी तरवार देखनै धग धग धूजण लागो।

(५५) म्हारै सू तो चुळीजै ई कोनी, माय धपळ-धपळ मिळगै।

(५६) लोग आछी तरै जाणता कै वो मरिया ई साच नी बोलै, तो ई साच बोलावण सारू घरेळ घरेळ हाडका भागिया बिना नी मानता।

(८८) आडै मारग गोडा-गोडा पाणी वहण लागो, तो ई वो सासरै री कोडायो साव नागो तड़ग छपळक छपळक करतो चालतो ई गियो।

(८९) आ कैवता ई मासी री आखियां मू तो छवरां छवरां आसू बरसण लागा।

(९०) लोगा रो बतूळियो पगां हालियो।

(९१) खावता ई कवरा रो फूका सास निकळ जावैला। पछै वा आपरै हाथा सू आठू राजकवरा नै खाडा बूच करनै पाछी आय जावैला।

(९२) बेटो तो बैराग लेय तडकै ई हमेसा रै वास्तै माळरां रम जावैला।

(९३) राणी आपरी अखूट जवानी नै लडाभूम सिणगार रगमैलां चडती ही कै वा इज डावडी जाणनै सामी धकी।

(९४) खेत रो धणी तो रोसां बळता आपरै हाथा रा बेजा इज बट काडिया।

८. विस्मयादि बोधक

८ १ आ राजस्थानी के विस्मयादि बोधक, सम्बोधक कतिपय विशिष्ट निपातो एव अन्य इसी प्रकार के तत्वो का इस अध्याय मे सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जायगा।

८ २ नीचे भाषा मे सामान्य रूप से प्रचलित कतिपय सम्बोधक उदाहरण सहित सकलित किये जा रहे हैं।

हा

(१) डोकरी हाथ जोडनै बोली—हा सता पूरा सात गधेडा हा।

रे

(२) क ग्रेक लाठी छाव लेयनै हाजरिया नै पूछियो—ओ कैणो हाको है रे? परभात री वेळा अँ जँ जँ करता कुण काण खावै?

ग्रे

(३) गुचळकिया खावती बोली—चिडी बाई, बारै काड ग्रे।

हा

(४) दैत राजी होय बोलियो—हा आ बात तो म्हनै ई कबूल। मानण जैडो बात व्है तो क्यू नी मानू।

ऊ हू

(५) काळिंदर फुण हिलाकतो बोलियो—ऊ हू म्हनै ग्रैडी गुण नी मनावणो।

अरर

(६) अरर, आ छवकाळी तो सगळा नै मात कर दियो।

आ हा

(७) मुखिये जबाब दियो—आ हा, अै तो अगै ई गूगा-बोळा कोनी। दाछट बोलै।

हे हे

(८) तर-तर सूरज ढळण लागो। तपता तपता सेवट अवै आथमण री जचगा दीसै। हे हे आ कोर पाणी मे गीली व्ही। कठै ई बासदी रो गोळो बुझ नी जावै।

निम्न वाक्य (९) म देखणो क्रिया के आज्ञावाचक बहुवचन रूप देखो की सम्बोधक स्थानीय अवस्थिति हुई है।

(९) पछै मा टिचकारी देवती कैयो—देखो म्हारा ई हीया फूटा जको आपनै रेकारो देवू।

यहा इस तथ्य का उल्लेख कर देना आवश्यक है कि अपनी अभिव्यजकता के कारण उपरोक्त सम्बोधक विस्मयादि बोधकों से निश्चयात्मक रूप से पृथक नही किये जा सकते।

८ ३ नीचे आ राजस्थानी के कतिपय विस्मयादि बोधक शब्दो तथा पदबन्धो को उदाहरण सहित सकलित किया जा रहा है।

म्हा

(१०) गरणो भाटकता भाटकता वो टाबर री कळाई बोलियो—म्हा अबै तो सातू ई पुडिया निठगी। म्हारी सोनल मछी थनै भळै काई लवाडू।

हकनाक

(११) कवर रै साम्ही मू डो करनै रूखै सुर म बोली—हकनाक बापडै जीव री देह री ठायो छुडायो।

छो

(१२) इदर भगवान कोप करैला तो छो करता।

(१३) नाच सपूरण हूवता ई कवर जाणै नसै मे व्है ज्यू ई बोलियो—छो हुई कसूडो म्हैं तो इण सू ई ब्याव करूला।

छेवास

(१४) वाको फाडण वाळा मोटियार रा मौर थापलतो राईको बोलियो—छेवास रे डारा थारै जैडा सचवाया मिनख रै अै गाढ लोग इत्तो छोजत करी।

भला

(१५) बाप हेटै लुळ खुणिया सूदा हाथ जोडनै कैयो—भला म्हारो काई ठरको कै आपनै हाँण पुगावा।

जाणै

(१६) आपरो दुख सुणावता तो बाबै री आखिया फगत जळजळी हुई ही पण बामणी री विपदा सुणिया तो उणरी आखिया सू आसुवा री जाणै विरखा हुयगी।

टालाभूला

(१७) अै टालाभूला तो अठै ई मर-चूटा।

म्हारौ

(१८) म्हारौ औ चोर तौ जबरौ । सुणता पाण लप हूकारौ भर लियौ ।

८ ५ नीचे कतिपय सज्ञाओं तथा सज्ञा पदबन्धो के सम्बोधनार्थक रूपो की वाक्यो म अवस्थिति के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१९) भू डण आसू पामती बोली—म्हारा लाडला इण बात री सोच थें आछौ करियौ ।

(२०) म्हारौ लाडल बेटौ रीस रै कारण यू आपौ बिसरगी ।

(२१) हेलो मारियौ—आजा पारबतौ म्हारै सू अै पपाळ नीं सभै ।

(२२) बावळी आवै चोसळै मे थारै हीयै री पीड समझणवाळौ म्हारै सिवाय कोई दूजौ कोनी ।

(२३) *तद वा आपरै बेटै रे साम्ही देख बोली—कान्हूडा अबै ढोल मत कर ।*

(२४) पूछियौ—यू कुण है भाया ? इत्ता दिन तौ कदै ई नी देखियौ ।

(२५) महात्मा घडी घडी कैवतौ— मला मिनखां म्हारै हाथ म की सिद्धाई कोनी ।

८ ५ प्रकरण सख्या (८ ४) मे वर्णित सज्ञाओ के सम्बोधक रूपो के समान ही निम्न वाक्यो मे सम्बोधको तथा वाक्य पूर्वाश्रयी रचनाओ की अवस्थिति हुई है ।

(२६) हे भगवान ! लुगाई रै अतस म रीस रा खीरा चेतन करतौ बगत उणरी रीस नै पागळी क्यू करी ।

(२७) कुम्हारो रै मू डै साम्ही जायो । राम जाणै रूसियोडा उणियारा इत्ता सुहावणा क्यू लागै ।

(२८) भगवान नीज करै आपरै जीव रै की जोखौ हुयग्यौ तौ इण बादल मेल रा काई दीन व्हैला ।

८ ६ सही (२९) तौ सही (३०) तौ खरी (३१) तौ खरी (३२) की विस्मयादि बोधकार्थक अवस्थितियों के उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

(२९) राज पाच महीना उडीक रा आणद उठायो तौ अेक महीनो भळै सही ।

(३०) उण कैयौ—मानण जोग बात व्हैला तौ म्हैं अवस आपरी बात मानू ला । आप फरमावो तौ सही ।

(३१) बामणी धणी नै झिझेंडती बोली— कठै सू चोर नै लाया बतावो तौ खरी ।

(३२) इचरज अर हरख रै सुर मे बकाई खावती बोली—चालौ देखौ तौ खरी, आपा रै गीगलो हुयौ ।

८७ सूत्रीकृत वाक्य और वाक्यात्मक रचनाएं जो कि भाषा में स्थायी कथनों के रूप में अवस्थित होते हैं व्याकरण की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(३३) तो रामजी भला दिन दै अेक गाव मे अेक बामण परिवार रैवतौ हो।

(३४) बा तो धौळौ धोळो सैंग दूध जाणती।

(३५) अर जे इण चाळ चोळ रैं बिचाळै कोई अणचीती तौजा वैठगी तौ पछै पूणगो ई काई!

(३६) थानै मी पोसावै तौ कानै सूं ई थाळाणी करू। म्हे भली अर म्हारी माटी भली।

(३७) हाथी सूंड री बिच्छू काटै री अर सासू आपरैं जस री घणी आसा रुखाळी राखिया करैं।

(३८) राजा नै आसरौ रैयत रौ, रजपूत नै आसरौ तरवार रौ साहूकार नै आसरौ धनरौ बामण नै आसरौ विद्या रौ अर गरीब नै आसरौ भगवान रौ।

८८ मार, इत्याद बीजो, मातर, फलोणा, घर आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जिनकी वाक्यों में अवस्थिति का व्याकरण में उल्लेख करना आवश्यक है। इस प्रकार के शब्दों के वाक्यविन्यासात्मक प्रकार्यों की व्याख्या कोश में सामान्य रूप से नहीं की जा सकती। इनके महत्व को ध्यान में रखते हुए इनके कतिपय उदाहरण ही नीचे सकलित किये जा रहे हैं।

(३९) तठा उपरात दीवाण जी री बहू बानै बग्घी म साथै ले जावण लागी तौ हवेली मे मार धरळियौ मचग्यौ।

(४०) देखता देखता केई अजगर केई साप केई सूवा, तीतर कबूडा कागला, गिरजडा चीता सूअर सिंघ स्याळ छाळीनारिया बळद गाया अर घाडा इत्याद भात भात रैं जिनावरा रौ मेळौ मचग्यौ।

(४१) वो सगळो माल बीजो लेयनै गाव पूगग्यो है।

(४२) बेटा जद थारैं जित्तौ घोर नास्तिक म्हारैं दरसण मातर सू परमेस्वर रौ भगत बणग्यौ तौ आ म्हारी मुगता बिचैं ई मोटी बात है।

(४३) बाप नैं अरज कराई, म्हारौ नाळेर फलोणा कवर जी रैं उठै भेजावो।

(४४) घर मजला घर कूचा हालतौ ई गियौ हालतौ ई गियौ।

८९ –वाळौ प्रत्यय की अवस्थिति से निर्मित शब्दात्मक रचनाओं का व्याकरण में अलग से उल्लेख करना आवश्यक है क्योंकि इस तरह की समस्त रचनाएं अर्थ की दृष्टि से वस्तुत वाक्यात्मक हैं, यथा—

(४५) सात चादी री, सात सोनै री अर सात हीरा मोतिया री पोळाँ रै पछै राजकवर नै सपनैवाळौ बाग परतख आपरी निजरा दीखियौ ।

वाक्य (४५) म अवस्थित पदबन्ध सपनैवाळौ बाग का अर्थ है "सपनै मे देखियौ जकौ बाग" अथवा "जिण बाग नै सपनै मे देखियौ वो बाग" ।

८.१० भळै तथा उससे निर्मित अन्य रचनाओ की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है ।

भळै 'फिर'

(४६) मारग मे मळापत्ता सिग खिरगोसिया नै भळै पूछियौ– किसौ'क अळगौ है उणरौ किलो ।

भळै 'ग्रोर'

(४७) पण इणरै सागै आज री रात म्हारौ ग्रेक प्रण भळै कै इण सराप नै आसीस म बदळ देणौ ।

भळै 'और, अतिरिक्त'

(४८) सेसनाग री मिणिया रौ हार भळै व्है तौ काई पूछणौ ।

साळै 'ग्रन्य, अतिरिक्त'

(४९) नतीजो नीति पुराण ई राखणौ चोखो है, हू भळै काई कवू ।

भळै ई फिर भी'

(५०) पण खिरगोस तौ भळै ई हसतौ रियौ ।

८.११ आ राजस्थानी अवधारक निपात तथा अवधारक रचनाओं का सोदाहरण विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है ।

ई भी'

(५१) बामणी बोली—आप बौपारी हौ तौ मैं ई अेक मा हू ।

नीतर ई 'वैसे भी'

(५२) कवर नीतर ई सिधावणवाळो हो ।

ई 'ही"

(५३) बाप घणौ ई बरजियौ पण कवर तौ नीं मानियौ ।

(५४) कुम्हारी पाछी जावण सारू बिमाण मे पग धरियौ ई हौ कै असमान जोगी-माथै उणरी निजर पड़ी ।

इज ही'

(५५) भगवान रै पछै म्हनै आपरी इज ग्रास है।

(५६) पण काल सिझ्या सू ई खेत री रूखाळी रो जिम्मो म्हारो इज है।

तो 'तो'

(५७) सेनापति कंयो--वा ई तो आपरै साम्हो अरज करनी चावै।

तो ई तो भी'

(५८) काळ रो की भरोसो कानी तो ई इट छिण अलेखू जीव जलमेला।

तक 'तक'

(५९) इण चितवणी हालत मे वा आपरो ओरणो तक ओढणो पातरगी।

धुराधुर तक, भी'

(६०) अलेखू भगत उणरै चरणा मे माथो निवावता। राजा धुराधुर डडोत करता, चरणा मुगट धरता।

ना न'

(६१) किणी बातरी कोताई करजै मती नीं।

नी न'

(६२) पोटा न्हाखण दो। मोडो हुयग्यो ! सैंणा हो नी।

६. सामान्य वाक्य संरचना

९ १ आ राजस्थानी मे सामान्य वाक्यो के अन्तर्गत मुख्य रूप से तीन प्रकार की रचनाओ को परिगणित किया जा सकता है--(क) अकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्य (ख) सकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्य, तथा (ग) सयोजक क्रिया स निर्मित वाक्य ।

९ १ १ अकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्यो मे अवस्थित क्रियाओ के सोपाधिक परिसरो के अनुसार इन वाक्यो का तीन कोटियो मे वर्गीकरण किया जा सकता है । नीचे इन तीनो कोटियों के वाक्यो के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(क) क्रिया विशेषण सोपाधिक परिसर वाक्य

(१) वा आखती होय माळै सू हेटै उतरी । उरआणै पगा ई वारै साम्ही आई ।

(२) सावण री तीज सू ई पैला आ लाठी तीज किसी आई ?

(३) दोनू जणाँ बावडी रै पाणी मू वारै निकलनै अतलोक मे आयग्या हा ।

(४) जोग रो बात कै अेकर आधी अर मे दोनू सागै आया ।

(५) म्है आपरौ की बिगाड नी कराला । म्है घणौ मोद करनै अठै आया ।

(६) आसाढ उतरिया सुरगौ सावण आयौ ।

(७) अदाता रै काना हाल अै सुभ समचार नी पूगा दीसै । बीकाणै सू राज रौ कासिद आयौ ।

(८) सात पाणी रो, सात हवा री अर सात उजास रो पोळा पार करिया सेवट पयाळ लोक आयौ ई ।

(९) इण बावडी मायै वा पेर वदैई पाछी सिनान करण सारू तौ अवस आवैला ।

(१०) काले जिण बगत थारै घर साम्हो म्हारौ रथ आयौ हौ, आज उणी बगत हीरा मोतिया सू भरियोडी सात गाडिया आवैला ।

(११) आपरै बारणै कै तौ जगळ रौ राजा आय सकै कै मिनखा रा राजा ई आय सकै ।

(ख) क्रियानामिक सोपाधिक परिसर वाक्य

(१२) अेक परी कयौ कै भाटै री पूतळी बणिया रैवता तौ कीकर घरवाळी री याद आवती ।

(१३) एक पलक मे ई उणरै मन मे औ सगळा विचार आयग्या ।

(१४) अन्नदाता म्हारै माथै जद औ सकट आयनै पडियो है तौ पछै कळजुगी अव-तार फेर कद काम आवैला ।

(१५) पगिया नाच नाच हार थाकी तौ ई उणरी आखिया मे इण विध रै नाच री सैमूळी रगत नी आई ।

(१६) राजाजी नै जाणै जित्तौ रीस आई । दात पीसता थका बोलिया—कावू रौ माल चरता था लागा नै लाज को आवै नी ।

(१७) . अर मरणारौ इणसू सिरै मौको फेर कद आवैला ।

(१८) अर ठेट उपरलै पगोतिया पूगिया पछै किणी सत नै दुनिया री किणी बात माथै रीस नी आवै ।

(१९) रीस अर आमना रै कारण वारी आखिया म आसू आयग्या ।

(२०) जाटणी दात पीसती बोली—मर जाती तौ पापौ कटतौ । दुनिया नै सोरौ सास तौ आवतौ ।

(२१) थानै म्हारौ तौ ध्यान ई का आवै नी ।

(२२) अर आडी हुवता ई उणनै नींद आयगी ।

(ग) पूरक सोपाधिक परिसर वाक्य

(२३) पण म्हारौ माथौ तौ साव भवियोडौ । सुभट अर सीधी बाता ई दोरी समझ म आवैला ।

(२४) अंडौ बिलालौ मोटियार तौ सुणण म नी आयौ ।

(२५) बूढा-बहेरा तौ आ बात जाणता ई हा कै फैफ रा फूला री तमास मे जकौ ई गियौ उणरी पूठ तौ देखी पण पाछौ मू डौ देखण म नी आयौ ।

(२६) गा कैयौ तौ ई बेटी रै आ बात मानण मे नीं आई ।

(२७) पाछी हुजार बरस ई आखिया दूखणी आय जावै तौ वो धाणी मे पीलीजण सारू त्यार ।

(२८) म्हनै परख री डर नी । खरौ उतरूला ।

(२९) पण बेटा आ लाडेसर देवी नी तौ पूजिया बस मे व्है अर नी निवरिया कावू म आवै ।

(३०) सिंघ री खाल पैरियाडौ औ नी मोटौ गधौ निकळियौ ।

(३१) बावळा बगत माथै थारै काम ना आवू तौ पछै किणरै काम आवू ।

९ १ २ सकर्मक क्रियाओ से निर्मित वाक्यो का भी, उनमे अवस्थित क्रियाओ के सोपाधिक परिसरो के आधार पर त्रिविध वर्गीकरण किया जा सकता है ।

(क) क्रिया विशेषण सोपाधिक परिसर वाक्य

(३२) मिनखा देह रै इण खोळिया मे म्है कळजुगी अवतार रै ओळखिया कोनीं।

(३३) लक्खी बिणजारो वा सगळा नै ई आपरै रथ माथै बिठाण लिया।

(३४) वो आपरी बही खोलनै बाळक रौ नाव धाम वगत मिती वार अर संवत् इत्याद सगळी बाता टीपली।

(३५) वे सगळी मिल परी नै आपरै मन री बात बामणी नै बताई।

(३६) आज सू इण गवाडी नैं थू ई संभाळ। औ घर अबै थारौ है म्हारौ नी।

(३७) मागियोडौ दाणा री पोटळी वो नवी बींनणी रै हाथ मे भिलाय देतौ।

(ख) क्रिया नामिक सोपाधिक परिसर वाक्य

(३८) कागलौ हिरण नैं घणौ वरजियो कै इण छळी अनजाण स्याळ रौ पतियारौ मत कर।

(३९) कीडी नै कण अर हाथी नै मण देवण रौ जिणनैं ध्यान वो साई आपा रौ ई ध्यान राखैला।

(४०) म्हारै साथै धोखो करियौ तो वौ खुद ई सवायो धोखौ खायो।

(४१) आरै बिना तौ वे सास ई नी लै सकै।

(४२) हरख रा आसू ढुळकावतौ गळगळै सुर मे बोलियौ—अंतरजामी आज म्हारी भगती सुफल हुई।

(४३) रैयत री सगळी रीस राजा कवरा माथै भाडी। रीस मे कडकतौ बोलियौ—दुस्टिया म्हारै सू लारलै भौ रौ काई आंटौ साफौ।

(४४) पण अदाता कदैई म्हनै ई हाजरी रौ मौकौ दिराजौ।

(४५) गादी री थोडी घणी तौ लाज राखिया करौ।

(४६) थारी नेक सला सू वौ आख राज री रंगत ई बदळ सकै।

(४७) बारै बरसा रै तप रै पछै ई रीस अर मद माथै वो काबू नी पा सकियौ अर औ आठू रा आठू भाई राजकवर होयनै ई रीस अर मद रै नैंडा कर ई नी निकळिया।

(४८) नवी अपछरा तौ वा नै अंडा बस मे करिया कै वे अक छिण वास्तै ई रंग-मल सू बारै नी निकळता।

(४९) तौ ई घर री नवी धणियाणी नित हमेस आपरै धणी नै सुसरैवाळी सीख याद अणावती।

(५०) राजकवर कैयो—म्हा हर सास रै समचै थारी सीख नै याद राखसां।

(ग) पूरक सोपाधिक परिसर वाक्य

(५१) खूटोडा मिनख म्हूनै काली गिणै तौ म्हूं किसा वानै समझणा गिणू ।

(५२) वात अर भाटै री काई विठावौ ज्यू ई बैठै । कोई उणनै रैदास भगत रो रूप जाणता तौ कोई उणनै रामदेवजी रौ नवौ अवतार मानता ।

(५३) हिरणी बोली —म्हूं तौ इणनै बाबी कैयनै बतलावूला ।

(५४) मिनख खुदोखुद नै अक्ल री उजागर अर समझ रो सागर मानै ।

(५५) असमान ज्योगी तुरत ठाडो पडनै बोलियो—थू तौ इन बादळ मेल री खास धणियाणी । थनै भला चाकर कुण कैवै ?

९ १ ३ सयोजक क्रिया स निर्मित कतिपय वाक्यों के उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

(५६) भतीजा री लाड करनै उणनै समझायो कै ओ पाणी तौ खारो आक है ।

(५७) वा सोनल नै पूछियो बा'हा थू कुण है ? इदर री परी सुरग री अपछरा क कोई डाकण स्यारी ?

(५८) सोनल रौ भतीजौ ई उठै उभौ हो ।

(५९) चौधरण सालस अर भली ही ।

(६०) लाग घणा ई खपता तौ ई मनागत नी कर सकता कै वा पूतळी है कै कोई परतख जीवतो उणियारो है ।

(६१) अक जाट रो गाया माथै ई गुजराण हो । करसन वास्तै जमीं री चाम ई नी ही ।

(६२) अक स्वाळख रा चौधरी नै फूठरा फबता नागौरी बळदा रौ अणूतौ कोड हो ।

(६३) थें म्हानै कीकर अर कित्ता जल्दी मार सको काई थारो ग्यान इणी बात मे है । जे इणरौ नाव ग्यान है तौ पछै म्हारौ अग्यान घणौ वत्तौ ।

९ २ प्रकरण सख्या (९ १) मे वर्णित विविध वर्गीकरण समस्त राजस्थानी क्रिया प्रकृतियो पर लागू होता ही है ऐसी बात नहीं है । उक्त प्रकार के वर्गीकरण का मुख्य उद्देश्य है भाषा की वाक्यविन्यासात्मक सरचना के सभी ज्ञात पक्षो का उदघाटन करना । अत इस नियम क अपवाद स्वरूप यह कहा जा सकता है कि सामान्य रूप से आ वश्य अनुकरणात्मक और सज्ञा तथा विशेषण जात क्रियाप्रकृतियों से क्रियाविशेषण सोपाधिक परिसर वाक्यो की ही रचना होती है इत्यादि ।

९ ३ प्रकरण सख्या (९ १ १ ९ १ २ तथा ९ १ ३) म सूचित वाक्यों की आतरिक अधिक्रमिक सरचना के सन्निहित अवयवो का विश्लेषण निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है ।

(क) वाक्य → कर्त्ता · विधेय

(ख) विधेय → { अकर्मक क्रिया पदबन्ध
कर्म सकर्मक क्रिया पदबन्ध
यौगिक क्रिया पदबन्ध

प्रकरण संख्या (९ १ १ ९ १ २ तथा ९ १ ३) में सूचित कतिपय वाक्यों का नीचे पुनोंल्लेख किया जा रहा है। इनमें उपरोक्त नियम (क) और (ख) के अनुसार क्रमश प्रथम क्रम अवयवों को ( )१ द्वारा तथा द्वितीय क्रम अवयवों को ( )२ चिह्नित किया जा रहा है।

(१) (वा)१ (आसती होय माळै सू हेटै उतरी।)२

(२०) (दुनिया नै सोरी सास लो)१ (आवतो।)२

(२१) (थानै म्हारो तो ध्यान ई)१ (को आवलो नी।)२

(२४) (अैडो बिलालो मोटियार तो)१ (सुणण मे नी आयो।)२

(३३) (लक्खी बिणजारो)१ (वो सगळा नै ई थापरै रथ मायै बिठाण लिया।)२

(३९) (वो माई)१ (आपा रो ई ध्यान राखैला।)२

(५२) (म्हैं तो)१ (इणनै वावी वैयनै बतलावूला।)२

(५९) (चौधरण)१ (सालस अर भली ही।)२

(६२) (अैक स्वाळख रा चौधरी नै फूठरा, पवता नागौरी बळदा री थणूतौ कोड)१ (हो।)२

( )१ द्वारा चिह्नित अवयवों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि कर्त्ता-स्थानीय अवयवों को दो कोटियों मे विभाजित किया जा सकता है, अर्थात्

(ग) कर्त्ता → { संज्ञा पदबन्ध
क्रिया नामिक पदबन्ध

उपरोक्त पुनर्लिखित उदाहरणों में वाक्य संख्या (२०, २१ तथा ६२) में क्रियानामिक पदबन्धों की कर्त्ता स्थानीय अवस्थिति है। शेष समस्त वाक्यों मे संज्ञा पदबन्धों की। इसी प्रकार ( )२ द्वारा चिह्नित अवयवों मे भी कर्म-स्थानीय अवयव भी दो प्रकार के है यथा

(घ) कर्म → { संज्ञा पदबन्ध
क्रियानामिक पदबन्ध

कर्म स्थानीय अवयवों के दोनो प्रकारो का पार्थक्य स्पष्ट करने के लिए तद्‌विषयक उदाहरण एक बार फिर उद्धृत किए जा रहे हैं। उनमे ( )२ द्वारा चिह्नित अवयवों को रेखांकित करके सूचित किया जा रहा है।

(३३) (लक्खी विणजारो)₁ (वा मगला नै ई आपरै रथ माथै बिठाण लिया ।)₂
संज्ञा पदबन्ध

(३९) (वो साई)₁ (प्राणां री ई ध्यान राखैला)₂
क्रियानामिक पदबन्ध

अकर्मक क्रिया पदबन्धो और सकर्मक क्रिया पदबन्धो के साथ क्रियाविशेषणो की वैकल्पिक अवस्थिति और पूरकों की अवैकल्पिक अवस्थिति का पार्थक्य स्पष्ट करने के लिए नियम (ङ) का उल्लेख किया जा रहा है । इसी नियम मे यौगिक क्रिया पदबन्ध के अवयवो का विश्लेषण भी स्पष्ट किया जा सकता है ।

(ङ) अकमक क्रिया पदबन्ध
सकर्मक क्रिया पदबन्ध } →
यौगिक क्रिया पदबन्ध

(क्रिया विशेषण पदबन्ध) { अ क्रि पदबन्ध
स क्रि पदबन्ध
यौ क्रि पदबन्ध

क्रिया विशेषणो का विवेचन अध्याय (७) मे किया जा चुका है ।

अ क्रि पदबध स क्रि पदबन्ध और यौ क्रि पदबन्ध नामक अवयवो में भी दो प्रकार के पदबन्ध है—(क) पूरक + अपूर्ण क्रिया पदबध तथा पूर्ण क्रिया पदबन्ध । इन दोनों कोटियो के पदब धो का पार्थक्य निम्न नियम द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है ।

(च) क्रि पदबन्ध → { पूरक + अपूर्ण क्रिया पदबन्ध
पूर्ण क्रिया पदबन्ध

प्रकरण सख्या (९ ३) मे पुनर्लिखित वाक्यो मे वाक्य सख्या (२४) (५३) और (५९) मे क्रमश पूरक + अपूर्ण अकर्मक क्रिया, पूरक + अपूर्ण सकर्मक क्रिया तथा पूरक + यौगिक क्रिया अवयवो की अवस्थिति हुई है । इन अवयवो का निर्देश करने के लिए इन वाक्यो को पुन लिखकर उनमे उपरोक्त अवयवो को रेखाकित किया जा रहा है ।

(२४) (अंडो बिलालो मोटियार तो)₁ (सुणण मे नी आयो ।)₂
पूरक — अपूर्ण अकर्मक क्रिया

(५३) (म्हैं तो)₁ (इणनै बाबी कैयनै बतलावूला ।)₂
पूरक — अपूर्ण सकर्मक क्रिया

(५९) (चोथरण₁ (सालम अर भली ही ।)₂
पूरक — यौगिक क्रिया

९.४ संज्ञा पदबन्धो म समानाधिकरण सम्बन्ध की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(६०) कमेडी रा पजिया फाल राजकवर नाहरसिंघ बारै टापू माथै आयो तौ समदर हिबोळै चढियोडो हौ।

(६१) राजकवर बहादुरसिंघ राज रै केई दीवाण अर केई पारखिया नै केसा रौ कोयौ बतायौ।

समानाधिकरण सम्बन्ध वाले पदबन्धों मे निम्न रचनाओ को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

(६२) राजाजी रा फरमाण री बात सुणता ई ठाकर अर वो दोनू ई मन मे अणूता डरिया।

(६३) अगुर, दाडम सेव जामफल नारगी, इरड काकडी सीताफळ इत्याद केई मीठा-मीठा फळ।

९.४.१ भाषा मे अनक एसी वाक्यवत् रचनाए हैं जो स्वतन्त्र वाक्य न होकर, अपने पूर्ववर्ती वाक्यो का अग हैं यथा

(६४) पिडतजी कैयौ—नी बेटा आपरा स्वास्थ सारू मारग चालता बटाव नै नयू तक्लीफ द्यू। सुण्यौ कै किणी देस रा आठ राजकवर उठै आयोडा है। दया अर करुणा रा सागर। किणी दुख्याग रा दुख तौ वे देख ई नी सकै।

इस उदाहरण मे रेखाकित रचना न तो स्वतन्त्र वाक्य है और न ही पूर्ववर्ती वाक्य के साथ किसी प्रकार से सयोजित है। किन्तु ऐसा होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती वाक्य का अग है। इस प्रकार की रचनाओ को वाक्य पूर्वाश्रयी की सज्ञा से अभिहित किया जा सकता है।

निम्नलिखित उदाहरणो मे रेखाकित रचनाए भी वाक्य पूर्वाश्रयी हैं।

(६५) म्हारो बडभाग कै रोटी उतरण रै सागै म्हारी गवाडी कोई पावणो जायो।

(६६) उण बगत वा म घोडै जितौ करार आयग्यौ हौ। वे घडा घडी किडकिया चाबता अर कैवता जावता—आया बापडा गरीबा रौ मोच करणवाला!

(६७) आपनै म्हारी आण अेक पावडो ई धकै दियो तौ।

९.५ सामान्य रूप से सकर्मक क्रियाओ के पूर्णतावाचक समापिका क्रियारूपों म पूर्णतावाचक कृदन्त के लिंग-वचन कर्म स्थानीय सज्ञा के अनुसार और सहायक क्रिया के पुरुष वचन कर्त्ता सज्ञा (अथवा सर्वनाम) के अनुसार होते हैं। अन्वय की इन विविध सभावनाओ का निदर्शन निम्नलिखित वाक्यो द्वारा किया जा रहा है।

(६८) म्हैं तो आज म्हारी आंखिया इण सूरज रो पळको दीटो हूं।

(६९) पण तौ ई जका लोगां नै समझावण रो म्हैं प्रण करियो हूं, वां लोगा नै अेक दिन समझायनै ई छोडूला।

(७०) ढावा माथै उभनै मा नै डूबती देखी तो वो खुद नदी मे कूदण वास्तै त्यार हुयो कै नदी सू आवाज आई —नीं बेटा, नीं।

कर्मस्थानीय सज्ञा के साथ नै 'को' परसर्ग की अवस्थिति होने पर भी पूर्णतावाचक *कृदन्त और कर्म स्थानीय सज्ञा मे पारस्परिक लिंग वचनानुसार अन्वय का नियम अक्षुण्ण* रहता है।

(७१) पछै वो उण खबर मिकोतरी नै राज दरबार मे ढावी अर बाकी सगळिया नै मीख देय बहीर करी।

(७२) *वा आपरै हाथा सू बोरडी रा काटा भेळा करिया। ठेट आगा ई आया* जायनै न्हाकिया।

कर्मस्थानीय मुख्य सज्ञा के साथ नै परसर्ग की अवस्थिति और वाक्य मे गौण कर्म की अवस्थिति मे भेद है। उपर्युक्त अन्वय केवल मुख कर्म स्थानीय सज्ञा (जो कि ऋजु रूप मे हो अथवा नै परसर्ग सहित) और सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदन्त मे ही होता है। गौण कर्म की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(७३) दूजै दिन ई धणी सू छानै ओलै आपरै हिवडारो हार अेक सुनार नै बेच दियो।

अन्य समस्त स्थितियो मे समापिका क्रियारूपो के लिंग वचन तथा पुरुष वचन कर्त्ता स्थानीय सज्ञाओ के अनुसार होते हैं।

एक वचन पुंलिग अथवा स्त्रीलिंग सज्ञा की कर्त्ता स्थानीय अवस्थिति मे आदरार्थक अन्वय होने पर क्रिया बहुवचन पुंल्लिग मे होती है, यथा (७४-६)।

(७४) उखरडी रै खनाकर निकळता उखरडी कयो हळदी माई टळिया टळिया नीकर जावो, सोना रो गैणो गांठो लेता जावो।

(७५) उखरडी सू उतरता ई ऊट अरडायो। सगळै गाव मे खळबळ माची। नानाणा सू हळदी बाई आया रे हळदी बाई आया रे।

(७६) ठाकर सा सू तुरत की जवाब देवता नी बणियो तो व थूक गिटता बोलिया—भगवान री बात न्यारी है। पे म्हांरो कैणो मानो तो थारा पावणा नै अठै कोट मे बुलावो। इणनै सावळ परखा।, आपारी निजर सूं उणरो पतियारो ला।

९ ६ अनेक स्थितियों में सकर्मक क्रियाओं के कर्म स्थानीय संज्ञाओं के साथ नै परसर्ग की अवस्थिति सामान्यतया नहीं होती (७७)।

(७७) गिलोला सू पखी मार-मारनै ढिग कर देता। यू नित बोछरढाया पछै अेक दिन वानै मवी ई कुबद सूझी।

किन्तु अनेक अन्य स्थितियों में नै परसर्ग की अवस्थिति अनिवार्य है (७८-८१)।

(७८) थारो वड भाग कै थारा दरद नै अेक जिणी तो समझै है।

(७९) राजा री सिंघ रै मिस मौत न परतख आवती देखी।

(८०) यू माईता रै साम्ही गोय रोय हार थाकी तो ई व थारी पीड नै नी पिछाण मकिया। मेवट थनै ई माठ झेलणी पडी।

(८१) राजकवरी आमुवा नै पूछती थकी बाली—इण कडाव अर अगन देवता रै च्यारू मेर सात वळाका दवणा। थे कडिया तणा लुळनै थकै थकै चालो अर म्है लारै लारै।

वाक्य सख्या (७८-८१) मे कर्म स्थानीय सज्ञा के साथ नै परसग की अवस्थिति इन वाक्यों के सन्दर्भों में व्यक्त उद्देश्य को चिह्नक है। इन वाक्यो मे अवस्थित कर्म स्थानीय सज्ञाओ दरद (७८), मौत (७९) पीड (८०) तथा आसु (८१) के अर्थ वैशिष्ट्य को जानने के हेतु इन वाक्यों के सन्दर्भों का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि ये सज्ञाए अपन सामान्य अर्थों मे अवस्थित न होकर सन्दर्भों मे वर्णित विषयानुरूप विशिष्टार्थक हैं।

९ ६ १ निम्नलिखित वाक्यों मे सकर्मक क्रिया के मुख्य कम की बहुवचन मे किन्तु आमेडित रूप म अवस्थिति होन पर सज्ञा और क्रिया मे एकवचन अन्वय है।

(८२) चानणो करनै खुणो खुणो जोयो, पण उठै तो को नो लाधो।

९ ७ सामान्य रूप से भाषा मे प्रेरणार्थक वाक्यों का दो कोटियों मे वर्गीकरण किया जा सकता है— (क) आदरार्थक प्रेरणार्थक वाक्य, तथा (ख) सामान्य प्रेरणार्थक वाक्य।

९ ७ १ आदरार्थक प्रेरणार्थक वाक्यो मे सामान्यत क्रियाओ के सकर्मक रूपो के स्थान पर उनके प्रेरणार्थक रूपो की अवस्थिति कर दी जाती है। इस प्रकार के वाक्यो के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

(८३) पण अदाता, कदेई म्हनै ई हाजरी रो मौको दिराजो।

(८४) इण भात नगरी मे रौळो दगो ई नी हुवैला अर आपरी मनचाही हुय जावैला। मानो तो म्हारी आ सला है, पछै राज री मरजी व्है ज्यू हुकम दिरावै।

उपरिलिखित दोनो वाक्यो मे देवणो के स्थान पर उसके प्रेरणार्थक रूप दिरावणो की आदरार्थक अवस्थिति हुई है।

९७२ सामान्य प्रेरणार्थक वाक्यों को केवल प्रेरणार्थक वाक्य न कहकर, कारण-बोधक प्रेरणार्थक वाक्य कहना अधिक उपयुक्त है। इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(८५ क) राम मोवन नै कैयनै उण खनै सूं कागद लिखायौ।

(८५ ख) औ कागद मोवन राम रै कैण सू लिखियौ।

वाक्य सख्या (८५ क) और (८५ ख) की परस्पर तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पत्र लिखने का 'क्रिया व्यापार' मोवन नामक व्यक्ति ने राम नामक व्यक्ति की प्रेरणा से किया है और दोनो वाक्यों का यह सामान्य अर्थ है। इस आधार पर वाक्य-युग्म (८५) के दोनों घटक ही वस्तुत प्रेरणार्थक वाक्य हैं। ऐसा होते हुए भी इन दोनों वाक्यों मे अर्थ भेद है। इस वाक्य युग्म के घटक (क) का अभिप्राय है वक्ता द्वारा मोवन नामक व्यक्ति के कागद लिखने के (किसी अन्य के कहने पर) क्रिया व्यापार के करने के कारण का उल्लेख। इसके विपरीत घटक (ख) का अभिप्राय है मोवन नामक व्यक्ति के किसी अन्य की प्रेरणा से कागद लिखने के क्रिया व्यापार मे प्रवृत्त होने तथा उसे पूरा करने के कार्य का वक्ता द्वारा उल्लेख। घटक (क) क्रिया का रूप प्रेरणार्थक है और घटक (ख) मे अप्रेरणार्थक। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस वाक्य युग्म का घटक (क) कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्य और उसका प्रतिरूप घटक (ख) कार्यबोधक प्रेरणार्थक वाक्य।

इसके अतिरिक्त मोवन नामक व्यक्ति अपनी मरजी से भी पत्र लिख सकता है (८५ ग)।

(८५ ग) मोवन आपरी मरजी सू कागद लिखियौ।

वाक्य सख्या (८५ ग) मे मोवन के द्वारा किये गये क्रिया व्यापार का तो उल्लेख है किन्तु उसने वह कार्य अपनी इच्छा से किया है, किसी अन्य की प्ररणा से नहीं। अत वाक्य (८५ ग) को कार्यबोधक अप्रेरणार्थक वाक्य की सज्ञा से अभिहित करना युक्ति सगत है।

नीचे कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्यों के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(८६) बापजी हाथ जोड अरज करू के अैडी रीस मत अणावौ।

(८७) राजाजी रै आदेस सू डावडिया ईं राजगरू नैं उचाय मैला मे लेगी।

(८८) अै च्यारू सिरदार जिणनै नाई जाण टाट रो इलाज करवायो, वो नाई थोडो ई है।

(८९) वो माई सू मिलण सारू घणा ई लालरिया लिया, पण लोग मानिया कोनी। हाका धाग सोना रा रथ मे बैठाय राजतिलक करण सारू लेय ग्या।

(९०) आवता ईं राजा नैं वधायो। चवरा डुळाय सोना रा रथ मे विठांण दरबार में ले ग्या। राजतिलक करियो। बामण रो डीकरो देखता देखता राजा बणग्यौ।

(९१) बालग जोगी असमान जोगी होडँ हीडती आठू इँ लुगाया नै आपरै विमाण मे बेसाण ले ढळियो।

(९२) हो तो घणो ई भूल। न्याव करावण वाळा पचा रो घाटिया अेकण सागै मरोड सकतो केई चाळा कर सकतो। लाग्या उत्तन उठाण सकतो। पण चार बरमा सू प्रीत रै खोळिये उणरो अतस बदळग्यो।

(९३) इण बादळ मैल तो मरिया ई जिद नी छूटै। इमी रै कूपले रा छाटा देय असमान जोगी पाछी जीवाड दे।

९ ७ ३ कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्यो मे प्रेरणार्थक कर्त्ता और प्रेरणार्थक समापिका क्रिया रूप म लिंग-वचन और पुरुष वचन अन्वय सामान्य वाक्यो के समान ही होता है (प्रकरण सख्या ९ ५) किन्तु प्रेरित अथवा मूल कर्ता के साथ (रै) खनै सू परसर्ग की अवस्थिति होती है।

९ ८ पीछे प्रकरण सख्या (६ ११) मे भाववाच्य तथा कर्मवाच्य क्रिया रूपो की रचना का विवरण किया जा चुका है। यहा इन क्रिया रूपो के वाक्यविन्यासात्मक प्रकार्यों का सक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया जायगा। जा भाववाच्य तथा कर्मवाच्य एव इज-भाववाच्य तथा कर्मवाच्य वाक्यो (९४ ९५) के समान

(९४) खिरगोस नै जीवतो आवतो देखियो तो सगळा जीव डरिया कै हमैं तो जीया मौत मारिया जावाला।

(९५) उण सू अैंडा तोख नी उठाईजै।

भाषा मे अकर्मक क्रियाओ से निर्मित इस प्रकार के वाक्य हैं जो रूप की दृष्टि से तो नही, कि तु अर्थ तात्विक दृष्टि से भाववाच्य वाक्यो से मिलते जुलते हैं (९६,९७)।

(९६) बेजा काम करण री माफी मागण मे ई म्हनै लाज को आवै नी। पण बिना कसूर करिया म्हारै सू कसूरवार माडै नै बणीजै।

(९७) छोटकियो हसनै जवाब दियो—म्हारा मन री किणी सू बण नीं आवै, तद बतावणी बिरथा। थारै दाय पडै ज्यू कर न्हाखो।

उपरिलिखित वाक्यो की तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वाक्य सख्या (९७) मे बणणो क्रिया के भाववाच्य रूप बणिजणो की अवस्थिति न होने पर भी अर्थ की दृष्टि मे इसे कर्त्तरि-वाच्य नही कहा जा सकता। इस वाक्य (९७) मे भाववाच्य क्रिया की अनवस्थिति होने पर अर्थ के आधार पर इसे भाववाच्य वाक्या के अन्तर्गत परिगणित करना आवश्यक है और यह भी आवश्यक है कि क्रियाओ के भाववाच्य इत्यादि रूपो और अकर्मक क्रियाओ की भाववाच्यवत् अवस्थितियो मे, यदि कोई अर्थ पार्थक्य है तो उसका स्पष्टीकरण किया जाये।

९.८.१ भाषा में किसी भी क्रिया प्रकृति का चाहे वह अकर्मक हो अथवा सकर्मक (अथवा प्रेरणार्थक) द्विविधात्मक अर्थ होता है जिसे उक्त क्रिया प्रकृति के (क) क्रिया व्यापार तथा (ख) उक्त क्रिया व्यापार के फल की संज्ञाओं से अभिहित किया जा सकता है। यथा रोटी पोवणौ क्रिया का क्रिया व्यापार है आटा गूंधना रोटी बेलना बेली हुई रोटी को तवे आदि पर डालकर आग पर सेंकना इत्यादि और इस क्रिया का फल है उक्त क्रिया व्यापार के द्वारा तैयार की गई रोटी इत्यादि। इस प्रकार प्रत्येक क्रिया प्रकृति के उसके अर्थ की दृष्टि से दो भाग हैं यथा उस क्रिया प्रकृति का वाच्य क्रिया व्यापार तथा उस क्रिया व्यापार द्वारा जनित फल।

उपरिलिखित उदाहरण संख्या (९४ ९५ तथा ९६) में उन वाक्यों में अवस्थित क्रियाओं के भाववाच्य कर्मवाच्य रूपों से उक्त क्रियाओं के मात्र क्रिया व्यापार का वाचन होता है। इसके विपरीत वाक्य संख्या (९७) में अवस्थित क्रिया के क्रिया व्यापार द्वारा जनित फल का ही उल्लेख वाक्य के वक्ता का अभिप्राय है। सामान्य रूप से व्याकरण में क्रिया प्रकृतियों के जिन रूपों का (अर्थात् वणणौ से बणियौ जावणौ तथा बणीजणौ) भाववाच्य कर्मवाच्य रूपों की संज्ञा से अभिहित किया जाता है उनका सम्बन्ध क्रिया व्यापार के फल से न होकर मात्र क्रिया व्यापार के उल्लेख से ही होता है। इसके विपरीत भाववाच्य कर्मवाच्यवत् अवस्थित क्रियाओं का सम्बन्ध क्रिया व्यापार से न होकर तज्जनित फल से होता है।

निम्नलिखित उदाहरणों में क्रिया प्रकृतियों के क्रिया व्यापार के उल्लेख को स्पष्ट तया लक्षित किया जा सकता है।

(९८) राजाजी थोड़ा सा नरम हायनैं कैवण लागा—आज दस दिन हुयग्या राणी रै मैल सूं नवलखौ हार चोरीजग्यौ।

(९९) धणी जवाब दियौ म्हनैं पैला जैडौ चेतौ हो ऊडौ चैतौ घर्कै रासीजैला।

(१००) झूंपडी रै लारै चावळ मीझरिया है सक्कर छाणीज री है अर घी तपाईज रियौ है।

(१०१) डोकरी हसनै कैवण लागी—थारै बरसा ही जद चाद अपडण ही हूस राखती पण अब तौ पहली ई नी लाधोज भूं रूख माथै चढण री बात भला व्हौ।

(१०२) आ बात वैय वो सूवटा री घाटी मरोडी। डाकण री ई घाटी मुरडीजी। अरडावण री घणी कोसीस करा पण बोल नी निकळिया।

९.८.२ कर्मवाच्य–भाववाच्य वाक्यों में क्रिया के लिंग वचन और पुरुषवचन या तो मूल वाक्य की कर्म स्थानीय संज्ञानुसार होते हैं (जैसा कि उदाहरण संख्या (१०२)

से स्पष्ट है) अथवा, अकर्मक क्रिया वाले वाक्य से निर्मित भाववाच्य मे पुल्लिग, एकवचन अन्य पुरुष म (१०३)।

(१०३) पछै उणसू दौडीजियो कोनी। तडाच खाय'र हेटै पडग्यो।

मूल वाक्य के कर्त्ता के साथ कर्मवाच्य भाव वाच्य वाक्यो म | रै) सू परसग की अवस्थिति होती है (१०४-५)।

(१०४) म्हारै सू नी सळटाईजै जद भगवान रै दुवार हाजर हुजे।

(१०५) पछै ता उणरै बाप सू ई सचेडै बारै को निकळीजै नीं।

---

१०. संयोजित वाक्य

१० १ सहसम्बन्धवाचक सर्वनाम सो की अवस्थिति सामान्यतः निर्विकल्प आवृत्ति अथवा अविच्छिन्न घटना चिह्नक के रूप मे होती है। इसकी अवस्थिति द्वारा निर्मित कतिपय सयोजित वाक्यो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१) मौको मिळता ई ग्रममान जोगी सू वही सो बाता पूछ समचार पुगाय देवैला।

(२) बेटा तो घर गाव अर मा नैं छोड बहीर हुया सो अेक छिन वास्तै ई नी ढबिया। हालता हालता तीन दिन अर तीन राता बीतगी।

किन्ही परिसगो मे सो की वो अथवा वा स्थानीय अवस्थिति भी होती है।

(३) आ बाता नैं अबूझ समझै सोई अबूझ।

(४) म्हैं तो मरिया ई उणरी बात नीं टाळा। आप करो जको न्याव अर आप परभावो सो साच है।

१० २ कार्य-कारण वाक्यो मे प्रथम उपवाक्य मे किसी कारण का उल्लेख करके, उसके अनुवर्ती उपवाक्य म उक्त कारण के कार्य अथवा परिणाम का उल्लेख किया जाता है। इन दोनो उपवाक्यो का सयोजन क्यू कै इण वास्ते, इणी खातर इण खातर आदि सयोजको द्वारा होता है। नीचे इस कोटि के वाक्यो के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) कारण उपवाक्य + क्यू कै + कार्य उपवाक्य

(५) घर-धणी कै दूजा किणी नैं इण बात रो पतो नीं पडण दियो। क्यू कै ठा पडिया को न की राखो पड जावतो।

(ख) कारण उपवाक्य + इणीखातर + कार्य उपवाक्य

(६) गोपणियाँ सू सावतो वा माला रै सुर में बोली—भाटिया सू हाल थारो पानो नी पडियो दीसै इणी खातर अैडी बिलळी बात करी।

(ग) कारण उपवाक्य + इण खातर + कार्य उपवाक्य

(७) उणरै रूपाळै डील नैं निजर नी लाग जावै, इण खातर उणरा घरवाळा दिन मे दस बार उणनैं थुयकी न्हाखता हा।

(घ) कारण उपवाक्य + इणो वास्तै + कार्य उपवाक्य

(९) गरीबा री मनचीती नी हुया करै इणी वास्तै तो वे गरीब है।

(ङ) कारण उपवाक्य + इण वास्तै + कार्य उपवाक्य

(९) आप पैला सूं ई हजारूं बाता समझियोडा हौ, इण वास्तै म्हा टाबरा री समझ आपरै हीयै नी ढूकै।

(च) कारण उपवाक्य + इण वास्तै + कार्य उपवाक्य

(१०) मिनख नै अगलै छिण री जाच नी पड़ै, इण वास्ते धरती माथै नित नवी नवी वाता अवतरै।

१०३ कै– संयोजित वाक्यो के दोनो अगो, अर्थात् मुख्य उपवाक्यो तथा उत्तरवर्ती कै– उपवाक्यो के पारस्परिक सम्बन्धो के आधार पर कै– उपवाक्यो के विविध, प्रकार्य निर्धारित किये जा सकते हैं। इस प्रकरण मे उन विविध प्रकार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

१०३१ कै– उपवाक्यो की अवस्थिति अपने मुख्य उपवाक्यो की अकर्मक क्रियाओं तथा सकर्मक क्रियाओ के क्रमश. कर्ता एव कर्म स्थानीय प्रकार्यों मे होती है। इण प्रकार्यों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(११) इसा बगसा पछै म्हनै तो लागै कै म्हारो कोई दूजो नाव हुय ई नी सकै।

(१२) लोग कैवता कै उण दिन सूं ईं मा री जीव उपडग्यो।

इस कोटि के कै– संयोजित वाक्यो के मुख्य उपवाक्यो मे अवस्थित क्रियाओ का वर्ग ही इस तथ्य का नियामक है कि उनके साथ कर्त्ता-स्थानीय (अकर्मक क्रियाओ के लिये) और कर्म-स्थानीय (सकर्मक क्रियाओ के लिये) कै-उपवाक्य अवस्थित हो सकते हैं। इस वर्ग की कतिपय अन्य क्रियाएं हैं जाणणो, मानणो, सुणणो, चावणो, तथा लागणो इत्यादि हैं।

१०३२ व्याख्यक कै– उपवाक्यो के अन्तर्गत दो प्रकार के उपवाक्यो को परिगणित किया जा सकता है।

सामान्य शब्द व्याख्यक उपवाक्यो द्वारा मुख्य उपवाक्य के अन्तर्गत् बात इत्यादि शब्दो की कै– उपावाक्यो द्वारा व्याख्या की जाती है।

(१३) नगर मे किणी रै बस री बात कोनी कै कोई सिंघ नै मार सकै।

(१४) घणा बरसा पैली री बात कै किणी अेक गाव मे मायापत सेठ रैवतो हौ। आखै मुलक मे विणज बधियोडो।

अन्य व्याख्यक उपवाक्यो का विनिष्ट ग्राविर्भाविना व्याख्यक के-उपवाक्यो की सज्ञा से अभिहित किया जा सकता है। इन वाक्यो द्वारा मूल वाक्यो मे अवस्थित कर्त्ता अथवा कर्म स्थानीय सज्ञाग्रो की विशिष्ट आविर्भावनाग्रो का उल्लेख किया जाता है।

(१५) तद नगर सेठ हसनै कैयो—घरवाळा दूजी कमाई तौ नी पण चौपड पासा साथै बाधिया। पण म्हाम आ मोटी खोड कै बाजी लगाया बिना दाव नी रमू।

(१६) म्हारा वडभाग कै थू म्हनै बेटी रै नाव सू बतलाई।

(१७) वानै तो सपना मे ई ठा कोनी कै कैडी जाळ साजी। राजा कवरा रो मू डो ग्यू नी देखनी चावै। सगळा गताघम मे पडग्या।

विनिष्ट ग्राविर्भाविना व्याख्यक वाक्यो के अन्तर्गत उन कै– उपवाक्यो को भी परिगणित किया जा सकता है जिनके सम्बधित मुख्य वाक्यो मे कर्ता एव कर्म स्थानीय सज्ञाग्रो के पूर्व सावनामिक निरर्धारक विशेषणो – इसो किसो ग्रैडो, इण विध, इण भांत ग्रादि की अवस्थिति है।

(क) (१८) कवराणी नै रीस तो ग्रैडी आई कै या कवर री जीभ खाचलै।

(१९) थोडी ताळ मे ई सयोग री बात ग्रैडा बणी कै पारवती रै राज री राजकवर शिकार रमनै बावडी रै गळाकार न सरियो।

(२०) पछै आपरै धणी साम्ही इसारो करती बोली —इणरा लखण तो ग्रैडा है कै तिरता मरतो मर जावै तौ म्हारी लार छूटै।

(ख) (२१) आफ्ळता–आफळता वो चुकलिया रै तळै मे इत्ता कांकरा न्हाख दीना कै पाणी गळवैरी कोर तक चडग्यो।

(२२) राणी औ स्यानो सुण इत्ती राजी व्ही कै हाथोहाथ हीरा मोतिया रो थाळ भरनै बधाई मे दियो।

(२३) म्है थानै वित्ती ई लडती कै म्हारै बेटा नै ग्राडो मत दो। पण थे थारी वाण नी छाडी।

(ग) (२४) भजन रौ नसो इणविध लोगो रै मर्थ मे छायो कै वे बावळा-सा हुयग्या।

(२५) अठी उठी भटका देयनै इण भांत फफोडियो कै ठोड-ठोड सू सार री माळ्ळ तूटगी।

१०३३ निम्नलिखित उदाहरणो मे प्रथम उपवाक्य के क्रिया व्यापार का उल्लेख कै– उपवाक्य द्वारा होता है।

(२६) छोटकियो भाई पोहरा माथे इण भांत आळाच करतो हो के अणचक उणनै खोपग हिलतो निगै आयो। मूजेवडो सू बधियो मडो अठा-उठा खसण लागो।

(२७) मावचेती सू उभो हो कै उणनै किणी रै रावण री तीखी आवाज सुणाजी। पोरायतों रा कान गळगळा हुयग्या।

(२८) लखी बिणजारो की कैवण वाळो हो कै बामणी रै मन म अेक विचार आयो।

(२९) मां रो इत्तो कैवणो हो कै उणरै हाचला सू दूध री बतीस धारावां सागै छूगी।

(३०) राजमैल रै माय राणिया नै दरसण देयनै राव अपरै मुकाम जावतो हा कै राजा साम्ही धकिया।

उपरिलिखित समस्त उदाहरणो म कै उपवाक्यो म वर्णित क्रिया व्यापार सर्वथा अप्रत्याशित है।

१०३४ नीच निर्दशित प्रश्नोत्तर स्थिति मे कै की अवस्थिति उल्लेखनीय है।

(३१) बा उणनै भरमावण सारू अठी उठी री बाता पूछन लागी

जू जू सिध जावै अे ?
डीरा खूटण नै

खावै कीकर अे ?
कै सबड सबड।

यू बिछावै काई अ ?
कै छाजलो ?
भू ओढै काई अे ?
कै खेरणो।

१०३५ किन्ही परिसरो म कै- सयोजित वाक्यो मे सयोजक कै अनवस्थिति होती है।

(३२) मैं म्हारै घर म मोकळा मिनखा नै देखिया तो मन में जाणियो म्हारी सीढो बाधै है जीवत सिनान करावै है अर अबै म्हनै बालण नै जासी।

१०४ विभाजक समुच्चय बोधक निपात कै के द्वारा विविध विभाजक समुच्चय बोधक पदबन्धो तथा वाक्यो की रचना होती है।

१०४१ विभाजक समुच्चय बोधक कै से निर्मित कतिपय सज्ञा पदबन्धों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(३३) मिणगार कै बणाव कराया लुगाई रै ऐडी सू चोटी लग झाळ-झाळ ऊठै। पछै वै तो लुगाई रै साथै रांणी जी हा।

(३४) मिण कै यागिया चिमकै ज्यू उण काळै-बोळै अधारै मे ई परिया रो उघाडो डील पळपळाट करतो हो।

(३५) देखौ भगवान रै कबूल करिया भगत लोग चढावो कै परसाद कित्ताक दिना ताई चाढैला।

(३६) आखतो पाखतो रै गावा मे कठैई भजन, सगत, जागण कै रातीजोगा हुवता तो लोग परिहार नै अवस करनै बुलावता।

१०४२ विभाजक समुच्चय बोधक वाक्यो मे अवस्थित विविध वाक्यविन्यासात्मक युक्तियो का नीचे सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) वाक्य$_1$ कै वाक्य$_2$ (३७ ९)

(३७) राजा म्हनै घणी चावै कै वो आपरै कवरा सू घणो नेह करै।

(३८) कवर रो रू रू उभो हुयग्यो। आ कोई छोकरी है कै चडी है। थोडी ताळ मे वा खेत रै बारै माठ माथै आई।

(३९) उणनै ठा नी पडी कै चादणी समन्दर नै सिनान करावै कै समन्दर चादणी नै सपाडो करावै।

(ख) कै तो वाक्य$_1$ (अर) कै वाक्य$_2$ (४० ३)

(४०) कै तो म्हारी सेवा बदगी मे खामी है अर कै आपरी भगती म खामी है।

(४१) पछै विना किणी लाग लपेट रै इण भात बोलण लागो जाणै पिंडत जी उणरा बाळ गोठिया व्है। उणरी बोली कै तो अंडी जाणै साचाणी गळै मे लुआयाडा होय कागला काव काव करै अर कै किणी कागळै नै ई बामण रो वरदान मिळग्यो व्है।

(४२) जागतो जित्तै कै तो योगो रमतो कै सलरा सू कजिया करतो।

(४३) पोहरायती नै आप रै गाढ रो पूरो पूरो पतियारो हो। डरियो तो कोनी पण इचरज अणू तो हुयो। आ काई बात हुई। कै तो घरवाळा भूळ सू जीवतै नै मसांण ले आया कै मडै मे पाछो जीव बावडियो।

१०४३ किन्हीं परिसरो मे कै की अवस्थिति अव्यक्त भी रहती है (४४)।

(४४) हमैं रीस नी राखै अर म्हारै सूं मिळण अवस आवै। जावणौ नीं जावणौ थें जाणौ।

१०४४ विभाजक समुच्चय बोधक निपात कै से मिलते-जुलते अर्थ में, चाहे द्वारा भी विकल्पात्मक संयुक्त वाक्यों की रचना होती है (४५,४६)।

(४५) .. ...तौ थोड़ी निरात सूं सोचौ कै नका माईत म्हनैं बीस बरसां तक आपरी गोद में पाळ पोसनै मोटी करी, बटा गिणौ चाहे बेटी गिणौ, वारै वास्तै तौ नैंग म्हैं इज हूं, पछै कीकर म्हारै बिना वानै चैन पड़ली व्हैला।

(४६) बिड़ी माळी पड़तां थकां कह्यौ--म्हनैं तौ म्हारा त्रिखा रै पार की सूझै ई नीं। म्हैं तौ म्हारै मरता, टाबरां रै त्रिखा री राव रत्ती ई अदाज नीं लगा सकूं। राणी मा म्हनैं थ भडौ कौ चाहे भलौ, म्हारै नौ लुगाई बिना अेक पलक ई नी सरै।

१०५ सोद्देश्य सयोजक अनै~नै तथा सामान्य सयोजक अर~'र द्वारा पदो पदबन्धो एव वाक्यो का सयोजन होता है।

१०५१ अनै~नै द्वारा सयोजित कतिपय पदो, पदबन्धो एव वाक्यो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(४६) पयाळ लोक री तौ माया ई अनूठी। सोना रूपा रा रूंख। हीरा मोतिया रा भूमका। धरती माथै काकरा री ठौड मिणिया ई मिणिया। .. सुथार रौ बेटौ पयाळ लोक री छिब देखण लागौ। बगीचा मे केसर रै रूंख बिरणा रै हीडै सस नाग री किन्या हीडता हा। उणरी छिब अर आब देखला ई सुथार रै डीकरा री जोत सवाई वधगी। दुनिया म फगत दो ई चीजा रूपाळी--अेक कुदरत नै दूजी नार। बाकी सै पयाळ।

(४७) किणी अेक वन रा हलका मे अेक स्याळ रैवती ही। ओ घणौ चतुर नै जल ई घणौ हुसियार हौ। मौका माथै उणरी बुध घणी फिरती ही।

(४८) कागली आपरै रूप रौ बखाण सुणनै घणौ अजस करियौ। .. ..लूकड़ी तौ बोलती ई गी--जैडी रूपाळी काया है, वैडौ ई भगवान मीठौ अर सुरीलौ गळौ दियौ है, म्हारा हाडा राव नै। .. ...म्हैं तौ आपरै मीठा गळा नै तरसूं। गरीबणी माथै दया करौ नै कोई मीठौ गीत उगेरौ। म्हैं तौ आपरै गळा रौ मीठौ इमरत पीवण अळगी भाय सूं आई हूं। म्हारै हिवड़ा री आसा पूरी नै कोई मीठौ गीत उगेरौ। खुसामद रा नसा मे कागला री अकल गैळीजगी।

१०५२ सामान्य सयोजक अर~'र की अवस्थिति म भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(४९) छोटा-मोटा राजा उमराव अर ठाकर ठेठर तो उणरै धड़ा मे जुवता हा।

(५०) अेक हो सेठ। तिणरै बेटा सात अर बटी अेक। वा सबसू छोटी।

(५१) वा सात दिना ताई लगती सोवै अर लगती जागै।

(५२) राणी री बाता सुणरै राजा उणरै गुण अर समझ माथै घणो ई राजी हुयो।

१०५३ अर की विभाजक-सयोजकवत् अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(५३) सेठ री मोटोड़ी बहू कैयो—बादळा री काई भरोसो, बरसै अर नी बरसै।

(५४) छोटकिया बेटा री र रु जाणै कान बणग्यो। सगळी बात नै ध्यान सू सुणी। सुणिया ई सबर राखी। सगळा जणिया रै साम्ही पूछिया बदास भद दवै अर नी देवै। वो होठा उफनता बोला माथै नीठ थाम देय राखी।

१०६ निषेधवाचक वाक्यो म निषधार्थक निपातो की अवस्थिति क अतिरिक्त, लक्ष्यार्थ द्वारा निषेधात्मकता की अभिव्यजना भी होती है। यथा वाक्य सख्या (५५) म,

(५५) इण हिसाब सू मिनख जमारै रै खोलिये री लाज रो तो कुण कूतो कर सकै?

वक्ता का अभिप्राय सामान्य प्रश्न का कथन न होकर, लक्ष्यार्थ द्वारा यह अभिव्यजित किया गया है कि "मिनख जमारै रै खोलियै री लाज रो कूतो" करन वाला कोई नही है अथवा ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिससे यह कार्य हो सकता है, इत्यादि। इसी प्रकार के कतिपय अन्य वाक्यो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(५६) रावळै म राज वाळी हूस अर ताकत व्है तो वो इण भात निवळो बिण दाणा चुगै।

(५७) *गुस्ता ई रा कवर री अजब सुणी—कठै राजकवरी, कठै अपछरावा, कठै सोनै रा ह्म, कठै सोनै रा पगद, कठै मालिया रा झूमका अर कठै दावड।*

आ० राजस्थानी के निषेधवाचक निपात निम्नलिखित है

(क) सामान्य निषेधार्थक ना, न

(ख) अवधारक निषेधार्थक कोनी, कोयनी

(ग) आज्ञार्थक निषेधार्थक मत

(घ) उद्बोधक निषेधार्थक मती

(ङ) अभिव्यजक निषेधार्थक नीज

१०६१ सामान्य निपात नीं की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(५८) थू नी मानैं तो पछै काई करू ।
(५९) बेटी री सीख बाप री समझ म नीं आई।

नीं के वैकल्पिक रूप न की अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(६०) इग्यारै बजिया स्कूल री छुट्टी हुई ही, पण अजै जीमिया न जूठिया भूवा ई बारै गया है।
(६१) पण हार्नें नैं डोनैं बैठी बोली बोली सुणैं है।

१०६२ अवधारक निषेधायक निपात कोनीं की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(६२) अर मिनख भरम करै कै जठै उणनैं की नी दीसैं उठै की है ई कोनी।
(६३) ठाकर इत्ती ताळ नीठ चुप रिया। वे दारू नेवण म मस्त हा। आधी वाता सुणी अर आधी सुणी ई कोनी।
(६४) असवार मा'गी निवायनै बोलियौ—इण ससार म आपरै वास्तै की काम कठण कोनी।

कोनीं के वैकल्पिक रूप कोयनीं की अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(६५) ऊदरी नै आ बात चोखी लागी कोयनीं।
(६६) उतावळी अर जास रै कारण वो तो पूरी दळियौ ई कोयनी। फटाफट आपरी टूच घमण लागी।
(६७) मा बोली—बटा म्हारी मादगी री दवा वैद खनै कोयनी।

किन्ही परिसरो मे अवधारक निषधायक निपात कोनीं की कतिपय तत्वों से अन्तर्निविष्ट अवस्थिति भी होती है।

(६८) खुसामद री मार कदै ई खाली को जावैं नीं।
(६९) अेक हीं ऊदरी नै एक हीं ऊदरो। ऊदरो अचपळो अत घणो हो। उणरै हाथा पगा दिया जगता हा। की न की चाखरडाई करिया बिना को मानतो नीं। ऊदरी घणौ ई समभावतो—देख घणी रोळिया मत कर। कदै ई कुमौत मारी जावैला। पण ऊदरी किण री सीख मानैं।

१०६३ आज्ञार्थक मत तथा उद्बोधक मतो दोनो निषेधार्थक निपातो की अवस्थिति (जैसा कि इन दोनों निपातों के नामकरण से स्पष्ट है) अपने सगत समापिका क्रियारूपों के साथ ही होती है। इन सगत अवस्थितियो के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(७०) म्हनें तौ फगत आइज वात कैवणी है कै थे म्हारी जै मत बोलौ, इण भगती री जै बोलौ।

(७१) थू आ मत जाणें कै थारी काळी मासी जलम सू ई औ धमकी लेय जलमी व्हैला।

(७२) पगार म्है आपनें मूडै मागी देवूला, पण आप जावण री बात तौ करौ ई मती।

(७३) ..... बोली—वेटी अर पावणें नै तौ अेक दिन सिधावणौ ई पडै। राणी वणिया जामण नै विसराजे मती।

१०६४ अभिव्यजक निषेधार्थक निपात **नीज** की सामान्य **अर्थ** है "कभी नही, कभी न।" **नीज** की अवस्थिति लगभग मत और मती की अवस्थिति के परिसरो म ही होती है।

(७४) जान बहीर हुवती वगत बींद री बाप कैयौ—जानिया सू कोई नवटाई कै वदमासी हुयगी व्है तौ सिरदार माफ करावें। पडूत्तर मे बेटी री बाप बोलियौ—आप स गळती नीज व्है।

नीज का मुख्य अभिव्यजक प्रकार्य है किसी के कथन म अन्तर्निहित अमगल की आशका के निराकरण की वक्ता द्वारा उत्कट इच्छा (७५)।

(७५) राजा रा मूडा सू आ वात सुणनें राणी गोद सू आपरौ माथौ ऊचौ करियौ। बोली—अैडी बात आपरा मूडा सू नीज काढौ। आप सू वत्ता म्हनें कवर थोडा ई लागै.. .. ।

१०६५ तुलनावाचक उभयपक्ष निषेधवाचक वाक्यो मे दोनों उपवाक्यो म निषेधार्थक निपातो की अवस्थिति होती है। इस कोटि के वाक्यो की विविध सम्भावनाओं के उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे है।

(क) नीं . .. नीं

(७६) वामणी बोली—औ गैंणौ गाठौ नीं थारौ है नी म्हारौ। औ तौ सगळौ राजकवर रौ है।

(ख) नीं.. .. अर नीं......

(७७) नी आप लोग पाछा अेक दिन मे टाबर हुय सकौ, अर नीं म्हैं अेक दिन मे आप लोगा री उमर उलाघ सकू।

(ग) नी तौ . .. अर नी, नी तौ......नी .... अर नी......

(७८) सेवट कायौ होयनें राजा कैयौ—राणी, थनें थारै कवरा री इत्तौ डर है अर थू म्हारी वात री पतियारौ ई नी करै तौ वचन रासण सारू म्हैं पैली

ई मर जावू । नी तौ म्हैं जीवतौ रैवूला अर नी राजकवरा रै वास्तै दुमात री जोखौ व्हैला ।

(७६) बामणी बोली—नी तौ म्हनै पीवर जावणौ है, नी सासरै अर नी नानेरै ।

(घ) ......नी .... ~ ......न.... .

(८०) काई दमे कै राणी सौ भाटा री मूरत ज्यू बैठी छबरा-छबरा आमू ढळकावै । बोलै नी कोई चालै ।

(८१) अेक राजा रा कवरजी की भणिया न कोई पडिया, मा मूरख ।

(८२) बोलै न चालै । आप रै किरतब मे तन मन मू लाग रिया है ।

१० ६ ६ विकल्पात्मक निपेधवाचक वाक्यो मे प्रथम उपवाक्य मे कै तौ, तथा अनुवर्ती उपवाक्यो नींतर आदि निपातो की अवस्थिति होती है ।

(८३) राजा-राणी इणरी काई जवाब देवता । खीझ करनै बोलिया—कै तौ इण भेद री पतौ लगावौ, नींतर म्हैं सगळा रा माथा कलम कर दिरावूला ।

१० ६ ७ विकल्पात्मक सकारात्मक निषेधवाचक वाक्यो मे दोनो उपवाक्यो का कै द्वारा सयोजन होता है । इनमे पूर्ववर्ती उपवाक्य सकारात्मक तथा उत्तरवर्ती उपवाक्य निषेधवाचक होता है ।

(८४) जे इण सिघ नै मारणा री काम गळै पडग्यौ तौ सिंघ तौ मरैला कै नी मरैला पण म्हनै तौ मरणी ई पडसी ।

किन्ही स्थितियो मे कै की अवस्थिति नही भी होती ।

(८५) असमान जोगी नै यौ—थे डरौ तौ म्हारै वास्तै वा इज बात, नी डरौ तो म्हारै वास्तै वा इज बात ।

(८६) म्हैं लषण राखू तौ म्हारी मरजी अर नी राखू तौ म्हारी मरजी ।

(८७) म्हैं बोलू जकौ ई झूठ अर नी बोलू जकौ ई साच ।

१० ६ ८ इस प्रकरण मे सामान्य निषेधार्थक निपात नी की आवृत्ति एव उसके साथ कतिपय अन्य तत्त्वो की अवस्थिति के उदाहरण दिये जा रहे हैं ।

(क) नी नी (८८)

(८८) जे बीकांणै रै राजकवर नै इण बात री सोय हुवती कै सूवर री सिकार चढिया, आगै नी नी म्हैं जैडी अजोगती बाता बणैला तौ वो भवै ई जैमाणै री सीव मे सूवर रै लारै घोडौ नी दावतौ ।

(ख) नी ई सई (८६)

(८६) ओ नी मानै तौ नीं ई सई, म्हनै तौ सात लटका कर'र इण आगै निमणौ पड़ै ।

(ग) नी जणै (६०)

(६०) नी जणै भूखा भळै मरसा । पाणी है न आटौ ।

१०७ कालवाचक सर्वनाम जद, तद इत्यादि से संयोजित वाक्यों की कोटि में जद तद हेतुमद् शब्द एक प्रमुख उपकोटि के रूप में परिगणित किये जा सकते हैं। इस उपकोटि के वाक्यों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत हैं ।

(६१) बेमाता राम जाणै क्यूं अवळा लुगाई रा अंतस में प्रेम करण री चावना भरी । जद उणरी की आपौ नी तद क्यू उणनै प्रेम री हिमाळी सूंप्यौ ।

(६२) खुद भगवान रो ई जद आपरै आगै पसवाडौ नी फिरै तद बापड़ै मिनख री तौ बिसात ई काई ।

उपरिलिखित दोनों उदाहरणों में काल के साथ-साथ प्रासंगिक रूप से हेतुमद् भाव का समाहित उल्लेख है, किन्तु तद के स्थान पर तौ का आदेश होने पर हेतुमद् भाव का उल्लेख आनुषंगिक हो जाता है (६३, ६४) ।

(६३) म्हारी भगती रै जोर सू जद चील आयनै मटी में हार टाक जावै तौ लोग सिंघ रै मरणै री धीजो क्यूं नी करै ।

(६४) इण उपरांत जद काळै बाळै बरसतै पाणी में पावणा आपरै डील माथै अेक ई छांट नी लागण दी तौ आ बात सुणता ई जाणै सगळा गाव वाळा री बचियोडी सुधबुध ई जाती री ।

१०७१ जद तौ वाक्यों के हेतुमद् भाव समाहित कालवाचक अर्थ के अतिरिक्त, केवल कालवाचक अर्थ भी होना है (६५, ६६) ।

(६५) बावडी पार करिया जद हवा री पोळ आई तौ वारी जीव में की नेहचौ हुयौ ।

(६६) गाय रै बिछियै नै जद इण बात री पतौ पडियौ तौ वो ठळाव ठळाक रोवण लागौ ।

निम्न वाक्य में जद की "जब कभी" के अर्थ में अवस्थिति हुई है (६७) ।

(६७) जद उणरै मूडै माथै दया हूवती तौ देखणवाळा नै अँडी लखावती कै इण नै रीस तो सपनै मे ई नी आवती व्हैला ।

निम्न वाक्य मे जद की अवस्थिति "जैसे ही" के अर्थ म हुई है।

(६८) जद मेत रो धणी जाळ भेळो कर'र पावडा पचासे'क आगो आयो के कागलो तो काय काय करणो माडियो।

१०७२ कालवाचक वाक्यो मे सामान्यतया जद की ही अवस्थिति होती है। इस कोटि के वाक्यो मे जद की विविध अर्थो मे अवस्थितियो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) जद 'तब"

(६९) दो र्तीन घडी रात ढळी जद पाछो उणनै चतो बावडियो।

(ख) जद ई "तभी तो"

(१००) दो घोटो जोर मू बोलनै जवाब दियो—म्हनै तो दीसै है जद ई आपनै अरज करू।

(ग) जद इज "तभी तो"

(१०१) थू म्हारै माथै भरोसो कर। म्हारी बाई, म्है दुनिया री घणी घणी ठोकरा खाई हू, जद इज म्हैं इणरा हथकडा नै आज मावळ समभण जोग वणी हू।

(घ) जद इज तो "तभी तो"

(१०२) बोलियो—अबखी मळै कद पडै, अबखी पडी जद इ तो इण समदर रै काठै आयो।

(ङ) जद तो 'तब तो"

(१०३) थू ई म्हारै मू चोज राखै जद तो बात साव ई खूटगी। थू निरभै रै।

(च) जद सू "जब से"

(१०४) म्हारा लोक थपिया जद मू जको भेद परगट नी करियो वो थाने वतावू।

१०७३ तद की कतिपय अवस्थितियो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(१०५) बामणी री वा काणवी हिडम्प वटी परणावण जोग हुई तद वा आपरै धणी नै कैयो कै मोटोडी बेटी री माप रै साथै अर उण री बटी रै किणी लखपती रै बेटे साथै व्याव करै तो घरवास राखै नीतर वा आपरै पीहर जावै।

(१०६) कुदरत री सुभाव आपमू वसी वुण जाणं, तद आ वात आप सू ई अछाणी कोनी व्हैला कै जीव-जिनावर किसा नित भेळा व्है।

(१०७) असमान ओगी घणी खटापोरिया करी तद वा नींठ मानी।

उपर वर्णित जद संयोजित वाक्यों और इस प्रकरण मे वर्णित तद-संयोजित वाक्यो मे अर्थ भेद है। जद के द्वारा मात्र काल-क्रम का अर्थ द्योतित होता है जबकि तद-संयोजित वाक्यो मे काल-क्रम के अतिरिक्त तद-उपवाक्य म कथित व्यापार अपने पूर्ववर्ती वाक्य मे कथित तथ्य का स्वाभाविक अनुसरण, फल अथवा परिणाम इत्यादि होता है।

१०७४ जणे की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(१०८) गोडै तणो पाणी आयाँ जणै भळै कैयो—मान जा, रामकवरी मान जा।

(१०९) अबै तो राणी री हार हाथ जावै जणै वात विणै। इण काम सारू म्हनै जावण दो।

१०८ प्रतीतिवाचक वाक्यो मे वक्ता जाणै चिह्नक के द्वारा किसी प्रस्तुत के विषय मे, अपनी प्रतीति के अनुसार कथन करता है। वक्ता की प्रस्तुत विषयक अभिव्यक्ति के मुख्यत तीन रूप है—(क) प्रतीयमान रूप मे, (ख) भाममान रूप मे तथा (ग) स्व-भावप्रवण रूप मे।

१०८१ प्रस्तुत की प्रतीयमान रूप मे अभिव्यक्ति के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे है।

(११०) डावड़ी रै मूडा सू आ वात सुणता ई वाई तो जाणै चितवर्गी हुयगी।

(१११) हाथिया रै गळै भूलता वीरघट, ऊटा रै गोडा लूमती नेवरिया, घोडा रै पगा खणकता आवला री गमक सू काकड रो कण कण जाणै सुनाग हुयग्यो।

(११२) फेफ रै फूला री हार गळा मे घालता ई राणी रै रूप म जाणै मोळै चाद जुडग्या। उणरै जोवन म जाणै सूरज री उजास घुळियो।

१०८२ भाममान रूप मे ,अभिव्यक्ति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(११३) ताळो खाव पेटी रो ढकणो काई उघाडियो जाणै उण मारू सुरग रा पाट खुलग्या व्है।

(११४) अणचक डाढाळो ढवियो। जाणै काई उणरै चारू पगा नै सेंठा भाल जम कर दिया व्है।

(११५) राजा खुद घोड़ै चढियौ साम्रत आपरी निजरा राजकंवरा री निमडा पणौ देखियौ तौ जाणौ सोर नै तिणग बताई।

१०८३ प्रस्तुत की स्वभावप्रवण रूप मे प्रतीति की अभिव्यक्ति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(११६) बामणी आरसी मे आपरो मूडो जोयो तौ इण भात डरी के जाणी कालिंदर री फण जोयौ।

(११७) इण मे कदेई नागा हुय जावै तौ रावळै जाणौ जिसौ म्हानै डड दिरावजो भलाई।

१०९ प्रथम कोटि के जकौ सयोजित वाक्यो म मूल उपवाक्य म किसी विशिष्ट प्राणी, वस्तु अथवा विषय का कथन करके, जकौ-उपवाक्य मे उक्त प्राणी, वस्तु अथवा विषय पर वक्ता द्वारा टिप्पणी की जाती है (११८-२०)।

(११८) पण राजकवरी तौ कवर री कळाई साव अबूझ ही। सपनावाळी बात सुणनै कवर मार्थं मोहित व्हैगी। मोटा बाजणिया लोग तौ साची बात नै छिटकाय दै। अर अेक औ है जकौ सपनावाळी बात नै ई छोडणी नी चावै।

(११९) दुनिया म औ वगत सबसू अमोलक है, जकौ थे हाया करने गमाय दियौ।

(१२०) जगळ रै पछी जिनावर अर कीडी मकोडा सारू वो पैली अर आखरी मिनख हो जकौ वारौ राजा बणियौ।

इस कोटि के वाक्यो म कथित प्राणी, वस्तु अथवा विषय के वैशिष्ट्य के सकेत करने वाले चिह्नक अथवा निर्धारक विशेषण सामान्यत विद्यमान रहते है, जिनके आधार पर जकौ उपवाक्य मे तद्विषयक टिप्पणी की जाती है। उपरिलिखित तीनो उदाहरणो म अेक (११८), औ (११९), वो (१२०) आदि चिह्नक अवस्थित हुए हैं। नीचे काई (१२१), अेडो (१२२), अेडो काई (१२३), इसरी (१२४), किसौ (१२५) आदि की चिह्नक रूप म अवस्थिति के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

(१२१) कुभारी रा गधा अर छान मायला मोगरा बिना देखिया बताय दिया तौ अबै इण देगची रै माय काई चीज है जकौ बतावौ।

(१२२) सतगरू तौ अेडा गिरस्त म बळिया जकौ नाव लेवण री ई वळा नीं री।

(१२३) गाव री अेडौ काई सत निकळग्यौ जकौ बऊ नै भारी पगा नाव रै बारै जावण दी।

(१२४) पेट पापा रहै। हू तौ थानै म्हासू। इसरी छूट दू जकौ ई म्हारी महर वाना है कै म्हिरा पैली अेकर थारै इस्टदेव रौ जाप करौ।

(१२५) म्हे किसी डाकी हू जको फेर रोग्या पोवो। आज री टक तो थे तेरे मोगरा घणा। अबै तक्लीफ करण री की जरूरत कोनी।

१०.६.१ द्वितीय कोटि के जको सयोजित वाक्यो मे, जको उपवाक्य म किसी प्राणी, वस्तु अथवा विषय का इस प्रकार उल्लेख किया जाता है कि पूर्ववर्ती और अनुवर्ती उपवाक्यों म विविध सम्बन्धो को लक्ष्य किया जा सकता है। नीचे इन सम्बन्धो का स्पष्टोल्लेख करते हुए उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(क) हेतुहेतुमद् भाव सम्बन्ध (१२६)।

(१२६) जको मत अमावस री रात चाद उगाय सकै, चाल्ती नदिया नै ढाब लवै, उण वास्तै तो नवलखा हार री पतो लगावणो साव सैन वात है।

(ख) विरोधात्मकता भाव सम्बन्ध (१२७)

(१२७) पण दर असल आपरै सोचण म जको भलाई अर मगळ री वात है, वा म्हारै सोचण म दुख अर क्लेस री वात है।

(ग) अप्रत्याशित भाव सम्बन्ध (१२८)

(१२८) जका दिना टाबरपणै म्हे इला डूगी रा नित ज्याव रचायनै वारा घणा घणा कोड करती, वा ई दिना अेक दिन म्हारी ई अणचीत्यो ब्याव हुयग्यो।

(घ) सशर्त कथन सम्बन्ध (१२९)

(१२९) किणी सू जको काम वण नी आवैला फगत वो काम ई म्हे करस्या।

(ङ) कार्य-परिणाम सम्बन्ध (१३०)

(१३०) म्हे तो अेक नाकुछ ग्रास्मी हू। लाठी है तो आ भगती है। जको ई भगती करैला वो रामजी रो पद पा सकैला।

(च) शर्त स्वीकृति कथन (१३१)

(१३१) थू इणरी मनजाणी कीमत माग। जकोई मागैला वा ई देवू ला।

(छ) कार्य फलाफल निर्देश कथन (१३२)

(१३२) कालिंदर री विस भूरतै जको उणरी मिण रो लोभ करै, उणनै मरणो ई पडै।

(ज) घटना अतिरिक्त प्रभाव कथन (१३३, १३४)

(१३३) भाल्या री अेक नाकुछ छोकरी मगळी सूरापणो भाड न्हाकियो, माजनो गमियो जको इदकाई म।

(१३४) डाकरी भूवा ई मरै नै वादरी रो डर जको न्यारो ई। सूखनै काटो हुयगी।

१०६२ तृतीय कोटि के वाक्यों में जको ई-उपवाक्य द्वारा किसी प्राणी, वस्तु अथवा विषय के वैशिष्ट्य लक्षण का निर्देश करके, अनुवर्ती उपवाक्य में पारिभाषिक कथन की पूर्ति की जाती है।

(१३५) बाकी तौ सगळा अफडा है। भगती करतौ थगत जको ई आपरी सुध-बुध विसर जावै, म्हैं उणनै साची भगती कैवूं, अर यू दुनिया में अफडा री किसी कमी है।

(१३६) जको ई मारग सामी आयौ, वा तौ नाक री सोय भरणाटै दौडती ई गी।

(१३७) थौ जको ई काम करै इणनै मरजी सूं करण दौ। इणनै थें कदेई ओडौ मत दिया करौ।

१०६३ चतुर्थ कोटि में उन वाक्यों को परिगणित किया जा सकता है जिनमें पूर्ववर्ती जको उपवाक्य का नामिकीकरण करके निर्मित पदबन्ध का उत्तर उपवाक्य में उपयुक्त संज्ञा स्थानीय अन्तर्निवेश कर दिया जाता है। यथा (१३८) में "जको चोखी पढाई करी" पूर्व-उपवाक्य

(१३८) जको चोखी पढाई करी, वो पास हुयौ

का नामिकीकृत रूप 'चोखी पढाई करी जको" की वाक्य संख्या (१३८) के उत्तर उपवाक्य में "वो" के स्थान पर अन्तर्निवेश करके निम्न वाक्य निर्मित होता है (१३९)।

(१३९) चोखी पढाई करी जको पास हुयौ।

वाक्य संख्या (१३८) में एक सामान्य तथ्य का कथन किया गया है, किन्तु उसका रूपान्तरित पर्याय वाक्य (१३९) वक्ता के अभिप्राय की अभिव्यंजना करने वाला और व्यक्ति विशेष के प्रति कथित वाक्य है। वाक्य संख्या (१३९) के सन्दर्भानुसार विविध अभिव्यंजक अर्थ हो सकते हैं।

इस कोटि के वाक्यों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१४०) उणरी सास घर घर फिरतै कै यौ—इत्ता दिन काना सुणी जको बाता साख्यात साम्ही दुयणा।

(१४१) हाथ जोडनै बोलिया—हुकम, आपरै दाय पडै जको घोडौ टाळ लिरावौ। घोडा रा गुण आप सूं काई अछाना है।

(१४२) राजा अर कवर री जोस तौ देवता सारू ई हुया करै। दवै अर गिरणावै जकै नै वैं मारिया बिना को छोडै नी।

(१४३) म्हारी अरज सुणिया पछै, अन्नदाता मरजी आवै जको म्हानै डड दिरावै।

(१४४) कसूर करियौ जकै रै पगा माथा निवाय माफी मागौ। औ कठै री न्याव। म्हैं की ऊधौ काम नी करियौ।

१०.६४ *जको-संयोजित वाक्यों में जको के अन्य विविध प्रकार्यों का निर्देश* करते हुए नीचे उनके उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) जको की कै स्थानीय अवस्थिति (१४५, १४६)

(१४५) राजा जी रै काना मे राम जाणै काई सुरकी न्हाखी जको हाथौ हाथ जबत हुयोडा गाँव पाछा बाल करवाय लिया।

(१४६) अेवर एक कागलै रो भाग जागो जको माखण मीसरी लागोडी अेक रोटी हाथ आई।

(ख) जको की 'सो' के अर्थ मे अवस्थिति (१४७-५०)

(१४७) डेडरिया री बात सुणनै हाथी हूसण लागो जको व्हा ई नी करै।

(१४८) अदाता, आपा रै गाव रा मोटा भाग जको अैडा पावणा रा दरसण तो हुया।

(१४९) अबै म्है काई करू अर कठै जावू। रोवण मायं जोर जको बैठी आपरै करमा नै रोवू।

(१५०) हार तो गियो जको गियो ई, फेर की सवाय मे हुतो।

(ग) जको की 'तो' के अर्थ म अवस्थिति (१५१)

(१५१) लड़ाई मे मरता तो मिनख रो मरणो हुतो। अबै मरौला जको वा गिडक री मौत व्हैला।

(घ) जको की "अत" अथवा "इसलिए" के अर्थ मे अवस्थिति (१५२, १५३)

(१५२) हसती हसती ई बोली—राजा म्है तो जाणती कै थू इत्तो मोटो राज सभाळै जको थारै मैं की न की तो अक्कल व्हैला उज।

(१५३) दोनू राजकवर कयौ—रमण खेलण रा दिन है, जको घूड मे रमा। म्हारी ममा तो भूडी है कोनी।

(ङ) जको की "पर", "जबकि" के अर्थ मे अवस्थिति (१५४)

(१५४) छान रै माय ऊभा रा गाभा आला व्है जको थे तो मारग चालता आया।

(च) जको की "जोकि" क अर्थ मे अवस्थिति (१५५-५७)

(१५५) बेटी होळैसी'क पडूत्तर दियौ—आ कोई नवादी बात तो कोनी जको पूछण री जरूरत पडी।

(१५६) इण आश्रम म म्है अणगिण जीव-जिनावरा नै मारिया जको म्हैं आप सगला नै विगतवार बताय चुकियो हू।

(१५७) बोलिया—मी अदाता, म्हारी अवल भाग थोडी ई लायाडी जको म्है अैडा भूडा गचळका काढू।

१०.६५ किन्ही परिसरो मे जको के स्थान पर जिण की अवस्थिति भी होती है (१५८-६३)।

(१५८) पण हे अंतरजामी, थू म्हारी इत्ती करडी परख क्यू ली। जिणनैं धुरबार मडी सू बारैं काढियौ, उणनैं ई हाव भाव सूं पाछौ रिझाणौ है।

(१५९) जिण दिन इण धरती सू राजपूता री वीरता खूट जावैला उण दिन आ दुनिया ई खूट जावैला।

(१६०) गवाडी आस करनै आयौ जिणनैं हाथ सू ई उत्तर दियौ, मू डै सू नी।

(१६१) बेटी ! जिण भात थू अणचीती कवराणी बणी, उणी भात अेक दिन म्हैं ई अणचीती बीनणी बणी।

(१६२) जिण तरैं थू उठैं पूगौ वा सगळी बात माडनैं बताजे।

(१६३) चोरी करनैं धनमाल जिणकिणी नैं दियौ है, उणरौ म्हनैं ठा पडिया रैमी।

१०.१० रीतिनिर्धारक ज्यू-त्यू संयोजित वाक्यों को उनमे अवस्थित ज्यू, त्यू आदि संयोजको के आधार पर विविध कोटियो मे विभाजित किया जा सकता है। नीचे इन वाक्यो का सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

१०.१०.१ प्रथम कोटि मे उन वाक्यो को परिगणित किया जा सकता है जिनमे पूर्ववर्ती और अनुवर्ती दोनो उपवाक्यों मे ज्यू की आवृत्ति होती है।

(१६४) कवर थोडी सी सानी कर देता तौ रैयत रौ औ समन्दर सगळा राज नैं मिट जावतौ। राजा राणी रौ की जोर नी चालतौ। अेक पलक मे ज्यू राजकवर चावता ज्यू होवणौ पडतौ। खुद भगवान ई उण होवणा नैं टाळ नी सकतौ।

(१६५) सेनापति हाथ जोड़नैं बोलियौ—अदाता, आप धणी हौ, ज्यू इछा व्हैं ज्यू कर सकौ।

(१६६) राजा जी देखियौ कै साल भर पछै ज्यू भरैं पडैला ज्यू सलट लेवू ला। आज क्यू अडावू ।

उपरिलिखित वाक्यो मे प्रथम ज्यू का लोप करके इनके निम्नलिखित वैकल्पिक रूप भी हो सकते है।

(१६४क) . अेक पलक में राजकवर चावता ज्यू होवणौ पडतौ।

(१६५क) अदाता, आप धणी हौ, आपरी इछा व्है ज्यू कर सकौ।

(१६६क) राजा जी देखियौ कै साल भर पछै भरैं पडैला ज्यू ई सलट लेवू ला।....

किन्तु निम्नलिखित वाक्य का उपरोक्त प्रकार का वैकल्पिक रूप व्याकरणिक दृष्टि से सम्भव नही है।

(१६७) राम ज्यू मामी बोलती ग्यी ज्यू उणरै जोसा नैं धणी रीस आवती री।

कारण-कार्य वाक्यों में दोनों उपवाक्यों में ज्यू की अवस्थिति अनिवार्य है, जैसा कि वाक्य संख्या (१६७) से स्पष्ट है। इस प्रकार के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१६८) रामूडो आज दिन ज्यू पढाई करै है ज्यू इज करतौ रियौ तौ इण नै कोई फेल नीं कर सकै।

१०.१०.२ द्वितीय कोटि के वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में ज्यू तथा द्वितीय उपवाक्य में त्यू की अवस्थिति होती है।

(१६९) ज्यू माया वधती गी, त्यू उणरौ लोभ वधतौ गियौ। हीयै री दया माया सूखगी।

(१७०) असमान जोगा ज्यू आसू न्हाँखै त्यू वसौ राजी व्है। गोवती जुगाया उणनै न्हाळी इज घणी लागै।

(१७१) सठा री वात कह्या--फगत अठै ई काई, कई वाता में थारी कम नी पूगै पण थानै इणरौ वरौ कोनी। आपरी करामाता री आपनै अगू तौ वैम है। ताम दिना तांई भठै रईस री आणद लिरावौ। पछै ज्यू रावळी इच्छा व्हैला त्यू व्है जावैला।

उपरिलिखित वाक्य में प्रथम उपवाक्य में ज्यू का लोप तथा द्वितीय उपवाक्य में त्यू के स्थान पर ज्यू का आदेश करने से वाक्यार्थ में अर्थ भेद हो जाता है। प्रथम वाक्य का अर्थ है 'पीछे जैसे आपकी इच्छा होगी (अर्थात् जिस इच्छा का वक्ता को ज्ञान है) वैसा हो जावेगा। इस वाक्य के परिवर्तित रूप (१७२) का अर्थ है 'पीछे जैसी आपकी इच्छा होगी।

(१७२) पछै रावळी इछा व्हैला ज्यू हुय जावैला।

(अर्थात् जैसा भी आप चाहेंगे) वैसा ही जावेगा।"

१०.१०.३ तृतीय कोटि के वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में ज्यू तथा द्वितीय उपवाक्य में उण भांत, वो इत्यादि की अवस्थिति होती है (१७३ १७४)।

(१७३) प्रजा रै लारै ई तौ राजा रा सोभा है। ज्यू पाणी बिना सरवर अडोळो लागै उण भांत बिना प्रजा रै राजा अडोळो लागै।

(१७४ ज्यू कुम्हारी बतायौ वा री वा ठरकौ निजर आयौ।

१०.१०.४ चतुर्थ कोटि के वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में ज्यू ज्यू तथा द्वितीय उपवाक्य में त्यू त्यू की अवस्थिति होती है।

(१७५) ज्यू ज्यू लोग डर बतायौ अर बरजियौ त्यू त्यू उणरै मन में घणी घणी हूंस बधी।

(१७६) ठकराणी घणी री रंग पिछाण ली। वा ज्यूं ज्यूं कौल तोड़ण री बात करती ठाकर ज्यूं-ज्यूं कौल रै जाळ में बत्ता फंदीजता गिया।

१०.१०.५ पंचम कोटि के वाक्यों में दोनों उपवाक्यों का मान ज्यूं-ज्यूं द्वारा संयोजन होता है।

(१७७) सगळा गाववाळा कवराणी री घणी घणी मान राखण लागा। वखत ज्यूं-ज्यूं उणरौ घणौ मरण हुवतौ।

१०.१०.६ षष्ठ कोटि के वाक्यों में दोनों उपवाक्यों का ज्यूं ई द्वारा संयोजन होता है।

(१७८) वा तौ चुपचाप आयी ज्यूं ई पाछी आपरै मुकाम पौंच ग्यी।

(१७९) पण म्हारी काई दोस। मार्टता कैयौ ज्यूं ई करियौ।

१०.१०.७ सप्तम कोटि में प्रथम उपवाक्य में ज्यूं ई की और द्वितीय उपवाक्य में तौ, कै इत्यादि की अवस्थिति होती है।

(१८०) वा खुसी में उडाण भरतौ ज्यूं ई आपरै नीवड़े माथै बैठियौ तौ उणनै डाळै रै नीचे ऊभी अेक लोकी निगै आई।

(१८१) वो घरै जायनै ज्यूं ई रोटी खावण नै बैठौ कै बारै सूं पुलिस वाळै उणनै हेलौ पाड़ियौ।

किन्ही स्थितियों द्वितीय उपवाक्य में किसी संयोजक की अवस्थिति नहीं होती।

(१८२) वो ज्यूं ई अठै पूगै, उणनै म्हारै खनै मेल दीजे।

(१८३) नरमा ज्यूं ई रिजल्ट देखियौ, सपेलड़ा म्हारै खनै इज आया।

१०.१०.८ इस कोटि के वाक्यों में पूर्ववर्ती उपवाक्य का उत्तरवर्ती उपवाक्य से संयोजन होता है तथा दोनों उपवाक्यों के वाक्यों की पारस्परिक समानता का निर्देश।

(१८४) कोई कैवता कै म्हे सत नै धरती माथै चालै ज्यूं पाणी माथै चालता देखिया।

(१८५) पेट में होल री उठाव हुयो सौ दो घड़ी में कबूड़ी लुटै ज्यूं लोटनै प्राण छोड दिया।

(१८५) च्यारूं कवर उणरी आखिया में सूळ खुबै ज्यूं खुबण लागा।

उपरिलिखित वाक्यों में ज्यूं से संयोजित दोनों क्रिया व्यापारों की पारस्परिक समानता निम्न वाक्यों में अभिव्यक्त समानता से तुलनीय है।

(१८७) वो बगनो व्है ज्यूं उणरै उणियारै साम्ही टुग-टुग जोवण लागौ।

(१८८) कवर टावर री ळाई आडी लेवती व्है ज्यू बोलियौ—म्हारा करम नीज फूटै ।

(१८९) थोडी ताळ तौ वा वैकुंठी व्है ज्यू वैठी री, पण हवा री अेक जोर सू भोळौ आयौ अर वा जमी मार्थ गुडगी ।

१०.१०.६ निम्नलिखित वाक्यो म ज्यू उपवाक्य की अवस्थिति सज्ञा+परसर्ग वन है जिसका प्रकार्य है मुख्य उपवाक्य से क्रियाविशेषण क रूप मे सगति ।

(१९०) रैयत री सगळी खुसिया लोप हुयगी । लुगाया, टावर अर बूढा ठाडा मुणियौ जका रौ ई माथौ अर डील सुन्न हुयग्यौ, जाणै वारै माथावर वाण वैग्यौ व्है ज्यू ।

निम्नलिखित वाक्य म ज्यू उपवाक्य की अवस्थिति जकौ मे मिलकर "ताकि" के अर्थ म हुई है ।

(१९१) सोनजी नै अठै ला जकौ समझाऊ ज्यू ।

१०.१०.१० निम्न वाक्यो म ज्यू की अवस्थिति जकौ से तुलनीय है । इन वाक्यो म वक्ता ने ज्यू का प्रयोग जैसा कुछ, वैसा कुछ के अर्थ मे किया है ।

(१९२) तोडै री सासू ई खासी भली समझणी ही । वा हाजरिया नै पावणा कैयौ ज्यू नी वतायौ ।

(१९३) बोलिया—म्हनै आपरी आ बात ई मजूर है । वारै महीना पछै आप हुकम फरमावौला ज्यू करूला ।

(१९४) इण घर मे थारो अजळ है, सीर सस्कार है, थारी मरजी व्है ज्यू खा पी । थनै कुण ई ओडी देवणियौ नी ।

१०.११ सम्बन्ध वाचक परिमाण वाचक सर्वनाम जितरौ जित्तौ गुणवाचक विशेषण सज्ञा तथा क्रिया पूर्व परिमरो मे अवस्थित होकर मान अथवा सख्येयता का बोधक होता है । सख्येयता बोध केवल सख्येय सज्ञाओ के साथ आसत्ति मे, और वह भी बहुवचन म होता है । इस प्रकार क वाक्यों म प्रथम उपवाक्य मे जितरौ जित्तौ द्वारा पदार्थ परिमाण का उल्लेख होता है, तथा उत्तर वर्ती उत्तौ उपवाक्य उक्त पदार्थ परिमाण विषयक विविध कथन ।

(१९५) लुगाया जित्ती सैंगी दै सै उत्ती सैंणी व्है कोनी ।

(१९६) चीज तौ जित्ती दोरी हाथै लागै उत्ती ई उणरी कीमत व्है ।

(१९७) जित्ती नवी लुगाया लावै उत्ता ई माटा भरणा पडै । अवार सेठा री वेटी अर वहुवा रै परवाण आठ माटा भरै ।

(१९८) राजा नै राणी री समझ अर उणरै गुणा माथै जित्तौ भरोसौ हौ, राणी नै उत्तौ ई राजा री नासमझी अर उणरी मूढता रौ भरोसौ हौ।

(१९९) बेटी जित्ती रूपाळी ही उत्ती ई भोळी अर अबूझ ही।

इसी कोटि के कतिपय वाक्यों म उत्तौ क स्थान पर उत्तरवर्ती उपवाक्य म अन्य सर्वनामो की भी अवस्थिति होती है।

(२००) इण भगती री म्है जित्तौ ई बखान करू वो थोडो है।

(२०१) अै तौ बगत बगत री बाता है। राणी जित्ती रूपाळी ही उणसू सवाय ओछी अर हीण सुभाव री ही।

१० १११ एक अन्य कोटि के वाक्यो म जित्तौ उपवाक्य क नामिकीकृत रूप की उत्तरवर्ती उपवाक्य के पूर्व अवस्थिति होती है। इस कोटि के वाक्यो मे जित्तौ उपवाक्य सामान्यतया इच्छाथक परिमाणबोधक होते है।

(२०२) भावै जित्तौ खावै है अर बाकी रौ जमी माथै ऊधावै है।

(२०३) आखी उमर झूठ बोलिया तौ जाणै जित्ता फोडा पडिया।

(२०४) सोच करिया सोच मिटतौ व्है तौ दोनू भेळा बैठ, चावा जित्तौ सोच करला।

(२०५) म्हारै सु पूग आवैला जित्ती मदत करूला। पछै थारै जचै ज्यू करजे।

१० ११२ जितरौ—जित्तौ के तिर्यक रूप से सयोजित वाक्यो म जित्तै आदि का अर्थ होता है "जब तक" अथवा "तब तक।"

(२०६) भेख री पूजा करणिया मिळै जित्तै औ बिणज दाखट चालै।

(२०७) म्है तौ मिजरौ नी देखू जित्तै किणी रै कैयै री पतियारो नी करू।

(२०८) राव फौज मे पूगौ जित्तै सगळा सिपाई सस्तर हेटै न्हाक दिया।

(२०९) आपा री फौजा चढैला जित्तै तौ दुस्मी री फौजा नगर माथै पूरौ कब्जौ कर लेवैला।

वाक्य सख्या (२०६ ९) म द्वितीय उपवाक्य म वर्णित क्रिया व्यापार की प्रथम उपवाक्य मे कथित व्यापार से पूर्व ही होने की ध्वनि विद्यमान है।

इसी कोटि के वाक्यो मे जित्तै के स्थान पर उसके आम्रेडित रूप जित्तै जित्तै की अवस्थिति भी होती है। इन वाक्यों म पूर्वउपवाक्य के क्रिया व्यापार की कालावधि म अथवा उसके समापन के पूर्व ही, अनुवर्ती उपवाक्य मे वणित क्रिया व्यापार के होने का उल्लेख है।

(२१०) बेटै रै अमल लागू ई हुयौ तौ अैडौ कै सोळै बरस पूगा जित्तै जित्तै वो साठ बरस रै बाप सू ई सवायौ अमलदार हुयग्यौ।

(२११) दूजै दिन सूरज उगियौ जितै जितै तौ उणार उणाम म इ पैली सारे नगर म खबर फैलगी कै राज रै खजानै म चोरी हुयग ।

उपरिलिखित वाक्यो म (२१०, ११) पूर्ववर्ती उपवाक्य म वर्णित क्रिया व्यापार की क्रमिक आभिवृद्धि अथवा वर्द्धमान तीव्रता की ध्वनि भी विद्यमान है।

१०.११३ नीचे जितर तौ तथा जित ई की अवस्थिति के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

(१) द स्याण आठान उठाने लागियौ जितरै तो डावरा री कने भट ओ हुय र मरज कोनी— राजा रा बगमिडा सिरपाव मकन पर।

(१२) भीत री अधारी कै उकी वदाक धो ओ ज है। पण धा अधारी है जि ई तौ जयणी है।

१०.११४ भाव इत्तौ तथा उत्तौ द्वारा संयोजित वाक्यों के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२१४) समदर रै पाणी चढता चढता इत्तौ ऊचौ चढियौ कै वो मिन्दर रै ऊवारै साथ ल्हकीजण लागौ।

(१५) रल्की ववण नायौ—म्हे भात तालिया बजाऊ उत्तौ नाळ म चुवतो गहरा न टोळ ण भजडा रै मोळी दोळी अबळ अळी बरै जाणी ई साचो।

१०.१ गुणवाचक सर्वनामो द्वारा संयोजित वाक्यो म प्रथम कोटि म उन वाक्यो को परिगणित किया जा सकता है जिनम पूर्ववर्ती उपवाक्य म जडौ द्वारा गुण कथन किया जाता है और उत्तरवर्ती वडौ अथवा उडौ उपवाक्य म उक्त गुण कथन के विषय म टिप्पणी।

(१६) बेगी बिचाळै ई जोर सू खिलखिल हसी जाणी कोयल हसी हवै। काला— बा ! म्हे तौ जैडी बयराणी उडी ई महाराणी। आप बधाई माह फालतू ई फोडा भुगतिया।

(१७) माईता नै सोचौ लाग आयो। राजा री जैडौ नाव वैडा ई गुण रसाया।

(१) अगलोक म जैडौ सुगता ऊडौ ई इन्दरलोक रो दाग हो।

१०.१२१ प्रथम उपवाक्य के नामिकीकृत रूप द्वारा निर्मित जडौ-संयोजित वाक्यो के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२१६) फूलकवर कैयौ—माया री विरयास भी करै जैडी इज है पण थ साथ ही तौ विरयाम करणौ रज पडै अभरोसौ कैकर करू।

(२२०) फूल रै कवळास अर उणरै रग नै ई मात करै जैडा उणरै डील री पसम।

(२२१) बकरी तौ सदावत सू करै जैडी ई मींगणिया करी।

(२२२) आध घडी मे आय खातण चावळ सम्भाळिया तौ हा जैडा अर अठा अरटियौ घईजण आयौ।

(२२३) राजा आपरै जीवण मे थाळी तिराया तिरै जैडी अर तिल उछालिया हूटै नी पडै उडै भीड आज आपरी आखिया म देखी।

१०१२२ प्रथम उपवाक्य मे जैडो की अवस्थिति और द्वितीय उपवाक्य मे अन्य वाक्यविन्यासात्मक युक्तियों द्वारा निर्मित वाक्यो के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है।

(क) जैडो जाणै (२२४)

(२२४) ठाकर सा नै जैडो लखायौ जाणै उण रूप रा बखाण सुण खुदौखुद दारू ई नै नसौ चढग्यौ।

(ख) जैडो कै (२२५)

(२२५) पग इण आणद रै बिचाळै अेक अजोगती बात जैडो बणी कै वा री जीवणौ हराम हुयग्यौ।

जैडो की अवस्थिति के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२२६) सुख अर न्याव रा नवा कायदा बणता। राजा व्है तौ अैडो व्है। दीवाण व्है तो अैडो व्है।

(२२७) इण बगत धणी नै बचावणो ई सिरै हौ। जीव अर लाज दोनू बच जावै अैडी जुगत बण जावै तो ठीक रैवै।

१०१२३. जैडो-उपवाक्यो की कतिपय अन्य नामिकीकृत अवस्थितियों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२२८) देत राजी होय बोलियौ-हा, आ बात तौ म्हनै ई कबूल। मानण जैडी बात व्है तौ क्यू नी मानू।

(२२९) देख था मे जाणै जैडो करूला। पण स्याळ तौ ई बारै को आयौ नी।

१०१२४ नीचे सवोई 'जैसे ही, ज्यों ही" की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२३०) अेक दिन सजोग री बात अैडी बणी कै सवोई तौ वा अभ्यागत धीवडी धदूणी देय बोर भाडती ही कै सिकार जावतौ राजा गळावर नीसरियौ।

(२३१) सजोग री नावौ अैंडो पीयौ कै सबोई हथमार बाळ गोपाळ नैं खपेडे मे सुवाग कोई चारेक सेतवा अळगौ गियौ न्हैला कै विणजारै सू मिळण आवतै मुनीम रै काना किणी बाळक रै रोवण री साद सुणीजियौ।

१०.१३ हेतुमद वाक्यो मे सामान्यतया जे "यदि, अगर" उपवाक्य द्वारा किसी कारण अथवा कारणस्वरूप का कथन करके, अनुवर्ती तौ—उपवाक्य मे उक्त कारण अथवा कारण स्वरूप के परिणाम इत्यादि का कथन किया जाता है (२३२)।

(२३२) किणी रै माथै विना कसूर सीभ करणी अर रागिया नै दुहाग देणी औ राजा रा खास गुण है। नीतर वो राजा ई काई। आपा मे अर वा मे पछै भेद ई काई। म्हानै तौ आपरी माथौ ई भवियोडौ दीसै। जे आप सू चौथो पाती रौ रूप ई म्हारं पारवती हूवती तौ सिंघां नं ई बस मे कर लेती। रूप री आ छिब देखनै मिनख रौ जायौ रूसणौ करलै तौ पछै खामी आप मे ई है। जे आप चावता तौ कवर जी ताडियां ई इण मेडी रौ ठायौ को छोडता नी। पण आपरी रीस तौ रूप सूं ई चौगणी है।

उपरिलिखित उदरण मे अर्थ की दृष्टि से दो प्रकार के हेतुमद् वाक्यों की अवस्थिति हुई है। प्रथम वाक्य म वक्ता ने "यदि आप से चौथा हिस्सा रूप भी मेरे पास होता" कारणस्वरूप गुण का उल्लेख करके, उक्त गुण के प्राक्कल्पित परिणाम अथवा फल का कथन किया है, अर्थात "तो वह (किसी मनुष्य की तो वात ही क्या है) सिंहों को भी बस मे कर लेती।" इसके विपरीत द्वितीय उपवाक्य म यथाघटित प्रत्यक्ष का तौ उपवाक्य मे उल्लेख वक्ता का अभिप्रेत है, अर्थात् "तो कवर जी ताडना करने पर भी इस "मेडी" के स्थान का परित्याग नही करता" कथन द्वारा यह उल्लेख किया गया है "कि आपके द्वारा ताडना करने पर कवर जी ने "मेडी" के स्थान का परित्याग किया। (जो कि यथाघटित प्रत्यक्ष है), किन्तु वस्तुत उन्होंने इसलिए ऐसा किया है कि आप नही चाहती थी कि वे यहाँ ठहरें इत्यादि। प्रथम वाक्य से सर्वथा विपरीत द्वितीय वाक्य मे किसी प्राक्कल्पित अथवा यथाघटित प्रत्यक्ष को परिणाम स्वरूप मानकर, उक्त परिणाम स्वरूप के सभावित कारणस्वरूप का उल्लेख है।

जे हेतुमद् वाक्यों के, जैसा कि ऊपर स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है, दो मुख्य प्रकार्य हैं। अर्थात् किसी कारण स्वरूप का जे उपवाक्य द्वारा उल्लेख करके, तो उपवाक्य में उक्त कारणस्वरूप के परिणाम की परिकल्पना, तथा जे उपवाक्य द्वारा किसी संभावित कारणस्वरूप का उल्लेख करके, उक्त कारणस्वरूप के प्राक्कल्पित अथवा यथाघटित प्रत्यक्ष के स्पष्टीकरण का प्रयत्न।

एक अन्य प्रकार के हेतुमद् वाक्य की अवस्थिति भी उपरिलिखित (२३२) सन्दर्भ मे हुई है। (२३२क) इस वाक्य मे हेतुमद् वाक्य

(२३२ क) रूप री आ छिब देखनै मिनख रौ जायौ रूसणौ करलै तौ पछै खामी आप मे ई है।

निह्नक जे की अनवस्थिति है, तो भी यह वाक्य हेतुमद् वाक्य ही है। इस वाक्य मे प्रथम उपवाक्य मे एक सामान्य अथवा अनुभूत मान्यता को कारण स्वरूप का प्रतिस्थानीय मानकर, तो-उपवाक्य द्वारा उसकी अवश्यभावी फलपरक प्रतिज्ञप्ति का उल्लेख किया गया है। इस वाक्य मे जे की अनवस्थिति यह सकेत कर रही है कि प्रथम उपवाक्य म कथित सामान्य अथवा अनुभूत मान्यता वक्ता द्वारा परिकल्पित कारण न होकर एक वास्तविक सत्य है।

नीचे कारणस्वरूप परिकल्पित परिणाम वाचक जे हेतुमद वाक्यो के कतिपय अन्य उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(२३३) जे थारै साम्ही सपनै मे ई झूठ बोलू तो म्हनै अगलै जलम पाछो औ ई जमारो मिळजो।

(२३४) राजी रो उजियारो निरखती खुशी बोली—जे म्हारै फूला अर म्हारै मन मे सत हुयो तो आपा रो दुनिया म प्रलै ताई बिछोव नी हुवैला।

(१४५) मावा रै पालिया जे मौत ढबती व्है तो आज दिन ताई कोई बेटो मरतो ई नी।

(२३६) जे फरगंट घोडै नै इण झूलरै रै मायकर निकालू तो कैडो मजो वणै। नामी खिलको रैवैला।

नीचे सभावित कारणस्वरूप-प्राक्कल्पित/प्रत्यक्ष घटित जे हेतुमद् वाक्यों के कतिपय अन्य उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२३७) जे आपरी बाता समभण री म्हा लोगो मे खमता हुवती तो म्हे छोटा ई क्यू रैवता।

(२३८) जे अैडी ठा हुवती तो म्हैं उठै ई क्यू चूकतो। पण अबै काई व्है। हाथा करनै करम फोड लिया।

(२३९) अर आपरी येह रै माय भूडण घणो अर पेट रा जाया रै विघाळै आणद मे गरक हुयोडी बैठी ही। जे वानै ई आपरी दीठ रैखिणा रै पार दीखण लाग जातो तो वै क्यू इण भाल फौज रै मिस काळ री नचीता बैठा बाट न्हाळता।

निह्नक जे की अनवस्थिति वाले कतिपय हेतुमद् वाक्यों के उदाहरण निम्न-लिखित हैं।

(२४०) भगवान सू कोई भूल व्है तो राजा सू ई कोई भूल व्है।

(२४१) बामणी बोली—आप बोपारी हो तो म्हैं ई अेक मा हू।

(२४२) म्हे तो सगळा मरियै समान हा। मरियोडी न्हास नै किणो वातरो अनुभव व्है तो म्हानै व्है।

(२४३) लुगाई री ठौर कोई मोटियार हूवतौ तौ म्हैं जीभ सू नी बतळाय तीर सू बतळावतौ ।

(२४४) घरै आवता डावी अर दिसावर सिधावता सुगन चिड़ी जीमणी धकै तौ मन जाणिया आछा सुगन व्है ।

जै की अनवस्थिति वाले हेतुमद् वाक्यों में द्वितीय उपवाक्य मे तौ के स्थान पर तौ ई (२४५), तौ पछै (२४६), तौ फेर (२४७) का भी आदेश होता है ।

(२४५) अबै थू कवै तौ ई म्है इण जगळ म नी दबू । मासी रै घात पछै इण जगळ मे सास लवणौ अधरम ।

(२४६) राजा जी कैयौ—वो काम तौ आप नीं करौला तौ पछै कुण करैला ।

(२४७) मोटियार बोलियौ—अेक मिनख नै मिनख रै दुख-दरद सू लेणौ देणो नी व्है तौ फेर किणनै व्है ?

१०.१४ स्थानवाचक सर्वनामों द्वारा सयोजित वाक्यों में अवस्थित वाक्यविन्यासात्मक युक्तियों को सूचित करते हुए तत्सम्बन्धी उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(क) अठीनै अठीनै (२४८) ।

(२४८) हिरण स्याळ नै कैयौ—कंडी'क मोकौ मजियौ, अठीनै म्हारी फमणी हुयौ अठी नै म्हारै मितर री आवणो हुयौ ।

(ख) अठै तौ...उठै (२४९) ।

(२४९) पछै वो हाथ सू इसारौ करतौ बोलियौ—छाट पड़तौ अठै तो बदौ पड़तो उठै । डील रै एक छाट ई नी लागण दी ।

(ग) अठीनै.. अर उठीनै (२५०) ।

(२५०) अठीनै डोकरा-डोकरी अजसनै मोद सू आपरै बेटा रै बारे म बाता करता हा, अर उठीनै ठिकाणा मे रैवता उण री मानता दिना-दिन बधती गी ।

(घ) जठै...उठै (२५१) ।

(२५१) रुखो बिणजारी जोम मे कैवण लागी—जठै जावणौ चावौ उठै छोड दू ।

(ङ) जठालग.. तठालग (२५२) ।

(२५२) जठालग इण दुनिया सू मिनख री बिणास नी व्है, तठालग अंडा नगारा तौ नित धुरैला ।

(च) जठै...उण ठौड (२५३) ।

(२५३) अेकली लुगाई नै जठै गिरस्तिया री बस्ती मे अेक रात री भरोसौ कोनी, उण ठौड इण पातर रै आमरै सोळै बरसा री मौलगत मिळै है ।

(छ) उठी...अठी (२५४)।

(२५४) अठी तीजणियां गीतां रै मिस रस घोळै। उठी विड़िया अठी तीजणियां।

१०१४१ स्थानवाचक सर्वनामों द्वारा संयोजित वाक्यों के प्रथम उपवाक्यों के नामिकीकृत रूपों के इन सर्वनामों की अवस्थिति के विविध उदाहरण नीचे संकलित किये जा रहे हैं।

(क) उठै ई (२५५), उठै ताई (२५६), उठी नै ई (२५७)।

(२५५) भला, नेक अर सालम मिनखां सारू सगळी दुनिया घर रै उनमान है। थारो तो जावो उठै ई घर है, पछै कैडो देस-निकाळो।

(२५६) म्हारै राज री स्याही ढुळै उठै ताई अै पाणी नी पीय सकै!

(२५७) आधी ढळिया वो बडेरा रो ठायो छोड पग लेगा उठीनै ई बहीर हुयग्यो।

(ख) जठै (२५८), जठै ई (२५९), जठीनै ई (२६०), जठै तक (२६१), जठै ताई (२६२), जठालग (२६३)।

(२५८) म्हारै कमरै मे थारी मरजी हुवै जठै ईडा दे। म्हे थारी साळ-सभाळ करला।

(२५९) उणनै देवता ई लुगाया रा पग तो हा जठै ई रुपग्या।

(२६०) वो तो विलखणो हुयग्यो। घर्क पडी जठीनै ई आपरो जीव लेयनै सोकड मनाई।

(२६१) वो आवै जठै तक थू धोप'र थारो नौडियो पूरो करलै।

(२६२) विसनो जो बोलिया—परणीजै जठै ताई बोलै कोनी क? कैयो—कोनी बोलू।

(२६३) पण यू सोरै सास इण दुस्ट रै हाथ आवणियो म्है ई कोनी। जठालग म्हारै जीव मे जीव है इण येह रै आणद री खातर म्है पूरो रीठ बजावूला।

१०१५ प्रतियौगिक वाक्यों को विवरण की सुविधा के लिये निम्न वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है: (क) विरोध-वाचक वाक्य, (ख) प्रतिषेधात्मक वाक्य, (ग) अपवादात्मक वाक्य, (घ) इतर प्रतियौगिक समुच्चयात्मक वाक्य, तथा (ङ) व्यवच्छेदक वाक्य। नीचे इन पाचों वर्गों के वाक्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जायगा।

१०१५१ विरोधवाचक वाक्यों मे प्रथम उपवाक्य मे किसी धारणा, तथ्य आदि का उल्लेख करके, द्वितीय उपवाक्य मे उक्त धारणा, तथ्य आदि का खण्डण किया जाता है। दोनो उपवाक्यो को विरोधवाचक समुच्चयबोधक निपात पण द्वारा योजित किया जाता है

(२६४) म्हनैं तौ परणीजती जकी ई राणी हूवती, पण थारैं सूं हथळेवौ जोडतौ जकौ कवर तौ भवैं ई नी हूवतौ।

(२६५) लजालू नागकिन्या निजर नीची करनैं कैयौ—आप फरमावौ तौ म्हैं मानूं ई हू, पण आप तौ मन परवाण धोळौ धोळौ सैं दूध ई जाणौ।

(२६६) थू नाकुछ चिडो म्हारौ सत्यानास करैं। म्हारौ सत्यानास तौ काई ठा कद व्हैला पण थारौ तौ इणी सायत कर दू।

(२६७) रग में तौ आपरी मा रै उणियारै ई है पण सूरत वेमाता दूजी ई दीनी है।

(२६८) वो सगळी दुनिया नैं देखैं पण उणनैं कोई नी देखैं। फगत वादळ मैंल रैं माय उणरौ रूप परगट व्है।

(२६९) मा बापा री हर तौ अवस आवती, पण म्हारैं दुख री खास कारण औ इज हौ। म्है डरती आपनैं कैयौ कोनी।

विरोधवाचक निपात पण के अतिरिक्त विरोधवाचक समुच्चय बोधक वाक्यों में, पूर्ववर्ती वाक्यों में भी कई तत्त्वों की अवस्थिति होती है, जिनसे अनुवर्ती वाक्य के खण्डनात्मक उपवाक्य होने का संकेत होता है।

(२७०) लखी थावस देवती लाड सू बोली—थारैं भलाई समझ में नी बैठै, पण म्हारैं तौ थनैं दखतौं ई समझ में बैठगी कै म्है औ धधौ थनैं मरिया ई नी करावूला।

(२७१) माया विचैं ई वत्तौ माया री ठागौ कीकर व्हैगौ। उणनैं हरावणौ अगं ई मोटी बात नी, पण आज तौ आ छोटी बात ई सबसू लाठी होय थोथौ गुमान करैं।

(२७२) राजा जी खुद तौ सबूरी री सीख देय उठा सू व्हीर हुयौ, पण वारा सू एक छिणरी सबूरी नी हुई।

उपरिलिखित वाक्यों में भलाई, अगं, तौ इत्यादि ऐसे संकेतक हैं जिनसे अनुवर्ती वाक्य के विरोध वाचक उपवाक्य होने का स्पष्ट संकेत हो रहा है।

अनेक परिसरों में विरोधवाचक निपात पण की अपस्थिति नहीं होती (२७३ ७६)।

(२७३) हाडी भलाई सोनैं री ई व्हौ, ढकणौ उघाडिया पछै कौ आणद नी। ढकणै री तौ आणद ई दूजौ।

(२७४) राणी मा म्हनैं थे मूडौ को चाहे भळौ, म्हारैं तौ लुगाई विना अेक पलक ई नी सरैं।

(२७५) थें त्यार व्हौ चाहे नी व्हौ, मौत थानैं कठैई बगसैला नी।

(२८६) कालै आप घर गोडिया रजपूत री बेटी हा, आज आप बीकाणै रै टणकल राजकवर री कवराणी हौ।

किन्हीं परिसरों में पण के स्थान पर अर का भी आदेश होता है (२७७)।

(२७७) म्हैं थनैं हमार इज कैयो हो कै बसडी में आयोड़ै दुरसी नैं भवैं ई नी छोड़णो, अर थूं म्हनैं छोड़ दी।

१०.१५.२ प्रतिषेधात्मक प्रतियोगिक वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में किसी तथ्य आदि की एकान्तिकता आदि का प्रतिषेध करके, उसकी विस्तृति अथवा अन्य गुणों का भी उल्लेख किया जाता है (२७८, २७९)।

(२७८) आ ठडाई नी ता ताई है। मान नी अपमान है। आगै माल रै छीद पत्तलै काम नैं चूड में रळावण बाळी गदा पाणी है।

(२७९) किसरी ई निकामो है पण है तो म्हारैं घर रौ धणी। औ नी मानैं तो नी ई सई, म्हनैं तो सात नटका कर'र इण आगे निमणो पड़ै।

१०.१५.३ अपवादवादात्मक प्रतियोगिक वाक्यों में पूर्ववर्ती उपवाक्य में किसी सामान्य तथ्य का उल्लेख होता है और उत्तरवर्ती उपवाक्य में उसके अपवाद का प्रतियोगी रूप में कथन किया जाता है। इस कोटि के कतिपय वाक्यों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं जिनमें अवस्थित संयोजकों को रेखांकित किया गया है।

(२८०) मनिया उणमूं अणूंतो राजी हो। राजकवरी घणी ई समझाइस करी सौई वे पयाळ लोक सूं बारैं जावण वास्तै राजी नी हुई।

(२८१) म्हारी तौ अगैं हुई चूक नी हुई तौ ई आप म्हारैं माथैं चिड़ो हो।

(२८२) हाडा आयाडी मुळक माथैं वा माडाणी सामदेवती बोरी थैं वाता में तौ वेमाता नैं ई नी धारी, पछै म्हारी काई जिनात।

(२८३) उण जाणियो कै अबै मरणा में तौ घाटो नी, पछै डरणै सूं काई मार निकळै।

(२८४) बामणी गरीब अर फाटोड़ै वेस में ही, सौई सतीपणा रौ तेज उणरै रूं रूं सूं छिटकतो हो।

१०.१५.४ इतर प्रतियोगिक वाक्यों की कोटि में ऐसे वाक्यों को परिगणित किया जा सकता जिनके दोनों उपवाक्यों का नीतर आदि समुच्चयबोधकों द्वारा संयोजन होता है।

(२८५) मन रौ मानणो ई तौ सबसूं लाठी बात है। दुनिया मानैं तौ भगवान है, नीतर फगत भाटो है।

(२८६) लुगाई रै आयो गिरस्ती रै लटै सूं बधग्यौ तौ उणरौ मगज ठाणै आय जावैला। नींतर आ भगती थनैं फोड़ा घालैला।

(२८७) आज तौ राजा जी म्हारै मारै अणूंता राजी है, इणमूं म्हनैं दीवाण बणावणी चावैं, पण जिण दिन खीझ गया तौ व सूळी चढावता ई जेज

नी करैला। हारवाळी वात तौ सुनै ई पार पड़गी, नोंनर खास दीवान जी नैं तौ आज ई मूळी चढणी पड़ती।

(२८८) पको घर अर जोडी रौ वर दाय आयग्यो, नींजणै छोरा गाव में भळै घणा ई है। पण वापडा नै कुण पूछै ?

(२८९) वापडौ पोगसी न्याव करदै तौ भलाई, नीं तौ राजा मौरा देवैला नी।

(२९०) वावळा, राजा नैं किणी दूजी चीज सूं वदै ई नसौ नी आवै। राजमद सूं सगळा ई नसा माडा है। हा अलबत, इण प्रीत री नसौ राजमद सूं सवायौ है।

१०.१५५ व्यवच्छेदक प्रतियोगिक वाक्यों के विविध प्रकार भाषा में प्रचलित हैं। उनमें अवस्थित वाक्यविन्यासात्मक युक्तियों सहित उनके उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) जितै... उत्तै ई (२९१)

(२९१) राजा री डावडिया जितै कोडसूं वामणी नै राणी बणाई उत्तै ई कोडसूं चोर आपरै हाथा उणरी राणी भेख उतारियौ।

(ख) (अठी) अर उठी (२९२)

(२९२) राजकवर बरसा लग मुख सूं राज करियौ अर उठी मसाण में बरसा लग वो आक धतूरौ उणी भात उभौ रैयौ। लोग माय थूकता, खोळा-खाळी कूदता, वळबळता पाणी सूं सींचता अर भाटा बगावता।

---

११. आधुनिक राजस्थानी शब्द रचना

११ १ आ राजस्थानी मे शब्द रचना के अन्तर्गत तीन विषयो का उल्लेख करना आवश्यक है— (क) प्रतिध्वन्यात्मक शब्द रचना, (ख) अनुकरणात्मक शब्द रचना और, (ग) सामान्य शब्द साधन ।

११ ११ प्रतिध्वन्यात्मक शब्द रचना मे किसी सामान्य शब्द के रूप मे किसी व्यजन अथवा स्वर आदि मे परिवर्तन करके, नव-निर्मित प्रतिध्वन्यात्मक रूप की मूल शब्द के साथ आवृत्ति कर दी जाती है । यथा, निम्न वाक्यो मे भगवान (१), वरदान (२), हिबोलो (३), टोटको (४) दरसन (५) आदि शब्दों के क्रमश आदि व्यजनो भ, व, ह, ट, तथा द, के स्थान पर फ का आदेश तथा इस प्रकार से निर्मित प्रतिध्वन्यात्मक रूपी फगवान, फरदान, फिबोलो, फोटको तथा फरसन आदि की अपने मूल शब्दो के साथ अवस्थिति हुई है ।

(१) वो राईको तो पगा हालणो सीखियो तद सू अेवड रै लारै ढरर करतो भटकतो रियो, सो भगवान–फगवान रै लफड़ा मे की समझतो-बूझतो ई नी हो ।

(२) आ वरदाना फरदाना नै म्हैं नी समझूं ।

(३) जटा माथै हाथ फेरनै जोगी कैवो—हिबोलां-फिबोला री तो म्हनै ठा कोनी ।

(४) असमान जोगी रै वादळ मॅल धरती रा टोटका फोटका नी चालै ।

(५) दरसन फरसन ई करावणा व्है तो बेगा कराजो, म्हनै घणी वेला कोनी ।

प्रतिध्वन्यात्मक शब्द रचना की भाषा मे तीन विधियां हैं—(क) शब्द के आदि व्यजन के स्थान पर स्, व्, फ् अथवा ह् का आदेश, (ख) आदि स्वर के साथ व्यजन का योग, तथा (ग) आदि अक्षर मे स्वर परिवर्तन । नीचे इन तीनो विधियो का सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है ।

(क) आदि व्यजन के स्थान पर स्, व्, फ्, ह् का आदेश ।

मूल	प्रतिध्वन्यात्मक प्रतिरूप सहित युग्म			
शब्द	स् आदेश	व आदेश	फ् आदेश	ह आदेश
काग	काग साग	काग वाग	काग फाग	
खेजडी	खेजडी सेजडी	खेजडी वेजडी	खेजडी फेजडी	
गाडी	गाडी साडी	गाडी वाडी		
घोडा	घोडा सोडा	घोडा वोडा	घोडा फोडा	
चारो	चारो सारो	चारो वारो		
छाक	छाक साक	छाक वाक	छाक फाक	
जाच	जाच साच	जाच वाच	जाच फाच	
भाग	भाग साग	भाग वाग	भाग फाग	
टिलोडी	टिलोडा सिलोडा	टिलोडी विलोडी	टिलोडा फिलोडी	
डाक	डाक साक	डाक वाक	डाक फाक	
ताच	ताच साच	ताच वाच	ताज फाच	
पाळा	पाळा साळा	पाळा वाला	पाळा फाळा	
लडाई	लडाई सडाई	लडाई वडाई	लडाई फडाई	
मा		मा वा		मा हा
गास		गास वास		गास हास
चारण	चारण-सारण	चारण वारण		
गाय	गाय साय	गाय वाय		
भाई	भाई-साई	भाई वाई		
खोद	खोद सोद	खोद वोद		

(ख) आदि स्वर के साथ व्यंजन का योग

मूल	प्रतिध्वन्यात्मक रूप सहित युग्म		
शब्द	स् आदेश	व आदेश	फ आदेश
अकडणो		अकडणो वकडणो	अकडणो फकडणो
आणो		आणो वाणो	आणो फाणो
इमरत	इमरत सिमरत		इमरत फिमरत
ईतर	ईतर सीतर	ईतर वीतर	ईतर फीतर
उजाड	उजाड सुजाड	उजाड वुजाड	उजाड फुजाड
अैठ		अैठ वैठ	अठ फैठ
ओछो	ओछो-सोछो	ओछो वोछो	ओछो फोछो
ऊट	ऊट सूट	ऊट वू ट	ऊट फूट

(ग) आदि अक्षर मे स्वर-परिवर्तन

आ के स्थान पर ऊ का आदेश

चाक	चाक चूक
डाक	डाक डूक
काज	काज कूज
काकड	काकड कूकड

ई के स्थान पर ऊ का आदेश

कीमत	कीमत कूमत
ईतर	ईतर ऊतर

अ के स्थान पर ऊ का आदेश

अंठ	अठ ऊठ

ओ के स्थान पर ऊ का आदेश

ओछो	ओछौ ऊछौ
कोजौ	कोजौ कूजौ

औ के स्थान पर ऊ का आदेश

औखद	औखद ऊखद
कौल	कौल कूल

उ के स्थान पर आ का आदेश

कुवेर	कुवेर कावेर

अ के स्थान पर उ का आदेश

कड्डी	कड्डी-कुड्डी

१११२ अनुकरणात्मक शब्द रचना किन्ही समुद्देश्यों का अनुकरण (अथवा ध्वन्यानुकरण) मात्र न होकर, चाक्षुष, स्पर्श्य तथा स्पर्श्य संवेदनो का मन भाषावैज्ञानिक आधार पर भाषा के स्वनिमिक तत्त्वो द्वारा अभिव्यक्तिकरण है। भारतीय आर्य भाषाओ म इस कोटि की शब्द रचना पर्याप्त जटिल एवं विस्तृत है।

न चे आ राजस्थानी क ज्ञात स्वानिमिक मातृको की सूची प्रस्तुत की जा रही है।

आधुनिक राजस्थानी के ज्ञात अनुकरणात्मक स्वनिमिक मात्रक और उनके योग

प्रथम मात्रक	द्वितीय मात्रक: क	ख	ग	घ	ड़	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	ळ	व	स	ष	ह
क					कड	कच					कट	कठ			कण			कद									कर	कल	कळ		कस		
ख					खड	खच					खट				खण			खद		खन	खप	खफ	खब		खम		खर	खल	खळ		खस		
ग					गड	गच					गट				गण			गद			गप	गफ	गब				गर		गळ		गस		
घ					घड	घच					घट				घण					घन	घप	घफ			घम		घर		घळ		घस		
च	चक				चड						चट	चठ			चण					चन	चप		चब	चभ	चम		चर	चल	चळ		चस		
छ	छक		छग		छड						छट				छण					छन	छप	छफ	छब		छम		छर	छल	छळ				
ज			जग		जड						जट										जप		जब				जर	जल	जळ				
झ	झक	झख	झग		झड						झट	झठ			झण					झन	झप	झफ	झब		झम		झर	झल	झळ				
ट	टक		टग		टड	टच									टण					टन	टप		टब		टम		टर	टल	टळ	टव	टस		
ठ	ठक		ठग		ठड	ठच									ठण					ठन	ठप	ठफ	ठब		ठम		ठर		ठळ		ठस		
ड	डक		डग		डड	डच									डण						डप	डफ	डब		डम		डर				डस		
ढ	ढक		ढग		ढड	ढच									ढण						ढप	ढफ	ढब		ढम		ढर	ढल	ढळ		ढस		
त	तक		तग		तड़	तच					तट				तण					तन	तप		तब				तर	तल	तळ				
थ	थक		थग		थड	थच															थप	थफ	थब		थम		थर						
द			दग		दड	दच					दट									दन	दप		दब		दम		दर		दळ				

ध धक .... धग .... धड़ धच .... धट .... धण .... धन धप ... धव .... धम ... धर ....

न .... नच ... . नर .. . .

प .... पच .... पट .... पद .... पर पल पळ पव पस ....

फ फक .... फग .... फड फच . .. . फट .... फण .... फद .... फन .... फर .... फळ .... फस ....

ब बक बख बग .... बड बच .... बट .... बण .... बद ... बन .... बफ .... बम ....

भ भक भख भग .... भड़ भच ... . भट .... भण .... भन भप .... भभ भम .... भर .. भळ भस ....

म .... मड़ मच .... मट .... मर ... मळ .... मस ....

र .... रग .... रप . रव .. . . रळ ....

ल लक .... लग .... लड लच .... लट .... लड .... लप लफ लव ... . लर .... लळ .... लस ... .

स .... सग ... सड़ .... सट .... सण .... सन सप . . .. सर .. . सळ ....

स़ .... स़ट .... स़ण .... स़प .... स़व .... स़र स़ल स़ळ ....

ह हक .... हच .... हण .... हन हप हफ हव .... हम .... हर हल हळ .... हस ....

उपरिलिखित स्वनिमिक मात्रकों के साथ विविध स्वनप्रक्रियात्मक विकारों की अवस्थिति से अनुकरणात्मक शब्दों की रचना होती है। स्वनिमिक मात्रक कच को आधार मानकर इस प्रकरण में उन विकारों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्वनिमिक मात्रकों के साथ अवस्थित होने वाले समस्त ज्ञात विकार नीचे सूचित किये जा रहे हैं

(१) मात्रक की स्वयं अवस्थिति यथा कच।

(२) मात्रक अक्षर के अ का इ अथवा उ में स्वर परिवर्तन यथा कच से किच और कुच की रचना।

(३) मात्रक अन्त्य व्यंजन का द्वित्वीकरण यथा कच्च किच्च और कुच्च की रचना।

(४) द्वित्वीकृत अन्त्य व्यंजन वाले रूपों को छोड़कर अन्य रूपों के साथ अर -अल तथा अड प्रत्ययों की अवस्थिति यथा कचर किचर कुचर कचल किचल कुचल एवं कचड किचड कुचड रूपों की रचना।

(५) उपरिलिखित नियमों द्वारा रचित रूपों के साथ अक अथवा -आक प्रत्ययों की अवस्थिति यथा कचक किचक कुचक कचाक किचाक कुचाक
कच्चक किच्चक कुच्चक कच्चाक किच्चाक कुच्चाक
कचरक किचरक कुचरक
कचराक किचराक कुचराक
कचळक किचळक कुचळक
कचळाक किचळाक कुचळाक
कचडक किचडक कुचडक
कचडाक किचडाक कुचडाक

(६) उपरिलिखित ४५ मात्रक प्रकृतियों का आम्रेडण

नियम संख्या (६) द्वारा जनित समस्त मात्रक रूपों को नीचे सूचित किया जा रहा है।

(१) कचकच किचकिच कुचकुच

(२) कच्च कच्च किच्च किच्च कुच्च कुच्च

(३) कचर कचर किचर किचर कुचर-कुचर

(४) कचळ कचळ किचळ किचळ कुचळ कुचळ

(५) कचड कचड किचड किचड कुचड कुचड

(६) कचक कचक किचक किचक कुचक कुचक

(७) कचाक-कचाक, किचाक किचाक, कुचाक कुचाक

(८) कच्चक-कच्चक, किच्चक किच्चक, कुच्चक कुच्चक

(९) कच्चाक-कच्चाक, किच्चाक-किच्चाक, कुच्चाक कुच्चाक

(१०) कचरक कचरक, किचरक किचरक, कुचरक-कुचरक

(११) कचराक कचराक, किचराक किचराक, कुचराक-कुचराक

(१२) कचळक कचळक, किचळक-किचळक, कुचळक-कुचळक

(१३) कचळाक-कचळाक, किचळाक किचळाक, कुचळाक-कुचळाक

(१४) कचड़क कचड़क, किचड़क किचड़क, कुचड़क कुचड़क

(१५) कचड़ाक कचड़ाक, किचड़ाक-किचड़ाक, कुचड़ाक कुचड़ाक

(७) उपरिलिखित सूची मे मात्रक प्रकृति सख्या (१-५) के दोनो तत्वो के साथ -आ प्रत्यय के योग से निम्न प्रकृतियो की रचना होती है।

(१६) कचा-कचा, किचा किचा कुचा-कुचा

(१७) कच्चा-कच्चा किच्चा किच्चा, कुच्चा कुच्चा

(१८) कचरा कचरा, किचरा-किचरा, कुचरा-कुचरा

(१९) कचळा-कचळा, किचळा-किचळा, कुचळा-कुचळा

(२०) कचड़ा-कचड़ा, किचड़ा-किचड़ा, कुचड़ा-कुचड़ा

(८) मात्रक प्रकृति सख्या (६, १०, १२, १४) के अन्त्य क के द्वित्वीकरण द्वारा निम्नलिखित प्रकृतियों की रचना होती है।

(२१) कचक्क-कचक्क, किचक्क-किचक्क कुचक्क कुचक्क

(२२) कचरक्क-कचरक्क, किचरक्क किचरक्क, कुचरक्क-कुचरक्क

(२३) कचळक्क कचळक्क, किचळक्क किचळक्क, कुचळक्क कुचळक्क

(२४) कचड़क्क-कचड़क्क, किचड़क्क किचड़क्क कुचड़क्क कुचड़क्क

(९) मात्रक प्रकृतियां कच, किच, कुच, कचर, किचर, कुचर, कचल, किचल, कुचल, कचड, तथा किचड, कुचड, के प्रथम अक्षर के स्वरो मे निम्न परि-वर्तन हो सकते हैं

(क) अ के स्थान पर आ का आदेश।

(ख) इ के स्थान पर ई ए का आदेश

(ग) उ के स्थान पर ऊ ओ का आदेश

इन स्वर परिवर्तनों द्वारा निम्न रूपों की रचना होती है

(२५) काच, काचर, काचळ काचड

(२६) कीच, केच, कीचर, केचर, कीचळ, केचळ, कीचड, केचड

(२७) कूच, कोच, कूचर, कोचर, कूचळ, कोचळ, कूचड, कोचड

(१०) नियम संख्या (४) से व्युत्पन्न रूपों की -णो प्रत्यय के योग में भाषा में क्रियाओं के रूप में अवस्थिति होती है।

(११) नियम संख्या (४) से व्युत्पन्न रूपों के साथ -आट तथा -आटो प्रत्ययों के योग से क्रमशः स्त्रीलिंग और पुल्लिंग रूप, यथा कचराट, कचराटो संज्ञाओं की रचना होती है।

(१२) कच, किच, कुच रूपों के साथ ईड, -ईडो, -अन्द, -अन्दो, तथा -कार, -कारो की अवस्थिति से संज्ञाओं की रचना होती है। विकल्प से -अन्द, -अन्दो के स्थान पर पर -इन्द, -इन्दो की अवस्थिति भी हो सकती है।

(१३) नियम संख्या (६) द्वारा व्युत्पन्न रूप कचकच, किचकिच, कुचकुच, के साथ -ओ (पुंलिंग), -आट (स्त्रीलिंग) तथा -आटो (पुल्लिंग) के योग से संज्ञाओं की रचना होती है।

(१४) नियम संख्या (६) द्वारा व्युत्पन्न रूप कचकच, किचकिच, कुचकुच की -(आ) णो प्रत्यय के योग से अनुकरणात्मक क्रियाओं की रचना होती है।

(१५) नियम संख्या (६) द्वारा व्युत्पन्न रूप संख्या (१) तथा (२) के साथ मध्य-प्रत्यय -आ- के योग से कचाकचा, कच्चाकच्च आदि रूपों की रचना होती है।

उपरिलिखित नियमों द्वारा निष्पन्न रूपों की समस्त सम्भावनाओं की भाषा में अवस्थिति होती है अथवा नहीं इसके विषय में निश्चयात्मक रूप से नहीं कहा जा सकता। साथ ही-साथ दो महत्वपूर्ण तथ्य ऐसे है जिन्हें अस्वीकार नहीं किया जा सकता। अनुकरणात्मक रचनाओं की भाषा के वाक्यों में अवस्थिति वक्ता की स्ववृत्ति जन्य स्थितियों पर निर्भर होती है, तथा भाषा में अनेक अनुकरणात्मक रचनाएं विविध अर्थों में रूढ हो चुकी है। कोश में इस प्रकार की रचनाओं को सूचित किया गया है। किन्तु फिर भी अनेक ऐसी हैं जिनका विवरण उपलब्ध नहीं होता।

अनुकरणात्मक शब्द रचना की उपरिलिखित मुख्य विधियों के अतिरिक्त, अन्य विधियां भाषा में उपलब्ध हैं। इन समस्त ज्ञात विधियों का संक्षिप्त विवरण नीचे किया जायगा।

(ब) दो भिन्न किंतु समवर्गी ध्वनिमिक मात्रकों के योग से जगमग, डगमग, तगमग, कलमल, झलमल, टलमल, झड़पड़, चड़पड़, छड़पड़ आदि अनुकरणात्मक शब्दों की रचना भी होती है।

(ख) उपरोक्त कोटि में परिगणित किये जा सकने वाले मात्रकों के साथ -अड़ तथा -अर प्रत्ययों के योग करके भी संयोजनों की रचना होती है, यथा खटर-पटर, चरड़-परड़ इत्यादि।

(ग) लटर-पटर, चरड़-मरड़ इत्यादि संयोजनों के दोनों अंगों के साथ -अक प्रत्ययों के योग से भी लटरक-पटरक, चरड़क-मरड़क आदि नवीन संयोजन निर्मित होते हैं।

(ग) अनेक मात्रकों के अन्त्य व्यंजनों के द्वित्व करण के अतिरिक्त, उनके अन्त्य अक्षरों का अभ्यास भी होता है।

यथा,

तग्ग तग्ग	तगग-तगग	
दग्ग-दग्ग	दगग दगग	
धग्ग-धग्ग	धगग-धगग	
फग्ग-फग्ग	फगग फगग	
बग्ग-बग्ग	बगग-बगग	
भग्ग-भग्ग	भगग-भगग	
खण्ण खण्ण	खणण-खणण	खुणण खुणण
गण्ण गण्ण	गणण गणण	गुणण गुणण
चण्ण चण्ण	चणण-चणण	चुणण चुणण

प्रयत्न करने पर इस प्रकार के अन्य संयोजनों का भाषा में मिल जाना असंभव नहीं है।

(घ) अनुकरणात्मक मात्रकों के आद्य व्यंजनों के अभ्यास द्वारा भी विविध प्रकार की अनुकरणात्मक रचनाएं होती हैं।

अभ्यस्त व्यंजन के साथ सानुनासिक ऊ, अ तथा आ के योग से निर्मित रचना की मूल मात्रक के पूर्व आसक्ति द्वारा निम्न प्रकार के शब्द बनते हैं।

चूंचाड़	खंखेड़	मंखोळी	खांखल	कांकर	चांवड़
छूंछाड़	गंगेड़	गंगोळी	दांदळ	खांखर	चांचड़
ढूंढाड़	छंछेड़	डंडोळी	भांभळ	चांचर	टांटड़
टूंटाड़	जंजेड़	पंपोळ	ढांढळ	छांछर	तांतड़

कंकर, मंमर, पंपाळ, जंजाळ आदि अनेक शब्द इसी कोटि के हैं।

(ङ) नियम (४) द्वारा निर्मित कतिपय रूपों (तथा खरड चरड आदि) और खरड चरड आदि के –अक प्रत्यययुक्त रूपों के पश्चात् इन शब्दों के आदि व्यंजन के साथ ऊ का योग करके निम्न प्रकार के अनुकरणात्मक शब्दों की रचना होती है।

खरड खू	—
चरड चू	चरडक चू
झरड झू	झरडक झू
टरड टू	टरडक टू
डरड डू	डरडक डू
—	ढरडक ढू
परड पू	परडक पूं

(च) नियम (४) द्वारा निर्मित रूप चरड आदि के पश्चात् उक्त रूप के आदि व्यंजन के साथ –अप्प का योग करके निम्न प्रकार के अनुकरणात्मक शब्दों की रचना होती है।

खरड खप्प
गरड गप्प
चरड चप्प
झरड झप्प

१११३ सामान्य शब्द साधन के अन्तर्गत दो प्रकार के प्रत्ययों का विवरण प्रस्तुत किया जायगा — (क) ऐसे पूर्व-तथा पर-प्रत्यय जिनके योग से शब्दों के सवर्ग परिवर्तित हो जाते हैं (यथा रस संज्ञा में ईलो प्रत्यय के योग से रसीलो विशेषण की रचना होती है), तथा (ख) कतिपय अभिव्यंजक प्रत्यय, जिनके योग से शब्दों के सवर्ग तो परिवर्तित नहीं होते किन्तु उन प्रत्ययों से युक्त शब्दों के समुद्देश्यों के प्रति वक्ता का दृष्टिकोण बदल जाता है।

नीचे राजस्थानी के मुख्य पर प्रत्ययों की सूची प्रस्तुत करते हुए, उनसे निर्मित शब्दों के उदाहरण सूचित किये जा रहे हैं। इन पर-प्रत्ययों से निर्मित शब्दों के उदाहरण देते समय उन उदाहरणों का विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया जायेगा क्योंकि इस विवरण का उद्देश्य भाषा के इन तत्वों की स्थापना है।

(१) –आण   वधाण
मडाण
कमठाण
मगाण
रधाण
आलखाण

(२) –आणी — गेहाणी, सोमाणी

(३) –आणी — माडाणी, साचाणी, भूठाणा

(४) –आत — दलात, उचात

(५) –आतियो — पगातियो, सिरातियो, आगातियो, पाछातियो

(५) –आद~ –आण — मिचळाद~मिचळाण, मडाद

(६) –आदरो — पीळादरो, काळादरो

(७) –आइस — समभाइस, बुभाइस, फरमाइस, पैमाइस

(८) –आई — सुगराई, कालाई, इदकाई, टणकाई, मुगराई, मुघडाई, चिकणाई

(९) –आपो~पो — पाचापो, भाईपो, रडापो, छुटापो, वधापो, छीजापो, मापो, इकलापो, पूजापो, मेटापो, राजीपो, सैणापो

(१०) –आप — धणियाप, मिळाप

(११) –प

भोटप	भेळप
भाईप	सैणप
थाटप	

(१२) –आयत

जाडायत	नैटायत
नातायत	अडपायत
गनायत	लाळायत
वटायत	पीरायत
पचायत	नातरायत

(१३) –आयती

पीरायती	धामायती
दवायती	नातायती
जापायती	पचायती
लाळायती	

(१४) –आट~इयाट

इयाट	मयाट
जीमणियाट	थयाट
आटाट	

(१५) –आटो

रूपाळो	मूणाळो
काडियाळो	हेजाळो
धणियाळो	कडियाळो
बरमाळो	लबाळो
मतवाळो	
छागाळो	
जाडाळो	
थाटाळो	

(१६) –आव

पसराव	गटाव
बरताव	कटाव
निभाव	निराव
उकसाव	छराव
उतराव	तणाव
उफणाव	छिडकाव

(१७) –आवट

बणावट	गिरावट
सजावट	रचावट
दिखावट	पक्कावट

(१८) -आवण	करड़ावण ~ करड़ाण	
	भरावण	
	लगावण	
	सिरावण	
	बधावण	
	रिझावण	
(१९) -आवौ	दिखावौ	धकावौ
	पिछतावौ	हुलावौ
	छुटावौ	फुरावौ
	धीजावौ	पचावौ
	भुलावौ	मुणावौ
(२०) -आस	पीळास	मिठास
	खारास	खटास
	काळास	धोळास
	चरचास	फीकास

(२१) -ओकड़,-ओकड़ौ,-ओकड़ी,-ओखड़ी

बातोकड़		रमेकड़ौ	वधोखड़ी
भूलोकड़	भूलोकड़ौ		
पिदाकड़	पिदाकड़ी		
रमोकड़			

(२२) -इन्दौ	रातिन्दौ
	रातून्दौ
	बातिन्दौ ~ बातन्दौ
(२३) -इयारौ	कठियारौ
(२४) -ई	जोरावरी
	उन्मादी
	कुचमादी
(२५) -ईक	मगठीक
	रमणीक
	पूजनीक

(२६) –ईलो	रसीलो	वसीलो
	थादीलो	फुर्तीलो
	अडीलो	खातीलो
	आटीलो	हठीलो
	गठीलो	गर्वीलो
(२७) –ऊ	प्रसताऊ	अगटाऊ
	अड्डू	धपाऊ
	मारगू	कमाऊ
(२८) –ऊडियो	वनूडियो	गनूडियो
(२९) –एति	कामेति	रूपेति
	गामेति	धामेति
(३०) –एल	टणकेल	जणकेल
(३१) –एता∼इता	मानेता ∼ मानिता	
	जाणेता ∼ जाणिता	
(३२) –एरो	नानेरो	दादेरो
	बानेरो	मामेरो
(३३) –एरण	भातेरण	कातेरण
	गीतेरण	पानेरण
	कमतेरण	
(३४) –क	पाटक	खाटक
	धाटक	थाटक
	दाटक	राटक
	बूटक	
(३५) –कार	खणकार	भणकार
	ततकार	टणकार
(३६) –कारो	रेकारो	हुकारो
	रणकारो	ततकारो
	चुसकारो	होकारो
(३७) –गरो	भारीगरो	

(३८) –गर	म्हाडागर	
	जादूगर	
(३९) –धारी	पुरन्धारी	
(४०) –गारो	छळगारो	धुतरगारो
	म्हाडागारो	चाळगारो
	कामणगारो	छडागारो
(४१) –गी	मादगी	सादगी
	माजगी	बानगी
(४२) –गो	नावगी	
(४३) –चारो	मिनखाचारो	भाईचारो
(४४) –ची	कापची	खामची
	बदूकची	काळची
	छोळची	पीळची
	गोरची	
(४५) –त	वगत	छीजत
	बळत	रजत
	आगत	पाछत
	मागत ~ मगत	
(४६) –ता	विडरपता	
	क्रूरता	
	परवसता	
(४७) –ती	गिणती	मिळती
	विरती	बिणती
(४८) –तौ	नचीतो	
(४९) –दार	चोवदार	चवडेदार
	चरवादार	कामदार
	चूडोदार	नकीबदार
(५०) –पणो	लुगाईपणो	बालपणो
	टाबरपणो	राजापणो
	कामदारपणो	गोलापणो
	गधापणो	भाईपणो
	सागपणो	मिनखपणो
	मळीचपणो	अबूझपणो
	दातारपणो	गिवारपणो
	बोदापणो	नुगरापणो

	मगसापणौ	ओछापणौ
	गेन्नापणौ	लाटापणौ
(५१) –पत	राखपत	
	रखापत	
(५२) –बायरौ,–बायरी	लखणा बायरौ	
	आसग बायरौ	
	लाज बायरौ	
	सिग्या बायरौ	
	चेता बायरौ	
(५३) –मा –मौ	अपटमा	ढेलमौ
	दपटमा	
(५४) –रत	गिनरत	
	गागरत	
(५५) –रोळ	भमरोळ	
(५६) –लौ	छेहलौ	ऊपरलौ
	लारलौ	साम्हेलौ
	धकलौ	मायायलौ
(५७) –वड		गावड
		मावड
(५८) –वाड		पारवाड
(५९) –वाडौ,-वाडी,-वाड		
	मरवनाडौ	बोरावाडी
	मूगलीवाडौ	
	रजवाडौ	मगतवाड
	पातरवाडौ	
	मारवाडौ	
	मुफतवाडौ	
	ऊँठवाडौ	
	वेंचवाडौ	
(६०) –वान,–वती	समभवान	धनवती
	सम्पवान	सतवती
(६१) –वास, -वासौ	घरवास	रानवासौ
	रँवास	
	सहँवास	
(६२) –व	माळवौ	
	पाटवौ	

(६३) -हीण, -हीणौ	वस्तरहीण	पतहीणौ
	करमहीण	

नीचे आ. राजस्थानी के मुख्य पूर्व-प्रत्ययों की सूची प्रस्तुत करते हुए, उनसे निर्मित शब्दों के उदाहरण सूचित किये जा रहे हैं। इन पूर्व-प्रत्ययों से निर्मित शब्दों के उदाहरण देते समय उन उदाहरणों का विश्लेषण नहीं किया जायगा क्योंकि इस विवरण का उद्देश्य भाषा के इन तत्वों की स्थापना मात्र है।

(१) अ-	अकथ्य	अडोळौ	अजेज
	अमोलक	असेंधौ	अजाण
	अखूट	अनूक	अजोगतौ
	अन्याव	अभरोसौ	अपचौ
	अकरम	अलगाव	अवेळौ
(२) अध-	अधकालौ		अधगावळौ
	अधकीचरियौ		अधवरडौ
	अधरोगलौ		अधफोटौ
	अधमरियौ		अधवूड
	अधरातियौ		अधराणौ
(३) अण-	अणचीत्यौ		अणछक
	अणगिण		अणभणियौ
(४) अस्ट-	अस्टपौर		
(५) औं-	औंगण		
(६) का-	कावळ		
(७) कु-	कुलखणौ		कुवेळा
	कुबाण		कुरूप
	कुमया		
(८) चौ-	चौफेर		
	चौरगौ		
(९) दु-	दुथनी		
	दुघडियौ		
(१०) दुर-	दुरगत		
	दुरगध		
(११) ना-	नाकुछ		
	नासमझौ		
(१२) सं-	संजोग		
	सपूरण		
	सतोख		

(१३) नि–	निमक	निपूता
	निकट्ठी	निरोच्यो
	निपर्गी	निमरा
(१४) निर–	निरपख	निरमाही
	निरलज्ज	निराकार
(१५) निस–	निस्कारी	निसार
(१६) नु–	नुगरो	
(१७) न–	नगम	
(१८) ब–	ब्याली, बभाव बगाजा	
(१९) वि–	विजाग	
	विवाद	
	विणाग	
(२०) स–	समाग	
(२१) सा–	सावट	
(२२) सु–	सुलखणा सपूत सगरो	
	सुरगो सुजाग	
( ) स–	सरीनो	

११.१.४ अभिव्यंजक प्रत्ययों की अवस्थिति का उल्लेख इस अध्याय में यत्र तत्र किया गया है। फिर भी भाषा में उक्त प्रकार्यों एवं और विशेष रूप से संज्ञाओं के साथ उनकी अवस्थिति से शब्दों के जो विविध रूप निर्मित होते हैं, उनका विवरण शब्द रचना के प्रकरण में करना अधिक समीचीन है।

अ। राजस्थानी में मुख्य रूप से चार अभिव्यंजक प्रत्यय हैं– -अक ~क, -अल ~ल, -अड़ ~ड़ तथा -अट ~ट। इन चारों प्रत्ययों द्वारा वक्ता अपने सम्वादी (जिस व्यक्ति अथवा वस्तु इत्यादि के विषय में वह अपने श्रोता से बातचीत कर रहा है) की क्रमशः किसी क्रिया व्यापार में सलग्नता के प्रति सक्रियता उसकी (अर्थात् सम्वादी) की स्थूल में सम्बन्धात्मकता उसके प्रति अपनी भावनात्मकता तथा उसकी क्षमता आदि के विषय में विविध दृष्टिकोणों की अभिव्यक्ति करता है।

इन प्रत्ययों की अवस्थिति पुरुष अथवा स्त्री प्रदत्त नामों व स्वीकृत अंगों के साथ, मानवेतर प्राणीवाचक संज्ञाओं तथा अप्राणीवाचक संज्ञाओं के साथ हो सकती है। इन प्रत्ययों की इन संज्ञाओं के साथ अवस्थिति का अनुकूलन उपादान है वक्ता की अपने सम्वादी के प्रति सवेगात्मक अभिवृत्ति की अभिव्यक्ति। अतः प्रत्ययों की अवस्थिति के लिए भाषा-वैज्ञानिक प्रतिबन्धों के अतिरिक्त विविध समाजशास्त्रीय शर्तों का होना भी अनिवार्य है और दोनों प्रकार के प्रतिबन्धों के साथ साथ ही वक्ता की स्वभावजन्य वृत्तियों में परिवर्तनशीलता भी एक महत्वपूर्ण तत्व है।

उपरिलिखित चारों प्रत्ययों के विविध संयोजना का निदर्शन करने के लिये नीचे व्यक्तिवाचक पुरुष अथवा स्त्री नाम सोन के साथ इनकी अवस्थिति से निर्मित रूपावली प्रस्तुत की जा रही है।

व्यक्तिवाचक पुरुष अथवा स्त्री नाम सोन की रूपावली

रूपावली		अभिव्यजक रूप लिंग			
संख्या		सामान्य पुल्लिंग	विशिष्ट पुल्लिंग	अल्पार्थक पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
(१)	(क)	सोन	सोनको	सोनकियो	सोनकी
	(ख)	—	सोनकडो	सोनकियो	सोनकडी
	(ग)	—	सोनकलो	सोनकियो	सोनकली
(२)	(क)	सोनल	सोनलो	सोनलियो	सोनली
	(ख)	—	सोनलको	सोनलियो	सोनलकी
	(ग)	—	सोनलडो	सोनलडियो	सोनलडी
(३)	(क)	सोनड	सोनडो	सोनडियो	सोनडी
	(ख)	—	सोनडको	सोनडकियो	सोनडकी
	(ग)	—	सोनडलो	सोनडलियो	सोनडली
(४)	(क)	सोनट	सोनटो	सोनटियो	सोनटी
	(ख)	—	सोनटको	सोनटकियो	सोनटकी
	(ग)	—	सोनटडो	सोनटडियो	सोनटडी

नीचे सोन के अल्पार्थक रूप सोनू के भी विविध रूप प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(५)	(क)	सोनूड	सोनूडो	सोनूडियो	सोनूडी
	(ख)	—	सोनूडको	सोनूडकियो	सोनूडकी
	(ग)	—	सोनूडलो	सोनूडलियो	सोनूडली

व्यक्तिवाचक नामों के अभिव्यजक रूपों के उपरिलिखित लिंग रूपों का पुरुष अथवा स्त्री व्यक्तियों से सहसम्बन्ध नहीं है। इस कथन का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग रूप की अवस्थिति पुरुष अथवा स्त्री व्यक्ति के लिये निर्बाध रूप से हो सकती है। इस तथ्य का स्पष्टीकरण करने के लिए नीचे एक ही रूप के स्त्री तथा पुरुष व्यक्तियों के समुद्देशन के वाक्यात्मक उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

सोनको (पुल्लिंग रूप) की पुरुष-समुद्देशक अवस्थिति (६)

(६) इतो जेज लगाय दी, सोनको यहाँ काई करतो हो।

सोनको (पुल्लिंग रूप) की स्त्री समुद्देशक अवस्थिति (७)

(७) सोनको छटो घर मे दोसे बायरी निधरयो परो।

उपरोक्त अभिव्यजक प्रत्ययो की अवस्थिति जाति वाचक, मानवेतर प्राणीवाचक, वस्तु इत्यादि वाचक सज्ञाओ तथा विशेषणो के साथ भी होती है। इन कोटियो की समस्त सज्ञाओ तथा विशेषणो से निर्मित समस्त रूप भाषा मे उपलब्ध नही होते, और साथ ही साथ रूप निर्माण की प्रक्रिया इतनी अनियमित है कि इसके विषय मे सामान्य नियमो का कथन अति दुरसाध्य कार्य है। अत इनके कतिपय उदाहरण देकर ही सतोष पडता है।

(क) जातिवाचक, मानवेतर प्राणीवाचक तथा वस्तु इत्यादि वाचक सज्ञाग्रो की उपलब्ध अभिव्यजक रूपावलियो के उदाहरण।

सज्ञा		उपलब्ध अभिव्यजक रूप
जातिवाचक	चोर	चारको, चोरडो चौरटो, चोरडियो चोरटियो, चोरकी, चोरडी, चोरटी।
मानवेतर प्राणी वाचक	मिन्नी	मिनको, मिनकियो, मिनकी, मिनकड, मिनकडो, मिनकडियो, मिनकडी, मिनलो, मिनलियो, मिनली, मिनलडी, मिनड, मिनडो, मिनडियो, मिनडी, मिनडक, मिनडको, मिनडकी, मिनूड, मिनूडो, मिनूडियो, मिनुडो।
वस्तु इत्यादि वाचक	घरटी	घरटलो घरटलियो घरटली, घरटलकी, घरटलडो घरटड घरटडो घरटडी, घरटूलडो।

(ख) कतिपय विशेषणो की उपलब्ध अभिव्यजक रूपावलियो के उदाहरण।

खारो	खारोडो, खारोडको खारलो
मोटो	मोटोडो, मोटोडको मोटलो
नवो	नवोडो, नवोडको
अेकलो	अेकलडो
असली	असलीडियो
धरमी	धरमीडो
रोगी	रोगीडो
पैलो	पैलोडो, पैलको, पैलोडको, पैलियो, पैलोडियो, पैलकियो, पैलोडकियो, पैली, पैलोडो, पैलकी, पैलोडकी
म्हारो	म्हारोडो, म्हारोडको, म्हारडलो

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या (ऊपर से)	अशुद्धि	शुद्ध पाठ
१२	१	कौ	को
१२	४	अधारित	आधारित
१२	१७	आधियौ	आदियौ
१३	२१	काचरौ	काचर
१४	३	दातलियौ	दातळियौ
२६	२७	सभं-पाडौ	भैंस-पाडौ
२७	८	समिक्ष	समिश्र
२६	६	कडोरदान	कटोरदान
३२	८	(=स$_2$ का स$_2$)	(=स$_1$ का स$_2$)
३२	१०	स$_2$-घटको की	स$_1$-घटको की
सर्वत्र	—	आमेडित	आम्रेडित
३५	१४	वादरा	वादरा
४८	१८	नही	नीं
५०	२२	सेठावू	सेढावू
५३	१५	(५,४)	(५ ४)
५५	१	कं के	कं
५७	१३	शून्य के	शून्य के लिए
६२	२४	सौकर्म	सौकर्य
६४	७	विकल्प	वैकल्पिक
७४	२२	उद्वेल्लन	उद्वेलन
७६	१	उर	डर
७६	६	वस्तुत	वस्तुत
८०	२	मुक्त	युक्त
८२	२०	समश्रकोटि	समिश्रकोटि
८८	३	माम	माय
६०	१६	क्रियाओ	इन क्रियाओं
१०८	१५	स्याळ-स्यालणी	स्याळ-स्याळणी
१०६	२८	नियात	निपात
११०	८	पारौ	परौ

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या (ऊपर से)	अशुद्धि	शुद्ध पाठ
१११	१६	अंटणौ	अंटणौ
११२	७	चिरावणौ	चिरवावणौ
११२	१०	लुटवावणौ	लुळावणौ
११२	२७	उठावणौ	उठाणणौ
११२	२८	उठवावणौ	उठवाणणौ
११२	३०	बैंठवणाणौ	बैंठवावणौ
१२१	१८	१५६	(१५६)
१२३	१	एक	एक बात
१२४	४	क्रिया-	क्रिया-
१२४	२७	केवण	कंवण
१२५	२६	लिखतौ	लिखतौ
१२६	१६	थका	थकाई
१२७	२१	अनिवार्य	अविकार्य
१२८	१८	अविमित	अवसित
१२६	१७	करके, न	न करके,
१३०	७	पन	पण
१३०	१२	अतर्निविण	अतर्निविष्ट
१३०	१६	नियात	निपात
१३०	२६	अभिरचना	अभिरचना का
१४७	१	म्हारौं	म्हारौ
१४७	२	म्हारौं	म्हारौ
१४७	३	८५	८४
१४८	७	पूणगौ	पूछणौ
१४६	१५	सळै	भळै
१६६	१६, १८	पयाळ	पयाळ
१७१	६	नैं	न
१७४	२२	होना	होता
१७६	१५	ख)	(ख)
१७७	२६	नाव	गाव
१८३	२६	च्यारू	च्यारू
१८४	२५	उक्ती उपवाक्य	उक्ती-उपवाक्य में
१६१	४	रूपों के	रूपों के साथ